॥ श्रीः ॥

प्रणयिमाधव।

जिसे

मध्यप्रदेशान्तर्गत नागपुरनिवासी पंडित

गंगाप्रसाद अग्निहोत्रीने

मराठीके " मालतीमाधव " नामक उपन्याससे

अनुवादित किया।

उसीको

गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदासने

अपने " लक्ष्मीवेंकटेश्वर " छापेखानेमें

मुद्रित कर प्रकाशित किया।

संवत १९५८, शके १८२३.

ई० स० १९०१

कल्याण-बंबई.

10·00

रजिष्टरी द्वारा स्वत्वाधिकारको यन्त्राधिकारीने
अपने स्वाधीन रक्खा है।
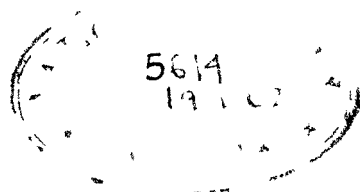
THIS WORK IS MOST HUMBLY
DEDICATED TO

CHARLES ERNEST LOW Esqr,

B. A. (OXON) I. C. S.

Settlement officer Hoshangabad
Central Provinces,

In Honour Of His Wide-spread Fame As A Warm
supporter of the starving poor, during the late
famine at Bilaspur ; and an enlightened patron
of the literature, and of the deep and sincere
interest he took in abating the jamas and
rents of the people of the Hoshangabad
District, with feelings of
Thankfulness,

BY

GANGAPRASAD AGNIHOTRI.

भूमिका ।

सहृदय पाठकगण ! आज हम इस "प्रणयिमाधव" संज्ञक उपन्यासको आप लोगोंकी सेवामें भेंट तो करते हैं, पर बड़े संकोच और भयके साथ भेंट करते हैं । क्यों कि आजकल हिंदीमें उपन्यासोंकी बाढ आवश्यकतासे इतनी अधिक हो गयी है कि हिंदीके प्रेमीलोग अब उस बाढसे घबरा रहे हैं, और उनका चित्त एक अचिंत्य चितामें व्यस्त हो रहा है कि कहीं ऐसा न हो (ईश्वर कदापि ऐसा न करे) कि इस उपन्यासोंकी आधिकतासे जो लाभ विचारे जाते हैं उनके बदले हिंदीके पठित समाजको हानि उठानी पड़े। इस सम्मतिके पोषकोंसे हम पृथक् नहीं हैं । पर क्या करें बनावही ऐसा कुछ बन आया कि यह उपन्यास नाना प्रकारकी आपत्तियोंको दलित कर एक एकांततो हिंदीभक्तको सहायतासे प्रकाशित होही गया । हमें भरोसा है कि जैसे इस उपन्यासने अपनी अन्यान्य आपत्तियोंका उन्मूलन कर दिया है, कदाचित् वैसेही यह आपलोगोंका प्रीतिभाजनभी बन सकेगा । क्यों कि आजलों आपने प्रायः जिस प्रकारके उपन्यासपढे हैं, और अब जिनसे आपका जी उकता गया है, उनकी अपेक्षा इस उपन्यासका ढंगही कुछ निराला है । इसमें यद्यपि ऐयारोंकी ऐयारी तथा तिलस्मकी ऊटपटांग लीलाका वर्णन नहीं है, तथापि हम आशा करते हैं कि इसमें जो कुछ है, सो हमारे करुणरसप्रधान नाटक प्रणेता भवभूति[1] प्रणीत सुविख्यात "मालतीमाधव" नामक नाटकके आधारपर लिखा जानेके कारण सरसचेता पाठकोंके चित्तमें रसका आविर्भाव करनेके लिये अलम् है ।

इस उपन्यासके लिखे जानेका कारण हमारे समालोचककी अवस्था, स्थित संपादकोंको अवश्य कौतूहलजनक बोध होगा; एतावता हम समझते हैं कि उसका समास उल्लेख यहांपर अनुचित न होगा ।

आजकल प्रायः देखा जाता है कि संपादकगण उपन्यासोंकी आलोचना लिखतीबार यह आक्षेप अवश्य करते हैं कि हिंदीके समस्त उपन्यासलेखकोंको काशीके उपन्यास लेखकोंने पीछे हटा दिया है । काशीसे आजकल मानो उपन्याससरिता प्रवाहित हो रही है । उक्त समालोचकोंको यह बात जानकर औरभी अश्चर्यचकित होना पड़ेगा कि यद्यपि वर्त्तमान उप-

---

१ इस कविवरका जीवनवृत्त तथा इसके रचे हुए सब ग्रंथोंका लोकोत्तर काव्यामृत पान करना हो तो हमारे "संस्कृतकविपंच" नामके ग्रंथको मुन्शी नवलकिशोरके छापेखाने लखनऊसे मंगाकर पढियेगा ।

न्यास न काशीमें लिपिबद्धही किया गया है, और न वहांसे प्रकाशितही हुआ है, तथापि इसके जन्मका हेतु, काशीवासी हिंदीके स्वकर्त्तव्य-जागरूक हितैषी लोगोंकी सानुरोध प्रेरणाही है। सन १८९४ में जब किसी कार्य्यवश हम काशी गये थे, तब वहांके हिंदीप्रेमी महाशयोंने हमें मराठी भाषासे उत्तमोत्तम ग्रंथोंको हिंदीमें अनुवादित करनेको प्रोत्साहित किया था। वहांसे लौटनेपर हमने प्रथम इस उपन्यासको मराठीसे अनुवादित किया। पर जिस आशासे हमने इसे अनुवादित किया था, वह हमारी आशा उस समय पूर्ण न हो सकी। हमने चाहा था कि यह उपन्यास शीघ्रही प्रकाशित हो जाय तो अच्छा होगा। पर हमारी इस इच्छाके बाधक दो कारण हुए। उनमेंसे प्रथमको तो हमने शीघ्रही अपने अनुकूल कर लिया, पर दूसरेको हम अनुकूल न कर सके। यही कारण है कि यह उपन्यास इतने दिनोंके अनंतर प्रकाशित हुआ।

प्रथम बाधक तो मराठी ग्रंथके प्रकाशक रा. रा. वासुदेव मोरेश्वर पोतदारके उत्तराधिकारी रा. रा. पांडुरंग मोरेश्वर पोतदार हुए। आपने हमारे उक्त उपन्यासको हिंदीमें अनुवादित करनेकी अनुमति मांगनेपर लिखा कि जबलों अनुवादस्वत्वके परिवर्त्तनमें हमें आप कुछ रुपया, वा रुपया न बन सकें तो हिंदी अनुवादके छपे हुए ग्रंथोंकी अनुमान १०० प्रति न देंगे, हम अपने ग्रंथका अनुवाद करनेकी अनुमति आपको कदापि न देंगे। पर जब हमने उक्त महाशयको यह बात समझा दी कि अभी हिंदी उस उन्नत दशाको प्राप्त नहीं हुई है कि उसके ग्रंथप्रकाशक लोग ग्रंथकर्त्ताओंको पुरस्कृत कर ग्रंथ प्रकाशित करते हों। विना फूटी कवड़ी मांगेही अर्थशक्तिहीन ग्रंथलेखक लोग प्रकाशकोंसे अपने उत्तमोत्तम ग्रंथ प्रकाशित करनेके प्रार्थी होते हैं, तौभी वे लोग उनकी प्रार्थना स्वीकृत नहीं करते हैं। हमभी ऐसेही ग्रंथलेखकोंमेंसे हैं। ऐसी अवस्थामें हम आपकी प्रतिज्ञाका पालन करनेको सर्वथैव असमर्थ हैं। इस अभिप्रायकी चिट्ठी लिखनेपर उक्त महाशयने अत्यंत उदारताप्रमुख अपनी २३-७-१८९८ की १५५५ संख्यक चिट्ठीद्वारा हमें इस उपन्यासको हिंदीमें अनुवादित करनेकी अनुमति दी। हम एतदर्थ उक्त महाशयको अनेकानेक आंतरिक धन्यवाद देते हैं।

दूसरा बाधक हमारे हिंदीग्रंथप्रकाशकोंका निरुत्साह हुआ। हमने कई हिंदीग्रंथ प्रकाशकोंसे इस उपन्यासको प्रकाशित करनेकी प्रार्थना की, पर

किसीने हमारी प्रार्थना स्वीकृत न की । अंतमें हिंदीके भुवनविख्यात उन्नायक स्वकुलकमलदिवाकर वैश्यकुलरत्न श्रीयुत सेठ गंगाविष्णु श्रीकृष्ण-दासजीने इस उपन्यासको निजके व्ययसे प्रकाशित कर हमारी चिरोत्थित लालसाको परिपूर्ण किया । हम एतदर्थ उक्त सेठजीको जितने धन्यवाद दें उतने थोड़ेही हैं । सर्वशक्तिमान् जगदीश्वरसे हमारी प्रार्थना है कि वह उक्त सेठजीको इस व्यवसायमें लाभप्रदान कर उनकी मनस्तुष्टि करे ।

ग्रंथावलोकनप्रिय लोगोंको यह विदितही है कि, करुणरस वर्णन करनेकी हथौटी भवभूतिको भली भांति सधी हुई थी । यही कारण है कि इस ग्रंथमें उक्त रस जहां २ वर्णित हुआ है, वहां २ वह पूर्ण रूपसे आविर्भूत हुआ है । शाकुंतलादि ग्रंथ बहुत उत्तम माने जाते हैं, पर उन-मेंभी समस्त रसोंका समावेश नहीं दीख पडता । परंतु इस ग्रंथमें* बीभत्स और रौद्रादि रस कि जिनका यथावत् वर्णन करना बडा पार्थिव कार्य है, अत्यंत उत्तमतया वर्णित हुए हैं । तात्पर्य कविने इस ग्रंथमें शृंगारादि रसोंका यथोचित स्थानपर परमोत्तम वर्णन किया है ।

इस ग्रंथकी नायिका एक भले मानुसकी लडकी थी और वह माधवपर आसक्त हो चुकी थी; पर तौभी उसे यह विश्वास नहीं होता था कि माधवके साथ मेरा विवाह हो जायगा । माधवके साथ उसका परिणय हो इस विषयमें उसके माता पिताकी पूर्ण रूपसे अनुमति थी, तौभी उसके पिताका स्वामी राजा चित्रसेन चाहता था कि वह (मालती) हमारे ठठोलके पुत्रको दी जाय । इधर मालतीने यह निश्चय कर लिया था कि यदि उसे माधव न प्राप्त हुआ तौ वह अपने प्राणोंको न रखेगी । और साथही उसने यहभी प्रण कर लिया था कि पिताकी चोरीसे विना उनकी सम्मति मैं अपना हेतु कदापि पूर्ण न करूंगी कुलीन एवं सद्धर्मपरायण कन्याका पावन आचरण किस प्रकारका होता है. यह जाननेकी जिसे इच्छा हो, वह इस ग्रंथकी नायिका मालतीके विशुद्धा-चरणको मनोनिवेशपूर्वक पढे, विचारे और उसका मनन करे ।

कामंदकी कार्य्यसाधनमें अत्यंत निपुण एवं परम चतुर थी; पर तौभी पिताके विना जाने विवाह करनेको उद्यत करनेके लिये मालतीको अनुकूल करनेमें उसे बहुत परिश्रम करने पडे । मालतीको सानुकूल कर लेनेके लिये उसने जिन २ साधनोंकी शरण ली और उनके विषयमें

* अर्थात् कविवरभवभूतिप्रणीत "मालतीमाधवमें"

मालतीने जो २ उत्तर दिये वे सब स्वर्णाक्षरांकित करने योग्य हैं। सारांश माता पिताकी इच्छाके विपरीत काम करनेमें सहमत न होनेवाली, असह्य दुःखोंको सहन करनेवाली यही एक नायिका पायी जाती है। यह अनुपम कही जाय तौभी स्यात् बाहुल्य न होगा। संप्रति संस्कृत तथा भाषामें जो नाटक और उपन्यास उपलब्ध होते हैं, उनमेंभी मालतीकी उपमा देनेके योग्य कोई नायिका बहुधा नहीं पायी जाती। कुलीन, शालीन, परम चतुर तथा माता पिताकी आज्ञानुकारिणी लडकीके आदर्श स्वरूप सदाचरणका जिसे पठन पाठन करनेकी उद्दीम इच्छा हो, वह इस ग्रंथकी नायिका मालतीकी निष्कलंक चरितावलीको पढ अपनी मनस्तुष्टि कर सकता है।

अंतमें हम हिंदीके समस्त विद्वज्जनधुरीण पंडितप्रकांडोंकी सेवामें सानुनय निवेदन करते हैं कि यह अनुवाद हमारा ग्रंथलेखनपथमें प्रथम साहसकार्य होनेके कारण, संभव है कि इसमें भाषाप्रणालीविषयक तथा औपन्यासिक कुछ दोष हो गये होंगे; तदर्थ आप लोग हमें क्षमा प्रदान कर उन दोषोंकी सप्रमाण सूचना दे हमें अनुगृहीत करेंगे। जिससे कि पुनः यदि हम उपन्यास लिखें तो वैसे दोषोंसे अपने ग्रंथको दूषित न होने देवें।

इस उपन्यासके प्रुफ यदि हम देख सकते तो संभव था कि इसमें अक्षर संकलित करनेकी इतनी त्रुटियां न होने पातीं। पर वह काम किसी कारण विशेषसे असंभव होनेके कारण हो न सका। एतावता हम अपने अनुग्राहक पाठकमात्रोंसे प्रार्थना करते हैं कि ग्रंथ पढनेके पूर्व यदि वे लोग शुद्धाशुद्ध पत्रकानुसार ग्रंथमें त्रुटियोंको सुधार लेंगे तो ग्रंथ पढती बार उन्हें भ्रम नहीं होने पावेगा।

होशंगाबाद
मध्यप्रदेश
३०-६-१९०१

गंगाप्रसाद अग्निहोत्री
नागपुर-निवासी।

---

१ "निबंधमालादर्शको" हमने इसके पश्चात् अनुवादित किया था, पर वह इसके पहिलेही नवलकिशोर छापेखाने लखनऊमें छापा गया, और वहींसे ॥=) में मिल सकता है।

डकारके नीचे प्रायः बिंदु नहीं लगाया गया है, विचारशील पाठक उसे यथास्थानपर अपनी २ प्रतिमें सुधार लेंगे।

पाठकगण ! आपलोग ऊपर जिस बालककी बालछविको देखते हैं, उसीके अस्तित्वसे हम कलतक इस दुःखसे ओतप्रोत भरे हुए संसारमें पुत्रवान् कहे सुने जाते थे। पर हा! आज सहसा हम पुत्रहीन हो गये!! हृदयहीन कुटिलकालकी निठुरता निःसंदेह असीम है।

विधिका विधानभी बडाही विचित्र है। हृदयवान् पाठकगण! जैसे जैसे इस उपन्यासके पृष्ठ छपकर हमारे पास आते जाते थे, यह बालक हमसे कहा करता था "कि दादा! हमारी तसबीर इस पुस्तकमें छपवा देव"। क्या विधिको यही स्वीकृत था कि कलही इस उपन्यासके अंतिम पृष्ठ छपकर आवें, और कलही यह बालक पंचत्वको प्राप्त हो? अस्तु।

हा! बाबू[1]! तुम अपनी उद्दीम लालसाको पूर्ण होते इस संसारमें न देख सके, पर उसकी पूर्तिको, हम अपना कर्त्तव्यांश समझकर, पूर्ण कर देते हैं।

होशंगाबाद १४-८-१९०१ अधिकश्रावण कृ. अमावास्या सं. १९५८	पुत्रशोकाकुल **गंगाप्रसाद** अग्निहोत्री।

---

१ इस लडकेका नाम रामचरण था; परंतु यह हमारी ज्येष्ठ संतान होनेके कारण शिष्टजनप्रथानुसार हमारे कुटुंबके लोग इसको "बाबू" ही कहकर पुकारते थे। इसका जन्म सं. १९४९की कार्तिक शुक्ला पौर्णिमाको भृगुवारके दिन हुआ था। इसका लहुरा भाईभी गत २६ अप्रैलको सात महीनेकी अवस्थाका होकर जाता रहा!!!

प्रणयिमाधवका शुद्धिपत्र.।

पृष्ठ.	पंक्ति.	अशुद्ध.	शुद्ध.
१	६	गडोङ्गीनाल-माला	गण्डोङ्गीनालि-माला
२	१	उन्होंने	उन्हें
,,	१०	योग्य था	योग्य है
,,	२५	करनेक	करनेके
५	८	स्त्रीपुषोमें	स्त्रीपुरुषोंमें
६	५	द्धब	बद्ध
८	१९	यशलाभ	यशालाभ
९	३	उदारचेतरभी	उदारचेताभी
,,	१२	बढ़ती	बढ़ाती
१०	१७	पद्मावतीमे	पद्मावतीमें
१८	१३	होती है	होती हैं
१९	११	तुम्हे क्यो	तुम्हे क्यों बाध्य
२०	४	पड रहे	पडे रहे
,,	१७	सबसे	सबको
२१	२६	मकरंदोद्यान	मदनोद्यान
,,	५	परिसखी	सखी
२३	९	कराला	करालाके
२४	२१	मकरंदोद्यान	मदनोद्यान
२९	२०	मनष्योकी	मनुष्योंको
३१	१८	प्रियकर	प्रियवर
,,	२६	मालुम	मालूम
३२	१६	वही यह	वही यह है
३३	१७	कहां	कहा
,,	२१	मालुम	मालूम
३४	६	धारण कर	धारण कर मैंने
३५	३	अवगाह न	अवगाहन
४०	२८	उसे	उन्हे
३९	२१	साक्षात्कारको	साक्षात्कारकी
४२	१	जाती	जाति
,,	११	मंदारिकाको	मंदारिकाका
४३	२२	सकेगा	सकेगी
४४	१३	ज्ञात होता	ज्ञात होता है
४५	८	मघावको	माधवको
,,	१३	वे	वह
४७	१७	उधरहीको	उधरहीसे
४८	२७	उसे	उन्हें
५०	१९-२३	हतोटी	हथौटी
,,	९	मनको	मनको तूने
५२	२७	परमन	पर मन
,,	१४	मुझे	तुझे
५३	३	पद्मको	पद्माको
,,	१५	पुष्पकोंभी	पुष्पोंकोभी
५५	१	परामर्ष	परामर्श
,,	२२	सो किया	सो उसने किया
५६	१७	आयी है	आयी हैं
५७	२५	प्रियसमागमकी	प्रियसमागमका
६०	१६	कहीं	कहा
६१	४	उसे	उन्हे
,,	१७	करे	करें
,,	१८	घटनाये	घटनाएं
,,	२८	बराय	वर
६२	५	सुहृत	सुहृत्
६३	९	की	०
६६	१५	पहुंचनेतक	पहुचतेतक
६७	२७	चनकर	चुनकर
६९	१२	अनुसंधान कर	अनुसंधान न कर
७०	१२	सोगद	सौगंद
,,	२१	छड	छेड़
७१	८	सती शिरो-मणि	सती-शिरो-मणि
७२	८	आपुन	अपुन
,,	१८	स्मरण	स्मरण कर
७३	१	फूल	फूल तूने
,,	२३	है	हैं
७४	१६	मुडकदार	सारगर्भित
७७	१८	है	हैं
७८	१२	मलयानल	मलयानिल
८०	४	उस	उसने
८३	१०	दौड़कर	दौड़कर वह
,,	१७	बुद्धिरक्षिता	बुद्धिरक्षिताने
,,	२०	करती	करतीं

पृष्ठ	पंक्ति.	अशुद्ध.	शुद्ध.
८४	२२	अनुकृत	उपकृत
८९	११	मंसुबा	मंसूबा
९८	१६	तमालपुष्प-गुच्छकोंके	तमालपुष्प-गुच्छकोंकी
१००	६	खींच	खिंच
१०२	१	पाये	पा यह
,,	४	पहिरी	पहिर रही
१०८	९	खड्गे	खड्गको
१०९	१	वे	वह
११०	१२	तुम्हारे	तुम्हारा
१११	१	विकार	विचार
,,	२१	पडता	पड़ता है
११४	१७	नाम	नाम ले
,,	२०	स्वस्थ न	स्वस्थ
११८	२	होने चाहिये	होते
११९	९	रेहे	रहे
,,	२५	चूका	चुका
१२०	२	पुरदेवताकी	पुरदेवताके
१२१	७	चलो चले	चलो चले
,,	१३	वर्णनीय	अवर्णनीय
१२४	२७	(भूरिवसु) ने	(भूरिवसुने)
१२६	१	इन्ही	इन्हीं
,,	३	चलो चाहे	चलो
१२७	२०	रहे हैं,	रही है,
१३४	६	मारी	मरी
१३९	२३	पास पडोसकी	पार पडोसकी
१४०	११	जाती थी ।	जाती थीं ।
१४२	१६	सके	सकें
१४४	३	युक्तिका	युक्तिका वे
,,	४	करने लगी	करने लगीं
१४६	२८	मनके	मनकी
१५०	१२	उसका	उसकी
,,	१५	मुझे	मुझ
१५१	७	लवंगिका	लवंगिकाको
१५५	२६	लड्डू खा	लड्डू खिला

पृष्ठ.	पंक्ति.	अशुद्ध.	शुद्ध.
१७०	२२	प्रज्ञान	प्रदान
१७२	१	शवकारण	शवका रण
१७५	१७	साहसकार्य्य	साहसकार्य्य कर
१७७	१५	शांत्वना	सांत्वना
१७९	१९	भिन्न	भिन्न २
१८१	१५	हो जाता	होता
१८२	७	भटकनेके	भटकनेके उसे
,,	१८	च्छायाका	छायाका
,,	२१	दे	दें
,,	२५	च्छायामें	छायामें
१८७	१६	प्रबोधिवा-क्योंसे	प्रबोधवा-क्योंसे
१९४	११	वही	वहीं
,,	१४	उसे अपने	मै अपने उस
२०१	२४	जानेके	जानेकी
२०५	१७	चल कुछ	चल
२०७	६	शांत्वना	सांत्वना
२०९	१	रही थी	रही थीं
२११	२१	शांत्वना	सांत्वना
,,	२५	हुआ	हुई
२१५	९	योगके	योगसे
,,	१५	थी	थीं
,,	१७	,,	,,
,,	१८	है ?	हैं ?
,,	२१	स्थानपर	स्थानपर यह
,,	,,	ले गयी	ले गयीं
,,	२२	शांत्वना	सांत्वना
,,	२५	पडती है	पड़ती हैं
२१९	६	अयोग्य	योग्य
२२१	१४	वार्त्ताहरने	वार्त्ताहर
,,	१५	जा	गया और
२२२	२८	पुत्रीका	पुत्रीकी
२२४	३	बिदाई	बिदाईकी
२२५	३	सांत्वना कर	सांत्वना कर वह
२२७	१	बनाया	मनाया

श्रीगणेशाय नमः ।

प्रणयी माधव ।

पहिला परिच्छेद ।

सानंदं नंदिहस्ताहतमुरजरवाहूतकौमारबर्हि-
त्रासान्नासाग्ररंध्रं विशति फणिपतौ भोगसंकोचभाजि ॥
गंडोड्डीनालिमाला मुखरितककुभस्तांडवे शूलपाणे
र्वैनायक्यश्चिरं वो वदनविधुतयः पान्तु चीत्कारवत्यः १

विदर्भदेशमें[1] कुंडिनपुरसंज्ञक एक बडा भारी नगर था और उस देशकी राजधानीका मुख्यस्थानभी वही था। वहां एक सुविशाल पाठशाला थी, विद्यादेवीकी आराधना करनेकी इच्छासे भिन्न भिन्न देशोंसे विद्यार्थिगण वहां आकर ठहरे हुए थे। उनमें देवरात और भूरिवसु नामके दो ब्राह्मणकुमार थे। एक स्थानमें अध्ययन करना रहना इत्यादि कारणोंसे और चिरकालसों एकत्र वास एवं परस्परकी रहन सहन एक दूसरेको अभीष्ट होनेके कारण उन दोनोंमें मित्रता हो गई थी। यह दोनों मित्र प्रत्येक कार्य्यको एक सम्मति एवं विचारसे किया करते थे।

पूर्वकालमें पुरुषोंकी नांई स्त्रियांभी आजन्मपर्यंत अविवाहित रहकर विद्याध्ययन और तपश्चर्य्यामें अपना आयुष्य व्यतीत करती थीं। पर देवरात और भूरिवसुके समयमें उक्त प्रथामें थोडासा हेरफेर हो गया था। अर्थात् स्त्रियोंको—वे प्रौढताको प्राप्त हों तबतक—अविवाहितदशामें रहकर विद्याध्ययन करने देते थे।

---

1 आधुनिक संशोधक लोगोंकी सम्मति है कि सप्रति जिसे ' वराड ' कहते हैं वही विदर्भदेश है और यह युक्तियुक्तभी दीख पडता है। पर उस देशकी राजधानी कुंडिनपुरके विषयमें अद्यावधि कुछ विशेष परिचय नहीं मिलता।

परन्तु अनंतर उन्होंने अविवाहित न रहना चाहिये, ऐसा नियम हो गया था।

इस समय भारतवर्षमें बौद्धधर्मका विशेष उत्कर्ष न था, तौभी सामान्यतः वैदिक और बौद्धधर्मकी समानताही थी। प्रत्येक ग्राम वा नगरमें उक्त उभयधर्मावलंबी लोगोंकी संख्या न्यूनाधिक प्रमाणसे पाई जाती थी और उभय धर्मके लोग समानही थे। कुछ रजवाड़े बौद्धधर्मके थे और कुछ वैदिकधर्मके अतः उभय धर्मोंकी प्रधानता मानी जाती थी।

अन्य सब घटनाओंकी अपेक्षा इस समय एक प्रचंड परिवर्त्तन हुआ था और वह ध्यानमें रखने योग्य था। वह यह कि, बिलकुल पहिले पहिल अर्थात् बौद्धधर्मकी उन्नति होनेके समय, वैदिकधर्मानुयायी लोग बौद्धोंका नितांत द्वेष एवं उनकी छलना करते थे, सो वह निंद्य घटना इस समय बिलकुल नहींसी हो गई थी। वैदिकधर्मने अपने आसपास एक सुदृढ कोट बना लिया था इस कोटमें आनेके लिये एकही द्वार था और जो मनुष्य उक्त द्वारद्वारा उक्त दुर्गमें आ जाता वह बाहर अर्थात् अन्य धर्ममें जा सकता था; पर बाहरके मनुष्यको उक्त दुर्गमें आनेके लिये कहींसेभी मार्ग न था।

बौद्धधर्मकी दशा इसकी अपेक्षा बिलकुलही भिन्न थी। उसे परचक्रादिसे बिलकुल भयकी आशंकाही न थी, मानो इसीलिये उसने अपने आसपास कोट वा गढी आदि बनवानेके लिये यत्किंचित्भी यत्न नहीं किया। इतनाही नहीं वरन उसने आत्माधिकारकी सीमातक नियत न की थी! बौद्धलोग तो यही मानते थे कि समस्त विश्वमें हमाराही अधिकार है; और प्रतिपक्षियोंसे युद्ध करते समय दुर्गादिका आश्रय न ले खुले मैदानमें सामना करनेक लिये प्रस्तुत रहा करते थे। यही कारण है कि सदैव उनके पक्षको बहुत सहायता मिला करती थी।

सर्वकाल ऐसाही चलते रहेगा तो कालांतरमें अपनेको संज्ञा-

शेष हो जाना पडेगा मानो ऐसाही समझ बूझकर, इस समय वैदिकधर्म्मने अपने आसपासके कोटमें बहुत द्वार बना लिये। और पहिले केवल भीतरका मनुष्य बाहर जा सकता था; पर बाहिरस्थ भीतर न आ सकता था, इस कठिनाईको संप्रति प्रायः नहींसा कर दिया। बहुतेरोंकी सम्मति है कि वैदिकधर्मने स्वयं अपनी इच्छासे अपने कोटमें द्वार नहीं बनवाये, बौद्धलोगोंने वारंवार उनपर आक्रमण कर उनके कोटमें सैकडों स्थानपर उसे तोड फोड दिया। इस दशाको देख वैदिकोंने आपसमें विचार कर कदाचित् यह अपना कोट समूल नष्ट हो जायगा इस भयसे विपक्षियोंसे संधि कर कुछ थोडेसे दरवाजे रखकर शेष कोट दुरुस्त करा लिया! यह वार्त्ता कैसीही हो; पर इस समय दोनोंका रिपुभाव नहींसा हो परस्पर मित्रतापूर्वक सुख शांतिके साथ रहते थे और परस्परमें आदानप्रदान अव्याहत रीतिसे चला जाता था, ऐसा माननेमें कोई क्षति नहीं है।

इस प्रकारकी दशा होनेके कारण धर्मके संबंधसे लोग स्वेच्छानुकूल वर्त्ताव करते थे। अर्थात् वैदिक धर्मावलंबी मनुष्यको बौद्धधर्मका स्वीकार करनेकी इच्छा हुई तो वह तत्क्षण वैसा कर सकता था; और बौद्धधर्मवालेको वैदिकधर्म स्वीकृत करनेकी इच्छा हुई तो उसेभी वैदिकलोग अपने धर्ममें ले लेते थे, और दोनोंका व्यवहार एकत्र होता था।

देवरात और भूरिवसु ये दोनों मित्र जिस पाठशालामें अध्ययन करते थे, उसीमें कामंदकी और सौदामिनी नामकी दो कुमारिका विद्याध्ययन करती थीं। इस समय स्त्रीपुरुषोंको विद्याध्ययन करनेके लिये समसमान स्वतंत्रता थी, और दोनोंको एकही स्थानमें रह कर अध्ययन करनेके लिये कोई निषेध न था और एतद्विषयमें किसीको शंकाभी न होती थी। एतावता उक्त पाठशालामें बालक बालिका एकही स्थानमें रहकर आनंदपूर्वक अध्ययन करते थे। देवरात और भूरिवसुमें

जैसा स्नेह संपादित हो गया था उसी प्रकार कामंदकी और सौदामिनीमेंभी विशेष मित्रता हो गई थी। आगे एक साथ रहते २ इन उभय कुमारिकाओंका उक्त उभय कुमारोंके साथ परिचय हो कुछ दिनोंमें उनमें अकृत्रिम मित्रता हो गई। ये चारों खाने पीने चलने फिरने और विद्याध्ययनादि कार्य्योंको बिलकुल एक विचार एवं सम्मतिसे किया करते थे। चारोंभी ब्राह्मणकुलोत्पन्न थे और कुलशीलादिमेंभी कोई किसीसे न्यूनाधिक न था। चारोंको एक दूसरेका स्वभाव और चालचलन अभीष्ट होनेके कारण उत्तरोत्तर उनका स्नेहसंबंध वृद्धि लाभ करता गया।

उन चारोंका यह स्नेह यद्यपि अत्यंत निष्कृत्रिम था और उसमें किसीभी प्रकारका विशेष हेतु बिलकुल न था; तथापि उसका परिणाम एक निरालेही प्रकारका न हुआ होता ऐसा दृढतापूर्वक नहीं कहा जा सकता। क्योंकि एक स्थानमें दीर्घ काललों स्थिति होनेके कारण उन्हें परस्परके स्वभावादिकका भली भांति परिचय हो गया था। ऐसी दशामें विद्याध्ययन परिसमाप्त होनेपर उक्त कुमार और कुमारिकाओंकी मित्रताको स्त्रीपुरुषत्वका रूप प्राप्त होनेकी प्रबल संभावना थी। और इस प्रकारके उदाहरण प्राचीन इतिहास ग्रंथोंमें बहुत उपलब्ध होते हैं. इसके व्यतिरेक ये बातें मानवी स्वभावके विरुद्ध हों सोभी नहीं है।

सारांश देवरात, भूरिवसु, कामंदकी और सौदामिनीका इस समय संकेत निश्चित हो छात्रावस्था उत्तीर्ण होनेपर उनका विवाह हुआ होता; पर इन कुमार और कुमारिकाओंके भावी जीवनयापनविषयक विचार परस्परमें अत्यंतही भिन्न थे। अर्थात् देवरात और भूरिवसु ये दोनों इस विचारमें निमग्न थे कि पूर्ण विद्वान् हो गृहस्थाश्रमका आश्रय ले संसारमें कीर्ति एवं मानमान्यता प्राप्त करनी चाहिये; इस प्रकार उनकी प्रवृत्तिमार्गकी ओर विशेष आसक्ति थी; और कामदंकी और सौदामिनीको

जगज्जालसे घृणा थी। छात्रयात्रा समाप्त होनेपर ईश्वरसेवा और अन्यान्य परोपकारी कार्य्योंमें समय बिता आयुष्यकी सार्थकता करनी चाहिये ऐसा उनका दृढ निश्चय हो गया था।

इस प्रकार दोनों कुमारोंका प्रवृत्तिमार्ग और दोनों कुमारिओंका निवृत्तिमार्गकी ओर विशेष झुकाव था। उत्तरोत्तर वे प्रौढ़-दशाको प्राप्त होते जाते थे, और इस समय उनके वर्त्तावमें किसी विशेष प्रकारके हेतुके उत्पन्न होनेकी संभावना होनेपरभी भावी जीवनयात्रा बितानेका मार्ग परस्परका अत्यंत विभिन्न होनेके कारण उस प्रकारका कोई हेतु संभूत न हुआ। समवयस्क स्त्रीपुरुषोंमें विशेष मित्रता अंकुरित हुई तो उनमें प्रायः दो प्रकारके मनोविकारोंकी स्थिति रहनीही चाहिये। अर्थात् वे स्त्रीपुरुष दंपतिभावसे परस्परपर प्रेम करेंगे वा भाईबहिनका नाता मान प्रेम करेंगे इसके व्यतिरेक तीसरे प्रकारकी संभावना नहीं है क्योंकि प्रीति कभी ना कभी नातेके रूपसे परिणाम फलको प्राप्त हुए विना नहीं रहती!

देवरात, भूरिवसु, कामंदकी और सौदामिनीके हेतु परस्परके विरुद्ध होनेके कारण उनकी उस प्रीतिने दंपतिरूपका स्वीकार न कर बहिनभाईके रूपको अंगीकृत किया, तात्पर्य्य वे दोनों कुमार और दोनों कुमारिकाएं बहिन भाईके नातेसे आपसमें वर्त्ताव करने लगीं। यही उक्त कुमार कुमारिकाओंकी प्रीतिका परिणाम हुआ। पर उन दोनों कुमारोंकी प्रीतिने इससे निराला रूप ग्रणह किया था। देवरात और भूरिवसु ये दोनों विद्यार्थिदशामें थे और अविवाहित थे। अर्थात् मातापिताकी आज्ञा मान उनकी इच्छानुकूल उन्हें रहना उचित था। उन दोनोंका विचार था कि आपसमें अपना कोई संबंध हो जाय, पर उसके विषयमें वे कोई निश्चय न कर सके क्योंकि वह बात उनके स्वाधीनकी न थी। अतः उन्होंने अपनी संततिके संबंधमें निश्चय किया। वह यह कि दोनोंमेंसे जिसे कन्या होगी उसने जिसे पुत्र होगा उसको उसे

देना चाहिये। अर्थात् भूरिवसु वा देवरात इन दोनोंमेसे जिसे कन्या होगी उसने उसे दूसरेके पुत्रके साथ विवाह देना चाहिये, और उसने उसका ग्रहण करना चाहिये, ऐसा दोनोंने गुरुभगिनी कामंदकी और सौदामिनीके समीप निश्चय कर परस्परमें समधीका नाता करनेके लिये परस्परको वचन दृढ किया।

इन चारोंकी बुद्धि उत्तम तथा ग्रहणशक्तिसंपन्न होनेके कारण अन्य साथके पढनेवालोंकी अपेक्षा विद्यामें इनकी गति विशेष हो गई थी। उन्होंने पाठशालामें गुरुकी आज्ञामें दृढ रह ध्यानपूर्वक अपनी विद्या परिपूर्ण की। और आजपर्य्यंत ब्रह्मचर्य्यमें दिन बीते और अब दूसरे आश्रमका स्वीकार करनेके दिन निकट आये। विद्याभ्यासकी पूर्णता देख गुरुजीने उन चारोंको स्वेष्टमार्गका स्वीकार करनेकी आज्ञा दी।

देवरात और भूरिवसुमें कौनसा नाता निश्चित हुआ सो ऊपर उक्त होही चुका है। गुरुजीकी आज्ञा पा चारोंभी अपने २ स्थानको यात्रा करनेके लिये प्रस्तुत हुए। देवरात और भूरिवसुको गृहस्थाश्रमका स्वीकार करना था अतः वे अपने घर जानेके लिये सिद्ध हुए। कामंदकी और सौदामिनीको संसारसे विरक्त रहना था; अतः उन्होंने बौद्धधर्म अंगीकृत करनेके लिये निश्चय किया। क्योंकि वैदिकधर्म्ममें–विद्याध्ययन पूर्ण कर स्त्रियोंको अविवाहित न रहना चाहिये, ऐसा निर्बंध होनेके कारण, निरुपाय हो उन्हें बौद्धधर्म्मकी शरण लेनी पडी! इस समय उभय धर्म्मोंके विषयमें न्यूनाधिक्यता न होनेके कारण बौद्धधर्म्मका स्वीकार करनेमें उन्हें यत्किंचित्भी कठिनता न बोध हुई। इस प्रकार चारोंकी तय्यारियां हुई।

गृहस्थाश्रम साधारणतः अन्याश्रमी लोगोंके लिये आश्रयभूत है। तिसपरभी स्त्रियां तो प्रायः पुरुषोंपर अवलंबित रहती हैं। ऐसा समझकर गृहस्थाश्रमके स्वीकारकी इच्छा करनेवाले देवरात और भूरिवसुने विरक्त होनेवाली कामंदकी और सौदा-

मिनीसे प्रार्थना की कि यदि भवितव्यतावश योगायोग उपस्थित हो जाय तो तुम दोनोंने हमारे गृहोंको निजस्थितिद्वारा पुनीत करना, स्नेहपाशबद्ध होनेके कारण उन दोनोंने उक्त प्रार्थना स्वीकृत की। अनंतर एक दूसरेसे प्रेमपूर्व्वक मिल भेंटकर अपना वियोग न हो ऐसी उद्दीम इच्छा होनेपरभी पुनः एकत्र वास करनेके लिये वचनबद्ध हो **देवरात** और **भूरिवसु** अपने २ घर गये; **कामंदकी** और **सौदामिनी**भी बौद्धधर्मके नियमानुसार योग धारण कर मठवासिनी हुईं।

देवरात और **भूरिवसु** दोनोंभी अत्यंत विमल कुलोत्पन्न एवं अतुल विभवशाली तो थेही तिसपरभी अब भुवनविख्यात विद्वान् होनेके कारण उनकी उज्ज्वलकीर्त्ति शीघ्रही चारों ओर विस्तृत हो गई। शीघ्रही उनके योग्य एवं अनुरूप ऐसी सर्वांगसुंदर कन्याओंके साथ उनका परिणय हो वे दोनों गृहस्थाश्रमी हुए। उनकी दिग्व्यापिनी कीर्त्तिको दिनोंदिन वृद्धि लाभ करते देख **विदर्भाधिपति वीरवर्म्मा**ने अपनी भेंटको आनेके लिये **देवरात**से अत्यंत सन्मानपूर्व्वक आग्रह किया। विद्वान् एवं कार्यपटुतासंपन्न व्यक्तिविशेषको राजाश्रयकी अभिलाषा रहतीही है। **विदर्भाधिपति वीरवर्म्मा**की प्रार्थना अंगीकृत कर **देवरात** अत्यंत आनंद एवं विनीतभावपूर्व्वक आपकी सेवामें उपस्थित हुआ। **देवरात**की विद्या एवं व्यवहार दक्षतादि अनुपम गुणोंको देख **वीरवर्म्मा**ने उसे अपने प्रधान सचिवका अधिकार दे समस्त राजकाज उसके आधीन कर दिया और आप आनंदपूर्व्वक नितांत सुखोपभोग करने लगा। **देवरात** ऐसे विद्वान् अथच चतुरव्यक्तिके हाथमें राज्यसूत्रोंके आतेही उसने जिधर उधर ऐसी उत्तम व्यवस्था की कि उसके कारण उसकी

रीतिसे दीवानीकी पगडी पहिराई गई उसी प्रकार भूरिव-सुकोभी पहिराई गई । मालवदेशमें पारा और सिन्धु सरिताओंके संगमके निकट पद्मावती नामकी एक विख्यात नगरी है। मालवदेशकी राजधानीका मुख्य स्थान यही है। इस समय वहां चंद्रकेतु नामका राजा महीपर था । चंद्रकेतुको अपने राज्यकी व्यवस्था अत्यंत उत्तमतया करनेकी उत्कट इच्छा थी। अपने राज्यरीतिमें किसी प्रकारके दोषको स्थान न मिलने पावे एतदर्थ वह रातदिन चिंता किया करता था। उसके पास विद्वान् एवं राजनीतिरहस्यका ज्ञाता अथच विश्वासपात्र कोई मंत्री न था अतः वह सर्वगुणोपेत मंत्रीकी खोजमें बहुत लगा रहता था । जनकिंवदंतीद्वारा भूरिवसुकी ललितोदात्त कीर्त्ति उसे कर्णगोचर हुई। तब वह सायत अपनी इच्छानुकूल कामकाज कर सकेगा ऐसा सोचकर उक्त राजाने उसे बहुमान-पूर्वक अपने यहां बुलवाया और भूरिवसुको स्वेच्छानुकूल पा उसने उसे अपने प्रधान मंत्रीका पद दे सम्पूर्ण राज्यका भार उसको समर्पित कर दिया। भूरिवसुभी बडा चतुर था। उसने राजा और प्रजाको अभीष्ट हो ऐसी गूढ राजनीतिका आश्रय ले अपना कर्त्तव्यसाधन किया और तद्द्वारा राजकार्य्यधुरंधर पुरुषो-चित यशलाभ प्राप्त किया।

इस प्रकार देवरात और भूरिवसु दोनों जैसे अन्य गुणोंमें एक दूसरेके तुल्य थे, वैसेही अधिकार भाग्य और योग्यता आदिमेंभी उन्हें समानता प्राप्त हुई। कुछ कालके अनंतर देवरा-तकी धर्मपत्नी गर्भवती हुई और दस मासमें उसे पुत्ररत्न उत्पन्न हुआ। उसने उसका नाम माधव रक्खा । उसका रूप-माधुर्य्य और गुणसमुच्चय पिताकी अपेक्षा अधिकतर वर्णनीय था। देवरातको पुत्र होनेके दो चार मासके पश्चात् भूरिवसुकी धर्म्मपत्नीने अत्यंत रूपवती एवं सर्व्वलक्षणसंपन्न मालती नामकी कन्याको जन्म दिया। ये दोनों बालक बालिका अपने २ मातापिताको परम आनंद देते हुए दिनोंदिन बढते गये।

माधव जब उपनयनके योग्य हुआ, तब देवरातने बडे समारोहके साथ उसका उपनयनसंस्कार किया । देवरातको जैसीही द्रव्यादिकोंकी अनुकूलता थी वैसाही वह उदारचेतस्भी था अतः उसने उक्त पुण्यकार्य्यमें दान धर्म्म बहुत किया । माधवको जनेऊ होनेके पूर्व्वही साधारणतः लिखने पढने तथा अन्य विषयोंका ज्ञान हो गया था । उपनीत होनेपर वह पाठशालामें जा वेदशास्त्रोंका अध्ययन करने लगा क्रमशः उसका अध्ययन बहुधा पूर्ण हुए कैसाही था; तौभी अभी उसे तर्कशास्त्रका अध्ययन करनेको रह गया था ।

भूरिवसुकी कन्या मालतीभी दिनोंदिन अपने मातापिताके आनंदसमुद्रको जुआर प्राप्त करनेवाले शुक्लपक्षके चंद्रकी नांई बढती थी । जब वह अनुमान सात आठ वर्षकी हुई और उसे लिखने पढनेका बोध हो गया तब उसके पिताने उसे संगीतशालामें भेजा । वहां लास्य[1] गायन चित्र खींचना इत्यादि कलाओंको वह अधीत करने लगी । देवरात और भूरिवसु दोनों उच्चतम राजपदाभिषिक्त थे और उनके पीछे कामकाजकी झंझट विशेष रहा करती थी, और दोनोंके निवासस्थानमें अंतरभी बहुत कुछ था । कामकाजकी गडबडके मारे उनकी भेंट बहुधा वारंवार न हुआ करती थी, तौभी उनके पूर्व्वस्नेहमें अणुमात्रभी न्यूनता न हुई थी । दोनोंभी अपने २ सुख समाचार अत्यंत प्रेमपूर्व्वक परस्परको सूचित किया करते थे और अपने पूर्व्वसंपादित स्नेहसंबंधको अव्याहत रूपसे संचलित रखते थे ।

पूर्व्वसंकेतानुकूल देवरातके यहां पुत्र और भूरिवसुके यहां कन्या हुई अतः उन दोनोंमें रिश्ता होना उचित था पर उसके विषयमें उनके यहां कुछभी लक्षित न होता था दोनोंका स्नेहपाश दृढ होनेके कारण उनके मनमें यह बात दृढ हो गई थी कि मालतीका विवाह माधवके साथही करेंगे ।

---

१ एक प्रकारके नाचनेको लास्य कहते हैं ।

विवाहादि कार्य्योंकी चर्चा प्रायः कन्याके पिताकी ओरसेही प्रारंभ होती है । लड़केका बाप उस विषयमें कितनाही आतुर क्यों न हो पर वह प्रगटमें अपनी आतुरता प्रदर्शित नहीं करता । पुत्रीको उपवर देखकरभी भूरिवसु उसके उद्वाहार्थ कुछ चेष्टा नहीं करता यह देख, स्वतंत्ररूपसे विवाहके योगायोग प्राप्त हों ऐसा विचार कर देवरातने एक दूसरीही युक्ति प्रयुक्त की । माधवको अन्य सब विषय पूर्णतया अधीत हो चुके थे केवल तर्कशास्त्रही अधीत होनेको रह गया था । पद्मावतीस्थ पाठशालामें तर्कशास्त्रकी शिक्षा बहुत उत्तम प्रकारसे दी जाती है, और वहांका तच्छास्त्राध्यापक न्यायविद्यामें बडा प्रवीण है और उसकी शिक्षाप्रणालीभी बहुत उत्तम है तो माधवको पद्मावती नगरीस्थ पाठशालामें तर्कशास्त्रका अध्ययन करनेके लिये भेजना चाहिये, इस निमित्तको प्रधानता दे, उसने उसके पद्मावतीमें रहनेकी व्यवस्था कर दी । माधवके साथ उसके बालमित्र मकरंद और प्रियभृत्य कलहंसादि अनेक परिचारक गण पद्मावतीको भेजे गये ।

माधवको पद्मावतीमे भेज दिया इसमें देवरातके दो हेतु थे । उसका शास्त्राध्ययन हो यह हेतु तो थाही, पर इसके व्यतिरेक उसके मनमें यहभी था कि पद्मावतीमें माधवकी स्थिति होनेके कारण कार्यवशात् वह मालतीका दृष्टिपथाभिगामी होगा; और वारंवार एक दूसरेको देखते रहेंगे तो परस्परमें प्रीति अंकुरित हो परस्परके समागमका योग आपोआप उपस्थित हो जायगा । पर प्रगटमें उसका कुछभी संबंध न दिखाकर केवल विद्याध्ययनके निमित्त उसने माधवको वहां भेज दिया ।

पाठकोंको कामंदकी और सौदामिनीका बुद्ध तपस्विनी होना स्मरणही होगा । जब वे पाठशालामें थीं तब उन दोनोंका अध्ययन समानही था । पर कामंदकीको तर्कशास्त्रकी विशेष अभिरुचि होनेके कारण, उसने अनंतर उस शास्त्रका विशेषरूपसे

अवलोकन कर न्यायशास्त्रमें अत्यंत प्रवीणता प्राप्त की, स्वभावतः उसे राजकीय सूत्रोंके ज्ञानकी बहुतही अभिरुचि थी अतः उसने राजनीतिमेंभी बहुत पटुता संप्राप्त की । सौदामिनीको न्यायशास्त्रका विशेष ज्ञान न था । उसके संपादनार्थ उसे इच्छा होनेपर उसने कामंदकीकी शिष्यता स्वीकृत की । कामंदकीकी अवस्थाकी अपेक्षा उसकी अवस्था कुछ कमही थी। अतः परस्परमें गुरुशिष्यभाव संगठित हो सौदामिनीने कामंदकीके पास न्यायशास्त्रका अध्ययन पूर्ण किया । उसके पश्चात् उसका चित्त मंत्रशास्त्रकी ओर आकृष्ट हो जारण मारणादि प्रयोगोंमेंभी वह बडी दक्ष हुई ।

इन दोनोंके गुरुभ्रातृगण देवरात और भूरिवसु अपने ऊर्जितकालमें सुखमुग्ध होकर इनको भूले न थे वरन वारंवार यही इच्छा प्रदर्शित किया करते थे कि तुम हमारे पास आकर रहो; और इन्होंनेभी उनकी इच्छा पूर्ण करना स्वीकृत किया था । तौभी उन दोनोंने जिस मार्गको अनुकृत किया था वह बिलकुलही निराला होनेके कारण अन्याश्रित हो रहनेके योग्य उनकी स्थिति न थी और यह उन्हें इष्टभी न था । परंतु भाइयोंके हेतु तथा अपने वचनोंकी पूर्णताके लिये वे यदाकदा उनके यहां आया जाया करती थीं और प्रसंगविशेषपर उन्हें योग्य सहायता प्रदान किया करती थीं । वे दोनों प्रधान मंत्री होनेके कारण कभी २ बडे जटिल एवं गूढ राजनैतिक कार्य्य उनके समीप उपस्थित हो जाया करते थे । ऐसे अवसरपर कामंदकीकी न्यायशास्त्रपटुता एवं बुद्धिमानी और सौदामिनीकी मंत्रशास्त्रनिपुणतासे देवरात और भूरिवसुको पुष्कल लाभ होता था । बहुत दिनोंपर्य्यंत उन्होंने अपने रहनेका स्थान नियत न किया था; पर अंततः कामंदकीको पद्मावतीमें और सौदामिनीको श्रीपर्वतपर[1] निवास करनेकी इच्छा हुई और तदनुकूल

[1] 'श्रीपर्वत' कहां था आदिका कोई विशेष खोज नहीं लगता । रत्नावली

वे दोनों उक्त स्थानोंमें रहने लगीं। श्रीपर्वत और पद्मावती नगरीके मध्यमें बहुतही अंतर था। सौदामिनीने वहां मठ बनवा उसे अपनी स्थितिका मुख्य स्थान नियत किया कामंदकीने पद्मावती नगरीकेही बहिःप्रदेशमें एक उत्तम स्थान देख वहां मठ बनवा उसमें वह रहने लगी।

देवरातका पुत्र माधव विद्याध्ययनकेलिये पद्मावतीमें रहता था सो पाठकोंको पूर्वही विदित हो चुका है और उसे यह विदितही था कि मत्पिता देवरात और कामंदकीका विशेष स्नेह है और परस्परमें भाईबहिनका नाता है। यही कारण है कि जब जब उसे अवकाश मिलता तब तब वह कामंदकीके मठमें जा मातापिताके वियोगसे होनेवाले दुःखको पिताकी गुरुभगिनीके लाडचावसे भुलाता। भूरिवसु साक्षात् उसका गुरुबंधु था और उसकी बहुत कुछ लालसा थी कि वह मेरे पास आकर रहे पर उसने वैसा न किया। तौभी वह पद्मावतीमें रहनेकेलिये आई इससे उसे असीमानंद हुआ। कामंदकी भूरिवसुके घर वारंवार जाया आया करती थी और भूरिवसुकी पत्नी मेधावती और पुत्री मालतीभी यदाकदा उसके मठपर आया करती थी पर माधवको मालतीका साक्षात्कार होनेका अवसर कभीभी न मिला।

देवरात और भूरिवसुका पाठशालामें जो निश्चय हुआ था वह कामंदकीके समीपही हुआ था अतः उसे वह उत्तमतया स्मरण था। दैववशात् उसे पूर्ण करनेका अवसरभी उपस्थित हो आया था अर्थात् देवरातके यहां पहीलेही पुत्र उत्पन्न हुआ और भूरिवसुके यहां पुत्री हुई वे दोनों परस्परके मित्र और आपसमें वचनबद्ध हो चुके हैं। दोनोंका स्नेह उत्तरोत्तर वृद्धिलाभ कर रहा है। कुलशील एवं अधिकार अथच संपत्ति आदिमेंभी उभय समानही हैं। देवरातका पुत्र जैसे सर्व्वलक्षणसंपन्नथा वैसेही

नाटिकामेंभी इस पर्व्वतका नाम उल्लिखित हुआ है और वह एक मांत्रिकके संबंधमेंही। तो इससे यही अनुमित होता है कि श्रीपर्वत मांत्रिकोंका स्थान है।

भूरिवसुकी कन्याभी सर्व्वलक्षणसंपन्न थी। सारांश परस्परमें नातेदारी होनेके लिये जो बातें अनुकूल होनी चाहिये वे सब थीं। उसमेंभी ये दोनों सज्जन एवं बडे दृढप्रतिज्ञ थे इसलिये कामंदकीको देवरात और भूरिवसुका शरीरसंबंध देखनेकी अत्यंत उत्कंठा थी; तौभी उसने उसके विषयमें कुछभी यत्न न किया। समय आनेपर उनका विवाह हो जायगा। उस विषयकी मुझे चिंता न करनी चाहिये ऐसा समझकर पहिले वह निश्चित थी; पर शीघ्रही उसे अपने तापसवेषके विरुद्ध कार्य्योंमें प्रवृत्त होनेका प्रसंग प्राप्त हुआ।

पद्मावतीके राजा चंद्रकेतुका अपने प्रधानमंत्री भूरिवसु-पर बहुत विश्वास था। चंद्रकेतुके दर्बारमें एक ठठोल था जिसके पुत्रका नाम नंदन और कन्याका नाम मदयन्तिका था। नंदन रूपगुणसंपन्न था तौभी उसे पचासों डांके थोडेही दिन हुए थे।

एक दिन राजा चंद्रकेतुने चर्चा चलाई कि अब नदंनका विवाह करना चाहिये, तब अमुककी कन्याके साथ विवाह करना चाहिये, अमुककी कन्याके साथ न करना चाहिये इत्यादि प्रकारकी बहुत कुछ बातें हुईं। राजालोगोंका चित्त किसी बातकी ओर बहुत थोडेही काललों रहता है क्योंकि एक बातसे उचटके वह दूसरीकी ओर आकृष्ट हुआ कि पहिली बात तत्क्षण विस्मृत हो जाती है। इस समय नंदनके विवाहकी चर्चा मात्र छिड़ी पर वह उतनेही पर रुककर रह गई। उसके उपरांत पुनः उसका कुछभी उपक्रम न किया गया। हां इतना तो अलबत्ते हुआ कि स्वयं नंदन और उसके नातेदार लोगोंको पूर्णतया विदित हो गया कि महाराजकी इच्छा नंदनका विवाह करनेकी है। ठठोल तो वह थाही। अपने स्वामीको प्रसन्न कर उससे वित्त हरण करना यही उसका प्रधानकार्य्य था। ऐसे मनुष्यको राजा इसका विवाह करता है यह वार्त्ता ज्ञात होनेपर, कितना न आनंद हुआ होगा सो कहनेकी आवश्यकता नहीं है।

नंदन राजाके कृपापात्र ठठोलका पुत्र तो थाही पर राजासाहब स्वयं उसेभी बहुत चाहते थे इसीलिये दर्बारकेसब श्रेणीके कर्म्म-चारीलोग उसके यहां आया आया करते थे और उसे बहुत मानते थे। प्रधानमंत्री भूरिवसुके यहांभी वह बारंवार जाया करता था। बाल्यावस्थामें मालती कई बार उसके दृष्टिपथमें आ चुकी थी और वह उसे भली भांति पहचानता था। संमति उसके उद्वाहकी चर्चा हो रही है। यह देख उसने सोचा कि मुझे उसीके प्राप्त्यर्थ यत्नवान् होना चाहिये। भूरिवसुके समीप इसकी चर्चा की जाय तो सायत वह मान्य करे वा न करे इसकी उसे शंका थी क्योंकि नातेदारी होनेके लिये प्रायः उभय पक्षकी समानता आवश्यक है। यह बात सच है कि नंदन और तत्पिता राजासाहबके विशेष कृपाभाजन थे और उनकी चलतीभी खूब थी। तौभी कितनाही हुआ तो वह ठठोलही था और भूरिवसु प्रधान मंत्री था, तो ऐसी दशामें मेरे पुत्रको अपनी कन्या विवाह दे यह प्रस्ताव भूरिवसुके समीप करनेके लिये नंदनके पिताको साहस न हुआ।

यह तो पीछे कहही चुके हैं कि राजा चंद्रकेतु नंदनका विवाह करनेके लिये प्रस्तुत था। तो उसकी ओरसे भूरिवसुके समीप यदि उक्त चर्चा छेड़ी जाय तो राजाकी बात उसे अमान्य न होगी और इस प्रकार मैं लब्धमनोरथ होऊंगा, ऐसा सोचकर राजाको प्रसन्न पा नंदनके पिताने मालतीके प्राप्त्यर्थ उसकी सेवामें प्रार्थना की कि मेरे पुत्रके योग्य वही कन्या है, और यदि आप प्रस्ताव करेंगे तो भूरिवसुको यह बात अस्वीकृत न होगी; येन केन प्रकारेण मालती नंदनको प्राप्त हो, ऐसी तजवीज करनेके लिये उसने राजाके समीप बहुत घिघियाके प्रार्थना की। नंदन राजाका प्रीतिपात्र थाही, और यदि यहभी कहा जाय कि वह उसे कुछ अंशमें पुत्रतुल्य मानता था तौभी कोई हानि नहीं है। नंदननेभी मालतीकी प्राप्तिके लिये हठ धारण किया।

राजा लोग प्रायः हठी रहते हैं। नंदन और तत्पिताके आग्रहसे चंद्रकेतुने मालतीके लिये भूरिवसुके समीप प्रस्ताव करना स्वीकृत किया; और ' हांमें हां ' मिलानेवाले निकटवर्त्ती दर्बारी लोगोंनेभी इसका पूर्णरूपसे समर्थन किया। नंदन अत्यंतही गुणी है, इसके सदृश पति मिलनेके लिये मालतीको महद्भाग्यशीला होनी चाहिये। कृपानाथकी आज्ञाका अस्वीकार दीवानसाहब कैसे कर सकते हैं। तौ कृपानाथको उचित है कि किसी न किसी प्रकारसे इस कार्यकी ओर दत्तचित्त हो एक बेर इसे कर डालें; इस प्रकारके दर्बारी लोगोंके वारंवारके कहनेको सुन राजासाहबका चित्त इस कार्य्यकी ओर पूर्णरूपसे झुक गया। यथार्थमें कहां नंदनकी योग्यता और कहां भूरिवसुकी! अपनी पुत्रीको वह चाहे उसे दे। इस कार्य्यमें अनपा दर्प क्यों दिखाना चाहिये इत्यादि बातोंका विचार राजाको करना चाहिये था, पर इस बातकी ओर उसका ध्यान नेकभी न गया। अस्तु।

एक दिन दर्बारमें अन्यान्य मंडलीके सन्मुख राजाने मालती नंदनको देनेके लिये भूरिवसुसे प्रस्ताव किया और उसके पोषक बहुतसे कारणभी प्रदर्शित किये। राजाके भाषणकी ध्वनिसे ज्ञात हुआ कि मालती नंदनको व्याह देनेके लिये राजा साहबकी इच्छा मात्र नहीं है किंतु आपका इसमें विशेष आग्रह है; तब भूरिवसु घोर संकटमें पडा क्यों कि यह तो पूर्वहीमें निश्चित हो गया था कि देवरातके पुत्र माधवको मालती व्याही जायगी; और यही बात भूरिवसुके मनमेंभी थी। ऐसी दशामें अपनी कन्या एक ठठोलके लडकेको—कि जो वयोतीत है—देना उसे सर्व्वतोभाव अनभीष्ट हुआ। स्वयं राजा साहबने उसे मांगा है और आपका उसके विषयमें विशेष आग्रह है, ऐसी दशामें मैं यदि आपकी आज्ञा न मानूं तो कदाचित् उसका परिणाम कुछ विपरीत हो ऐसा सोचकर भूरिवसुने विनीतभावपूर्वक बडी चतु-

राईसे उत्तर दे कहा कि कृपानाथ ! इसमें मुझे कहनेहीको क्या है ? पुत्रीपर कृपानाथका सब प्रकार अधिकार है ।

यथार्थमें उक्त वाक्यसे अनुकूल वा प्रतिकूल जैसा हो अर्थ ग्रहण हो सकता है । क्यों कि उसमें नंदनको कन्या देने वा न देनेके विषयमें स्पष्ट रूपसे कुछभी नहीं कहा गया । अतः उक्त उत्तरसे राजा तथा अन्य दर्बारी लोगोंको संतोष मानने योग्य उसमें कोईभी बात न थी, पर हम राजा हैं हमारा कहना भूरिवसुको कदापि अमान्य न होगा ऐसा राजाको दृढ निश्चय होनेके कारण उसने उक्त उत्तरसे यही अर्थ ग्रहण किया कि भूरिवसुने ' कन्या देना स्वीकृत किया ' और इससे उसे अत्यंत आनंद हुआ ।

कर्णपरंपराद्वारा उक्त वार्त्ता समस्त नगरभरमें फैल गयी । मालती नंदनको व्याही जाती है यह वार्त्ता सुन नंदनके हितैषी लोग अत्यंत प्रमुदित हो तदर्थ राजाकी प्रशंसा करने लगे । दीवानसाहब अपनी पुत्रीका विवाह ठठोलके पुत्रके साथ करते हैं यह बात बहुतेरोंको बहुतही अयोग्य जान पडी । वे लोग भूरिवसुको एतदर्थ दूषण देने लगे । अभिप्राय जिसकी जैसी बुद्धि और जिसे जैसा इष्ट था उसकी ओरसे वैसीही इस विषयकी संपूर्ण नगरभरमें चर्चा होने लगी ।

भूरिवसुका यही विचार था कि पूर्वमें देवरातको जो वचन दिया गया है उसीकी पूर्णता हो । पर राजा कुपित न हो और अपनी ओरसे कुछभी चेष्टा न प्रदर्शित कर वह घटना हो ऐसा विचार कर उसने एतद्विषयक अपना सच्चा मनोदय किसीसेभी प्रकाशित न किया । पुत्रीके विवाहके विषयमें यदि कोई उससे कुछ चर्चा करता तो वह राजाको दिया हुआ उत्तर उसे सुना देता पर अंतरंग उसका दूसरा यत्न चलाही था । राजाको यत्किंचित्भी शंका न होने पावे ऐसी साध्य युक्ति द्वारा मालती माधवको व्याह दी जाय इस कार्य्यके सिद्धयर्थ उसने अपनी चतुर गुरुभ-

गिनी कामंदकीको नियुक्त किया था और गुप्तभावसे वह उसे सब प्रकारसे सहायता दिया करता था।

अभीलों कामंदकी इस विवाहकी झंझटमें बिलकुल न पडी थी सो ऊपर कही चुके हैं। भूरिबसु अपनी पुत्री नंदनको देनेवाला है और इस कार्य्यमें स्वयं राजा चंद्रकेतुका आग्रह है, यह बात उसे जब श्रुत हुई तब उसे अपने तापसवेषोचित कार्य्योंकी उपेक्षा कर संसारी मनुष्योंके बखेडोंकी शरण ले, एक विचित्रही व्यूहरचना करनी पडी।

वास्तवमें उसे इस बखेडेमें पडनेकी कोई आवश्यकता न थी; पर देवरात भूरिवसु माधव और मालतीपर उसका निःसीम प्रेम होनेके कारण उसे विवश हो उक्त कार्यके लिये बद्धपरिकर होना पडा। स्नेहपाशबद्ध कामंदकीको उक्त कार्य्यके संपादनार्थ कटिबद्ध होना पडा इसमें आश्चर्य्यही क्या है। तापस वेष धारण कर लेनेपरभी मनुष्यके प्राकृतिक मनोविकारोंका एकाएक दूर हो जाना नितांत दुस्तर है। तिसपरभी दिये हुए वचनोंको पूर्ण करनेके लिये यत्न करना कामंदकी कैसे निरीहका कर्त्तव्य कार्य्यही समझना चाहिये।

ऊपर कही चुके हैं कि कामंदकी बडी चतुर एवं राजकीय कार्य्योंमें अत्यंत दक्ष थी। उसने अत्यंत निपुणताके साथ ऐसी कुछ व्यूह रचना की कि जिसके योगसे राजा तो असंतुष्ट होने न पावे और भूरिवसुभी किसी आपत्तिशरका लक्ष्य न होने पावे और अपना हेतु सिद्ध हो जाय इस कार्य्यमें कामंदकी अपनी अवलोकिता नामकी प्रिय शिष्याकी सहायता लिया करती थी।

एक दिन दोनों अपने मठपर बैठी थीं तब कामंदकीने अवलोकितासे प्रश्न किया कि अतुल विभवशाली देवरातके पुत्र माधवका भूरिवसुकी पुत्री मालतीके साथ परिणय हो जायगा ऐसा तुझे जान पडता है वा नहीं? इतनेमें उसका वामनेत्र फरक उठा। स्त्रियोंके वामनेत्रका स्फुरण शुभसूचक चिह्न है।

इस अनुकूल चिह्नको देख हम जिस कार्य्यकी चर्चा कर रही हैं वह सिद्ध होगा ऐसा सोचकर उसने अत्यंत हर्षपूर्वक कहा कि अवलोकिता! अंतरंग हेतुकी सिद्धिविषयक शंकाके निराकरणार्थही मानो यह मेरा वामनेत्र फरक रहा है। तो इससे यही विश्वास होता है कि निःसंशय कार्य्यसिद्धि होगी।

इसे सुन अवलोकिताने कहा भगवति! मुझे ऐसा जान पडता है कि आपके चित्तको यह एक बडा विक्षेपही हुआ है। मातः! मुझेभी इसका बडा आश्चर्य बोध होता है। फटे टूटे एवं जर्जर तापसोचित भगुवे वस्त्र धारण कर केवल देहरक्षार्थ थोडासा अन्न सेवन करनेवाले आप कैसे निरीह मनुष्योंको ऐसे बखेडेमें क्यों पडना चाहिये? अमात्य भूरिवसु ऐसे कार्य्यार्थ यत्नवती होनेके लिये आपका प्रार्थी होता है और आपभी संसारकी चिन्ताका त्यागकर पुनः इस कार्य्यके अनुष्ठानमें प्रवृत्त होती है यह देख मुझे बहुतही आश्चर्यित होना पडता है।

अवलोकिताके उक्त कथनको सुन कामंदकीने कहा पुत्री! ऐसा मत कह। भूरिवसु मुझे इस कार्य्यमें जो प्रवृत्त करता है सो इसमें उसका अन्य कोई हेतु नहीं है, यह उसपर मेरे अकृत्रिम स्नेहकाही फल है। मैं तो ऐसा समझती हूं कि मेरी समस्त तपश्चर्य्या किंबहुना प्राणोंके व्ययसेभी मित्रका यह कार्य्य मेरे हाथसे हो जाय तो मुझे महत् संतोष होगा और मैं अपनेको धन्य मानूंगी।

कामंदकीके इस कथनसे उसे उक्त कार्य्यानुष्ठानकी कितनी चिन्ता है सो व्यक्त हो गयी, पर उससे अवलोकिताका समाधान नहीं हुआ यह जानकर उसने पुनः कहा कि अवलोकिता! भूरिवसुके लिये मैं इतने यत्न करती हूं यह देख तुझे असाधारण आश्चर्य जान पडता होगा पर उसका मेरे साथ क्या संबंध है सो तुझे अद्यावधि विदित नहीं है। देवरात और भूरिवसुके हितार्थ मुझे नहीं सो कार्य्य करनाही चाहिये। बाल्यावस्थामें जब हम लोग पाठशालामें थे तबसे उनका हमारा स्नेहबन्धन संघटित

हुआ है और उक्त उत्सवके विषयमें बौद्धसंयमिनी और मेरे सामने उन दोनोंने प्रतिज्ञा की है और देवरातने विद्याध्ययनके व्याजसे माधवको जो यहां पहुँचाया है इसमें उसका क्या हेतु है? पाणिग्रहणसंस्कारके विषयमें परस्परमें जो प्रतिज्ञा हो गयी है उसकी भूरिवसुको वारंवार स्मृति होती रहे और अलौकिक एवं उत्तमोत्तम गुणोपेत अपने पुत्र माधवको मालतीके हृदयका अधीश्वर बननेका अवसर प्राप्त हो यही इसका प्रधान हेतु है।

इसे सुन अवलोकिताने पृच्छा की कि यदि ऐसाही है तो अमात्य भूरिवसु अपनी पुत्री माधवको क्यों नहीं देते? ऐसी युक्तियोंका आश्रय ले गुप्तभावसे विवाह कर देनेके लिये वह तुम्हें क्यों करते हैं?

कामंदकीने उत्तर दिया अरी! राजाने नंदनके लिये आग्रहपूर्वक मालतीको मांगा है सो क्या तूने नहीं सुना? भूरिवसु प्रधान मन्त्री है तौभी वह राजाका सेवकही है। ऐसी दशामें वह यदि स्पष्ट रूपसे कह दे कि मैं अपनी कन्या नहीं देता तो कदाचित् राजा साहब उसपर कुपित हों और इसका परिणाम कुछ विपरीत हो, ऐसा सोचकर उसने इस उपायकी योजना की है।

यह सुनकर अवलोकिता अत्यंत आश्चर्य्यचकित हुई। और उसने कहा कि मंत्री साहबके इस बाह्यवर्त्तावसे ऐसा अनुमान होता है कि वे माधवका नामतक नहीं जानते; और लोगभी ऐसाही समझते हैं, पर अंतरंगमें औरही कुछ कार्य्यवाही चल रही है, तो इससे क्या समझा जावे?

उक्त प्रश्नको सुन कामंदकीने हँसकर कहा अरी! तू अबोध है। भूरिवसु बड़ा गंभीर और कार्यपटु है। उसने आगेको जिस युक्तिकी योजना की है, उसमें वहभी मिला हुआ है ऐसी लोगोंको शंकाही न होने पावे इसीलिये उसने इस अज्ञानताके आच्छादनकी शरण ली है, पर अंतरंगमें ये सब उसीकी युक्तियां प्रयुक्त हो रही हैं। अब इस कार्यमें मेरा जो कर्त्तव्य है उसे सुन।

मालती और माधवका परस्पर प्रेम है यह वार्ता समस्त नगर-वासियोंपर विदित हो चुकी है और यही मुझे अभीष्ट है। अब रहा इतनाही है कि ऐसी कोई युक्ति की जाय कि राजा और नंदन जहांके वहीं पड़े रहे और मालती और माधवका पाणिग्रहण संस्कार हो जाय।

मैं इस कार्य्यके संपादनार्थ प्रवृत्त तो हुई हूं पर मैं अपनी सहायताका अंग लोगोंको स्पष्ट रूपसे विदित न होने दूंगी। भूरिवसुका और मेरा स्नेह राजाको श्रुत है। तो जब उसे यह विदित हो जायगा कि इस कार्य्यसाधनके निमित्त मैं यत्न करती हूं तो वह यही विश्वास करेगा कि मैं भूरिवसुकी प्रार्थनासेही इस कार्य्यमें प्रवृत्त हुई हूं। और ऐसा होनेमें भूरिवसुकी हानि होगी और मेराभी सन्मान क्षतिग्रसित होगा; वा अन्य कोई प्रतिकूल परिणाम हो अथवा भूरिवसुके विषयमें राजाका मन शुद्ध न रहे इसीलिये मुझेभी इस समयपर उचित है कि मैं अत्यंत चतुराई एवं निपुणताके साथ इस कार्य्यभागको शेष करूं। बुद्धिमान् मनुष्य अपना आचरण ऐसा रखता है कि बहिरंग वह सबसे अनुकूल जान पड़े और जिन कार्य्योंके योगसे लोगोंको शंका होनेकी संभावना हो उनके द्वार वह बहुत दृढताके साथ बंद कर देता है और अपनेको बिलकुल अलग रख दूसरेको युक्तिसे प्रतारित कर अपना अभीष्ट हेतु सिद्ध कर लेता है और उसके विषयमें कभी किसीके पास चर्चातक नहीं करता। इसी प्रकार मैंभी इस कार्य्यमें दत्तचित्त रहकर अपने अभीष्ट हेतुको सिद्ध कर लूंगी।

उक्त सिद्धान्तको श्रवण कर अवलोकिताने कहा भगवति! आपके इस हेतुको मैंने अनुमानसे इसके पूर्वही जान लिया है। पर आपके श्रीमुखसे इसका ब्यौरा समझ लेनेके निमित्तही इस समय उसकी चर्चा की। भूरिवसु और आपके वारंवारके वार्त्तालापको मैं सुना करती थी उसीसे यह रहस्य मुझे लक्षित हो चुका है।

और इसीका अनुधावन कर मैं किसी ना किसी कार्यके व्याजसे माधवको साथ ले बहुधा मंत्रीके गृहद्वारसे यात्रा करनेका विशेषतः प्रसंग लाया करती हूं।

कामंदकीने कहा हां, इसे मैंभी जान चुकी हूं। परसोंके दिन योंही बात चीत करते करते मालतीकी प्रियतम परिसखी लवंगिकाने मुझसे कहा कि अब इधर थोडे दिनोंसे मंत्रिभवनके निकटवर्ती मार्गसे माधव वारंवार जाया आया करता है। जब जब वह उस मार्गसे आता है; धुर ऊपरवाले मजलेकी खिडकीमें खडी होकर मालती परम उत्सुकतापूर्वक उसकी ओर दृष्टि गडाकर देखा करती है और उसके साक्षात् कामकेसे सुंदर सुस्वरूपको देख मालती रति कैसी उत्कंठित हो तडफती रहती है।

इसे सुन अवलोकिताने कहा; यह सब घटना यथार्थ है ऐसा जान पडता है क्योंकि मालतीने अपने चित्तके विनोदार्थ माधवकी तसवीर उतारी है और लवंगिकाने वह छवि मंदारिकाको प्रदत्त की है।

यह सुन कामंदकीने किंचित् विचार करके कहा 'ठीक ठीक! ऐसा हुआ हो तो यह अनुकूलही हुआ समझना चाहिये क्योंकि माधवका आसन्नवर्ती किंकर कलहंस विहारदासी[1] मंदारिकापर मोहित हुआ है और उसकी प्राप्तिके लिये वह चेष्टा कर रहा है ऐसा मैंने सुना है। लवंगिकाने यदि उसे उक्त प्रतिकृति दी होगी तो वह प्रसंगवशात् कलहंसके दृष्टिपथमें आही जायगी, और वह उसे माधवको देखाये विना न रहेगा। अर्थात् इस तस्वीरको देख मालती मेरे लिये कितनी उत्कंठित एवं प्रेमासक्त हो रही है सो माधवको विदित हो जायगा'।

अवलोकिताने कहा 'भगवति! मैंने आज एक दूसरीही युक्ति कर रक्खी है। मकरंदोद्यान नामकी वाटिकामें आज परम

---

१ बौद्धधर्म्मके संन्यासी और संन्यासिनी जिस स्थानमें रहती हैं उसे विहार कहते हैं। मंदारिका वहीं परिचर्या किया करती थी इसीलिये उसे 'विहारदासी' कहा है।

उत्साह होनेवाला है। वहां आज कई दिनोंसे मदनमहोत्सव मनाया जाता है और आज वह शेष होनेवाला है। मालती अपनी सखीसहेलियोंको लेकर आज वहां जानेवाली है यह सुनकर मैंने माधवके समीप उक्त उत्सवकी नानाविध प्रशंसा कर वहां जानेके लिये उसे उत्साह दिलाया और तदनुकूल वह वहां गयाभी है। अब वहांपर उन दोनोंकी सहजहीमें चार आंखें हो जायँगी ऐसा जान पडता है '।

मेरे अभीष्ट कार्य्यका अनुष्ठान इसने किया यह देखकर कामंदकीने उसकी प्रशंसा कर कहा ' वत्स अवलोकिता! तूने परमोत्तम कार्य्य किया। मेरे कहे विना केवल तर्कनासे मेरे अभिप्रायको जानकर तूने जो यह कार्य्य किया है उसके योगसे तूने आज मुझे मेरी पहिली शिष्या सौदामिनीका स्मरण दिलाया है। वहभी ऐसीही चतुर थी तर्कवितर्कोंके योगसे मेरे अंतरस्थ भावोंको जानकर उनके अनुकूल वह विना कहे सुने कार्य किया करती थी '।

यह सब सुन अवलोकिताने कहा हां लो! अच्छा स्मरण हो आया। मैं तुम्हारे समीप उसकी चर्चा करनेको जब देखो तब भूलही जाया करती हूं। सौदामिनीका वृत्तांत इधर कई दिनोंसे तुम्हें कर्णगोचर न हुआ होगा उसने तो आजकल महान् प्रचंड उद्योगकांड प्रारंभ किये हैं। तुमको तो विदितही होगा कि उसकी अभिरुचि पहिलेहीसे मंत्रशास्त्रमें विशेष थी। अभी कुछ थोडाही काल व्यतीत हुआ होगा कि उसने बडे भारी अनुष्ठानका प्रारंभ किया था और उसकी उसे सिद्धिभी प्राप्त हो गयी है और ऐसा सुननेमें आता है कि संप्रति वह कापालिकके[1] व्रतको धारणकर श्रीपर्वतपर रहती है।

---

१ तांत्रिकमार्गमें भिन्न २ प्रकारके अनेक पंथ है। उन्हींमेंसे कापालिकभी एक है। ये लोग सर्वदा कपालको हाथमें धारण किये रहते हैं इसीलिये इनका नाम कापालिक पड गया है। इन लोगोंके कर्म्म अतीव भीषण होते हैं। उग्र मंत्रका प्रयोग कर मनुष्यको मार डालना तो उनको लिये एक लीलामात्र है। उनके पूजा अर्चादि

यह सुन कामंदकीने उससे जिज्ञासा की कि यह बात तुझे किसने बताई? तब अवलोकिताने उत्तर दिया कि इस नगरके दक्षिणकोणमें एक सुविस्तीर्ण स्मशानभूमि है। वहां कराला नामकी एक नितांत उग्र चामुंडा देवी है। यहां श्रीपर्वतसे कोई साधक आया था वह प्रायः रात्रीमेंही संचार किया करता है, और करालाके स्थानके बगलहीमें एक जंगल है उसीमें उसकी स्थिति है। उसका नाम अघोरघंट है। उसीके साथ कपालकुंडला नामकी एक उसकी शिष्या रहा करती है। वह बारंबार कराला दर्शनोंको आया करती है। उसीने सौदामिनी-का उक्त वृत्तांत मुझसे कहा है।

उपरि कथित वृत्तांतको सुन कामंदकीने कहा ठीक है ठीक है! करालानाम्नी प्रचंड चामुंडा उस स्मशानमें है सो मैंभी सुन चुकी हूं। और लोगोंसे यहभी सुना है कि वह असंख्य प्राणियोंका बलिदान लिया करती है। क्या सौदामिनीका वृत्त तूने उसके स्थानमें श्रवण किया है? तौ तो बहुतांशमें यह वार्त्ता सत्य होनी चाहिये। वह सौदामिनी क्या करेगी और क्या न करेगी इसकी कोई सीमा नहीं है। मुझे तो यही विश्वास है कि वह चाहे सो कर सकेगी।

कार्य्योंमे बलिदानकी अत्यंत आवश्यकता रहती है। अन्य प्राणियोकी अपेक्षा मनुष्योंपर इनकी दृष्टि विशेष रहती है।

१ अभीभी कतिपय अबोध लोग समझते है कि कई स्त्रियां डाकिनी हुआ करती हैं। निदान भारतके उत्तराचलवासी लोगोंकी तो इसमें विशेषकर संमति है इसमें कोई शंकाही नहीं है। लोग कहा करते है कि डाकिनी छोटे २ बालकोंको मारकर खाया करती हैं। कराला उनकी एक देवता है। इसे संस्कृतमें चामुंडा वा डाकिनी कहते हैं।

२ किसी मंत्रका सिद्ध होना अर्थात् जब उसका जप किया जाय तत्क्षण उससे शास्त्रविहित फल प्राप्त हो इसप्रकार मंत्रकी सिद्धि प्राप्त करनेके हेतु जो मनुष्य यत्न करता है उसे साधक कहते हैं। अघोरघंटको औरभी कई मंत्र सिद्ध हो गये थे और इस समय वह औरभी एक मंत्रकी सिद्धिके लिये चेष्टा कर रहा था इसीलिये उसे यहां साधक कहा है।

अवलोकिताने कहा कि वह बिचारी कुछभी करे हमको इन बातोंसो क्या! उसमें हमारी क्या हानि है ? चलो आओ हम लोग अपनी बातें करें । जिस प्रकार मालतीका माधवके साथ परिणीत होना आपको अभीष्ट है, उसी प्रकार माधवके बालमित्र मकरंदका जो अभी अविवाहित है, नंदनकी अमित रूपलावण्यवती एवं उपवर भगिनीके साथ विवाह होनेका बनाव यदि बनि आवेगा तो आपको परम आनंद होगा । और ऐसा जान पडेगा कि औरभी एक दूसरी अभीष्ट सिद्धिका लाभ हुआ ।

यह सुन कामंदकीने कहा कि मुझे आनंद होगा क्या इसमें किसी प्रकारका संशय है ? माधवके संबंधसे मकरंदभी मुझे वैसाही प्रिय है; पर इस विषयमें अद्यावधि मैं उदासीन नहीं रही हूं । मैंने अपनी प्रिय शिष्या बुद्धिरक्षिताको इस कार्य्यके लिये नियुक्त किया है और वह एतद्विषयमें यत्न करती है ।

यह सुन अवलोकिताको अतिशय प्रसन्नता हुई और उसने कहा कि आपने यह बहुतही उत्तम व्यवस्था की है। बुद्धिरक्षिता बडी चतुर है वह इस कार्य्यको किये विना स्वस्थ न रहेगी ।

इसके अनंतर कामंदकी और अवलोकिताने कुछकाल भावी कर्त्तव्यकी चिंतामें व्यतीत कर, माधवकी भेट ले पश्चात् मालतीसे मिलनेको जानेके अभिप्रायसे वहांसे यात्रा की। पाठकोंको यह बात विस्मृत न हुई होगी कि अवलोकिताने माधवको मकरंदोद्यानमें भेजा था । तदनुसार वह वहां गया और वहां वह और मालती परस्परके दृष्टिपथाभिगामी हुए । तबसे उसके हृदयमें उसकी अपूर्व प्रतिमूर्ति अमिटरूपसे इस प्रकार अंकित हो गयी कि वह उसके वशीभूत हो उसके साक्षात्कारके लिये विक्षिप्तसा हो गया । उद्यानसे लौटकर घर आया पर वहां उसकी विरहवेदना अतिशय बढ गयी अतः जिस मदनोद्यानमें मालतीका दर्शन हुआ था वहीं पुनः जा इतस्ततः भ्रमण कर येन केन प्रकारेण शांतिलाभ कर लिया करता था ।

पाठकोंको यह स्मरणही होगा कि **मालतीने माधवकी** जो प्रतिमूर्ति खींची थी सो **लवंगिकाने मंदारिकाको** दी प्रणयि-प्रणयिनीका प्रेमबंधन जब सुदृढ हो जाता है तब परस्परमें किसी प्रकारका पडदा नहीं रहता और अपने प्रेमालापमें वे सब प्रकारके विषयोंकी चर्चा करते हैं । **मंदारिका** यह जानती थी कि मेरा प्रणयी **कलहंस माधवका** परिचारक है और **माधव मालती**पर विशेष प्रेमासक्त है । **मालतीने** हमारी छबि बनायी है यह देखकर **माधवको** परम हर्ष होगा और उसके योगसे वह मेरे प्रणयीपर अतीव प्रसन्न होगा, ऐसा सोचकर **मंदारिका** उक्त प्रतिमूर्ति **कलहंसको** दृष्टिगत करानेके लिये असामान्यरीतिसे आतुर हो रही थी । उसका दर्शन होतेही उसने उसे उसके स्वाधीन किया ।

कलहंसको उक्त चित्रपट प्राप्त होतेही उसे अपने स्वामीको दिखलानेके लिये अतिशय आतुरता हुई । तसबीरको लेकर वह वहांसे तुरंतही प्रस्थित हुआ और शीघ्रही **माधवके** स्थानपर पहुँच गया; पर इस समय **माधव** अपने स्थानपर न था । उसे वहां उपस्थित न पा उसका खोज कहां लगाना चाहिये इस चिंतामें वह चला जाता था । जहां २ **माधव** बहुधा जाया करता था, उसका पता लगा लिया पर वह कहींभी न मिला । **माधवका** खोज लगाते २ वह इतना श्रांत हो गया कि उसका निश्वास शिथिलसा पड गया ।

उसे वाटहीमें **मदनोद्यान** लगा । कुछ काललों यहां विश्राम ले फिर आगेको चलना चाहिये ऐसा विचार कर वह उस बगीचेमें गया । वहां चारों ओर फिरते २ उदास हो कहने लगा कि साक्षात् मदन कैसी असाधारण सुंदरतासे **मालतीके** मनको बावला करनेवाले अपने स्वामीकी टोह मैं अब कहां तौभी लगाऊं । अद्यावधि भ्रमण करते करते मेरे पांव नितांत श्रमित हो गये हैं अतः अब मैं इसी उद्यानमें अपने स्वामीकी मार्गप्रतीक्षा करते

कुछ काललों बैठता हूं। उत्कंठित मनको विश्रांति प्रदान करनेके हेतु कदाचित स्वामीका आगमन यहींको हो जाय तो यहीं बैठना समुचित है ऐसा सोचकर एक वृक्षके निम्नप्रदेशमें वह विश्राम लेनेके लिये बैठ गया।

आज माधव एकाकीही वायुसेवनार्थ गया था। मकरंद सदा उसके साथ रहताही था; पर आज वहभी साथमें न था। मुझे विना सूचित किये माधव एकाकीही कहां चला गया इसका खोज लगानेपर मकरंदको ज्ञात हुआ कि वह मदनोद्यानमें गया है। उसका पता लगानेके हेतु मकरंदभी उस उद्यानमें आ पहुँचा। वहां वह विचार करने लगा कि अवलोकिताने मुझसे कहा था कि माधव इस उद्यानमें आया है पर मुझे यहां भ्रमण करते २ इतना काल बीत गया तौभी उसका कहीं दर्शन होताही नहीं तो अब उसकी टोह कहां लगाना चाहिये? अथवा जब कि वह अत्यंत उत्कंठित हो गया है तो एक देशमें कहींभी उसका मनोरंजन न होगा। अतः इतस्ततः भ्रमण कर किसी प्रकार वह अपना समय काटता होगा। ऐसी दशामें मुझे उचित है कि मैं इस नुक्कड़पर बैठूं क्योंकि यह स्थान ऐसा है कि वह कहींसेभी आवेगा तो उसे यहींसे हो आना पड़ेगा तो यहां निःसंशय उसकी भेंट हो जायगी। और योंही इधर उधर फिरता रहूंगा तो कहींभी उसका खोज पता न लगेगा। ऐसा सोचकर मकरंद उस नुक्कड़पर एक वृक्षके नीचे माधवकी बाट जोहते बैठा।

थोड़ाही समय व्यतीत हुआ होगा कि माधवभी फिरते फिरते वहीं आ उपस्थित हुआ। मानासिक व्यथासे इस समय उसका शरीर बिलकुल कांतिहीन हो गया था। उसे दूरहीसे देख मकरंद अपने मनमें कहने लगा कि हा विधाता! इसकी यह क्या दशा हो गई? इसकी गति कितनी मंथर हो गई है। चारों ओर इतने पदार्थ विद्यमान हैं तौभी मानो वे सब इसे दृष्टिगतही

नहीं होते ! बारबार उष्ण निश्वासका त्याग करता है तो इसे यह हुआ तौभी क्या है ? किंचित् विचारकर पुनः वह सोचने लगा कि इसके विषयमें इतनी मीमांसाही कर्तव्य नहीं है क्योंकि मदनमहीपतिकी दोहाई सर्वत्र एकसी फिरती है । तरुणाई अनेक प्रकारके विकार उत्पन्न करती है । मनोहर मनोहर पदार्थोंको देख उनके विषयमें उत्कंठित होना और उनकी प्राप्ति न होनेपर इस दशाको प्राप्त होना नैसर्गिकही है ।

मकरंद उक्त विचारपरम्परामें मग्नही था कि इतनेमें माधव बिलकुल उसके निकट आ पहुँचा इस समय वह विभ्रांत कैसा हो अपने मनमें विचारता चला आता था कि उस चंद्रमुखी मालतीके सुधापूरित मुखमंडलकी अपूर्व छटाका स्मरण होतेही मेरा चित्त अत्यंत व्यग्र एवं व्याकुल हो जाता है । एक बार उसके प्रेमसमुद्रके सुखसमीरका सेवन कर मेरा विचलित चित्त स्थिरही नहीं होता । देखिये तो कैसे कुअवसरपर मनोजमहाराज-ने मेरी लज्जाको जीत, धैर्यको ध्वस्त कर बिचारशक्तिको नष्टभ्रष्ट कर मेरी कैसी दुर्दशा कर डाली है । इस उद्यानमें मुझे उसके अलभ्य दर्शनोंका लाभ हुआ तभीसे उसके अर्थ मेरा मन लोलुप हो गया । उसके यौवनोचित अपूर्व लावण्य और सौंदर्यकी अनुपम छटाको देख वह ऐसा कुछ विस्मित हो गया कि विस्मय-रसमें मग्न हो वहां अचलभावसे स्थिर हो गया । इस विशाकी इतनी प्रबलता बोध होती थी कि इसके व्यतिरेक अन्य सब विकार नष्टप्राय हो गये हों । असीम आनंदोदधिजन्य लावण्यामृत पान करनेके कारण कदाचित् उसे जड़ता प्राप्त हो गई हो ऐसा जान पड़ता है । वह लावण्यलतिका जब मेरे निकट विद्यमान थी तब मेरे हृदयकी उक्त दशा हो गई थी, पर सम्प्रति उसके अदृष्ट हो जानेके कारण दावानलमें फँसे कैसी उसकी अवस्था हो गयी है । यह कैसा कौतूहल है ! मैं अद्यावधि अकलुषित बाल्याव-स्थामेंही हूं । इस अवस्थामें ये विकार मुझपर आक्रमण क्यों करने

लगे ? इस विचारमें मग्न हो वह चला आ रहा है और मैं आस-
न्नवर्ती होनेपरभी मेरी ओर देखता तक नहीं ऐसा देख **मकरंद**ने
उसे संबोधन कर कहा प्रियवर **माधव**! आगे कहांको जाते हो ?
इधर ऐसे आओ।

किसी विषयकी चिंता करते हुए चलनेवाले पुरुषकी दृष्टि
प्रायः नीचेको रहा करती है । इस स्वाभाविक नियमानुसार
माधव नीचेको निहारता हुआ चला जाता था । **मकरंद**ने
उसे एकाएक पुकारा तो उसने भयभीतकेसा ऊपरको देखा।
इतनेमें **मकरंद**ने आगेको बढकर हँसते २ उसका हाथ पकड
लिया और दोनों परस्परसे प्रेमपूर्वक मिले ।

मकरंदने कहा कि प्रियवर **माधव**! प्रचंडमार्त्तंड ठीक माथेपर
आ अपने असह्य उत्तापसे प्राणिमात्रको संतप्त कर रहे हैं अतः
हमको उचित है कि हम लोग कहीं सघन वृक्षोंकी शीतल छाया-
का आश्रय ले अपने श्रम निवारण कर इस कठिन मध्याह्न सम-
यको व्यतीत करें । उसके इस कथनको **माधव**नेभी स्वीकृत
किया क्योंकि वहभी फिरते फिरते परिश्रांत हो गया था एतावता
दोनोंने स्निग्ध छायासंपन्न वृक्षके अधःप्रदेशमें कुछ काललों
वास ग्रहण किया ।

इधर **कलहंस** थोडीसी विश्रांति ले पुनः **माधव**की टोह
लगानेके लिये प्रस्थित हुआही था कि एक सुंदर बकुल वृक्षके
नीचे **माधव** और **मकरंद** प्रेमालाप करते हुए उसे दृग्गोचर
हुए । **माधव**का दर्शनलाभ कर मनसिजकी व्यथासे आर्त्त नेत्रों-
को सुख देनेके लिये **मालती**ने **माधव**की जो प्रतिमूर्ति उतारी
थी,वह उसे शीघ्र दृष्टिगत करानेके अभिप्रायसे वह उसकी ओरको
झपटा; पर पुनः उसने विचार किया कि दीर्घकालसे परिश्रांत हो
अभी कहीं इसने विश्राम पाया है अतः इसे कुछ काललों विश्रां-
ति लेने देना चाहिये ऐसा समझ वह एक कचनारके पेडके नीचे
जा खडा हो गया ।

यहां मकरंदने माधवसे कहा कि आज इस नगरकी स्त्रियों-ने मदनोत्सव मनाया है उसे देखनेको तुम गये थे। पर मुझे जान पडता है कि जबसे तुम वहांसे लौटकर आये हो तुम्हारी चित्तवृत्तिमें कुछ विलक्षण विकार हो गया है। रतिरमणके तीक्ष्ण बाणोंने तुमपर कुछ आघात किया है क्यों हमारा अनुमान सच है न?

मकरंद माधवका लंगोटिया मित्र होनेके कारण उसके साथ आड़पड़देकी आवश्यकता न थी पर ये बातें ऐसीही कुछ विल-क्षण हैं कि कभी कभी स्वयं अपनीही अपनेको लज्जा बोध होती है तौ मित्रके समीप लज्जित होनेमें आश्चर्य्यही क्या है। अस्तु, मकरंदने हृद्गत बात पूछी एतदर्थ माधवको आनंद तो हुआ पर लज्जित हो वह भूमिकी ओर निहारने लगा। प्रकटमें उसने मकरंदके प्रश्नके उत्तरमें हां ना कुछभी नहीं कहा; तौभी उसका नीचेको देखना एक प्रकारका उत्तरही समझना चाहिये। और इससे यहभी प्रतिपादित हुआ कि उसकी छेडी हुई बात सच है।

मकरंदने हँसकर फिर उससे कहा कि मित्रवर! यदि उक्त वार्ता सत्यही हो तो उसमें क्या बुराई है। इस कमलसे मुखमंडलको नीचे कर लज्जित होनेकी कोई आवश्यकता नहीं है। क्योंकि देखो रजस्तमग्रासित सामान्य पुरुष और समस्त विश्वोत्पादक विधिपर-भी मदनका प्रभाव एकसाही रहता है अर्थात् हमसे मनुष्योंकी जिस प्रकार कामव्यथा होती है वैसीही विधिकोभी होती है? इसमें लज्जित होनेकी कोई बात नहीं है तौ अब सच २ जो हो सो बता दो इस बातको छिपाकर उससे हानि उठाना युक्ति-संगत नहीं है।

आत्मीय हृद्गत विचारोंको प्रियमित्रसे प्रकाशित करनेकी अत्यंत उत्कंठा रहतीही है। उसमेंभी उससे कुछ दुःख होता हो तो अपना रहस्य मित्रको ज्ञात करनेसे उसके दूर करनेके लिये कोई न कोई युक्ति निकल आवेगी ऐसा समझकर माधवको आत्मदशाका

उसने मित्रसे प्रकाशित करना निश्चितकर अभीष्ट जान पडा। अभीतक वह डरता था कि शायद मित्र मुझे एतदर्थ दूषित करे, और यही कारण था कि उसने अपना भेद अद्यावधि उसे न बतलाया था और मौन धारण कर बैठा था पर अब उसेभी अनुकूल पा माधवने सप्रेम कहा मित्र मकरंद! इस समय मेरी दशा ऐसी क्यों हुई है सो मैं भला तुझे क्यों न बतलाऊंगा! उसका तुझे न बताना मानो अपने मनसेही छिपा रखने कैसा है। अब मैं तुझे आदिसे संपूर्ण वृत्तांत सुनाता हूं सो श्रवण कर। अवलोकिताने मेरे पास आ मदनोत्सवकी अत्यंतही प्रशंसा की कि जिसे सुन उसे देखनेको जानेके लिये मैं असीम उत्कंठित हुआ। तुझे साथमें लेकर मैं जानेको था पर तू अनुपस्थित था और उत्सवका समय समीप आ गया था अतः मैं अकेलाही चला गया। वहां इधर उधर फिरते २ अनेकानेक चमत्कार देखे। अत्र तत्र भ्रमण करते करते श्रमित हो जानेपर जिसके सुगंधसे लुब्ध हो भ्रमर गुंजायमान हो रहे थे, उस बकुलपादपके नीचे श्रम निवारणार्थ उसके आलवालकी मेंडपर मैंने आसन ग्रहण किया। इस समयके मंद मंद वायुके संचलनसे बकुलपुष्पोंका अधःपतन रत्नोंकी वृष्टिसा प्रतीत होता था। उन्हें देख बैठे २ मैंने एक सुंदर हार ग्रथित करना विचारा और पुष्पोंको एकत्रित कर मैंने हार बनाना प्रारंभ किया।

अल्पकालके अनंतर भगवान् मीनकेतु मन्मथमहीपकी विश्वविजयिनी पताकाके सदृश बहु मूल्यरत्नोंके आभूषणोंसे अलंकृत और उत्तमोत्तम वस्त्रोंसे सुसज्जित हो सद्यः आविष्कृतयौवना परिचारिकाओंके साथ मदनमंदिरसे लौटकर अपने गृहको जाती हुई एक सुकोमलांगी बाला मुझे दृष्टिगत हुयी। प्रियवर मकरंद! तुझसे क्या कहूं। वह मनोहरताकी प्रधान देवता है वा सौंदर्य्यकी परमावधि है। उसकी मनोहर मूर्ति चंद्र, पीयूष, कमल, विद्युल्लतादि सामग्रीसेही मदनद्वारा विधिने बनवाई होगी ऐसा जान

पड़ता है । क्योंकि अष्टमिविद्वारा उसका निर्म्मित होना असंभवसा प्रतीत होता है ।

अनंतर वह अपनी सखी सहेलियोंके साथ मंद मंद गतिसे उद्यानमें संचार करने लगी । मैं जिस बकुल वृक्षके नीचे बैठा था उसके सुमनोंको एकसे नीचे गिरते देख उसकी सखियोंको असामान्य कौतूहल जान पड़ा । सखियोंने कहा आओ, हम लोग इस बकुलवृक्षके थोड़ेसे पुष्प बीन लें । सखियोंके अनुरोधसे वहभी उस वृक्षके नीचे आयी उस समय ध्यानपूर्वक उसे देख लेनेका सुअवसर मेरे हाथ लगनेके कारण मैंने अपना मनोरथ पूर्ण कर लिया । उस समयकी उसकी दशाको देख मुझे यही ज्ञात हुआ कि किसी अतुल विभवशाली व्यक्तिके अनुरागमें चिरकालसे उसका मन आसक्त हो गया है और उसी कारण वह मदनकी असह्य व्यथा झेल रही है । क्योंकि सम्पुटित कमलिनीके डंठाके समान उसके सकल अंग कांतिहीन हो गये थे । सखियोंके अनुरोधसेही वह यदा कदा वार्त्तालाप करनेमें प्रवृत्त होती नोचेत् मौन रहा करती । उसके मुखमंडलकी छटा चंद्रकेसी थी और उसके कपोल संप्रति काटे हुए गजरदकेसे शुभ्र[1] दीख पड़ते थे ।

प्रियकर ! जबसे मैंने उसकी सर्वांगसुंदर मूर्तिका निरीक्षण किया है तबसे मेरे नयन पीयूषप्रवाहके असीम आनंदका लाभ कर रहे हैं । जिस प्रकार लोहचुंबक लोहनिर्मित पदार्थोंको अपनी ओरको आकर्षित कर लेता है वैसेही उसने मेरे अन्तःकरणको अपनी ओरको आकर्षित कर लिया है । अब तुझसे कहांतक कहूं । एकके अनंतर दूसरा और दूसरेके अनंतर तीसरा संतापका कारण उद्भूत हो मानो नितांत दुःखाक्रांत होनेके लियेही मेरा मन उसपर आसक्त हुआ है । इसका कारण चाहे जो हो पर वह मेरी समझमें तनिकभी नहीं आता । न मालुम अब इसका अंत कैसा हो ।

---

१ प्राचीन कवियोंका अनुभवजन्य कथन है कि कामविह्वल एवं विरहव्यथित कामिनीके कपोलोंपर धवलता (सफेदी) आ जाती है ।

भवितव्यता बहुधा प्राणियोंका कभी शुभ और कभी अशुभ किय करती है तो उसकी इच्छानुकूल जो भवितव्य होगा सो होगा।

उक्त वृतांतको सुन मकरंदने कहा कि प्रियवर! तुम अणुमा अभी चिंता मत करो। स्नेह बाह्य कारणोंसे कदापि नहीं होता और जो बाह्यकारणजन्य होता है वह असत्य होनेके कारण चिर काललों नहीं रहता। जिस प्रयोजनके लिये वह उत्पन्न होता है उसकी प्राप्ति होतेही वह नष्टप्राय हो जाता है। जो बाह्य कारण संभूत नहीं है वही यथार्थ स्नेह है। दो वस्तुओंका परस्पर प्रेमप्र युक्त होना विना किसी अंतरंग हेतुके नहीं हो सकता। प्रीति बहिरंग साधनोंका कदापि अवलंबन नहीं करती। इसकी पोषक ताके लिये कमल और चंद्रकांतका उल्लेख अलं होगा। मरी चिमान् भगवान् अंशुमालीका उदय होतेही कमलगण प्रफुल्लित होते हैं और निशानाथ हिमांशुका उदय होतेही चंद्रकांतमणि झरने लगता है। कहो तो क्या दोनोंकी प्रीति बहिरंगकारणाश्रित है? अस्तु फिर क्या हुआ सो कथन कर।

माधवने कहा कि अनंतर नयनोंकी सैनसे वही यह ऐस कह उसकी सखियोंने मेरी ओर देखा और मुझे पहिचान लेनेके चिह्न परस्पर कर स्मितवदन हो वे सब मेरी ओर टकटकी लगाकर देखने लगीं।

यह सुनकर मकरंदने मनही मन विचारा कि अंतमें उन्होंने इसे पहिचानभी लिया। अस्तु देखो अब आगे यह क्या बत लाता है।

माधवने कहा कि बकुलपुष्प बीननेके लिये वे लोग वह आयी थीं सो तो मैं तुम्हें बतलाई चुका हूं; पर वह कुछ न क वे सब सखियां नूपुरों तथा मेखलाकी क्षुद्र घंटिकाओंकी ध्वनि करती हुई उसके निकट आ कहने लगी भर्तृदारिका[1]! विधिने आ

1 अनेकानेक ग्रंथोंसे प्रमाणित होता है कि प्राचीनकालमें अपने स्वामीकी कन्या को 'भर्तृदारिका—स्वामीकी कन्या' यह संबोधन करनेकी प्रथा थी।

हमारा मनोरथ पूर्ण किया । देखो यहींपर यह किसीका कोई बैठा है । ऐसा कहकर मेरी ओर तर्जनी दिखाकर सखियोंने उसे इंगित किया ।

यह सुन मकरंदने सोचा कि इससे यही अनुमित होता है कि यह अनुराग बहुत दिनोंसे था और वह इस समय व्यक्त हुआ ।

कलहंस निकटही एक वृक्षके नीचे बैठा हुआ इन दोनोंका वार्त्तालाप श्रवण करता था । किसी स्त्रीके विषयमें यह रमणीय कथोपकथन हो रहा है ऐसा जानकर वह इनकी ओर विशेषरूपसे दत्तचित्त हुआ।

इधर मकरंदके पुनः क्या हुआ ऐसी जिज्ञासा करनेपर माधवने कहा कि सखियोंने मेरी ओर तर्जनी दिखा उसे मेरा परिचय दिया; इतनेमें उसने जो विचित्र लीला की उसका वर्णन सच पूछो तो मुझसे होही नहीं सकता । उस कमलपत्राक्षीका सात्विक एवं अधीरतादर्शक अथ च अप्रतिहत मदनव्यथा चेष्टासंपन्न वर्णन मेरी वाक्शक्तिसे परे है । एतावता उसके विषयमें मुझसे कुछभी नहीं कहा जा सकता । वक्र भ्रुकुटीको चढाकर विकसित अरविंदकेसे आयत एवं एकटकी लगाकर देखनेके कारण किंचित् आकुंचित हुए नेत्रोंसे उसने असीम प्रेमपूर्वक मेरी ओर अनेक बार दृष्टिपात किया । उसके उस मंद एवं सुंदर अवलोकनसे मेरे हृदयपर चोट आकर उसकी ऐसी कुछ विलक्षण अवस्था हो गयी है कि न मालुम वह अधीर हो गया है वा किसीने उसे चोरा लिया है वा शून्य हो गया है वा कोई उसे पानकर गया है वा किसीने उसका मूलोच्छेदन कर डाला है कुछ कहाही नहीं जाता ।

---

१ मालती अविवाहित थी और माधवको उसने केवल मनसे वरा था । यह बात उसकी सखियोंकोही विदित थी अन्य किसीको विदित न थी । सखियोंको उचित था कि वे कहती कि देख यह तेरा प्राणेश्वर बैठा है, पर यह वार्त्ता केवल उनकलाकियोंकोही होनेके कारण उन्होंने उसका निर्देश न कर "किसीका कोई" ऐसाही कहा ।

इस प्रकार सर्वथैव मनमोहिनी उस प्राणवल्लभा सुंदरीका मुझपर अनुराग है ऐसी सम्भावना कर मैं तो तत्क्षण उसका दास बन गया और उसके साथ निरालेही प्रकारकी चेष्टाओंमें तत्पर हो गया। पर अपनी अधीरता किसीपर प्रगट न होने पावे इस अभिप्रायसे बड़ी दृढताके साथ अपने मनको ढाढस दे येन केन प्रकारेण जो हार मैं गूथ रहा था उसे मौनभाव धारण कर पूर्ण किया। इतनेमें उसके बहुत दास दासीगणोंका समूह वहां आ उपस्थित हुआ और उन्होंने उसे सखियोंके साथ बहुमूल्य भूषणोंसे अलंकृत करिणीपर रत्नजटित हौदेमें आसीन कराया। तुरंतही उस संपूर्णेंदुमुखीने नगरकी ओर जानेवाले मार्गको सुशोभित किया। जब वह जाने लगी उस कमलमुखी कंबुग्रीवाने मुड़कर बारबार मेरी ओर देखा और अमृतविषमय कटाक्षबाणों[1]से मेरे हृदयपर चोट की।

तबसे मेरी दशा ऐसी कुछ विलक्षण हो गयी है कि मैं उसके विषयमें कुछ कही नहीं सकता। मेरे अन्तःकरणमें जो नानाविध विकार उत्पन्न हो रहे हैं उनकी तो कुछ सीमाही नहीं है। उसका वर्णन मेरी कथनशक्तिसे परे है। आज पर्य्यंत मैंने कभी नहीं जाना कि यह विकार कैसा होता है। जबसे यह विकार उत्पन्न हुआ है मेरी विचारशक्ति बिलकुल नष्टप्राय हो गयी है और मुझे ऐसा जान पड़ता है कि मैं मोहरूप नितांत गहन वनमें आकर फँस गया हूं। बुद्धि जडतावश हो गयी है और बारबार मनःसंताप होता है। समीपवर्त्ती पदार्थोंका मुझे यथार्थ ज्ञान नहीं होता।

---

१ प्राचीनकालमें युद्धप्रसंगमें बाण विशेषकर व्यवहरित किये जाते थे। उनके अग्रभागपर कोई विषयुक्त पदार्थ लगाया जाता था उसका हेतु यही था कि शरीरपर उसका आघात होतेही विषका संचार हो प्राणी मर जाता था। यहां कटाक्षोंपर बाणका रूपक बांधकर कहा है कि उसे अमृत और विष दोनों लगे थे। क्योंकि उसके कटाक्षरूपबाणोंसे माधवको उस समय असामान्य सुखानुभव हुआ और उसकी प्राप्ति न होनेके कारण अब वह दुःखी है। इसीलिये उसने यह भाव लिखा कि उसके कटाक्षरूप बाणोंमें अमृत और विष भरा था।

जिन विषयोंको मैंने भली प्रकार अधीत किया है वे मुझे विस्मृत हो चले अतः मेरा मन विरस हो गया है । अत्यंत शीतल जल-संपन्न सरोवरमें अवगाह न करने वा चंद्रिकाका सेवन करनेसेभी शरीरका दाह न्यून नहीं होता । मेरा मन अधीर हो भ्रमित हो गया है और वह किसी एक अनिश्चित विषयमें संतत निमग्न रहता है ।

माधवने अपनी विभ्रम अवस्थाका वर्णन किया उसे सुन कलहंसने सोचा कि इस वर्णनसे यही अनुमान होता है कि किसी मनोहारिणी बालाने मेरे स्वामीका मन हरण किया है । ऐसी चतुर बाला कौन होगी ? शायद वह मालती तो न हो ? इधर मकरंदने माधवकथित वृत्तांत सुन मनही मन विचार किया कि जिस स्त्रीकुलभूषणका इसने वर्णन किया है उसपर इसकी विशेष आसक्ति बोध होती है तौ ऐसी दशामें मुझे इसे निषेध करना उचित है वा नहीं ? वास्तवमें इस समय निषेध करना अनुचित है । मदनकी वियोगव्यथासे चित्तको अधीर एवं व्याकुल न होने देना चाहिये । वैसेही कामविकारोंसे बुद्धिको मलीन न होने देना चाहिये । इत्यादि उपदेशोंसे इस समय य-त्किंचित्भी लाभ न होगा । क्योंकि कामने अपना कोदंड आक-र्ण आकर्षित कर इसपर बाण चलाये हैं और इसकी पूर्ण तरुणाई-ने उसकी सहायता की है तौ उक्त उपदेशोंसे कुछभी लाभ न होगा ऐसा सोचकर उससे उसने कहा कि यह तो तुमने सब कह सुनाया पर वह किसकी कौन है सो तुम जानते हो वा नहीं ?

माधवने कहा कि मित्र ! सुन वहभी तुझे सुनाता हूं । वह करिणीपर आरूढ हो जाने लगी उसी समय उसकी एक सखी उक्त बकुलपुष्प बीननेके व्याजसे पीछे रह गई । और जब उसने देखा कि सब लोग आगेको बढ गये उसने मेरे निकट आ मुझे प्रणाम किया । और मुझसे कहा कि हे महाभाग ! गुण

(डोर) एकसा होनेके कारण सुमनोंकी (पुष्पोंकी) गूथन एकसी हुई है अतः यह तुम्हारा हार अत्यंतही रमणीय दीख पडता है हमारी भर्तृदारिका इसे धारण करनेके लिये अत्यंत उत्कंठित है । उसका यह नूतनही कुसुमव्यापार (फूलोंपर प्रीति अथवा मदन व्यापार) है तो इस हारके ग्रथित करनेमें आपने जो असाधारण चातुर्य्य प्रदर्शित किया है उसकी सार्थकताका लाभ कीजिये । विधिकी कुशलता सफल होने दीजिये ! हमारी भर्तृदारिकाके कंठको अलंकृत करनेके अलभ्य लाभको इसे प्राप्त करने दीजिये ऐसा उसने कहा ।

उसके इस कथनको सुन मकरंद अत्यंत आश्चर्यित हुआ और कहने लगा कि बलिहारी है उसके इस चातुर्यकी । अच्छा तो फिर उसने क्या कहा सो बतला ।

माधवने कहा मैं उसके अभिप्रायको तत्क्षणही समझ गया । और उसको हार देना स्वीकृत किया । हथनीपर बैठकर गयी वह किसकी कौन है इत्यादि पृच्छा करनेपर उस दासीने कहा कि वह अमात्य भूरिवसुकी पुत्री है । उसका नाम मालती है । मैं उसकी परम विश्वासपात्र सखी हूं । मेरा नाम लवंगिका है इत्यादि उसने मुझसे कहा ।

मालतीका नाम सुनतेही इधर कलहंसको परम आनंद हुआ और वह मनोमन कहने लगा कि अद्यावधि मैं गूढ शंकामें था । क्योंकि मेरे स्वामीको पागल करनेवाली कौन है सो मुझे ज्ञात न हुआ था; पर अब वह व्यक्त हो गयी । वह मालतीही है । मीनकेतनने हम लोगोंपर बडा अनुग्रह किया । हमारे स्वामीका मन मालतीपर आसक्त हो गया है यह जानकर हमारा समस्त भय दूर हो गया । अब हमने सकल कार्य्य संपादित कर लिया ऐसा कहनेमें कोई हानि नहीं है ।

इधर मकरंदने सोचा कि उसने जो कहा कि वह सचिव भूरिवसुकी पुत्री है इससे ज्ञात होता है कि वह बडी योग्य है ।

मैंने उसको कदापि देखा नहीं, यदि देखाभी होगा तो मैंने उसे पहिचाना नहीं, पर भगवती कामंदकी बारबार जिसका नाम लिया करती हैं वही यह मालती होगी । यदि यह वही हो तो इसके विषयमें मैंने औरही कुछ श्रवण किया । मैंने लोगोंसे सुना है राजा चंद्रकेतुने नंदनके लिये उसे मांगा है ।

मकरंदसे यह वार्त्ता सुन माधवको यथार्थमें असह्य दुःख होता; पर उस ओरको उसका ध्यानही न था । वह अपनेही विचारोंमें निमग्न होनेके कारण मकरंदकी कही हुई वार्त्ता सत्य है वा असत्य है आदिके विषयमें उसने कुछभी विचारतक न किया । उसने अपनाही वृत्तांत कहना प्रारंभ किया । उसने कहा कि मित्र मकरंद ! इसके उपरांत जो घटना हुई सो सुन । उक्त प्रकार लवंगिकाने जब अनुरोध किया मैंने उस हारको अपने कंठसे निकाल कर उसे दे दिया । तब उसने मेरी ओर एकसा दृष्टिपात करके, मालती बहुत दूर न निकल जाय एतदर्थ उसकी ओरभी नयनोंकी कोरसे निरीक्षण करते करते कहा कि यह प्रचंड प्रमाद है । इसके पश्चात् उसने विनीतभावपूर्व्वक मुझे प्रणाम किया और वहभी तुरंतही उसकी ओरको चली गयी। उसके सैन्यदलमें पहुँचतेही वह मेरे दृष्टिपथसे च्युत हो गयी और अनंतर मैंभी धीरे धीरे घर लौट आया ।

मकरंदने कहा कि प्रियवर ! तूने जो वृत्तांत कहा उससे तो यही विश्वास होता है कि मालती तुझहीपर अनुरक्त हुई है इसमें कोई संदेह नहीं है और तूने जो कहा कि उसके कपोलोंपर सफेदी आ गयी थी उससे यही अनुमान होता है कि उसके मनमें कामविकारने वृद्धिलाभ किया है और वह तेरेही निमित्त, पर तुझे उसने कहां देख पाया सो कुछ नहीं जान पड़ता । उसके सदृश उदारचेतस तथा कुलपुत्रीका एक पुरुषपर आसक्त हो दूसरे पुरुषपर दृष्टि रखना सर्वथैव असंभव है और तुझे देखकर उसकी सखियोंने आपसमें संकेत किये सो पूर्वस्नेहके प्रधान चिह्न हैं ।

इसके उपरांत किसका कौन इत्यादि कहकर अनंतर लवंगिकाने बडी पटुतासे वार्त्तालाप किया इन सब घटनाओंसे यही जान पड़ता है कि उसका अनुराग तुझहीपर है और वह एक दीर्घ-कालसे है।

कलहंस तसवीर दिखानेके अवसरकी बाट जोहते बैठा था। इस अवसरको उत्तम समझ वह एकाएक समीप आ गया और इस छविको लीजिये ऐसा कहकर उसने उक्त तसवीर उनके हाथपर धर दी। वे दोनों उस प्रतिमूर्त्तिकी ओर ध्यानपूर्वक निहारने लगे। मकरंदने जब पूंछा कि माधवकी इस प्रतिछबिको किसने खींचा है तब कलहंसने उत्तर दिया कि, दूसरा कौन उतारनेवाला है? जिसने उसका हृदय चोराया है उसीने इस तसबीरको खींचा है।

मकरंदने पूछा अरे! तू यह क्या कहता है? क्या उस मालतीनेही यह तसबीर खींची है?

उक्त प्रश्नके उत्तरमें कलहंसने कहा हां! यह तसवीर स्वयं मालतीने खींची है। यह सुन माधवने प्रसन्न हो कहा कि प्रियमित्र मकरंद! तेरी तर्कना बहुत करके सत्य है ऐसा जान पडता है।

मकरंदको इसके विषयमें औरभी जिज्ञासा थी अतः उसने कलहंससे पूछा कि तुझे यह कहां प्राप्त हुई उसने कहा कि मुझे यह मंदारिकासे प्राप्त हुई। उसने मुझे यहभी बतला दिया है, कि यह तसबीर आपको लवंगिकाने दी है।

यह सुन मकरंदने पूछा कि यह माधवकी प्रतिकृति माल-तीने उतारी है। इसके विषयमें मंदारिकाने तुझसे कुछ कहा है क्या?

कलहंसने कहा कि मंदारिका कहती थी कि अपनी मान-सिक व्याकुलताको दूर करनेके हेतु उसने यह प्रतिमूर्ति बनाई है।

यह सुन मकरंदको बहुतही आनंद हुआ। उसने माधवके पर हाथ ठोकर कहा कि मित्र अब तू किसी प्रकारकी बिल-

कुल चिंता मत कर । तेरे नेत्रोंको आनंद देनेवाली चंद्रिकाके मनोरथकी सिद्धिका तूही आधार है । इससे निःसंशय प्रतीत होता है कि तुझे वह प्राप्त होगी । क्योंकि अनुकूल विधि और मनोज इस कार्य्यके संपादनार्थ बद्धपरिकर हुए हैं । तो इसके विषयमें अब चिंता करना अनावश्यक है । जिस रूपराशिके साक्षात्कारके लिये तू अत्यंत उत्कंठित हुआ है, और तेरे मनोविकारोंकी सृष्टिका जो कारण हुई है उस मालतीकी तसवीर तूभी इसी चित्रके पृष्ठपर खींच ।

माधवको यह अभीष्टही था। तिसपर फिर मकरंदका अनुरोध देख उसने उससे कहा कि यदि तेरी इच्छाही है तो खींचता हूं ऐसा कह चित्रकारीकी पूरी सामग्री लानेके लिये उसने कलहंसको आज्ञा दी । वहभी चतुरही था । मालतीकी खींची हुई तसवीरको देखकर बहुधा उक्त प्रसंग उपस्थित होगा ऐसा सोचकर कलम आदि साहित्य वह साथमें लेही आया था । माधवकी आज्ञा पातेही उसने उक्त सामग्री उपस्थित कर दी । तब उक्त चित्रपटको ले उसके पृष्ठपर माधव मालतीकी प्रतिमूर्ति उतारने लगा ।

इस समय उसके नेत्र बारबार प्रेमसे भर आते थे । उसने मकरंदसे कहा कि प्रियवर ! मेरे नेत्रोंसे बारबार प्रेमाश्रुकी धारा प्रवाहित होती है और उसके कारण नेत्र भर आते हैं । मन उसके साक्षात्कारको लालसासे जडताका आश्रय ले रहा है और उसके योगसे सकलांग जडीभूत हो गये हैं । हाथोंमें वारंवार स्वेद हो आता है और उसके कारण अंगुलियां कांपती हैं । चित्र खींचनेके लिये हाथ एकसा नहीं चलता । तौभी येन केन प्रकारेण उसे पूरा करनेका मैंने निश्चय कर लिया है ऐसा कहकर उसने बहुत कुछ परिश्रम कर मालतीकी प्रतिकृति पूर्ण की और वह मकरंदको देखनेके लिये दी ।

सच है यदि उत्तम चित्रकार चाहे तो जैसा उसे अभीष्ट हो वैसा चित्र बना सकता है अर्थात् किसी कुरूपको सुरूप और सुरूपको कुरूप बना सकता है। परंतु मालतीके विषयमें वैसी तर्कना करना व्यर्थ है। क्योंकि मालती स्वयं असाधारणरूप राशि संपन्न थी एतावता चित्रकारको निजकी कुशलताद्वारा उसे सुस्वरूप बनानेकी चेष्टामें कष्ट उठानेकी कोई आवश्यकता न थी। तिसपरभी चित्रकार स्वयं माधव था। उसे उसके दर्शनोंका लाभ होता न था अतः उसके चित्तमें उसकी जो मूर्ति प्रतिबिंबित हो गयी थी; उसेही उसने उक्त चित्रपटके पृष्ठपर उतारा और वह इस अभिप्रायसे कि उसके योगसे कुछ सांत्वना एवं मनोविश्राम हो। अतः इस शंकाके लिये स्थानही नहीं है कि मालतीकी प्रतिमूर्ति खींचनेमें उसने अधिकतर हस्तकौशल्य प्रदर्शित किया।

मकरंदने उक्त प्रतिकृतिको हाथमें ले जब उसका निरीक्षण किया तब उसके अतुल सौंदर्य्यको देख वह आश्चर्य्यचकित हो गया। कुछ काललों उक्त प्रतिमूर्त्तिकी ओर ध्यानपूर्वक निहारकर उसने कहा प्रियवर! तेरा मन इसपर अनुरक्त हुआ यह समुचितही है। ऐसी अनुपम लावण्यवतीपर तुझ कैसे रसिक पुरुषका चित्त आसक्त होनाही चाहिये। भला सच २ तो बतला दे, क्या सचमुच वह इतनी सुंदर है?

माधवने कहा कि मित्र! कुछ पूछही मत। उसकी अपूर्व सुंदरताका यथार्थ वर्णन मेरी कथनशक्तिसे परे है। उसकी यथार्थ छवि तो अविकलरूपसे मेरे हृदयपटपर मात्र खींची हुई है। इस पटपर उसका खींचना असंभव जान पडता है। इस प्रतिकृतिमें तुझे जो त्रुटि लक्षित हो वह मेरी अनभिज्ञताके कारण हुई है ऐसा समझ मूलमें अणुमात्रभी न्यूनता नहीं है।

माधवने तत्क्षण एक दो दोहे बनाकर उस प्रतिकृतिके नीचे लिख दिये थे। उसे पढ मकरंद अधिकतर आश्चर्य्यचकित

हुआ और कहने लगा कि प्रियमित्र ! तू शीघ्रकविभी है । इतने अल्प अवकाशमें तूने काव्यगुणोपेत एक दो उत्तम दोहेभी रच लिये इस प्रकार आपसमें मालतीके सौंदर्य्यका कथोपकथन करते हुए दोनों परम आनंदानुभवमें मग्न थे । इतनेमें उनके हृद-यमें विशेष आनंद उत्पन्न करनेवाली दूसरी एक औरभी सहाय-कर्त्री वहांपर आ उपस्थित हुई ।

मालतीकी बनाई हुई तसबीर माधवको किस प्रकार प्राप्त हुई सो तो ऊपर उल्लिखित होही चुका है । मंदारिकाने कलहं-सको दी और वह इसी अभिप्रायसे कि वह माधवतक पहुँच जाय और उसे ज्ञात हो जाय कि मुझपर मालतीका असीम अनुराग है । पर इस बातको वह स्पष्टरूपसे व्यक्त न कर सकती थी । मंदारिका यह पहिलेही सोच चुकी थी कि जिस प्रकार मालतीने माधवकी प्रतिमूर्ति उतारी है उसी प्रकार वहभी इस तसबीरको देख उसकी तसबीर खींचे विना न रहेगा । उसकी उतारी हुई तसबीरको पुनः मालतीके निकट पहुँचा देना मानो अपनी कर्त्तव्यता संपादित करनेके सदृश होगा । इस प्रकार नाना-विधि तर्क वितर्क मंदारिकाके मनमें हुआ करते थे ।

राजभवनों तथा विभवशाली सरदार लोगोंके समीप रहनेवाले दासदासीगण बडे चतुर होते हैं । किस समयपर किस प्रकारका वर्त्ताव करना चाहिये सो उन्हें बतलाना नहीं पड़ता । मेरा प्रण-यी कलहंस उक्त प्रतिमूर्त्तिको लेकर बहुधा अपने स्वामीके निक-टही गया होगा ऐसा सोच कर जहांपर माधव और मकरंद थे वहां पहुँचनेके लिये मंदारिका बडी शीघ्रताके साथ प्रस्थित हुई और वह सीधी पुष्पोद्यानमें आ पहुँची । वहां इस ओरकी बगलमें कलहंस खडा था सो उसे दृष्टिगत हुआ पर माधव और मकरंद वृक्षकी ओटमें होनेके कारण उसे न दीख पडे ।

दासदासीगणोंमें परस्पर जब प्रेम अंकुरित हो जाता है तब उनमेंभी विनोद संमिश्रित वार्त्तालाप हुआ करता है और वह

उनके कुल जाती एवं संप्रदायकी मर्यादाके अनुकूलही होता है। मंदारिकाने कलहंसको देखकर सविनोद कहा कि क्यों कहो तुम्हें मैंने कैसा गांठा है ? तुम्हारे चरणचिह्नोंको देखती हुई यहां आई हूं।

वह और कुछ बोलती पर इतनेहीमें कलहंसने उसे सैनसे जताया कि मेरा स्वामी निकटही है अतः वह चुप हो रही और अपने कपडेको संभालकर उसने लज्जा एवं विनीतभावपूर्वक उन दोनोंको प्रणाम किया। श्रीमान् लोगोंके यहां दासदासीगणोंकी बहुत कुछ धूम धाम रहा करती है और उनके द्वारा बडे २ कार्य-भी संपादित किये जाते हैं। माधव इस समय कार्यार्थीही था। इसलिये मंदारिकाको थोडासा आदर करना उसे आवश्यक था, अतः उसने उसे बैठनेकी आज्ञा दी। वहां बैठे २ उसने कल-हंसको दी हुई तसवीर माधवके हाथमें देखी।

जिस प्रकार उसने सोचा था उसी प्रकार माधवने उस चित्र-पटपर मालतीकी तसवीर उतारी थी उसे देख मंदारिकाको अत्यंत हर्ष हुआ। उस चित्रपटको ले मालतीके निकट पहुँ-चानेकी उसे उत्कट इच्छा थी पर वह उसे मांग न सकती थी, अतः उसने एक दूसरीही युक्तिका प्रयोग किया। कलहंस-की ओर निहारकर उसने कहा कि इस मेरे चित्रपटको यहां तुमही लाये हो ऐसा जान पडता है। भला कहिये तो तुम्हें ला-नेके लिये किसने कहा था ? अब चुप चाप मुझे उसे दे दीजिये। नोचेत् इसका परिणाम ठीक न होगा।

कलहंसभी ऐसे कार्योंमें बडा चतुर था। उसने उक्त चित्र-पटको हाथमें ले बडे क्रोधसे कहा कि ले ले ! यहां तेरे चित्र-पटकी किसे आवश्यकता है ? ऐसा कहकर उसने उक्त प्रतिमूर्ति मंदारिकाको दे दी।

उक्त चित्रपटके पृष्ठपर मालतीका चित्र खींचा हुआ था। वह किसने खींचा था, किस प्रयोजनसे खींचा था इत्यादि मंदा-

रिकाको विदित होनेपरभी उसने कलहंससे पूछा कि यह मालतीकी तसवीर यहां किसने उतारी है और क्यों उतारी है ?

कलहंसने कहा, क्यों क्या ? मालतीने जिसकी (माधवकी) जिस निमित्तसे तसवीर खींची उसने (माधवने) उसी निमित्तसे मालतीकी तसवीर उतारी इसमें अनुचितही क्या हुआ ?

यह सुन मंदारिका अतीव प्रमुदित हुई और उसने कहा कि सृष्टिनिर्माता ब्रह्माकी समस्त चतुराईने पूर्णरूपसे यहीं सफलता प्राप्त की है ।

मकरंदको मंदारिकासे औरभी एक बात बूझनी थी, कलहंसने कहा था कि स्वयं मालतीने माधवकी तसवीर उतारी है । तो उसने माधवको कहां देखा होगा इसके विषयमें उसे संशय था । क्यों कि माधवने इतनाही बतलाया था कि मदनोद्यानमें प्रथमही हमारी उसकी चार आंखें हुई । पर उस समय माधवको इतने ध्यानपूर्वक निहारनेका उसे अवकाश मिलना असंभव था । ज्योंकी त्यों तसवीर खींचनेके लिये दृष्टि और पदार्थके बहुत कुछ परिचयकी आवश्यकता है । यही शंकाका कारण था ।

उक्त यात्रामें माधवकोभी उसका दर्शन एकही वार हुआ था पर पुरुषोंको अधिक साहस होता है । किसी मनोहारिणी बालाकी ओर दृष्टि गड़ाकर बहुत देरतक देख सकते हैं । पर स्त्रियां वैसा नहीं कर सकतीं । जिसपर वे अनुरक्त न हुई हों वा जिसके विषयमें उनके मनमें कुछ तर्क वितर्क न होते हों कदाचित् उसकी ओर वे ध्यानपूर्वक देख सकेगा पर अपने प्राणवल्लभकी ओर उनसे टक लगाकर कदापि न देखा जायगा । अपने प्रणयीको जीभर देखनेकी इन्हें उत्कट इच्छा रहती है और उसे वे उसकी दृष्टि चुकाकर पूर्ण करती हैं । कुलस्त्रियोंका यह नैसर्गिक धर्म्म होनेपरभी मालतीकी दृष्टिको माधवके रूपका इतना परिचय कैसे प्राप्त हुआ यह मकरंदकी शंका बहुतही समीचीन थी ।

उसने **मंदारिका**से पूछा कि इस तसबीरके विषयमें यह तेरा प्रणयी (**कलहंस**) जो कहता है सो सत्य है वा अन्यथा ?

मंदारिकाने कहा, महाभाग ! उसमें असत्य यत्किंचितभी नहीं है ।

मकरंद–भला सो यह बता कि **मालती**ने **माधव**को इतने ध्यानपूर्वक कहां देखा होगा ?

मंदारिका–मैं यह कुछ नहीं जानती ! पर उनकी सखी **लवंगिका** कहती थी, कि हम लोगोंने उसे खिडकीसे कई बार देखा है ।

यह सुन **मकरंद**ने **माधव**से कहा कि मित्र ! दीवानसाहबकी कोठीके नीचेसे होकर हम लोग प्रायः जाया करते हैं तभी उसने शायद देखा हो । ठीक ठीक यही बात युक्तिसंगत जान पडती है । इससे ज्ञात होता कि **मंदारिका**का कथन निःसंशय सत्य है।

प्रणयिनीका ध्यान हमारी ओर कैसा है यह जाननेकी प्रणयीको किस प्रकार उत्कट इच्छा रहती है उसके विषयमें यहां विशेषरूपसे वर्णन करनेकी कोई आवश्यकता नहीं है। खिडकीमें बैठकर **मालती** मेरी ओर निहारती थी यह सुनकर **माधव**को अत्यंतही आनंद हुआ और इस वार्त्ताके श्रवणगत होनेसे वह **मालती**पर विशेषरूपसे आसक्त हुआ ।

उक्त चित्रपटको **मालती**के समीप पहुँचानेके लिये **मंदारिका** अतीव आतुर हुई और उसने आज्ञा मिलनेकी प्रार्थना की और उन दोनोंसे कहा कि इस कामराजके चरितको (**मालती** और **माधव** प्रणयिनी प्रणयीद्वारा खींची हुई परस्परकी प्रतिमूर्त्तिको) मैं उनकी प्रियसखी **लवंगिका**को शीघ्र दिखलाना चाहती हूं ।

यह सुन **मकरंद**ने कहा कि हां हां इस समय वैसा करना तुझे उचितही है । **माधव** और **मकरंद**की आज्ञा ले उक्त चित्रपटको अपने अंचलमें छिपाकर **मंदारिका** द्रुतपदसे **लवंगिका**की ओर निकल गयी ।

ठीक मध्याह्नके समयको देख मकरंदने माधवसे कहा कि सुहृत्! अपनी किरणोंको प्रखर कर भगवान् अंशुमाली आकाशके बीचोबीच आ पहुँचे हैं तौ अब घरको शीघ्रही चलना उचित है।

माधवका चित्त बिलकुल चंचल था। मकरंदके अनुरोधसे वह घर जानेके लिये प्रस्थित हुआ हृदयवल्लभामें जिनका मन रहता है वे प्रत्येक बातको अपनी प्राणप्यारीमेंही घटित करते हैं और सब पदार्थोंको तन्मय देखते हैं वास्तवमें मध्याह्नका मालतीसे कोई विशेष संबंध न था; पर माधवकी तद्व्यतिरेक अन्य कुछ दीखही नहीं पडता था। उसने कहा, प्रियवर मकरंद! संप्रतिकी दशाको देखकर मुझे ऐसा जान पडता है कि इस समयकी असह्य उष्णतासे मेरी प्रिया कुम्हला गयी होगी और उसके कपोलोंपर उसकी दासियोंने प्रातःकाल केशरकी सुंदर पत्ररेखा बनाई होगी वे श्रमबिंदुओंके योगसे मिट गयी होगी और अब उसके दासियोंके हस्तकौशल्यका चिह्न उसके कपोलोंपर तनिकभी न रहा होगा। क्यों मैं ठीक कहता हूं न?

पुनः वायुको संबोधन कर उसने कहा, पवन! मेरी प्रियाने अपने अंगपर धारण किये हुए सद्योविकसित कुंदपुष्पोंके मकरंदके सुगंधको ग्रहण कर, जिसके नेत्र किंचित् चंचल और जो मानसिक व्यथासे पीडित और जो पीनपयोधरके भारसे नत दीख पडती है, उस मेरी प्रियाके सुकोमल अंगोंका स्पर्श कर मुझे आलिंगन दे तो यह असह्य दाह कुछ तोभी शांत होगा।

उसकी उक्त अवस्थाको देख मकरंदने कहा कि उच्छृंखलतापूर्वक वर्त्ताव करनेवाले इस मदनने मुझे अत्यंत आश्चर्यित किया है। यह अपनेको त्रैलोक्यविजयी शूर कहाता है और ऐसे कोमलांग माधवपर निःशंक हो कैसा प्रहार कर रहा है! जैसे हाथीके पाठेको असाध्य वातज्वर चपेट लेता है उसी प्रकार यह अब क्या करेगा सो जान नहीं पडता ऐसे अवसरपर भगवती कामंदकीके सिवाय हमारी रक्षा अन्य कोई न करेगा।

मकरंदने जो कहा सो माधव अचेत होनेके कारण उसे कुछभी न समझ पडा वह पुनः मनोमन कहने लगा कि यह क्या आश्चर्य्य है इसका रहस्य कुछ ज्ञात नहीं होता ! वह मुझे दहिनी बगलमें दीख पडती है फिर बाईं बगलमें दीख पडती है। सन्मुखभी वही दीखती है और पीछे फिरकर देखता हूं तो वही दृग्गोचर होती है भीतरभी वही और बाहरभी वही। जिधर २ देखिये उधर उधर वही वह दृष्टिगत होती है ! सारांश जिस प्रदेशमें दृष्टिपात होता है मेरी प्रियाका अभी खिले हुए सुंदर कमल कैसा मुख और मुझपर आसक्त होनेके कारण किंचित् टेढी चितवन आदिही दीख पडते हैं।

उसने मकरंदसे कहा, सुहृत् ! संप्रति मेरे शरीरमें ऐसा असह्य दाह उत्पन्न होकर चारों ओर फैल रहा है कि उसका वर्णन मैं नहीं कर सकता। मेरी समस्त इंद्रियें मोहवश हो अपने २ विषयोंको ग्रहण करनेके लिये असमर्थ हो गयी हैं। विषमकामकी विशेष वृद्धि होनेके कारण हृदय भस्मीभूत हुआ जाता है और वह केवल तदाकार हो गया है। मेरे हृदयप्रदेशको मेरी प्राणवल्लभाने ऐसा कुछ व्याप्त कर लिया है कि उसमें तिलमात्रभी स्थान उसके सिवा खाली नहीं है।

यह सुन मकरंदने उसका समाधान किया और अन्यान्य विषयकी चर्चा करते कराते उसे किसी प्रकार घर ले गया और वहां उसके कामजन्य दाहके शमनार्थ शीतोपचार करने लगा।

दूसरा परिच्छेद।

प्रथम परिच्छेदमें उल्लिखित होही चुका है कि अवलोकिताने माधवको यात्रा करनेके लिये मदनोद्यानमें भेजा था। वहां जो जो घटना हुई सो श्रवण करनेके लिये कामंदकी नितांत उत्कंठित थीही उसने मकरंदसे यह कह रखा था कि वहां जो

घटना हो सो मुझे अवश्यमेव विदित करना और अब मकरंद-को दृढ विश्वास हो गया था कि मेरे परम प्रियमित्र माधवको वर्तमान आपत्तिसे मुक्त करनेके लिये कामंदकीके अतिरिक्त अन्य समर्थ नहीं है। इसलिये उस यात्रामें जानेसे माधवकी जो दशा हुई थी सो मकरंद कामंदकीको विदितही करनेवाला था। तद-नुसार उक्त यात्राका समस्त इतिवृत्त कामंदकीको सुनाकर उसने कामंदकीसे माधवकी उस संकटसे रक्षा करनेके लिये प्रार्थना की और माधवके निकट लौट आया।

कामंदकीने मकरंदसे उसके विषयमें विशेषरूपसे कुछभी न कहा। उसने उक्त वृत्तांतको पूर्णतया सुनकर अपनी शिष्या अवलोकिताको आज्ञा दी कि तू जाकर मालतीकी दशा कैसी क्या हुई है सो समझ बूझ आ।

कामंदकीकी आज्ञानुसार अवलोकिता भूरिवसुकी को-ठीपर आ संगीतशालाके बगलमें खडी हो रही और उसने सोचा कि इस समय मालती कहां है इस बातका पता लगा यदि वह एकांतमें हो तो उसके निकट जाना चाहिये। इतनेमें वासंतिका नामकी मालतीकी दासी उधरहीको आ रही थी उसे देख अवलोकिताने उसको रोककर उससे मालतीका वृत्तांत पूछा। वहां खडे २ वे दोनों बहुत देरतक बातचीत करती रहीं।

इतनेहीमें मेघमाला नामकी एक दूसरी परिचारिका वहां आई। उन दोनोंको आपसमें बतलाते देख उसने वहां जाना अनुचित समझा और थोडे दूरपर खडी हो रही, इतनेमें अवलो-किताको जो कुछ जानना बूझना था सो जान बूझकर तुरंतही वह आगेको बढी।

अवलोकिताको आगे जाते देख मेघमालाने वासंतिकासे पूछा एरी वासंतिका! संगीतशालाके पास अवलोकिता और तू बहुत देरतक काहेकी बातचीत कर रही थी?

वासंतिका–सखी **मेघमाला** ! अरी दूसरी और बातचीत कौनसी होनेवाली है ? आज प्रातःकाल हम लोग भर्तृदारिकाके साथ **मदनोद्यानमें** गयी थीं वहां उस बकुल वृक्षके नीचे जो घटना हुई थी सो **माधवके** प्रियमित्र उस **मकरंदने** भगवती **कामंदकीको** ज्योंकी त्यों सुना दी । तो अब हमारे सचिवपुत्रीकी प्रकृति कैसी है इसका पता लगानेके लिये उन्होंने **अवलोकिताको** भेजा है । सोई उसने पूछा कि इस समय **मालती** कहांपर है । मैंने उन्हें बतला दिया कि वे अकेली **लवंगिकाको** साथमें ले धुर ऊपरवाली अटारीपर बतलाते बैठी हैं । बस इतनीही बातचीत हो गई ।

यह सुन **मेघमालाने** कहा कि अरी! **लवंगिका** तो तभी केशरके फूल बीननेके लिये जो पीछे रह गयी थी सो अभीतक वहांसे आईही न थी और तू कहती है कि **मालती** उससे एकांतमें बातें कर रही है। यदि अभी इतनेमें वह आ गयी हो तो ईश्वर जाने ।

वासंतिकाने कहा हां हां वह अभीही आई है । स्वयं मैंने उसे आते देखा । ज्योंही वह निकट आई त्योंही सब सखियोंका साथ छोडकर **मालतीने** उसका हाथ पकड़ा और उसे लेकर अटारीपर गयी ।

मेघमालाने कहा अरी सखी! तू कहती है सोई सत्य है । मैं समझती हूं कि **मालती** मदनोद्यानमें देखे हुए महाभागके (**माधवके**) विषयमें चर्चा कर अपने मनस्तापको शांत करती होगी।

वासंतिकाने कहा चल री ! उन्हें विश्राम सो क्यों मिलने लगा । पहिलेही उसके गुणानुवाद श्रवण कर उनका मन अस्वस्थ हो गया था । तिसपर आज तो उससे विशेष प्रकारसे भेंट हो जानेके कारण उनका अनुराग अधिकही उत्कट हो गया होगा । उनके चित्तकी अस्वस्थताका एक प्रधान कारण यहभी है कि राजासाहबने नंदनके लिये उसे मांगा है और अपने दीवान साहबने राजासाहबसे कह दिया है कि मेरी पुत्रीका कन्यादान

करनेके लिये श्रीमान् सब प्रकारसे अधिकृत हैं, यहभी वे सुन चुकी हैं। ऐसी अवस्थामें उनके चित्तका समाधान कैसे हो सकता है?

दीर्घ निःश्वास त्यागकर उसने कहा, जान पडता है कि माधवका यह प्रेम जन्मभर मालतीके हृदयको छेदनेवाला शल्य होगा।

मेघमालाने कहा कि अरी! तू कहती है सो सब सच है पर भगवती कामंदकी अपनी बुद्धिका कुछ न कुछ प्रभाव दिखलाये विना न रहेंगी।

कामंदकीके अंतरंग प्रयत्नोंको वासंतिका बिलकुलही न जानती थी ऐसा न था। पर अभी उसके विषयमें कहीं कुछ थाही नहीं तो उसकी चर्चा करना अयोग्य है ऐसा समझकर उसने वह बातही नहीं छेडी। व्यर्थ तर्क वितर्क क्यों करती हो? चलो आओ हम लोग अपने २ कामको देखें ऐसा कह दोनों चली गयीं।

इधर वासंतिकाके पूर्वकथानुकूल मालती और लवंगिका अटारीपर एकांतमें बैठकर वार्त्तालाप कर रही थीं। पाठकोंको स्मरण होगा कि जब मालती मदनोद्यानसे प्रस्थित हुई तब लवंगिका फल तोडनेके व्याजसे पीछे रह गयी और माधवसे बात चीतकर उसका बनाया हुआ बकुलपुष्पोंका हार उसने उससे मांग लिया। मेरे चले आनेपर माधवसे और तुझसे क्या क्या बातचीत हुई सो बतानेका मालतीने अनुरोध किया तब लवंगिकाने समस्त वृत्तांत उसे कह सुनाया।

मालतीने सानुराग कहा कि, अच्छा तो फिर क्या हुआ सो बतला? उत्तरमें लवंगिकाने कहा कि इतनी बातचीत होनेपर मेरी प्रार्थना स्वीकृत कर उस महानुभावने यह हार दिया; ऐसा कह लवंगिकाने वह हार उसके हाथमें दिया। उसकी ओर ध्यानपूर्वक निहारकर हर्षित हो मालतीने कहा कि, सखी! इस हारकी ग्रथन बडी विलक्षण है। सब फूल एक ओरहीसे गुणमें ग्रथित

किये गये हैं । दूसरी बाजू बाहर खुली दीखनेके कारण यह रचना अत्यंत चमत्कारजनक जान पडती है ।

माधव उस हारको पूरा न कर पाया था उसकी एक बाजू वैसीही अपूर्ण रह गयी थी इसलिये लवंगिकाने कहा कि इस हारमें कुछ ऊनता रहनेके कारण वह जैसा चाहिये वैसा रमणीय नहीं हुआ इसका दोष तुझीपर आरोपित है ।

मालतीने पूछा कि वह कैसा और मैंने क्या किया ? लवंगिकाने कहा कि और क्या करेगी ? कोमल दूवके सदृश श्यामवर्ण माधवके मनको व्यग्र किया इसीलिये यह ऐसा अपूर्ण रह गया ।

ये शब्द मालतीको श्रवण करनेही थे और वे उसके कर्णोंको कैसे मधुर लगे होंगे सो वर्णनशक्तिसे परे है। स्त्रियोंको जिसपर वे अनुरक्त हों वह हमें विशेषरूपसे चाहता है हमारे अंगविक्षेपादिकोंसे उसका मन क्षुब्ध हो गया है वा नहीं इत्यादि बातें जाननेकी अधिकतर अभिलाषा रहती है ।

लवंगिकाका कथन सुन मालतीने प्रसन्न होकर कहा कि प्रिय सखी लवंगिका ! दूसरेके मनकी सांत्वना करनेमें तू बडी निपुण है ।

समयोचित भाषण करनेमें लवंगिका बडी दक्ष थी । उसने कहा कि सांत्वना करनेकी हतोटी क्या ! सच तो कहती हूं । मंद मंद वायुसे हिलनेवाले विकसित कमल कैसे चंचल एवं बकुल पुष्पोंकी माला देखनेके लिये उन्मीलित किये हुए अपने नेत्रोंसे स्वयं तू उसकी अवस्था देख चुकी है तो फिर मनःसांत्वना करनेकी हतोटी (निपुणता) दिखलानेकी मुझे क्या आवश्यकता है ।

लवंगिकाने मनकी बात कही उसे सुन मालतीने प्रेमातिभरसे उसको गलेसे लगाकर कहा कि सखी! सच २ तो बतला कि उस महानुभाव (माधव) के उस समयके विलास प्राकृतिक थे और उसने क्षणभर समागम करनेवालोंको प्रतारित करनेके लिये

उन्हें व्यक्त किया था वा तू कहती है तदनुसार उसकी सचमुच अवस्था होनेके कारण वे व्यक्त हुए थे ।

यह सुन उसे किंचित् दोषसा देकर लवंगिकाने कहा कि, उस समय तूने जो भाव दिखलाये वे क्या स्वाभाविक संगीत-कलाविहित लास्यके थे ?

यह सुन मालती लज्जित हुई । लवंगिकाने उसे सूचित किया कि जैसी तेरी अवस्था हुई थी वैसीही उसकीभी हुई थी । तब मालतीने उस विषयमें कुछभी न कहकर कहा कि भला २ तो फिर इसके उपरांत क्या हुआ सो बतला ।

लवंगिकाने उत्तरमें कहा कि यात्राको गये हुए लोग लौटे और लोगोंकी भीड अधिक होनेके कारण वह महाभाग मेरे दृष्टि-पथसे दूर हुआ तब मैंभी वहांसे लौटी और आते आते अपनी सखी मंदारिकाके घर गयी । आज प्रातःकालही चित्रपट मैंने उसे दिया था ।

यह सुन मालतीने पूछा कि किसका चित्रपट ? कल मैंने जो प्रतिमूर्ति बनाई थी क्या वही ?

ल०–हां, वही ।

मा०–तो उसे मंदारिकाको देनेका क्या कारण ?

ल०–तू नहीं जानती । माधवका दास कलहंस जो संतत उसके साथ रहता है वह मंदारिकापर आसक्त हुआ है । तेरा बनाया हुआ चित्र वह उसे अवश्य दिखलावेगा यही समझकर मैंने वह चित्रपट उसके पास दिया था । आते समय उसे लेते आनेका मेरा विचार था इसीलिये वहां गयी थी, वहां जानेपर मंदारिकाने मुझे एक दूसरीही प्रिय वार्त्ता सुनाई ।

यह सुन मंदारिकाने इससे क्या कहा होगा इस विषयमें मालती तर्क वितर्क करने लगी । वह यह सुनही चुकी थी कि माधवका किंकर कलहंस मंदारिकापर अनुरक्त हुआ है । वास्तवमें इन परिचारकगणोंकी ऐसी छोटी मोटी बातोंकी ओर

ध्यान देनेकी उसे आवश्यकता न थी; पर उसका अभीष्ट हेतु सिद्ध होना उसे अतीव कठिन बोध होता था। मातापिताकी भिन्न प्रकारकी व्यवस्था ज्ञात होनेपर यथासाध्य प्रयत्न करनेके लिये वह स्वयं उद्यत हुई थी और इस कार्यके संपादनार्थ उसे दासदासीगणोंकी विशेष सहायता आवश्यक थी।

प्रत्येक मनुष्यकी विशेष आवश्यकताका कुछ न कुछ कारण होताही है। कलहंस माधवका विश्वासपात्र भृत्य है उसी प्रकार मंदारिका मेरी दासी है और लवंगिका मेरी प्रिय चिकीर्षु सखी है और कलहंस मंदारिकापर विशेषरूपसे आसक्त हुआ है तब तो मेरे विषयमें उसे चिंता न होवेगी इस बातकी मालतीके मनमें तर्कना होना स्वभावजन्यही है। मंदारिकाने वह चित्रपट कलहंसको दिखलाया होगा और उसने वह अपने स्वामी (मालिक) को दिखलाया होगा ऐसा समझकर मालतीने लवंगिकासे पूछा "तो फिर ऐसी कौनसी प्रिय वार्ता मुझे बतलाई?"

यह सुन लवंगिकाने माधवकी खींची हुई उसकी प्रतिकृतिको सामने कर कहा कि पहिलेही संतप्त हुए हृदयको अधिकतर दाह देनेवाली एवं दुर्लभ मनोरथपर विशेष आसक्ति होनेके कारण तज्जन्य असह्य परिश्रमोंसे जिसका चित्त जल रहा है उस तुझे क्षणमात्र शीतलता देनेवाली यह बात उसने कही है। लवंगिकाने माधवकी उतारी हुई उसकी तसबीर उसे दिखलाई। मालतीने तुरंतही वह उसके हाथसे ले ली और उसकी ओर दीर्घ काललों निहारकर हर्षपूर्वक उसने कहा कि सखी! अभीतक मेरे मनको सच सच प्रतीत नहीं होती। यहभी (तसबीर) शायद मुझे धोखा देनेके लियेही हो ऐसा मुझे जान पडता है।

उक्त प्रतिकृतिके नीचे माधवने निम्नलिखित दो दोहे लिखे थे।

परमन रंजन करत जे, प्रकृति मधुर जन धन्य।
ते विजयी जगतीतल, नव विधु कलादि अन्य॥ १॥

प्यारी लोचन चन्द्रिका, दरश तिहारो पाय।
जन्ममहोत्सव सुख लह्यो, वर्णत मन न अघाय ॥ २ ॥

उक्त पद्यको पढ उसे अत्यंत आनंद हुआ और साश्रुनेत्र हो माधवका स्मरण कर उसने कहा कि महाभाग! यह तुम्हारा कथन बहुतही यथार्थ है। जैसी तुम्हारी आकृति मधुर है वैसीही कविताभी मधुर है। पर तुम्हारा दर्शन तत्कालके लिये तो मधुर है किंतु अंतमें नितांत संताप देनेवाला होनेके कारण बडा कठोर है। जिन बालाओंको तुम्हारा साक्षात्कारही न हुआ होगा वा दर्शन करनेपरभी जिनका मन तुम्हारे लिये उत्कंठित न हुआ होगा वे यथार्थमें धन्य हैं।

इसपर लवंगिकाने कहा कि, ऐजी! इतना होनेपरभी अभीतक तुम्हारे मनका समाधान क्यों नहीं होता?

मालतीने कहा कि इसमें हैही क्या जो मुझे समझा नहीं।

लवंगिकाने कहा कि, सखी! जिसके लिये तू वृक्षसे विलग हुए अशोकके कोमल पल्लवकैसी मुरझाकर नूतन बेलाके पुष्पकोंभी धारण करनेके लिये असमर्थ हो दुखिया हो रही है; वहभी तेरे लिये उसी प्रकार दुःखी हो रहा है। भगवान् मीनकेतनने अपने बाणोंकी दुःसहताका उसे पूर्णरूपसे परिचय दिया है। इतना समझनेपरभी तेरा समाधान नहीं होता इससे मुझे बडा आश्चर्य जान पडता है।

मालतीने कहा कि उन महानुभावकी कुशल हो! मेरा समाधान होना तो दुर्लभही है और विशेषकर संप्रति कि जब मानसिक प्रीति विषसरीखी तीव्र हो समस्त देहभरमें फैल चली है। मनोरथरूप आग संपूर्ण शरीरको गलित कर निर्धूम वह्निकैसी अधिकतर प्रज्वलित हो रही है। अनुरागज्वरके सदृश संपूर्ण देहमें दाह संचरित कर रहा है। अतः इस दुःखसे मेरी माता वा पिता और स्वयं तू भी मेरी रक्षा करनेके लिये समर्थ नहीं है।

यह सुन लवंगिकाने दीर्घ निःश्वास त्यक्तकर कहा कि सखी!

सत्यही है । सज्जनोंका समागम उनके समीप रहते सुख देता है और वही उनके विलग होनेपर दुःख देता है । केवल खिडकीमें बैठकर जिसे क्षणमात्र देखनेके कारण निर्दय कामके बाणोंके असह्य प्रहारसे तेरे प्राण आपत्तिग्रसित हुए हैं, पूर्ण चंद्रोदयके समान शीतल होनेपरभी जिसका दर्शन तुझे अग्निकैसा दाहक हुआ है उसीका तुझे आज साक्षात्कार होनेके कारण तुझे अधिकतर संताप हो रहा है । इसमें विशेषतर कहनाही क्या है ? प्रिय सखी ! तेरे दुर्लभ एवं अत्यंत वर्णनीय मनोरथका फल इसके व्यतिरिक्त अन्य कुछ नहीं है कि तेरा जिसपर विशेष अनुराग है। उस महानुभाव हृदयवल्लभका समागम तुझे प्राप्त हो यही तेरा अभिप्रेतार्थ है ऐसा मुझे जान पडता है ।

लवंगिकाने अपने वाग्विदग्धतागर्भित एवं चातुर्य्यपूरित भाषणद्वारा यह सूचित किया कि ऐसा असह्य दुःख सहन करनेकी अपेक्षा माधवके समीप जाना उत्तम है; पर मालती सत्कुलोत्पन्न एवं सदाचारसंपन्न बालिका थी । माधव उसे प्राणोंकी अपेक्षा अधिकतर प्रिय था और उसके समागमके लिये वह अत्यंत उत्कंठित थी तौभी अनुचित मार्गको अनुकृत करनेके लिये वह उद्यत न थी । लवंगिकाकी सूचनासे यह ध्वनित होता था कि पाणिग्रहण संस्कारकी विशेष लालसा न कर गुप्तभावसे किसी प्रकार माधवकी भेंट लेनी चाहिये, पर मालतीका मनोदय यह था कि मातापिता शास्त्रविहित परिणय विधानपूर्वक मुझे माधवको समर्पित करें और उसी अनुकरणीय मार्गद्वारा मुझे मेरे हृदयेशके समागमका लाभ हो । लवंगिकाकी सूचित की हुई युक्ति उसे सर्वथैव अमान्य हुई तौभी उसे तिरस्कृत न कर उसके विषयमें आत्मीय अस्वीकार उसने अत्यंत विनीत एवं मधुर भावपूर्वक प्रदर्शित किया ।

मालतीने कहा कि प्रिय सखी! मालतीका जीना तुझे बहुत प्रिय है । उसके लिये साहस करनेको तू उद्यतही रहती है पर मैं

कुछ इतनी पागल नहीं हूं । बस २ मैं तेरे परामर्षको कदापि अं-गीकृत न करूंगी, तू मुझे यह क्यों बतलाती है ? क्या मैं इतनी बौरा गयी हूं । वा इसका दोष मैं तुझेही क्यों दूं ? इसके लिये मैंही अपराधिनी हूं। मैं बारबार उधरको निहारती हूं और कहती हूं कि मैं बौरानी नहीं हूं । बडे संकट एवं धैर्यसे अपने हृदयको स्तंभित कर दुष्प्राप्य फलकी अभिलाषा करती हूं इसीलिये इस प्रकार बोलनेका अवसर तेरे हाथ लगा । तथापि मैं तुझसे सत्य सत्य कहती हूं कि प्रत्येक रात्रिमें निशानाथ पूर्णतया उदित हो अपनी सोलहों कलाओंसे मुझे ताप देवे, कंदर्प मुझे यथेच्छ जलावे । ये लोग मुझे यमराजके स्वाधीन करनेकी अपेक्षा मेरा और क्या करेंगे देहांत होनेपर एक दुःखसे तो मुक्त होऊंगी । मेरे बहुमान्य पिता और पावन कुलोत्पन्न मेरी माता अथ च निर्दोष एवं निर्मल मेरा कुल मुझे अत्यंत प्रिय है । इतना साहस उठाकर उस मनुष्य (**माधव**) का समागम मुझे अभीष्ट नहीं है । कदाचित् उसके समागमके विना मुझे मृत्यु प्राप्त हो तो वह मुझे स्वीकृत है पर मैं वैसा न करूंगी।

यह सुन **लवंगिका** मनोमन विचारने लगी कि अब यहां किस युक्तिका प्रयोग करना समुचित होगा सो कुछ समझमें नहीं आता पीछे यह उल्लिखित होही चुका है कि **कामंदकी**की शिष्या **अवलोकिता मालती**के समाचार लेनेके लिये उसके यहां आयी थी । उसे **वासंतिका**से जो कुछ ज्ञात हुआ सो सब समझ-कर उसे औरभी जो अनुसंधान करना था सो किया और **मालती** जब एकांतमें बैठी है तो वहांतक क्यों जाना चाहिये ऐसा सम-झकर वह **कामंदकी**के निकटही जानेको प्रस्थित हुई ।

कामंदकीको यह जिज्ञासा थी कि जिस प्रकार **माधव** उसके लिये उत्कंठित हुआ है उसी प्रकार **मालती**भी उसके लिये उत्कं-ठित हुई है वा नहीं। **अवलोकिता** द्वारा उस (**मालती**) कीभी वैसीही अवस्था सुन **कामंदकी**को परम आनंद हुआ । उसे दृढ

निश्चय हो गया कि अब मेरी युक्ति पूर्णरूपसे फलित होगी। इसी अभिप्रायसे मालतीको औरभी समझाने बुझानेके लिये वह उसके निकट जानेके लिये प्रस्थित हुई। इस समय लवंगिकाके साथ एकांतमें वह वार्त्तालाप कर रही है उसमें प्रधानतः माधवकीही चर्चा होती होगी तो ऐसे समयपर मेरे वहां जानेमें कोई हानि नहीं है ऐसा समझकर वह सीधी अटारीपरही चली गयी, पर एकाएक वहां न जाकर द्वारस्थ संदेशवाहिनी दासीद्वारा अपने आगमनकी सूचना करायी।

मालतीने इस समय अपनी संदेशवाहिनी दासीको आज्ञा दे रखी थी कि किसी विशेष कार्य्यके अतिरिक्त मुझे सूचना मत देना। पर कामंदकीका और उनका घनिष्ठ संबंध एवं उसकी सर्वत्र अधिकतर मानमान्यता होनेके कारण दासीने कोई बहाना न कर एक कवाडको धीरेसे खोल आधी भीतर और आधी बाहर खडी होकर विज्ञप्ति की कि भगवती कामंदकी पधारी हैं। यह सुन इस समय इनके आगमनका क्या हेतु होगा इस विषयमें मालती किंचित् विचार करने लगी कि इतनेमें दासीने पुनः सादर निवेदन किया कि वह आपहीसे मिलनेको आयी है।

कामंदकी मालतीकी माता और भूरिवसुकी भेंटको बार २ आया करती थी पर इस समय वह मेरेही निकट आयी होगी ऐसा वह नहीं समझी थी; यही उसके चिंता करनेका कारण था; पर दासीके पुनः निवेदन करनेपर उसने तुरंतही आज्ञा दी कि अब विलंब क्यों करती है? उन्हें भीतर ले आ। दासी कामंदकीको ले भीतर आनेके पूर्वही मालतीने उक्त चित्रपटको छिपाकर रख दिया। लवंगिका इस चिंतामें मग्न थी कि अब क्या करना चाहिये पर इतनेमें वहां कामंदकी आ गयी इससे उसे बहुत संतोष हुआ।

इधर अवलोकिताको साथमें ले आत्मगत बोलती हुई कामंदकी आ रही थी। धन्य भूरिवसु धन्य! मेरी पुत्रीकी यथे-

च्छ व्यवस्था करनेके लिये महाराज पूर्णरूपसे समर्थ हैं। यह तेरा कथन अत्यंत सारगर्भित है। इसके सिवाय आज मदनोद्यानकी घटना सुन मुझे प्रतीत होती है कि मेरे अभीष्ट हेतुको दैव अनुकूल है। बकुलसुमनका हार और वैसेही चित्रपट आदिकी वार्त्ताको सुनकर तो मुझे असामान्य कौतुक एवं आनंद होताहै। परिणयसंस्कारमें प्रधानतः वधूवरका परस्पर अनुरागही नितांत श्रेयस्कर है। भगवान् अंगिरा ऋषिने कहाही है कि जिसपर मन और नेत्रोंका अधिकतर अनुराग हो उसीके साथ विवाह करनेमें विशेष वृद्धि होती है। यह बहुतही श्लाघनीय हुआ कि संप्रति वैसाही बनाव बन आया।

इतनेमें अवलोकिताने वह देखो सामने मालती बैठी है ऐसा कहकर मालतीको लखाया, तब उसकी ओर निहारकर कामंदकी उसका वर्णन करने लगी। उसने कहा कि इसका शरीर नितांत क्षीण हो गया है तौभी आर्द्र कदलीके गाभेकैसी यह मनोहर दीख पडती है। क्षीण हो एक कला अवशिष्ट अंशुमालीकैसी यह नेत्रोंको आनंद देती है। कामाग्निजन्य अवस्थाको प्राप्त होनेपरभी यह कल्याणी कन्यका मेरे हृदयको सुख दुःख देती है। सुखका कारण इसका अपूर्व सौंदर्य तो प्रस्फुटितही है और मेरा अंतरात्मा यह सोचकर दुःखी होता है कि इसका अभीष्ट हेतु यदि सिद्ध न हुआ तो इसकी क्या अवस्था होगी!

इसके सिवाय इसके कपोलोंपर पांडुता झलक मारती है और मुख रूखा दीख पडता है, तौभी यह अधिकतर सुंदर दीख पडती है। क्योंकि उच्चतर दशामें जन्म ग्रहण करनेवाले मनुष्योंमें संचार करनेवाले महाधन्वी मदन बहुधा विजयी हुआ करते हैं वा ऐसा अनुमान होता है कि इस समय यह प्रियसमागमकी मनःसंकल्प कर यथार्थमें उसका अनुभव ले रही है क्योंकि इसके समस्त लक्षण वैसेही दीख पडते हैं। इसकी नीवी शिथिल हो गयी है, अधरोष्ठ एवं बाहु फरक रहे हैं, संपूर्ण शरीर स्वेदमय

हो रहा है, नेत्र सजल दिखलायी देते हैं, शरीर पुलकित हो बिलकुल निःस्पंद हो गया है, कुचकलश कंपायमान हो रहे हैं, और अधिकतम आनंदानुभवका लाभ होनेके कारण क्षणक्षणपर यह गतसंज्ञा हो पुनः सचेत होती है।

इस प्रकार मालतीका वर्णन करती हुई कामंदकी उसके अत्यंत निकट पहुँच गयी तौभी वह उक्त अवस्थास्थित होनेके कारण स्तब्ध बैठीही रही। लवंगिकाके सूचित करनेपर घबडाकर वह एकाएक खडी हो गयी और उसने भगवती कामंदकीको विनीतभावपूर्वक प्रणति की। कामंदकीने इष्ट फल प्राप्तिको पात्र हो! ऐसा आशीर्वाद दिया। इतनेमें लवंगिकाने सबको आसन ग्रहण करनेकी प्रार्थना की और उन सबने यथायोग्य आसन ग्रहण किये।

मालतीने अपनी मानसिक अवस्था न प्रदर्शित कर उनकी आगत स्वागत की। तब कामंदकीने दीर्घ निःश्वास त्यक्त कर कहा कि हां कुशलही हैं। लवंगिका उक्त उत्तरके अभिप्रायको समझ गयी और मनोमन कहने लगी कि यह इसके कपटनाटककी प्रस्तावनासी जान पडती है। फिर उसने कामंदकीसे कहा कि मातः कामंदकी! अश्रुपूरित नेत्रोंका स्तंभन और दीर्घ निःश्वसनका परित्याग कर गद्गदकंठसे आपने मालतीको कुशल प्रश्नके उत्तरमें जो बात कही उसमें कुछ निरालीही विलक्षणता गर्भित जान पडती है। इस समय आपको इतनी उद्विग्नता होनेका कारण क्या है?

इसपर कामंदकीने कहा री पूछती क्या है? यही कारण है। हम इन तापसोचित भगुवे वस्त्रोंको धारण कर तद्विरुद्ध किस कार्यके अनुष्ठानमें रत हो रही है। हमारी उद्विग्नताका कारण यहीं है और दूसरा क्या?

यह सुन लवंगिकाने कहा कि तो फिर तदर्थ इतना उद्वेग क्यों करना चाहिये?

कामंदकीने कहा कि पूछती क्या है ? क्या तू नहीं जानती ? यह मालती मानो पंचशरका अमोघास्त्र है और इसका सहज विलासप्रदर्शक गात अयोग्य वरकी योजना होनेके कारण आजन्म हमकैसोंको पश्चात्तापका कारण हुआ है । उसके योगसे इसके समस्त असामान्य एवं लोकोत्तर गुण विफलित हो जायंगे एतावता मुझे उद्वेग होता है ।

यह सुन मालतीको अतीव दुःख हुआ । लवंगिकाने कहा कि ठीक ठीक आपहीका कथन सत्य है । महाराजके अनुरोधको समादृत कर दीवानसाहब (भूरिवसु) ने मालतीका नंदनको देना निश्चित किया है और यह बात नगरभरमें फैल गयी है । सज्जन लोग एतदर्थ दीवानसाहबको दोष देते हैं ।

मालती अद्यावधि इसी चिंतामें मग्न थी कि मेरे माता पिता मुझे माधवको कब व्याह देंगे । क्यों कि वह यही सोचती थी कि जिस प्रकार मैं माधवको चाहती हूं उसी प्रकार शायद वेभी उसे चाहते होंगे । वह इस बातको तनिकभी न जानती थी कि, पिताने मुझे नंदनको देना विचारा है । लवंगिका इस रहस्यको जानती थी पर उसने जानबूझकर यह बात उसे सूचित न की, संप्रति उस बातको सुन मालती अतिकातर हो गयी और उदासीन होकर मनोमन कहने लगी कि पिताजीने मुझे महाराजके भक्ष्यस्थानमें क्यों त्यक्त किया । अस्तु इच्छा उनकी !

कामंदकीने लवंगिकासे कहा कि यह देख मुझेभी आश्चर्य बोध होता है । गुणोंकी उपेक्षा कर भूरिवसुने न मालूम यह बात कैसी विचारी ! पर उसपरभी दोषारोपण क्यों किया जाय ? राजनीतिविशारद पुरुषोंको अपत्यस्नेह क्यों होनेवाला ! उनका कर्त्तव्यकार्य राजाका अभीष्ट हेतु संपादित करनेसेही शेष होता है । नंदनको देनेके लिये यदि निश्चय किया गया हो तो उसका यही हेतु होना चाहिये । राजासाहब अपने हास्यकुशल ठठोलके पुत्र नंदनको बहुत चाहते हैं, अतः उसका यही अ-

भिप्राय होगा कि उसे अपनी पुत्री दे उसके साथ मित्रता संपादित कर लेनी चाहिये ।

इस समय कामंदकी मालतीके हृदयको विशेषतर दुःख देनेवाले शब्द बोलती थी । उसका प्रधान अभिप्राय यही था कि यदि इसके मनमें यह बात भलीभांति प्रतिबिंबित कर दी जावे कि माता पिता मेरे हेतुके बाधक हैं तो यह उनसे विना पूछे हमारे परामर्शको अनुकृत करेगी । वास्तवमें उसका परामर्श भूरिवसुकी अनुमतिके अनुकूलही था । अपनेको अलग रख कामंदकीद्वारा उक्त घटना संपादित हो तो राजाके समीप मुझपर कोई दोषारोपण न कर सकेगा इसी अभिप्रायसे भूरिवसुने कामंदकीको उक्त कार्यके लिये नियुक्त किया था ।

मालती बडी चतुर थी और उसका सदाचरण वयःक्रम तथा अवस्थाके योग्य था । उसे यह दृढ विश्वास था कि मातापिता मेरे हृद्गत आशयको जानकरही जो करना होगा सो करेंगे । मुझे उनकी इच्छाके प्रतिकूल कार्यानुष्ठानकी कोई आवश्यकता नहीं है । कामंदकीने यह सब जान बूझकर कही कि तेरी इच्छाके प्रतिकूल तेरे मातापिता यत्न कर रहे हैं और इसमें उसका यही अभिप्राय था कि वह उसकी सम्मतिको अंगीकृत करे ।

कामंदकीके भाषणको सुन मालती मनहीमन कहने लगी कि बाबाको महाराजका मन रखना विशेष जान पडता है, मालतीकी उन्हें कुछ चिंता नहीं है ।

लवंगिका कामंदकीके भेदको भलीभांति जानती थी । उसने कामंदकीसे कहा मातः ! आपका कथन बहुतही सत्य है । यदि ऐसा न होता तो उस वयातीत एवं मैले कुचैले नंदनको अपनी पुत्री देना वे क्योंकर विचारते ? महाराजासाहबका मन रखनेके लियेही उन्होंने यह विलक्षण विचार स्थिर किया हो ।

वास्तवमें नंदन बहुतही वृद्ध न था और उसी प्रकार कुरूपभी न था, पर हां माधवकी अपेक्षा उसकी अवस्था कुछ अधिक

थी, तौभी वह वृद्ध पुरुषोंमें परिगणित नहीं हो सकता था। पर लवंगिकाको मालतीका मन माधवकी ओर आकर्षित करना अभीष्ट था अतः बालाओंको बिलकुल न रुचनेवाले उक्त दो दोष उसने प्रदर्शित किये उसे सुन मालती नितांत दुःखित हो मनोमन कहने लगी 'हाय! मैं बडी दुर्भागिनी हूं। यह अनर्थरूप वज्रपात मुझपर होनेवाला है और इसीके नीचे दबकर मेरा सर्वनाश बैठा है'।

मालतीके मनोरथको जानकर लवंगिकाने भगवती कामंदकीसे प्रार्थना की कि इस समय आपही कोई युक्ति बतलाइये मेरी प्रियसखी मालतीके लिये जीतेजी मरण संकटकी समस्त सामग्री एकत्रित होरही है। इसकी रक्षा आपही कीजिये आपकीभी यह पुत्रीही है।

यह सुन कामंदकी बोली लवंगिका! तू बडी अबोध है भला तूही कह कि यहां मैं क्या कर सकती हूं। अपनी पुत्रीपर पिताका पूर्णरूपसे अधिकार रहता है और सुखदुःख तो अपने २ दैवाधीन हैं। पर तौभी ऐसे अवसरपर प्रयत्न व्यर्थ नहीं जाता। वधू और वर दोनों यदि कुछ यत्न करे तो उनका अभीष्ट हेतु सिद्ध हो सकेगा। पुराकालमें ऐसी बहुत घटनायें हुइ हैं। विश्वामित्रकी पुत्री शकुंतलाने[1] आत्मानुमतिसेही राजा दुष्यंतको वरा और उर्वशीनेभी पुरुरवा राजाको वरा यह वार्त्ता प्राचीन इतिहासज्ञोंसे ज्ञात होती है। उसी प्रकार उज्जयिनीके चंडमहासेन राजाकी कन्या वासवदत्ताने पिताद्वारा संजयके साथ वाग्दत्ता होनेपरभी स्वयं यत्न कर कौशांबीके राजा उद-

---

१ यहां शकुंतलाको उदाहृत किया है सो बहुतही ठीक है। पर उर्वशीका उदाहरण स्वीकारार्ह नहीं जान पडता, क्योंकि देवलोककीभी हुई तो क्या थी तो वह वारवधूही। वेश्याओंको विवाहके लिये मातापिताकी संमति अनुकूल वा बाधक नहीं होती। संप्रति उन्हें उदाहृत करनेकी आवश्यकता है कि जिन्होंने विनां मातापिताकी अनुमतिके स्वेच्छानुकूल अपने पतिको वराय लिया है। इसीलिये उर्वशीका उदाहरण यहां घटित नहीं होता।

यनके साथ अपना विवाह कर लिया इत्यादि बातें पुराने लोगोंके मुँहसे सुननेमें आती हैं। पर गांधर्वविवाहका करना एक प्रकारका साहसही है। तौ इसकैसियों (मालती कैसियों) को ऐसी बातें बतलाना कुछ अच्छा नहीं है। मुझे ऐसा जान पडता है कि राजाके प्यारे सुहृत नर्मसचिव नंदनको अपनी कन्या देनेमें दीवानसाहब (भूरिवसु) ने अपने किसी बडे भारी हेतुकी सिद्धि और सुखलाभ विचार रखा है। वैसा कर वे यथेच्छ सुखी होवें। और इस मालतीकोभी उस कुरूप बूढे (नंदन) की स्त्री होकर राहुके योगसे जिस प्रकार निर्मल निशानाथकी कला मलीन होती है वैसीही होने दें उसमें हमारी क्या हानि है। व्यर्थमें हम लोग क्यों चिंता करें।

कामंदकीका उक्त संवाद अत्यंत सारगर्भित था। उसका प्रधान अभिप्राय यही था कि उसे सुन मालती तदनुकूल क्रिया-विधानमें सहमत हो और बहुतांशमें वह वैसाही हुआभी। कामंदकीके कथनोपकथनको श्रवण कर कातर हो मालती रोरोकर बिलबिलाने लगी। लवंगिका बार बार उसके आंसू पोछकर उसकी शांत्वना करती थी। वह मनोमन कहती थी 'हा विधाता! हा पिता अंतमें तुमनेभी यही विचार न स्थिर किया? सारांश संसारमें यावज्जीव विषयोपभोगकी तृष्णासे मुग्ध हो रहे हैं'।

अवलोकिता योंही यह सब प्रसंग श्रवण कर रही थी। कामंदकीने मालतीको अपने वाग्जालमें फंसानेके लिये जो जो प्रयत्न किये उन्हें वह सावधानीपूर्वक श्रवण कर रही थी। माधवकी अवस्थाका ज्ञान मालतीको हो जाय तो भला हो ऐसा सोचकर उसने कामंदकीसे कहा "भगवती! यहां बहुत विलंब हुआ महाभाग माधव अत्यंत अस्वस्थ है एतावता अब उसकेभी समाचार लेना समुचित है।"

यह सुन कामंदकीने उत्तरमें कहा ठीक २ अच्छा स्मरण

दिखाया। देख मैं चलीही। वत्स मालती! मुझे शीघ्रही जाना है तो ले अब मुझे जाने दे।

यह सुन लवंगिकाने धीरेसे मालतीके कानमें कहा कि भगवती कामंदकी द्वारा उस महाभाग (माधव) की अवस्थाका परिचय कर लेना चाहिये।

मालतीने कहा सखी मुझे उसके श्रवण करनेकी विशेषतर लालसा है।

मालतीके अभिप्रायको जान लवंगिकाने भगवती कामंदकीसे पूच्छा की कि आप बार बार माधव माधव कहती हैं सो वह कौन है? ऐसा जान पडता है कि आप उसे बहुतही चाहती हैं।

कामंदकीने कहा उसकी कथा बहुत बडी है। और इस समय उसका कोई प्रसंग नहीं है।

लवंगिकाने पुनः आग्रहपूर्वक प्रार्थना की कि यद्यपि उसकी कथाका कथन संप्रति अप्रासंगिक है तथापि उसे बतला हमें अनुगृहीत कीजिये। उसे सुन मालतीकोभी कौतुक होगा।

यह सुन कामंदकीको अत्यंत संतोष हुआ और उसने कहा कि तुम्हारा आग्रहही है तो बतलाती हूं। विदर्भदेशाधिपका राज्यकार्य्यधुरंधर एवं पुरुषश्रेष्ठ देवरात नामका प्रधान मंत्री है। उसका तुझे (मालतीको) अधिकतर परिचय शायद न हो पर उस जनप्रसिद्ध पुण्यश्लोक अपने गुरुबंधुको तेरा पिता–वह कौन और किस योग्यताका है उत्तमतया जानता है। अखिल भुवनमंडलमें अपने विमल यशकी उज्ज्वल पताकाको अटलरूपसे स्थिर करनेवाले, तथा पुण्य एवं सुकृतके उत्तमोत्तम फलके आधारभूत सत्पुरुष कि जिनकी महिमा अगाध है और जो अशेष मंगलके आगार हैं पृथिवीतलपर क्वचित्‌ही जन्म ग्रहण करते हैं।

यह सुन मालतीने लवंगिकासे कहा अरी लवंगिका! अभी भगवतीने जिनका नाम लिया उनका पिताजी स्मरण तो यथार्थमें बारबार किया करते हैं।

यह सुन लवंगिका बोली कि तत्कालज्ञ लोगोंसे यहभी ज्ञात होता है कि वे परस्परके सहाध्यायी हैं।

कामंदकी बोली उस देवरातसे उदयाचलपर उत्पन्न होनेवाला तथा उत्तम गुण एवं प्रकाशके कारण सुंदर दिखनेवाला कलावान् अथच सहृदय लोगोंको असामान्य आनंद देनेवाला यह बालचंद्र (**माधव**) उत्पन्न हुआ है।

लवंगिकाने धीमे स्वरसे **मालतीके** कानमें कहा हां तो वह **माधवही** होगा।

कामंदकी यह समस्त विद्याओंका आधार अल्पवयस्क होनेपरभी संप्रति घरसे यहां निकल आया है। संपूर्ण चंद्रके समान उसके मनोहर रूपको टकटकी लगाकर देखनेके लिये जो युवतियां उत्कंठापूर्वक भवनझरोखोंसे झांक रही थीं उनके मुखसे समस्त गवाक्ष मानो कुमुदिनीमय हो रहे थे। आजकल वह अपने बालमित्र **मकरंदके** साथ तर्कशास्त्रका अध्ययन कर रहा है।

यह सुन **मालतीको** परम आनंद हुआ। और उसने धीरेसे **लवंगिकाके** कानमें कहा सखी भगवती **कामंदकीने** क्या कहा सो तूने सुन लिया ना!

मालतीकी उक्त उक्तिका यही आशय था कि मेरा मन योग्य पुरुषपर अनुरक्त हुआ है यह उसे सूचित हो। **मालतीके** अभिप्रायको जानकर **लवंगिका** बोली रत्नाकरके व्यतिरेक पारिजात वृक्ष अन्यत्र कहां उद्भूत हो सकता है?

इस प्रकार वार्त्तालाप करते कराते सायंकाल हो गया और आसन्नवर्त्ती मंदिरोंमें प्रदोषकालकी पूजाके शंख नगारे बजने लगे। उनकी ध्वनिको सुन **कामंदकी** बोली ओ हो बहुतही अतिकाल हो गया। वह देखो उत्कंठित पक्षी मिथुनके कामकलहको भग्न करनेवाले, शनैः शनैः निद्रादेवीकी गोदमें शयित करानेवाले, प्रचुरांतरस्थित विशाल विशाल भवनोंको अंधकारके कारण निकटस्थ भासित करानेवाले सायंकालका सूचक शंख अपने तुमुल

नादसे आकाश पृथ्वीको प्रतिध्वनित कर रहा है तो अब हमें यहांसे चलना चाहिये । ऐसा कह **कामंदकी** उठ खडी हुई ।

भगवती **कामंदकी**को जानेके लिये प्रस्तुत देख **मालती**ने **लवंगिका**को धीरेसे कहा ' न मालूम बाबाने मुझे महाराजके भक्ष्यस्थानमें क्यों अर्पित किया ? महाराजका मन रखना उन्हें विशेष बोध होता है । मेरी उन्हें अणुमात्रभी चिंता नहीं है । '

आंखें डबडबाकर वह पुनः बोली । हाय हाय बाबा तुमनेभी ऐसीही बात विचारी ना ! अस्तु **माधव**का स्मरण कर आनंद-पूर्वक पुनः बोली उस प्रचुरविभवशाली महाभागने उच्चतर कुलमें जन्म ग्रहण किया है । लवंगिका ! तूने कहा सो सच है । रत्ना-करके अतिरिक्त पारिजात अन्यत्र कदापि उत्पन्न न होगा ! हा दैव ! क्या मुझे उस आनंदमूर्तिका साक्षात्कार पुनरपि होगा ।

लवंगिका इसपर कुछ कहती पर इतनेमें भगवती **कामंदकी** वहांसे चलने लगीं अतः उसने **अवलोकिता**का हाथ पकडकर आओ इधरके जीनेसे हम लोग नीचे चलें ऐसा कह वे चारों उस मार्गसे नीचे आयीं । **कामंदकी**ने धीरेसे कहा आज मैंने बहुत कुछ कार्य्यभाग शेष कर लिया । अपनेको दूर रख **मालती**का अभिप्राय समझ तदनुसार उसका मन आकर्षित करनेके लिये चेष्टा की । **नंदन**के विषयमें उसे विरक्त कर दिया । पिताकेवर्त्तावमें संशय करा दिया । प्राचीनकालके इतिहास सुनाकर अपना हेतु सिद्ध करनेकी युक्ति उसे सूचित कर दी । उसके हृदयाधीश **माधव**की महिमा वर्णित कर उसकी कुलीनताका वर्णन किया । और उसी प्रकार उसके समस्त गुणोंका वर्णन कर प्रसंगानुरोधसे उसे अनुकूल करनेके लिये जो इष्ट था सो सब किया । अब दोनोंका समागम होना दैवाधीन है । उसमें मैं कुछ नहीं कर सकती । इस प्रकार **कामंदकी**ने **मालती**को अपने वाग्जालमें फंसाकर वह वहांसे अपने स्थानके लिये प्रस्थित हो गयी ।

तीसरा परिच्छेद ।

पाठकोंको स्मरण होगा कि पिछले परिच्छेदके अंतमें कामंदकीने मालतीके मनको आकर्षित कर लिया; पर उसे यही एक कार्य न था किंतु इसके व्यतिरेक अनेक कार्य करनेको थे जिस प्रकार वह माधवका लाड प्यार करती थी उसी प्रकार उसके बालमित्र मकरंदकाभी करती थी वहभी कुलीन युवा एवं सद्गुणोपेत होनेके कारण कामंदकीका लाडला था इसीलिये माधवके विवाहके साथही वह उसकाभी विवाह किया चाहती थी। मकरंद नंदनकी बहिन मदयंतिकापर आसक्त हो चुका था। इसलिये उसके साथ उसका पाणिग्रहण संस्कार होनेके लिये वह यत्न करती थी।

बुद्धिरक्षिता नामकी उसकी एक बडी चतुर एवं कार्यसाधनपटु चेली थी। मदयंतिकाका मन आकर्षित करनेके लिये उसने उसे नियत किया था; और तदनुकूल वह अपने कार्य संपादनमें तत्पर थी। कामंदकी मालतीको समझाकर आयी उस दिन अपने मठपर पहुंचनेतक संध्याकाल हो जानेके कारण नित्यनियम कर उसने वह रात्र अपने स्थानहीपर व्यतीत की।

तबसे प्रतिदिवस एकसा यही क्रम चला था। कामंदकी बार बार मालतीके निकट जाती और उसे तद्विषयक बातें सुना उसका मन मोहित किया करती। उसका यह परिश्रम शीघ्रही फलीभूत हो वह उसके वचनमें बद्धसी हो गयी। तब कामंदकीने सोचा कि इन परस्परका साक्षात्कार होकर बहुतसा काल बीत गया अतः इनकी भेंट पुनः करा इनके अनुरागको प्रत्यक्ष करा देना समुचित होगा। भवितव्यतावश दूसरा दिवस कृष्ण चतुर्दशीवाला था, इस अवसरको पा देवदर्शनके व्याजसे आज सायंकालके समय इन (माधव मालती)के साक्षात्कारके योगको उपस्थित करना चाहिये ऐसा विचार कर उसने अवलो-

किताको संवादवाक्य दे माधवके समीप भेजा और आप स्वयं मालतीके यहां गयी ।

अवलोकिता माधवको जो कुछ संदेश देना था सो देकर मठपर लौट आयी पर कामंदकी बहु विलंब होनेपरभी न लौटी थी । मदयंतिकाको वारंवार अनेक प्रकारकी मनमोहनी बातें सुना उसके मनको मकरंदपर अनुरक्त करा उसने उसके दर्शनलाभके लिये अपनी उद्दाम लालसा प्रकाशित की तब यह अवसर किस प्रकार हाथ लगे इस विषयका विचार करनेके लिये बुद्धिरक्षिता इसी समय कामंदकीके स्थानपर आयी थी। कामंदकीको निज स्थानपर अनुपस्थित पा उसने अवलोकितासे पूछा कि वे कहां गयी हैं ?

इसपर अवलोकिता बोली अरी तू पागल तो नहीं हुई ? भगवती कहां गयी हैं इसका आज कल पता लगानेकी कोई आवश्यकताही नहीं है । पंचग्रासीका समय बीत गया उसकातक उन्हें स्मरण नहीं है । मालतीसे मिलनेको कहकर गयी हैं सो अद्यावधि वहीं हैं । बुद्धिरक्षिता–सदा तू उनके साथही रहा करती है पर आज तू यहां अकेलीही दीख पडती है अतः जान पडता है, कि तू कहीं अन्यत्र गयी थी ।

अवलोकिता–हां मुझे भगवतीने संवादवाक्य दे माधवके निकट भेजा था । भगवतीकी आज्ञानुसार शिवालयके आसन्नवर्त्ती कुसुमाकर नामके पुष्पोद्यानमें जा तत्रस्थ कुब्जा संज्ञक वृक्षोंसे व्याप्त रक्ताशोक पादपके निम्न प्रदेशमें उपस्थित होनेकी उसे सूचना दे आरही हूं और वहभी तदनुसार उधर गया है ।

बुद्धिरक्षिताको इस वार्त्ताका रहस्य अज्ञात था अतः उसने पूछा कि माधवको उधर किस अभिप्रायसे प्रेषित किया है ? अवलोकिताने कहा " री आज कृष्णचतुर्दशी है आजके दिनके लिये शास्त्रमें यह लिखा है कि अपने हाथों पुष्प चूनकर शंकरकी पूजा करनेसे सौभाग्यकी वृद्धि होती है; अतः भगवती

कामंदकीके साथ **मालती** आशुतोष शंकरके दर्शनार्थ वहां जानेवाली है। भगवतीकी सूचनानुसार **मालतीकी** माता केवल **लवंगिकाको** साथमें दे उसे भगवतीके साथ वहां भेजनेवाली है। पुष्पचयनके व्याजसे वहां वह भ्रमण करेगी तब **माधवकी** और उसकी चार आखें होंगीं ऐसी कुछ योजना की गयी है। अच्छा यह तो हुआ, पर तू तो बतला कि कहां गयी थी?

इसपर **बुद्धिरक्षिताने** कहा री मैंभी शंकरके मंदिरकी ओरही जानेको निकली हूं। मेरी प्रिय सखी **मदयंतिका** आज वहां देवदर्शनोंको जानेवाली है और उसने वहां आनेके लिये मुझसे बहुत अनुरोध किया है। वह उस मार्गसे गयी और मैं भगवतीको प्रणाम करती हुई जाऊं इस हेतु इधर आयी।

कामंदकीने **बुद्धिरक्षितापर** जो कार्य्यभार अर्पित किया था उसे **अवलोकिता** जानती थी पर उसका परिणाम उसे अविदित था अतः उसने उससे पूछा कि भगवतीने तुझे जिस कार्यपर नियुक्त किया था उसके विषयमें तूने क्या किया?

बुद्धिरक्षिता बोली क्या किया अर्थात् क्या? उसके विषयमें मेरा यत्न संतत चलाही जाता है। जबसे भगवतीने मुझे आज्ञा दी है तबसे जब २ हम दोनों एकांतमें बतलाती हैं किसी न किसी निमित्तसे—वह ऐसा है, वह वैसा है; उसके गुण इस प्रकारके हैं, उसका रूप इस प्रकारका है, इस प्रकार वारंवार वर्णन कर **मदयंतिकाको** **मकरंदपर** विशेषरूपसे आसक्त करानेके लिये मैं चेष्टा करती रही। अद्यावधि उसने उसको देखा नहीं है, पर तौभी मेरे कथनहीसे वह उसपर अनुरक्त हो गयी और उसके दर्शनोंके लिये अत्यंत आतुर हो रही है। अब देखा चाहिये आगे क्या होता है।

यह सुन **अवलोकिताको** अति आनंद हुआ उसने **बुद्धिरक्षिताकी** प्रशंसा की और उसे साधुवाद दिया। इसके उपरांत **बुद्धिरक्षिता** मेरी सखी **मदयंतिका** मेरी बाट जोहती होगी अब मैं जाती हूं ऐसा कहकर शंकरके मंदीरकी ओरको गयी।

पाठकोंको विस्मृत न हुआ होगा कि **कामंदकी** **मालतीकी** ओर गयी थी । उसने **मालतीकी** माताके समीप कृष्णचतुर्दशीके माहात्म्यको विशेषरूपसे वर्णित कर कहा कि आज कृष्ण-चतुर्दशी है आजके दिन जो उपवर कन्या मनोभावसे शंकरकी विधिपूर्वक अर्चा करती हैं उन्हें सौभाग्यकी वृद्धिका लाभ होता है । जिस रीतिसे पुत्रीका कल्याण हो वह तन्मातापिताको इष्टही रहती है । **कामंदकी** उद्दंड विदुषी एवं सर्व शास्त्रपारंगता होनेके कारण उसके वाक्योंपर **मालतीकी** माताकी बहुत श्रद्धा थी । उसने यह वार्त्ता **भूरिवसु**को सूचित की और उससे **मालती**को शंकरके दर्शनोंको जानेकी आज्ञा प्रदान करनेकी प्रार्थना की । **भूरिवसु** **कामंदकीकी** समस्त व्यवस्थाओंको जानताही था अतः उसने इसका विशेषरूपसे अनुसंधान कर उक्त प्रार्थना स्वीकृत की ।

देवार्चनके निमित्त जाना है और साथमें पूज्यपाद भगवती **कामंदकी** हैं अतः विशेष परिचारिकाओंकी आवश्यकता न जान केवल **लवंगिका**को साथ ले भगवती **कामंदकी**के साथ जानेको **मालती**की माताने उसे आज्ञा दी । अद्यावधि जो २ गूढ वृत्तांत **मालती**को ज्ञात हो चुका था उससे उसे दृढ विश्वास हो गया था कि भगवती **कामंदकी**की सहायतासे मेरा अभीष्ट हेतु सिद्ध हो जायगा, एतावता उसके साथके रहने तथा उसकी वार्त्ताओंके श्रवण करनेको वह बहुतही लाभदायक जानने लगी थी । माताकी आज्ञा मिलतेही वह तुरंत जानेके लिये उद्यत हुई । उसे साथमें ले **कामंदकी** शंकरके मंदिरको गयी ।

मार्गमें अपने इस प्रचंड उद्योगकांडके विषयमें वह मनोमन यह विचारती जाती थी कि अब मैं यह मान सकती हूं कि मेरा काम आधा सिद्ध हो चुका । यह बालिका (**मालती**) कैसी विनयशील एवं नम्र थी । इससे पूर्व अपने हृदयस्थ विचार अपनी सखियोंपरभी वह प्रकाशित न कर सकती थी; पर मैंने पुनः

पुनः अनेक उपायोंद्वारा आज इतने दिनोंसे परिश्रम कर उसके मनको इस ओर आकर्षित किया है । अब वह अपने हृद्गत मनोभावोंको अपनी सखीजनोंपर शुद्धांतःकरणपूर्वक प्रस्फुटरूपसे प्रकाशित करने लगी है । और सखियोंके कथनपर विश्वासभी करने लगी है । और मुझपर तो यह अत्यंतही मोहित हो गयी है । मेरी क्षणमात्रकी अनुपस्थितिसे यह कातर हो जाती है और मुझे देखतेही इसे असामान्य आनंद होता है । एकांतमें मुझसे वार्त्तालाप करनेके लिये अब यह सदैव अत्यंत उत्कंठित रहा करती है । और मेरे प्रश्नका उत्तर अत्यंत विनीतभावपूरित प्रेमपूर्वक देती है । हृद्गत समस्त विचार मुझपर प्रगट करती है । मुझे प्रस्थित होनेके लिये प्रस्तुत देख गले लगलगकर मुझे ठहराती है और सौगंद देकर पुनः शीघ्र दर्शन देनेके लिये मुझसे प्रार्थना करती है। अब निजेष्ट कार्यकी सिद्धिके हेतु आशा करनेके लिये यह एक सुदृढ कारण है । **शकुंतला वासवदत्तादिकोंके** इतिहासको मुझसे श्रवण कर, मातापिताकी सम्मतिके विना उन लोगोंने अपने २ प्राणवल्लभोंको वर लिया, ये वातें इसके मनमें अब चढने लगी हैं । अब मुझसे जब तब यहभी पूछा करती है क्या सचमुच उन लोगोंने ऐसाही किया था ? फिर उदासीनसी हो मेरी गोदमें सिर रख घोर चिंतासे आक्रांत होती है । इन समस्त लक्षणोंको देख मुझे दृढ आशा होती है कि अब यह मेरे वचनोंको पूर्णतया मानेगी। अब माधवके समीपही इस चर्चाको छेड इसका प्रत्यय देखना चाहिये ।

उक्त प्रकारके विचार करते करते **मालती** और **लवंगिकाको** साथ ले वह शंकरके मंदिरके निकट पहुंची । राजाको पिताने जो उत्तर दिया था उसका जब **मालतीको** स्मरण हो आता था वह मनमें अत्यंत कातर हो दुखिया हो जाती थी। इतनेमें **लवंगिकाने** उसके चित्तको विश्रांति देनेके अभिप्रायसे पुष्पोद्यानका वर्णन कर कहा कि **मालती** ! मधुर मधुर मकरंदसे

आर्द्र एवं कोकिलकलरवपूरित कुसुमाकरोद्यानमें संचार करनेवाला यह वायु तुझे शीतलता प्रदान करनेके निमित्त स्पर्श कर रहा है। भला इसकीही सेवासे तेरा कोमल गाल शीतल हो। देख यह शशिशेखरका मंदिर है और ये पार्श्ववर्ती परिचारकगण शिवजीकी पूजार्चामें किस प्रकार निमग्न हो गये हैं। भगवती कामंदकीकी आज्ञानुसार भक्तवत्सल शंकरका विमल चित्तसे पूजन कर। और अपना इष्ट हेतु सिद्ध होनेके लिये वर मांग। सती शिरोमणि भगवती गिरीशनंदिनी तेरा मनोरथ परिपूर्ण करेंगी।

माधव कुसुमाकरोद्यानमें पहुंचकर जिस मार्गसे मालती आनेवाली थी वहांही एक वृक्षकी ओटमें वह ऐसी चतुराईसे खडा हुआ था कि कामंदकी तो उसे न देख सके पर वह तीनोंको देख सके। भगवती कामंदकीके साथ मालतीको शिवजीके दर्शनोंको जाते देख उसे परम हर्ष हुआ। वह बोला भगवती कामंदकीके सामने २ चलती हुई उसे मैंने अभी देखा। इससे निदाघदाहार्त्त युवामयूरके सदृश मेरे अंतःकरणको शांत करनेवाली जलवृष्टि शीघ्रही होगी, मानो यही सूचित करनेके लिये आदिमें चमकनेवाली विद्युल्लताके समान प्रियाकी प्राप्ति होगी, ऐसी यह (कामंदकी) आशा दिलाती है।

इतनेहीमें मालती और लवंगिकाभी उसके दृष्टिपथमें आयीं। उन्हें देख वह बोला " ओहो लवंगिकाको साथ ले मालतीभी इसके साथहीमें है। पर यह कैसी आश्चर्यजनक घटना है कि इस कमलपत्राक्षीका निष्कलंक मुखचंद्र संनिकट होनेके कारण मेरा मन एक प्रकारकी जडताका आश्रय ले चंद्रकांतमणिके समान पर्वतकी अशेष शीतलता आकर्षित कर आप धारण करता है तद्वत् मेरे मनने इस समय एक प्रकारके विलक्षण मनोविकारको धारण किया है। इस समय यथार्थमें इस (मालती) की रमणीयता लोकोत्तर बोध होती है।

यह मेरे मानसिक कामानलको प्रज्वलित करती है, हृदयको उन्मत्त करती है, नेत्रोंको कृतार्थ करती है, इस चंपकवदनीकी मनोहर मूर्ति किंचित् कांतिहीन हो जानेपरभी मेरे सकलावयवोंको तृप्त करती है !

माधव वहां आया है यह कामंदकीको पूर्वसंकेतद्वारा विदितही था। शिवालयके निकट पहुंचतेही उसने मालती और लवंगिकाको फूल बीन लानेकी आज्ञा दी और आप वहीं पथ-श्रमनिवारणार्थ बैठ गयी। लवंगिकाने कहा सखी! चलो आपुन लोग इस निकटस्थ कुंजमें फूल बीनें।

मालतीने लवंगिकाका कहना अंगीकृत किया और दोनों पुष्प बीनते २ उस लताभवनकी ओर गयीं । माधव वहां निकटही दबका बैठा था मालतीके वचनामृतपान करनेको वह विशेष लोलुप हो रहा था। उसने अपने जीमें कहा किप्रियाके मुखारविंदके प्रथम शब्द श्रवण करनेके लिये उत्कंठित होनेके कारण मेरा सकलांग पुलकित हो रहा है; नवमेघकी वृष्टिका जल पा समुद्भूत हुए छत्रतरुका इस समय मैं पूर्णरूपसे अनुकरण कर रहा हूं।

उसके दर्शन होनेके योगका स्मरण वह मनोमन कहने लगा कि भगवती कामंदकीका आचार्य्यत्व बडा आश्चर्य्यजनक है। नोचेत् आजका यह अवसर क्यों हाथ आनेवाला था ?

इधर फूल बीनते २ मालती और लवंगिका माधव जिस स्थानपर बैठा था उसी ओरको चली जाती थीं बार बार सखी इस पेडके नहीं, आओ उस पेडके तोडें। अरी ये नहीं देख वे सामनेवाले पेडके फूल उत्तम हैं इस प्रकार वे दोनों आपुसमें वार्त्तालाप करती जाती थीं।

फूल बीनते बीनते मालती किंचित् श्रमित हो गयी थी। इतनेमें कामंदकी वहां आयी और मालतीको गले लगा उसके कपोलस्थ श्रमबिंदुओंको पोंछकरबोली ।प्रिय पुत्री ! बस कर।

जितने फूल तोडे हैं उतने अलं होंगे । अधिक श्रम होनेके कारण तेरे मुँहसे शब्द ठीक २ नहीं निकलते । सकल गात्र शिथिल हुएसे जान पडते हैं । मुखचंद्रपर घर्मबिंदु झलक रहे हैं। तेरे नेत्र आपोआप संकुचित हो रहे हैं, इससे यह जान पडता है कि हृदयवल्लभके दर्शनोंसे होनेवाला खेद इस समय तुझे सता रहा है । भगवती कामंदकीके मुखसे हृदयवल्लभका नाम सुन लज्जित हो मालती नीचेको निहारने लगी ।

कामंदकीका भाषण श्रवण कर लवंगिका बोली माने अच्छी आज्ञा प्रदान की। इसकी अवस्था वैसीही लक्षित होती है।

उनके उक्त विनोदको सुन माधवको बडा कौतूहल जान पडा । इतनेमें कामंदकीने मालतीसे कहा कि अब थोडी देर-तक यहां ठहर, मैं तुझसे कुछ कहा चाहती हूं।

यह सुन तीनों नीचे बैठ गयीं । अनंतर कामंदकीने मालतीको अपनी गोदमें बैठा उसकी ठुड्डीको ऊपर उठाकर कहा कि पुत्री ! मैं तुझे एक विलक्षण वार्त्ता सुनाती हूं उसे तू श्रवण कर।

मालती सानुनय बोली मेरा ध्यान उसी ओरको है। कामंदकी बोली तुझसे बातचीत करते २ एक वार मैंने माधवनामके एक युवापुरुषका वर्णन किया था, उसका तुझे स्मरण है वा भूल गयी ?

इसपर मालती कुछ न बोली; पर लवंगिकाने कहा हां हां मुझे उसका स्मरण बना है । जिस प्रकार आप इसको चाहती है उसी प्रकार आपका विशेष प्रेम उसपरभी है ।

कामंदकी—अस्तु; वह मन्मथोद्यानकी यात्राको गया था तबसे वह नितांत दुखिया हो रहा है और शरीरका दाह असह्य होनेके कारण वह बिलकुल पराधीन हो गया है । साक्षात् शीतराईमके दर्शनोंसेभी उसे आनंद नहीं होता । उसके प्रेमी मित्रभी उसे आजकल नहीं भाते । वह निसर्गतः बडा धैर्यवान् होनेके

कारण मुँहसे कुछ नहीं कह सुनाता तौभी उसका मानसिक संताप उसकी अवस्थासे व्यक्त होता है। उसके शरीरकी कांति अलसीकुसुमके समान श्याम है। यद्यपि वह स्फाटिकसदृश सफेद हो गया है और उसका गात कृश हो गया है तौभी प्रकृतिसौंदर्यसे देखनेवालेको वह अत्यंत रमणीय दीख पडता है।

लवंगिका–हां हां ठीक है उस दिन अवलोकिता तो कहतीभी थी कि माधवका प्रकृतिस्वास्थ्य ठीक नहीं है उसे शीघ्र देखना चाहिये।

कामंदकी–हां उसीलिये वह गडबड करती थी। पर मुझे यह ज्ञात हुआ है कि, उसके असमाधानका कारण मनोजजन्य उन्मादके व्यतिरेक दूसरा नहीं है और उसका कारण यह मालतीही हुई है ऐसा मैं सुनती हूं और समझतीभी हूं। क्योंकि उस महात्माके दृष्टिपथमें इसके मुखचंद्रके प्राप्त होतेही शांत समुद्रके स्थिर जलराशिकैसा उसका मन क्षुब्ध हो गया, एतावता इसके सिवाय दूसरा कारणही नहीं है।

कामंदकीका उक्त भाषण बडा मुडकदार था। उसके मर्मको समझकर माधव मनोमन कहने लगा, धन्य! संलापका आरंभ देखनेमें कैसा सरल है। उसे बडाई देनेके लिये कैसे २ यत्न किये हैं। इसमें न जाने कितनी युक्तियां हैं। पर वास्तवमें उक्त भाषण इस (कामंदकी) के लिये कोई विलक्षण बात नहीं है। स्वयं सकल शास्त्रोंमें गति है, बुद्धि नितांत तीव्र है और समयोचित भाषण करनेकी सामग्रीभी वैसीही है। वाक्पटुता उसी प्रकार समयोचित भाषणकी तारतम्यता एवं स्मरणशक्त्यादि गुण जिसमें होते हैं उसे वे कामधेनुकैसे सहायक होतेही हैं। सारांश इन भगवतीमें वे सब गुण होनेके कारण इनके समस्त प्रयत्न यथावत् सफल होते हैं।

कामंदकीने मालतीसे पुनः कहा कि उसका मन इस प्रकार क्षुब्ध हो जानेके कारण वह अपने प्राणोंको हथेलीपर लिये फि-

रता है। न मालूम किस समय वह कैसा साहस कार्य न कर डाले। अभी तो वह जिस नवमंजरीसंपन्न रसालपर कोकिल मधुर रव करती है उसे टकटकी लगाकर निहारते रहता है। बकुलपुष्प-सौरभसंपन्न समीरका सेवन कर केवल कमलिनीके पत्रोंको इसी अभिप्रायसे धारण कर रहा है कि इनके योगसे अत्यंत विरह-पीडाका अंत करनेवाली मृत्यु प्राप्त हो और इसीलिये वह चंद्रिकाकाभी सेवन कर रहा है।

यह सुन माधव बोला जिस घटनाका मैंने कभी स्वप्नमेंभी अनुभव नहीं किया, उस घटनाका यह इस समय वर्णन कर रही है।

इधर मालतीने सोचा कि इस (कामंदकी) के कथनानुसार यदि वह करता होगा तौ तो बडीही कठीन बात है।

कामंदकी बोली इस प्रकारकी उसकी विपन्नावस्था होनेके कारण वह प्रकृतिकोमलगात्र बालक इस अननुभूत दुःखके भारसे कदाचित् कालकवलित हो जायगा ऐसा जान पडता है।

---

१ एक अनुभव विना समस्त शास्त्राध्ययन व्यर्थ है। बापुरी कामंदकी अपने तापसोचित वेषके विपरीत अनुष्ठान करनेको केवल प्रेमहीके कारण उद्यत हुई है यावज्जन्म विषयसुखका अनुभव न होनेपरभी स्त्रीपुरुषोके हृद्गतको जानकर विषयसमुद्रोत्तीर्ण महिलाकैसी वह बडी पटुतासे बतलाती थी। पर यहां उसने बिलकुल धोखा खाया। क्योंकि यह बात सच है कि कमलिनीके पत्रोंपर शयन करने तथा तद्द्वारा गात्राच्छादित करनेसे कामाग्निका दाह शांत होता है पर केवल युवतिगणही इसका सेवन करती हैं।

बादिही चंदन चारु घिसै, घनसार घनो घसि पंक बनावत।
वादि उसीर समीर चहै, दिन रैन पुरैनिके पात बिछावत॥
आपुहिं ताप मिटी द्विजदेव, सुदाघ निदाघकी कौन कहावत।
बावरि! तू नहिं जानति आज, मयंक लजावत मोहन आवत॥ १॥

पुरुषोंके कमलिनीपत्र धारण करनेका उदाहरण कहीं उपलब्ध नहीं होता अनुभव-विना केवल शास्त्रके ज्ञानका अवलंबनकर विषयप्रतिपादनमें ऐसी त्रुटियोंका होना प्रकृतिसिद्धही है इसीलिये माधवने कहा है कि जो मुझे स्वप्नमेंभी अनुभूत नहीं हुआ उसका यह वर्णन कर रही है।

यह सुन माधवने कामंदकीकी अत्यंत कृतज्ञता स्वीकृत की। मालतीने लवंगिकासे धीरेसे कहा सखी! मेरे लिये उस समस्त जनालंकरणभूत (माधव)के सर्व नाशकी शंका कर भगवतीने मुझे बहुतही डरवाया है; तो बतला अब क्या कर्त्तव्य है?

लवंगिकाने इसपर उसे कुछभी उत्तर न दे कामंदकीसे कहा मातः! आपने जो कहा सो यथार्थमें वैसाही हो; पर हमारी यह सखी (मालती) अपने भवनके निकटस्थ मार्गको क्षणभर शोभा प्रदान करनेवाले माधवका खिडकीसे बार बार दर्शन कर प्रचंड अंशुमालीके तेजस्पर्शसे सुंदर कमलिनीसदृश म्लान हुए अपने शरीरावयवोंद्वारा अपनी कामवेदना प्रकटित कर रही है। ऐसी अवस्थामें विशेष रमणीय दिखलाई देनेपरभी हमकैसी सखियोंको अपनी भावी अवस्थाकी घोर चिंतामें पतित करती है। कैसेही खेल खिलौना इसे दिखलाओ तौभी इसका चित्त उनमें लगताही नहीं। कमलसे मनोहर वामकरपर कपोलारोपित कर यह अपने दिन काटती है। दर फुल्लकमलके मकरंदबिंदुको वहन करनेवाले एवं नवविकसितकुंदमाकंदमकरंदबिंदुसंपन्न निज भवन-आसन्नवर्त्ती वायुके स्पर्शसेभी इसको नितांत दाह होता है। उस दिन मदनोद्यानमें यात्राके अवसरपर लोगोंको दर्शन देनेके लिये आये हुए साक्षात् भगवान् मदनकैसे उस महाभागके दर्शनोंका लाभ जबसे इसे हुआ है तबसे इसे असह्य दुःख हो शरीरका दाह दिनादिन बढते जाता है अतः उसकी दशा विलक्षण प्रकारकी हो रही है। दिनेशविकासिनी कमलिनी जैसी चंद्रोदयके दर्शनसे म्लान होती है; उसी प्रकार यहभी निशानाथको देख कांतिहीन होती है। तौभी क्षणिक मानासिक वल्लभसमागमानुभवद्वारा इसकी समस्त देह स्वेदमय हो पृथ्वीको आर्द्र किया करती है। यह हम लोग वारंवार देखा करती हैं। इसके मुखचंद्रको उक्त अवस्थामें देख चतुर सखियोंको इसकी कुमारीदशाके विषयमें बडी शंका होती है। चंद्रकांतमणियोंकी मालाको धारण कर अत्यंत शीतल मरी-

थिमती चंद्रिकामें कर्पूरादि शीतल द्रव्यसंपन्न चंदनलेप लगाकर दासीगण इसपर कोमल कदलीपत्रद्वारा व्यजन करती हैं पर तिसपरभी यह आर्द्र कमलपत्रपर पडे २ तडफ २ कर बडे दुःखसे रात्रि काटती है । तलफते तलफते कहीं झपकी लगही गयी तो तत्काल स्वप्नसुखानुभवके कारण इसका सकल शरीर श्रमबिंदुमय हो जाता है । चरणोंमें लगाया हुआ अलक्तक पिघल जाता है । हृदय कंपायमान होने लगता है । दीर्घ निःश्वास परित्यक्त कर दोनों भुजाओंसे अपने वक्षस्थलको दृढताके साथ पकड रखती है, उतनेमें जागृत हो अपनेको एकाकिनी जान मोहग्रसित होती है और तत्क्षण नेत्र मूंदकर संज्ञाशून्य हो जाती है । सखियोंके पुष्कल प्रयत्न करनेपर जब कुछ कालमें यह पुनः श्वासोच्छ्वास करने लगती है तब हम लोग इसे जीवित जान आनंदित होती हैं । अब इसके इस घोर दुःखके निराकरणार्थ क्या उपाय करना चाहिये सो हम लोगोंको नहीं जान पडता । यह विधाता मुझे मृत्यु श्लाघनीय है, न मालूम इस मर्मस्पृक् घोर दुःखमें मुझे अभी और कितने दिन काटने हैं । ऐसे २ कष्ट वाक्य सुना हम-कैसी सखियोंको दैवनिंदामें प्रवृत्त कराती है तो भगवती आपही स्वयं विचार कर कहे कि इसके सुकुमार शरीरपर मन्मथ और कितने दिन बाण प्रहार करता रहेगा और ऐसे दुःखमें अभी इसे कितनी रात्री काटनी होंगी इसपर ठीक २ मीमांसा कीजिये । मुझे बडी शंका हो रही है कि कहीं ऐसा न हो कि ऋतुराजका त्रिविध समीर जो इनकैसियोंको प्रायः दुःख देनेके लियेही संचार करता है, मेरी सखीको हानिप्रद हो ।

कामंदकीने जिस खूबीके साथ कह मालतीके लिये माधवका कातर होना उत्तमतया वर्णित किया था । उसका लवंगिकाने यथोचित उत्तर दिया और अत्यंत चतुराईसे यह प्रमाणित कर दिखाया कि इसके लिये माधवही घोर कष्टयातना नहीं भोग रहा है किंतु यहभी उसके लिये अधिक भीषण कष्ट भोग

रही है। यह सब सुन कामंदकी जान गयी कि मेरी कथनयु-क्तिकी अपेक्षा इसकी प्रवचनयुक्ति कहीं चढी बढी है। उसने लवंगिकासे कहा लवंगिका! तेरे कथनानुसार इसका अनुराग यदि माधवपर होगा तो इसे स्पष्टतया गुणज्ञताकाही फल जा-नना चाहिये। इसीलिये इसकी इस अवस्थासे मुझे प्रचुर आनंद होता है और अंतमें इसका फल क्या होगा इसके लिये अधिक चिंता नहीं होती।

यह सुन माधवने विचारा कि यह (कामंदकी) दुःखी होती है सो बहुतही समुचित है। उसने पुनः कहा, री लवंगिका! यह कैसा अन्याय है? एक तो पहिलेही इसका शरीर अत्यंत सुकुमार एवं सुंदर है तिसपरभी कठोर मदनने उसे अपने अनिवार बाणों-का लक्ष्य बनाया है और कामोद्दीपनकी मलयानल रसालमंजरी और रमणीयचंद्रिकादि सामग्री एकत्रित कर ऋतुराज वसंत इसपर चढाई कर रहा है तौ देख इस दुखियाके लिये एकसे एक बढकर अनर्थके कारण कैसे उपस्थित हुए हैं।

लवंगिका बोली भगवति! यह तो जानतीही होंगी कि चित्रपटके पृष्ठपर इसने माधवकी प्रतिकृति उतारी थी।

मालतीके हृदयप्रदेशस्थ वस्त्रको हटाकर माधवकी गुही हुई बकुलपुष्पमाला जो लवंगिकाने उसे ला दी थी और उसने असामान्य प्रणयपूर्वक पहिर ली थी उसे लक्षित कराकर बोली संप्रति केवल यह मालाही इस प्रिय सखीके प्राणोंको आधारभूत हुई है।

लवंगिकाने अपनी बनाई हुई मालाको बाहर निकालकर कामंदकीको दिखलाया यह देख माधव मालाको संबोधन कर बोला, री माला! इस लोकमें यथार्थमें तूही धन्य है क्योंकि इसकी अत्यंत प्रियतम हो कुम्हलाते कमलके पत्रसदृश शुभ्र दीखने-वाले इसके पीन उरोजप्रदेशको इस समय केवल तूही शोभायुक्त कर रही है।

पाठक ! लीजिये अब मदयंतिकाकाभी कुछ हाल पढिये । आपको स्मरण होगा कि वह सखियोंके साथ पूजनकी सामग्री ले शिवालयको जानेके लिये प्रस्थित हुई थी । बुद्धिरक्षिता उसके साथमें न थी पर पीछेसे वहभी कामंदकीके मठसे होती हुई शीघ्रही उसे मार्गमें आ मिली । मार्गमें परस्पर वार्त्तालाप करती हुई धीरे धीरे वह शिवालयके निकटस्थ पुष्पोद्यानके बहिःप्रदेशमें आ पहुँची । पडोसके एक मठमें एक बडा भयानक व्याघ्र पींजरेमें बंद था एकाएक किसीने उसे भबका दिया अतः वह क्रुद्ध हो पींजरेके सीकचोंको तोड बाहर निकल आया । वह भयानक एवं डरौना जंतु चारों ओर कूदता फांदता इस बालाके अत्यंत निकट आ गया । तब उनमें एक साथही बडा कोलाहल मचा । भाग्यवश वह मदयंतिकाके बहुतही निकट आ गया तब उसकी सखियां और आसन्नवर्ती लोग उच्च स्वरसे चिल्लाकर पुकारने लगे। अरे दौडियो दौडियो ! इस शिवालयके निकट जो लोग हों वे शीघ्र आवें । यह बाघ हमारी प्रियसखी मदयंतिकाके आसपास फेरी लगा रहा है । भाइयो ! बाट क्या जोहते हो ? आओ आओ इसकी रक्षा करो । राजाके ठठोल नंदनकी बहिन यह मदयंतिका इस व्याघ्रके पंजेमें फस गई है । इसके साथी सब लोग भाग गये । जो लोग साहस कर आगेको बढे उन्हें इस दुष्ट श्वापदने मार डाला तो शीघ्र आइये ।

इस गडबडको सुन मालती भौचक हो बोली, अरी लवंगिका ! कह अब क्या करना चाहिये ? यह बडाही अनर्थ आ उपस्थित हुआ ।

बुद्धिरक्षिता चिल्ला रही थी उसके शब्दको सुन माधव अपनी वर्त्तमान दशाको भूल एकाएक उठ खडा हुआ और बुद्धिरक्षिताको ढाढस दे कहने लगा, बुद्धिरक्षिता ! घबडा मत । वह दुष्ट बाघ कहां है उसे दिखला ऐसा कहता हुआ वह उसकी ओरको गया । इस समय उसे औचक देख मालतीको बडा

हर्ष और भय हुआ । वह मनोमन कहने लगी ओहो ! यहभी यहांही थे । अबलों मुझे यह हाल बिलकुल न जान पडा था ।

मालतीके युगपत् आनंदमयचकित होनेका कारण यह था कि उसके दर्शनोंसे तो उसे आनंद हुआ और उस अपनेको एकांतमें जान जो बातें कीं उन्हें उसने सुना होगा यह सोचकर वह भयभीत हुई । उसे देख माधवको अति आनंद हुआ वह मनोमन सोचने लगा कि आज मैं अपनेको बडा धन्य मानता हूं क्योंकि अकस्मात् मुझे देख चकितदृष्टिसे यह मुझे निहार रही है । इस समय मुझे जो सुखानुभव हो रहा सो कथनशक्तिसे परे है । मुझे ऐसा जान पडता है मानो किसीने मुझे कमलमाला पहिरा दी है और दूधसे स्नान कराये हैं । इसके उन्मीलित नेत्रोंद्वारा मेरे समस्त गात्रकी ओर निहारनेके कारण पीयूषवृष्टि करनेवाले मेघोंने मुझपर दीर्घ काललों वृष्टि कर मुझे शांत कियासा जान पडता है ।

इतनेमें बुद्धिरक्षिताने आगे बढ माधवसे कहा महाभाग ! इस वाटिकाके बहिर्मार्गके मुहानेपरही वह बाघ है; तो लो अब विलंब न कीजिये ।

यह सुन माधव बडे साहसके साथ उधरको दौडते गया कामंदकीने बडी चतुराईसे उसपर आक्रमण करनेकी आज्ञा दी; पर मालती अति भौचक हो बोली, सखी ! कितनाभी हुआ तो वह बाघही है । माधवको उसपर आक्रमण करते देख; उसने लवंगिकाके कानमें धीरेसे कहा लवंगिका ! हाय सखी इस समय मेरा जी सशंक हो रहा है ।

इसके उत्तरमें लवंगिकाने कुछभी न कहा । कामंदकी, बुद्धिरक्षिता, मालती और लवंगिका ये चारोंकी चारों माधवके पीछे २ वाटिकाके बाहर गयीं । माधव उस व्याघ्रके निकट जा उसके भयानक रूपको देख बोला ओ हो ! इसके इन लंबे २ दांतोंमें कुछ आंतें कैसी कठिन फँस गयी हैं और कुछ टूट गयी

हैं। इसके मारे हुए प्राणियोंके हस्तपादादि अवयव चारों ओर बिथरे पडे हैं। इस प्रकार इस व्याघ्रका मार्ग नितांत बीभत्स एवं भयावना हो गया है।

थोडासा आगे बढ पुनः कहने लगा बडे खेदका विषय है कि हम लोग बहुत दूर थे और इधर इस श्वापदके पंजेमें यह लडकी मदयंतिका फँस गयी, यह सुन मालती आदि स्त्री-गण दुःखित हो हाय हाय करने लगीं। सखी मदयंतिका कहां गयी ? इत्यादि कह कहकर कातर होने लगीं।

इतनेमें एकाएक मकरंद वहां आ उपस्थित हुआ। मदयंतिकाको शेरसे बचा, उससे द्वंद्वयुद्ध कर बडी वीरताके साथ उसने उसे मारा पर उसका शरीर बडे २ आघातोंसे क्षतविक्षत हो गया। व्याघ्रको मारा यह देख कामंदकी और माधव अतीव आनंदित हुए और मदयंतिकाको सुरक्षित पा सबको विशेष आनंद हुआ। तुरंतही सब लोग एकत्रित हुए और देखा कि व्याघ्र उधर मरा पडा है और इधर भयानक घावोंके कारण मकरंदभी मूर्च्छित हो पडा है। मदयंतिका उसे चैतन्य करनेकी चेष्टामें तत्पर है। माधव उसकी उक्त लोमहर्षण अवस्थाको देख एकाएक गतसंज्ञ हो कामंदकीसे अपनी रक्षा करनेकी प्रार्थना कर मूर्च्छित हो उसकी गोदमें गिर पडा।

चौथा परिच्छेद.

पाठक ! पिछले परिच्छेदमें अभी आप जानही चुके हैं कि व्याघ्रके आघातोंसे मूर्च्छित हो मकरंद मदयंतिकाके गोदमें पडा था। अपने प्राणप्रिय मित्रकी उक्त अवस्थाको देख मूर्च्छित हो पडे हुए माधवको लवंगिका अपने गोदमें ले बैठी थी। कामंदकी, मालती और बुद्धिरक्षितादि घबराकर उन्हें

चैतन्य करनेके लिये चेष्टा कर रही थीं। मदयंतिका बुद्धिरक्षितांद्वारा मकरंदके अनेकानेक गुणानुवाद श्रवण कर उस पे प्रेमासक्त हो गयी थी पर अद्यावधि परस्परकी प्रत्यक्षमें चार आंखेंतक न हुई थीं। इस समय वह उसे अपने गोदमें ले उसके लिये महत् दुःख प्रदर्शित करती थी। पर इसमें उसका और कुछ अभिप्राय न था। मेरे प्राणोंकी रक्षा करनेके लिये इस भले मानुसने साहस कर अपने लिये यह घोर आपत्ति उठाली, यह उस कोमलचित्त बालिकासे देखा न जाता था। एतावता वह केवल उसके उपकार ऋणके मुक्त होनेके आशयसेही उसे अपनी गोदमें ले बैठी। बहुतकाल बीतनेपरभी उसकी मूर्च्छाको न टूटते देख उसने कामंदकीसे कहा भगवति! इस दुर्भागा अभागिनी मदयंतिकाके लिये अपने प्राणोंको घोर आपत्तिग्रसित करनेवाले एवं दीन दुखियाओंपर ममता करनेवाले इस महाभाग (मकरंद) को शीघ्र सचेत करनेके लिये यत्नवती हूजिये।

वे दोनों तीनों अल्हड लडकियां इस भयावने प्रसंगको देख बिलकुल घबरा गयी थीं। अब क्या करना चाहिये उन्हें कुछ न सूझता था। कामंदकीने अपने कमंडलुजलसे उन दोनोंके नेत्रोंपर छींटे मारकर कहा, री! तुम सब जनी अपने २ अंचलसे इनके मुखपर वायु देती रहो तो ये चैतन्य होजांयगे। यह सुन वे सबकी सब उनपर हवा करने लगीं। कुछ कालके उपरान्त मकरंदकी मूर्च्छा टूटी और वह उठ बैठा। माधवको मूर्च्छित पडा देख उसका हाथ पकडकर मित्र माधव! क्या तुम ऐसे भीरु हो गये? जरा आंखें खोलकर मेरी ओर तो देखो। मेरी मूर्च्छा टूट गयी और अब मैं सचेत हो गया हूं। मुझे कुछ नहीं हुआ इत्यादि कह उसने माधवको उठाकर बैठाया। पर तौभी वह शीघ्र सचेत न हुआ।

इसके पूर्व मदयंतिका यह न जानती थी कि मकरंद यही है। पर कामंदकीने उसका नाम ले उसे बोलाया। तब वह

समझ गयी । उसे चैतन्य देख वह अतीव आनंदित हुई और कहने लगी री बाईरी ! इस मकरंदरूप कुमुदबांधवका इस समय उदय हुआ यह बहुतही भला हुआ । मेरी चिंता दूर हुई ।

मकरंदने माधवको उठाकर बिठलाया पर तौभी वह खुमारीहीमें था । इतनेमें मालतीने उसके सिरपर हाथ रखा तब उसे सचेत देख उसने आनंदपूर्वक लवंगिकासे कहा विधिने तेरी मनोकामना परिपूर्ण की । तेरा परम प्रणयी (माधव)तो चैतन्य हुआही पर यह महाभाग मकरंदभी लब्धसंज्ञ हुआ ।

इतनेमें माधवने उठ खडे हो अरे साहसी ! इधर आ ऐसा कह दौडकर मकरंदके देहमें जा लिपट गया । इसके उपरांत कामंदकी दोनोंके माथे सूंघकर[1] मेरे दोनों बालक चैतन्य हुए यह परमेश्वरने महत् कृपा की ऐसा कहने लगी। अन्य लोगोंनेभी हमारा हित हुआ ऐसा कह अपना २ आनंद प्रदर्शित किया ।

बुद्धिरक्षिता धीरेसे बोली सहेली मदयंतिका ! मैंने तुझसे जिनकी चर्चा की थी वह यही है ।

मदयंतिका–यह मैं तभी जान गयी; यह माधव और यह वह।

इसपर बुद्धिरक्षिता पुनः पूछा अब तो मेरा कहना सच वा झूठ था तू जान चुकी ना ? भला मनकी तो बतला दे ।

मदयंतिका–तेरीकैसी चतुर स्त्रियां हठात् अनौचित्यके लिये पक्षपात नहीं करती ।

माधवकी ओर निहारकर सखी ! सुनते हैं मालतीका इस महानुभावपर विशेष अनुराग है । यहभी बहुत अच्छा है । ऐसा कह फिर प्रेमपूर्वक मकरंदकी ओर निहारने लगी ।

बहुधा स्त्रीगण केवल रूपलावण्यकोही देखकर नहीं मोहित होतीं तो उन्हें गुणोंकाभी अधिकतर चाव रहता है । सबमें वीरता

---

[1] प्राचीनकालमे पुत्रवत् माने हुए आत्मीय जनोंके विजय प्राप्त कर वा घोर आपत्तिसे मुक्त हो, अथवा बाहर कहीसेभी आ भेंट लेनेपर बडे जेठोंमें उनके ससिका आघ्राण लेनेकी प्रथा थी ऐसा जान पडता है । पुराणादि अनेक प्राचीन ग्रंथोंमें 'शिरस्याघ्राय' यह वा इसी अर्थके वाचक अनेक वाक्य पाये जाते हैं ।

तौ उन्हें बहुतही माती है । स्वयं अबला होनेके कारणही शायद वे सबल पुरुषोंपर बहुत अनुराग रखती हों। किसी पुरुषके गुणानुवाद सुन उसपर वे आसक्त हुईं और विधिवश उसी अवसरपर उसका विशेष पराक्रम उन्हें दृष्टिगत हुआ तो वह तत्क्षणसे उनके हृदयका एकमात्र अधीश्वर बन बैठता है । मकरंद और मदयंतिकाको परस्परकी प्रथम भेंटका इस समयका यह अवसर बहुतही उत्तम हाथ लगा । बुद्धिरक्षितासे पुनः पुनः उसकी प्रशंसा सुन मदयंतिका मकरंदपर अपना जीवन सर्वस्व समर्पित कर किसी प्रकार उसके एक बेरके साक्षात्कारके लिये अत्यंत लोलुप एवं अधीर हो गयी थी। वैसेही मकरंदभी उसके रूपलावण्यसरित्प्रवाहमें अवगाहन करनेके लिये नितांत उत्कंठित हो रहा था।

यह निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता कि अप्रत्यक्षमें परस्परपर प्रेम करनेवाले इन दोनोंकी यदि किसी अन्य रीतिद्वारा भेंट हुई होती तौ उसमें कुछ विशेषता जान पड़ती वा नहीं पर संप्रति इतना दृढताके साथ कह सकते हैं कि उक्त साक्षात्कारका अवसर परमोत्तमतया प्राप्त हुआ । मदयंतिका प्राणनाशकी घोर दारुणविपत्तिमें फँसी हुई है उसी समय अचानके वह जिसपर प्रेमासक्त हुई थी, उसी पुरुषने उसके अजानते वहां आ उसकी रक्षा की, तदुपरांत उसे विदित हुआ कि मैं जिसको अपने हृदयका सर्वतोभाव अधिकार दे चुकी हूं वही यह प्रेममूर्त्ति है । वास्तवमें यह प्रसंग कैसा हृदयग्राही है इसका वर्णन कर इसकी योग्यताको मर्य्यादित कर कलंकका टीका अपने सिर कौन ले; इतना भय होनेपरभी उसके विषयमें कुछ कहे विना जी नहीं मानता पर भगवती सरस्वतीके शब्दकोशसे स्पष्ट उत्तर मिल जानेके कारण लेखनीको नीचे रख देना पड़ता है । अस्तु ।

उक्त दुःसह प्रसंगके व्यतिरेक माधव और मकरंदको यदि वह एकही स्थानमें देख पाती तो माधवको छोड मकरंदपर उसका मन अनुरक्त होता वा न होता इस विषयमें शंकाही है ।

क्यों कि मकरंदकी अपेक्षा माधव अधिकतर गुणोंसे भूषित था । पहिले तो वह अतुलविभवशाली एवं उच्चतर पदाभिषिक्त राजकर्म्मचारीका पुत्र था और मकरंद एक मध्यम वृत्तिवाले ब्राह्मणका पुत्र था इसके सिवाय भाग्यशाली पुरुषोंकी ओर स्त्रियोंके चित्ताकर्षित होनेकी अधिकतर संभावना होती है । इन सब कारणोंको विचारनेसे यही निश्चय होता है कि बहुतांशमें वह माधवपरही आसक्त होती; पर भाग्यकी अपेक्षा शूरताकी विशेष आवश्यकताका प्रसंग होनेके कारण उस शौर्य्यगुणने मदयंतिकाके मनको मकरंदकी ओर खींच लिया, और वहभी स्वयं उसे जी दान देनेके प्रसंगपर स्त्रियोंका चित्त निसर्गतः बडा ममतामय एवं कोमल रहता है । अपनेपर उपकार करनेवालेकी वे कैसी कृतज्ञ रहती हैं, और उसपर कैसा स्नेहभाव बनाये रहती हैं आदि विषयका वर्णन करना महा कठिन कार्य्य है । तात्पर्य मदयंतिका और मकरंदकी भेंट ऐसी उत्तमताके साथ हुई कि मदयंतिका विशेषरूपसे सोच विचार न कर सहसा निज हृदयांतः-पुरवर्त्ती रमणीय स्थानपर मकरंदको सुशोभित होनेके लिये प्रार्थना करनेको उसे पुनः विचारही न करना पड़ा ।

उन दोनोंकी भेंटसे कामंदकीको प्रचुर आनंद हुआ । उस भेंटके विषयमें उसने मकरंदसे कहा वत्स मकरंद ! मदयंतिकाके प्राणोंकी रक्षा करनेके हेतुही सौभाग्य इस नियत समयपर तुझे यहां कैसे ले आया इससे मुझे बडा विस्मय बोध होता है ।

मकरंदने उत्तर दिया सुनिये । आज नगरमें योंही मुझे एक वार्त्ता कर्णगत हुई । उसे सुन मैंने सोचा कि उस वार्त्ताको सुन माधवका चित्त अधिकतर उद्विग्न होगा । इतनेहीमें अवलोकिताद्वारा मुझे समाचार मिले कि कुसुमाकर उद्यानमें आज ऐसा २ होनेवाला है तुमभी वहां आना अतः इधर आनेके लिये मैं चल निकला । मार्गहीमें इस बाघकी गडबडको सुन दौडते दौडते यहां आ इस भले घरकी लडकी (मदयंतिका) को उस निठुर श्वाप-

दके पंजेमें फँसी हुई देख इसे उससे छोडानेके लिये निश्चय किया इसके उपरांत जो हुआ सो सब आप देखही चुकी हैं।

मकरंदने कहा कि नगरमें मैंने कुछ समाचार सुने कि जिन्हें सुन माधवका चित्त व्यथित होगा ऐसी मुझे शंका हुई। यह सुन मालती और माधव दोनोंभी बहुत सोच विचार करने लगे। इसने क्या बात सुनी होगी इसे जाननेके लिये वे बहुत चिंता करने लगे पर कामंदकी उसे तत्क्षण जान गयी। वह यह जो कहता है कि मैंने समाचार सुने हैं वे प्रायः यही होंगे कि मालती नंदनको देनेके लिये भूरिवसुने स्वीकार किया है ऐसी नगरमें किंवदंती फैल रही है वेही होंगे ऐसा समझी।

मकरंद और मदयंतिकाका तो निश्चय होही गया था। क्यों कि मकरंदने मदयंतिकाके प्राण बचाये ऐसी दशामें वह उसे छोड़ दूसरेको न वरेगी यह सिद्धही था। इस आख्यायिकामें इन दोनोंका यह संबंध गौण है। इस उपन्यासके नायक नायिकाका संबंधही प्रधान है तो उन दोनोंको परस्परमें वचनबद्ध करा देनेके लिये यही अवसर समीचीन है ऐसा सोच कामंदकीने माधवसे कहा वत्स माधव! तेरे मित्रकी शूरताने तेरी बड़ी सहायता की। एतावता मालतीको प्रीतिदाय[1] देनेके लिये यही प्रसंग बहुत उत्तम है।

इसके उत्तरमें माधवने कहा भगवति! व्याघ्रके घावोंसे मूर्च्छित हुए अपने मित्रकी भीषण दशा देख मेरे मूर्च्छित हो जानेपर अतीव सुजनतासे मेरे कपालपर करस्पर्श कर इसने मुझे चैतन्य किया तो अब यह गुप्तविवाह कर मुझे अनुकृत करेगी तो मेरे हृदयकी स्वामिनी होनेके लिये, नहीं तो मेरे प्राण पूर्णपात्र[2] बुद्धिसे

१ प्रीतिदाय अर्थात् प्रसन्नतापूर्वक जो दिया जाय। आनंदमंगलोत्सवके समय आभूषण वस्त्र वा दूसरी उत्तम वस्तुके मांग लेने वा देनेको प्रीतिदाय कहते हैं।

२ यहभी उक्त प्रीतिदायकाही नामांतर है।

लेनेके लिये सर्वतोभाव अधिकृत हैं । अतः उन दोनोंको मैं इन्हें (मालतीको) समर्पित करता हूं ।

यह सुन लवंगिका बोली हमारी प्रियसखी (मालती) को यह प्रसाद मनःकामनासे अत्यंत इष्ट है ।

मदयंतिका मनही मन सोचने लगी, विभवशाली पुरुष समयोचित भाषण करनेकी कलामें बडे दक्ष एवं निपुण रहते हैं । माधवकी उक्ति सुन मालती आनंदके मारे फूली अंग ना समायी; पर मकरंदने चित्तव्यथाका कारण क्या सुना होगा सो शंका उसके जीसे अभीलों दूर न हुई थी । एतावता उसके मुखपर जितनी प्रसन्नता झलकनी चाहिये थी उतनी न झलकी यह जान माधवने मकरंदसे कहा मित्र ! मेरे जीको चिंतित एवं व्यथित करनेवाली वार्त्ता तूने क्या सुनी है सो तो बता । यह सुन मकरंद बडी चिंता करने लगा कि यह बात इसे क्योंकर सुनाऊं; पर वह जो सुनानेवाला था वही माधवको दूसरे मनुष्यद्वारा ज्ञात होनेका अवसर प्राप्त हो गया ।

इनकी उक्त बातचीत होही रही थी कि इतनेमें मदयंतिकाके घरसे एक पुरुष द्रुतपद वहां आया और बोला बेटी मदयंतिका ! तेरे जेठे भाई नंदनने तेरे प्रति यह कहा है कि, आज महाराज अपने घर पधारे थे, आपने भूरिवसुपर अपना सुदृढ विश्वास और हम लोगोंपर अनुग्रह व्यक्त किया और स्वयं आपहीने मुझे मालती व्याह देनेका निश्चय किया है । उसके आनंदप्रदर्शनार्थ आज बडा महोत्सव मनाना विचारा गया है; तो तू शीघ्र घरपर चलके इस समारंभको सजा । तो फिर ले अब चल जलदी ।

अपनी बाहिनके प्रति भेजे हुए नंदनके उक्त संवादवाक्यको सुन मकरंदने माधवसे कहा मित्र ! मैंने जो बात सुनी थी सो यही है । मालती और माधवको य[illegible]वार्ता विषसेभी अधिक दुःखद बोध हुई । उन दोनोंके [illegible]ी बैठे २ प्राणसे सखगये ।

मालतीका माधवपर विशेष अनुराग है, यह मदयंतिकाको भली भांति विदित था, तदनुसार सखीधर्मानुकूल उक्त वार्त्ताको सुन उसे कुछ विषाद होना चाहिये था; पर प्रत्येक व्यक्तिकी खिंचावट अपनीही ओरको अधिकतर होती है। माधव समस्त गुणोंका रत्नाकर है, और मालती उसपर विशेषतया अनुरक्त है और वह मेरी प्राणप्रिय सहेली है। इससे इन दोनोंकी मनःकामना पूर्ण हो; ऐसा इस क्षणके पूर्वक्षणपर्यंत उसके मनमें था इसीलि- ये माधवने मालतीको अपना मन और जीवन अर्पित किया, तब उसने अपना आनंद प्रदर्शित किया; उसे अभी आधा घंटा- भी नहीं हुआ। यह सब बहुत सच है। पर भाईका संवादवाक्य सुनतेही उसका चित्त एकाएक बदलनेको क्षणमात्रभी विलंब न लगा। आनंदपूर्वक मालतीके गले लग उसने कहा सखी माल- ती! तू और मैं एकही ग्रामकी रहनेवाली हैं और बाल्यावस्थासे- ही अपनी विशेष मित्रता है और तभीसे अपना दोनोंका बहिनपा चला आता है, पर अब तो तू हमारे घरकी गृहस्वामिनी हुई है। निःसंशय विधाताने यह तो सोनेमें सुगंधही मिलाई।

मदयंतिकाकी उक्त बातको सुन कामंदकी मनहीमन हँस कहने लगी। तुम दोनों यथेच्छ मनमोदक खाया करो, पर भवि- तव्यता इससे निरालीही है। इस बातको जानबूझकरभी व्यक्त न कर उसने ऊपरसे मदयंतिकाको अपना आनंद प्रकाशित किया और कहा बेटी मदयंतिका! तेरे भाईको मालती दिलाकर विधिने तुझपर बड़ाही अनुग्रह किया ऐसा समझना चाहिये। मद- यंतिकाको उसका सच्चा अभिप्राय अणुमात्रभी ज्ञात न हुआ। उसने अपने सीधे सरल स्वभावसे कहा मांजी! यह सब आपके आशीर्वादका प्रभाव है।

उसने लवंगिकासे कहा बहिन! लो अब तुम्हारी तो चांदी है। मालती भाईको मिली उससे हमारे मनोरथ सफल हुए।

उसकी उक्त उक्ति लवंगिकाको किस प्रकार भाई होगी उसके विषयमें कुछ कहनाही व्यर्थ है, उसनेभी ऊपर देखाईमें अपना संतोषसा प्रकाशित कर कहा सखी मदयंतिका! क्या यहभी मुझे बतलानेकी आवश्यकता थी? जिसमें तुम्हें आनंद है उसमें हमें आनंद क्यों न होगा। नंदनने राजाके वचनको विश्वसनीय जान उसकी प्राप्तिके उपरांत वाङ्निश्चय करनेके निमित्त आज उत्सव मनानेकी समस्त सामग्री एकत्रित कर बहिनको बुला भेजा था। भाईका संदेसा पा मदयंतिका उसकी ओर जानेके लिये प्रस्तुत हो बुद्धिरक्षितासे कहने लगी, सखी! आओ चलें। हम लोग चलके भैयाका विवाहोत्सव सजावें।

बुद्धिरक्षिताको कामंदकीका मंसुबा विदित था पर उसनेभी वह भेद बिलकुल न प्रकाशित किया। और चलो आओ चलें कहकर उसके साथ हो ली। चलतीबार मदयंतिका मकरंदकी ओर बारबार निहारने लगी। भाईके संवादवाक्यानुसार उसे जाना उचितही था। पर अपने हृदयवल्लभको छोडकर जाना उसे बहुत अखरने लगा इसलिये बारबार उसका जी व्याकुल हो आता। वह थोडीसी आगे बढती और फिर कुछ निमित्त कर पीछे फिर उसकी ओर देखने लगती।

उसकी इस अवस्थाको देख लवंगिकाने धीमे स्वरसे कामंदकीप्रति कहा मांजी! अंतरमें भरे हुए विस्मय और आनंदका गुत्थमगुत्था होनेके कारण अधीर मनसे मदयंतिका और मकरंदके परस्पर कटाक्ष प्रहार हो रहे हैं; इससे यह अनुमान होता है कि ये लोग मनमें परस्परका स्वीकार कर चुके।

यह सुन कामंदकीने हँसकर उत्तर दिया कि इतनाही नहीं किंतु एक दूसरेकी ओर निहारकर परस्पर मानसिक समागमका सुखभी लूट रहे हैं। यदि कहो किस प्रकार तो कहती हूं सुन। किंचित् वक्र एवं मंद अथ च आकुंचित नेत्रोंकी तिरछी चितवनसे निहार रहे हैं। प्रेम प्रगट होनेके कारण उनके नयन दूरफुल

कमलकैसे हो रहे हैं । मनमें आनंदानुभव कर रहे हैं अतः दृष्टि स्निग्ध हो गयी है। लज्जावश कुचयुग्म स्थिर हो हिलतेतक नहीं हैं। ऐसी इन दोनोंकी दृष्टि परस्परपर बहुत त्वरितही अनुरक्त हो गयी है। इन सब बातोंसे स्पष्टतया जान पड़ता है कि उनका मानसिक समागम हो रहा है इसमें अणुमात्रभी संशय नहीं है।

इतनेमें उसको बोलानेको आया हुआ चर बहुत गडबड करने लगा इसलिये उसने अपने मनको दृढ़ कर अपने प्रणयीकी ओर देख आगेको पांव उठा बुद्धिरक्षितासे कहा सखी! मेरे प्राणदाता उन कमलनेत्र (मकरंद) का साक्षात्कार मुझे फिरसे होगा वा नहीं?

बुद्धिरक्षिता—यह तो बदेकी बात है, बदा होगा तो वैसाभी होगा।

इस प्रकार बुद्धिरक्षिता और मदयंतिका वहांसे चली गयीं इधर माधवने कामंदकीके कानमें कहा कमलसूत्रकैसा अत्यंत दृढ़ मेरा आशातंतु बहुतकाललों ठहरकर टूटा। पर वह भलेही टूट जाय। मानसिक दुःख वा अनिवार्य्य व्याधि भलीही उत्पन्न होवें वा वे अभीही उत्पन्न हों तोभी कोई हानि नहीं है। चंचलता भलेही मुझमें स्थिरभावसे वास करे। मेरे लिये विधनाके समस्त विधान भलेही शेष हो जायँ। अभीतक वह मेरे लिये बहुत सचिंत रहा करता था पर अब सुखसे नींद लेगा। मेरे लिये अपने अशेष दुःखोंका शेष करनेके लिये (पंचत्वको प्राप्त होनेके लिये) यही अवसर बहुत ठीक है। जिसका प्रेम मेरे लिये मेरेकैसाही है उसके समागमकी मैं लालसा कर रहा हूं पर विधि उसके विपरीत यत्न कर रहा है। तो ऐसी अवस्थामें लोकांतरित होनाही मेरे लिये श्रेयस्कर है। पर राजाने मुझे दे दिया यह सुन प्रातःकालीन शशांककैसा कांतिहीन इस (मालती) का मुख मेरे हृदयको भस्मीभूत करे डालता है।

इन ऊपरी सब बातोंको देख सुन कामंदकी सर्वथा निःशंक थी। क्यों कि उसके मंसूबेका मार्ग भिन्नही था और वह उसे

पूर्णतया जानती थी। यही कारण है कि मदयंतिकाके संवाद-वाक्यको सुन उसका चित्त वैसा कुछ व्यथित न हुआ। पर माधवकी अतीव दुःखित अवस्था और मालतीकी निराशा देख वह बहुत दुःखित हुई। वह प्रबोधवाक्योंसे माधवकी शांतवना करनेके हेतु और वैसेही सचसच हालको स्पष्टतया उसे दर्शित करनेके लिये बोली, वत्स माधव! क्या तुम समझ सकते हो कि स्वयं भूरिवसु मालती अपनेको देगा?

माधव—लज्जित हो नहीं कदापि नहीं।

कामंदकी—तो फिर तुमको उचित है कि तुम अपनी आशा न छोडो।

यह सुन मकरंद बोला भगवती! अभी सुननेमें आया कि वह वाग्दत्ता हो चुकी इसीसे शंका होती है।

कामंदकीने अनेकानेक प्रयत्न कर मालतीको पूर्णतया अपने कहेमें कर लिया था। और उसे दृढ विश्वास हो चुका था कि मैंने जो इन दोनोंका गुप्त भावसे विवाह करना विचारा है उसे वह मालती अनुकूल होगी; पर माधव मालतीपर विशेषतया अनुरक्त होनेपरभी, अपना हेतु सिद्ध करनेकी चेष्टा छोड़ डरपोककैसा जी देनेको उद्यत हुआ यह उसे न भाया। वास्तवमें यह उसकी सरलताका कारण था, पर ऐसे अवसरपर वह प्रयोजनीय न था। कामंदकीके मनमें उसे प्रबोध करना था तदर्थ उसे यह अवसर अच्छा हाथ लगा।

गुप्तभावसे विवाह कर लेनेको माधवके चित्तपर पूर्णरूपसे प्रतिबिंबित कर देनेके अभिप्रायसे वह बोली वत्स! यह समाचार तो मैं पहिलेही सुन चुकी हूं। राजाने नंदनके लिये मालतीको मांगा था तब भूरिवसूने मेरी पुत्रीपर महाराजका सब प्रकार अधिकार है ऐसा कहा था। इसे तो आबालवृद्ध सभी न जानते हैं।

यह सुन माधवने तो कुछ उत्तर न दिया, पर मकरंदने कहा हां हां यह सुना तो सच था।

कामंदकी—और अब तो उस संदेशवाहकने कहा कि स्वयं राजा साहबने मालती दी । तौ इससे यही अनुमान होता है कि अभीलों समस्त बातें केवल कहा सुनी परही अवलंबित हैं । भला बुरा वा जो कुछ हो सब वचनोंपरही निर्भर रहता है । भूरिवसुने राजासे जो कह दिया है सो सब सत्यही है ऐसा मत समझो । पुत्रीपर महाराजका अधिकार है, इसका क्या अर्थ ? राजाका अधिकार तो सभी प्रजावर्गपर रहता है । मालती कुछ स्वयं महाराजकी कन्या नहीं है और धार्मिक लोगोंका न तो यह सिद्धांत है कि कन्यादानमें राजा हस्तक्षेप करे और न यह बात कहीं रूढिहीमें पायी जाती है । तौ भूरिवसुने राजासे जो कुछ कहा सुना है उसके विषयमें विशेष चिंता करनेकी कोई आवश्यकता नहीं है । अस्तु, पर तूने यह कैसे मान लिया कि इसके विषयमें मैं असावधान हूं । तू स्वयं अपने और इस (मालती) के लिये जिसे अनुचित बात (प्राणत्याग) की शंका करता है वह तेरे शत्रुकोभी न भोगनी पडे ! तुम दोनोंका समागम होनेके लिये मेरे प्राणभी शेष हो जांय तो कुछ चिंता नहीं पर मैं उसे संपादित किये विना कभी स्वस्थ न रहूंगी ।

यह सुन मकरंद बोला मातः! आपकी आज्ञा बहुत ठीक है । और मेरी यह प्रार्थना है कि आपकी इन बालकोंपर (मालती और माधवपर) ममता वा स्नेह जो हो संसारके प्रपंचोंको परित्यक्त करनेपरभी आपके मनको द्रवीभूत करता है । इसीलिये इस तापसवेषोचित वर्त्तावको छोड़ आपको अपना मन इस ओरको लगाना पड़ता है अब रही उसकी सिद्धि सो तो दैवाधीन है ।

इन लोगोंका इस प्रकार वार्त्तालाप होही रहा था कि इतनेमें मालतीके मांकी भेजी हुई एक दासी वहां आयी । और उसने कामंदकीसे विज्ञप्ति की कि गृहस्वामिनी (मालतीकी माता) मालतीको ले आपसे शीघ्र दर्शन देनेकी प्रार्थना करती हैं । यह सुन कामंदकी, बेटी उठो अपुन लोग चलें, ऐसा कह,

मालतीका हाथ पकड़ उठ खड़ी हुई। तब मालती और माधव बापुरेकैसे हो परस्परकी ओर निहारने लगे।

माधव अपने मनहीमन सोचने लगा हाय हाय, यह कैसे दुःखकी बात है इस मालतीके साथ संसारसुखका अनुभव इस माधवको क्या इतनाही वदा था। इसके आगे अब और क्या होगा? पर दुष्ट विधि हम दोनोंकी परस्पर एक जी प्राण हुई अनुकूलताको प्रथम मित्रभावसे प्रकट कर अब कुसमयमें धोका दे हमारे दुःखको कैसा बढा रहा है!

इधर मालती माधवका स्मरण कर मनहीमन कहने लगी। महाभाग! नेत्रोंको आनंद देनेवाले तुम्हारे दर्शनमात्रकाही मुझे लाभ हुआ।

इस समयकी उसकी अवस्था नितांत शोचनीय थी। उसकी उस बापुरी अवस्थाको देख लवंगिका बोली हाय हाय! दीवान साहब (भूरिवसु)ने इसे चिंतार्णवमें डुबो दिया।

मालती-(मनोमन) जीवनकी आशा अब दुराशासी प्रतीत होने लगी। बावाके असीम निर्दयताके वर्तावनेभी अपनी कापालिकता पूर्ण कर ली। विपरीत विधिकी प्रतिकूल चेष्टा भलीही समझ लेनी चाहिये। क्यों कि यहां मैं दूसरे किसको दोष दे सकती हूं? मुझ अनाथनी अशरणका शरण कौन है? अस्तु जो भागमें वदा होगा सो होगा।

इतनेमें कामंदकी लवंगिकाको और उसको साथ ले घरकी ओर गयी। बहुत देरतक चुपचाप खडा रह माधव निश्चल दृष्टिसे उसकी ओर निहारता रहा अंतमें जब वह दृष्टिपथमें लीन हो गयी तब लंबी सांस ले आत्मगत विचार करने लगा कि यह कामंदकी मां मेरा बहुत प्यार करती हैं इसीलिये मेरी शांत्वना करनेके हेतु इन्होंने शायद कहा हो कि तू उसके लिये हताश मत हो; पर वास्तवमें इनके कहनेमें कुछ सत्यता नहीं दीख पडती।

१ नरबली देना।

हा! मेरा जन्म कृतार्थ होगा वा नहीं इसकी मुझे शंकाही है। ऐसी दशामें मुझे क्या कर्त्तव्य है। क्षणमात्र विचार कर **मकरंद**की ओर देख बोला, प्रियवर! अपनी उस प्राणवल्लभाके लिये तूभी तो उत्कंठित हो रहा होगा? क्यों मेरा तर्क सच न है?

मकरंद–मित्र! कुछ पूछोही मत। जिस समय उस व्याघ्रने अपने पंजोंके आघातसे मेरे शरीरको एकाएक क्षतमय कर दिया था कि जिन्हें देख अपना आंचरतक संवारनेकी सुध भूल, उस बालकुरंगकैसे चंचल नेत्रवाली मेरी हृदयवल्लभाने कि जिसके शरीरसे मानो पीयूष टपक रहा था, मुझे आलिंगन दिया। प्रियवर! जीका हाल क्या कहूं! बस बारबार मुझे इसी बातका स्मरण हो आता है।

यह सुन **माधव**को जान पडा कि **मकरंद** मेरी अपेक्षा सुखी है। वह बोला, मित्र! **बुद्धिरक्षिता** उसकी प्राणप्रिय सखी है और वह तेरे लिये भगीरथ प्रयत्न कर रही है अतः ऐसा जान पडता है कि तुझे तेरी प्रियाका प्राप्त होना कुछ कठिन नहीं है। क्योंकि तूने उस भयावने नाहरको मार प्राणसंकटोंसे उसकी रक्षा की, तब उसने प्रेमार्द्र हो तुझे परिरंभण दिया अतः तेरा मन उससे हटकर दूसरी ओर अब कैसे जा सकता है? उस कमलनयनाके अपांगनिरीक्षणमें तेरे लिये उसका विशेष अनुरागभी स्पष्टरूपसे व्यक्त होता था।

माधव और **मकरंद** दोनों कामासक्त हो गये थे और उन दोनोंके मन दो रमणियोंपर अनुरक्त हो गये थे; पर दोनोंकी अवस्थामें महदंतर था। **मकरंद**को अपने प्रियाके प्राप्तिकी सुदृढ आशा थी, और उसमें कोई विघ्न उपस्थित हो जायगा ऐसी उसे शंकाभी न थी। इसलिये वह निश्चिंत था, पर **माधव**के लिये **नंदन** एक शत्रु उत्पन्न हो गया था, और वह बडा प्रबल था अतः अपने अभीष्ट हेतुकी सिद्धिमें शंका कर वह रातदिन चिंता और शोक किया करता था।

हम लोग योंही बातेंचीतें करते बैठे रहेंगे तो यह यहांसे उठेहीगा नहीं ऐसा सोचकर **मकरंद** बोला, मित्र **माधव** ! घर जानेका समय निगचा आया तो लो चलो अब घर चलें। जाते २ मार्गमें इस **पारा** और सिंधुनदीके संगमपर स्नान कर उपरांत नगरमें जावेंगे ।

माधवनेभी इस बातका स्वीकार किया और बोला अच्छा तो लो चलो चलें ऐसा कह वहांसे चल दोनों संगमके निकट जा पहुँचे । उसे देख **माधव** बोला महानदियोंका यह संगम कैसा रमणीय एवं मनोहर दीख पडता है । स्नान कर तीरपर आनेवाली युवतियोंके वस्त्र जलसे भींगकर उनके शरीरमें लपट जानेके कारण उनके शरीरके ऊंचे नीचे सब प्रदेश स्पष्टतया दृष्टिपथमें आ रहे हैं इन रमणियोंके झुंडके झुंड अपने २ तप्तजांबूनदकलशोपम उरोजोंपर हाथ रख रख जलसे बाहर आ आकर इसके घाटको कैसा व्याप्त कर रहे हैं । उन दोनोंने वहां योंही परस्पर वार्त्तालाप और जलक्रीडामें बहुतसा समय विताया और अनंतर वे अपने घर लौट आये ।

पांचवां परिच्छेद.

माधवको अपने प्रियाके मिलनेकी कोई आशा न रही थी । कामंदकीने उसे बहुत कुछ समझाया बुझाया पर तौभी उसका मन न भरा । स्नान कर **मकरंद** उसे घर लेवा ले गया और वहां उन दोनोंने कुछ भोजन किया, पर **माधव**का चित्त अस्वस्थही रहा । मकरंदके अनुरोधसे वह भोजनोंको बैठ मात्र गया पर वैसाही उठ आया । उसके उपरांत दोनों एकही बिछौनेपर पडे २ बहुत देरतक बातें चीतें करते रहे । **मकरंद**का चित्तभी अस्वस्थही था, पर तौभी उसने **माधव**के चित्तका समाधान होनेके लिये नाना प्रकारके कथानक कहे जिन्हें सुन उलटा उसका

दाह बढते गया और वह वैसाही तलफते रहा । रात्री दो पहरके ऊपर ढल जानेपर मकरंदकोभी झपकी आ गयी ।

माधवने दृढ निश्चय कर लिया था कि अब कोई न कोई साहस कार्य्य कर अपना जी दे देना चाहिये । पर मकरंदके मारे उसे मौका हाथ न लगता था । एक दिन उसे नींद लगी जान सबके अलक्ष्यमें प्रस्तुत हो माधव हाथमें तरवार लेकर घरसे बाहर निकला और सीधी मरघटेकी बाट गह ली । उसने यह संकल्प कर लिया था कि वहां जा अपना मांस श्वापदोंको दे वा अन्य किसी प्रकारसे अपना जी दे दूंगा पर मालती नंदनको ब्याही गयी यह वाक्य सुननेके लिये मैं जीता न रहूंगा ।

स्मशानभूमिमें पहुँच चारों ओर फिर फिर चिल्लाचिल्लाकर माधव कहने लगा कि स्मशानविहारी जीवजंतु ! मेरा मांस ग्रहण करें । इतनेमें अघोरघंट नामके कापालिककी प्रधान चेली कपालकुंडला विकटरूप धारण कर मंत्रसामर्थ्यद्वारा आकाशमार्गसे उसी स्मशानमें औचक आ पहुँची और मानसिक प्रार्थना करने लगी कि कर्ण नाभि हृदय कंठ तालु और भ्रूमध्यभाग इन छः स्थानोंमें इडा पिंगला सुषुम्णा गांधारी हस्तिजिह्वा पूषा अरुणा अलंबुषा कुहू और शंखिनी इन दस नाडीचक्रके मध्य हृदयकमलमें जिसका रूप प्रगट होता है और एकनिष्ठ मनसे साधक लोगोंने जिसे उस स्थानमें आविष्कृत किया है उस भगवान् शक्तिनाथ शंकरकी ब्राह्मी माहेश्वरी कौमारी वैष्णवी वाराही माहेंद्री चामुंडा और चंडिकाके साथ जय हो ।

अपनी ओर निहारकर बोली इस समय मैं सदा षट्चक्रका संशोधन कर वहां हृदयकमलमें प्रकट होनेवाले आत्माको तदाकर अंतःकरणसे साक्षात् शिवरूप देख रही हूं । पूर्वोक्त इडादि दस नाडियोंसे समीर भर इस पंचभूतजन्य शरीरको योगसामर्थ्यसे पंचमहाभूतोंको आकर्षित कर आकाशमार्गसे मेघमंडलका भेद करती हुई ले चली हूं; तौभी मुझे ऊपर उडनेका कुछभी परिश्रम

नहीं जान पडता। इसके सिवाय आकाशमार्गसे यात्रा करती बार मेरे गलेकी कपालमालायें इधर उधर हलहलकर एक दूसरीसे खटाखट टक्कर खाती हैं और उनके योगसे मेरे शरीरपर घट्टे पड़ रहे हैं। उनके कारण मैं विशेष रमणीय एवं घोर भयावनी दीख पडती हूं। मेरी आकाशमार्गकी गति पूर्णरूपसे हो रही है मेरी जटायें रस्सीसे खूब बंधी हैं पर मेरे चलनेके वेगातिशयके कारण वे इस समय उलटी सीधी हो रही हैं। करस्थ खट्वांग और घंटा एकसा ठनठना रहा है और यह पताका वायुसे ऊपरको उड रही है और उसमें लगी हुई क्षुद्रघंटिकाओंकी ध्वनि एकसी हो रही है।

योंही आत्मवर्णना करते करते वह चंडी एकबारही स्मशानमें पधारी। वहां चारों ओर देख भालकर और शवादिकोंकी सडी दुर्गंध ले बोली पुराने तेलमें भूंजे हुए मांसकैसी चिताधूम्रकी यहां दुर्गंधि आ रही है। यह प्रदेशभी सामने दीखनेवाले भीषण स्मशानके पडोसकाही है। मेरी इष्टदेवता भगवती करालादेवीका मंदिर यहां निकटही है। तो अब वहां चलकर समस्त पूजाद्रव्य एकत्रित करना चाहिये। मंत्रसाधन पूर्ण हो मेरे गुरुजी अघोर-घंटकी मंत्रसिद्धि पूर्ण हो चूकी है। और वे आज इस देवीकी विशेषरूपसे पूजा करनेवाले हैं उन्होंने मुझसे कह रखा है कि पूर्वमें हमने भगवती कराला देवीको उत्तम स्त्रीका बलिप्रदान करना स्वीकृत किया है। तदनुसार आज मुझे देवीजीको बलि, आर्पित करना है। इस नगरमें एक बाला मैंने ढूंढ रखी है। मैं उसे लेकर आता हूं तबतक तू देवीजीके मंदिरमें चलकर देवीजीके पूजनकी सब सामग्री लगाकर रख; तो मुझे वहां पहुँचकर पूजनकी सामग्री एकत्रित करना चाहिये।

योंही विचार करती हुई वह चली जाती थी कि उसी मार्गसे माधवभी उसके सामनेही आ गया। उसकी प्रकृतिसुभग गात्रकी मनोहर रचना तथा घुंघुरारे कुंतलदाम और गंभीर एवं मधुर

आकृतिको देख वह मनहीमन विचारने लगी कि यह पुरुष हाथमें खड्ग ले ऐसे घोर भयावने स्मशानमें क्यों आया ?

पुनः बोली अहाहा इसकी सोहावनी मूर्ति कैसी मनोहर है। कमलकी पखुरीकैसे श्याम अंगरागपर सफेदी छा रही है। इस चंद्रवक्त्र युवक वीरकी चालभी बड़ी गंभीर और चित्ताकर्षिणी है। यह बड़ा विनयशील है पर इस समय किसी साहसकार्य्यके विचारांशमें मग्न होनेके कारण इसकी आकृति मत्त दीख पड़ती है। क्या इसके हाथमें शोणितपंक लगा है और नरमांसके टुकडे नीचे गिर रहे हैं ?

ध्यानपूर्वक उसकी ओर देख बोली ठीक २ अब मैंने इसको पहिचाना। कामंदकीके बालमित्र (देवरात) का बेटा महा[1]-मांस बेचनेके लिये उद्यत हुआ माधव यही है। यह बापुरा कोई हो मुझे इससे क्या प्रयोजन यह जो चाहिये सो भलेही करे। मुझे तो अपने कामसे काम रखना चाहिये। सायं-कालका संध्यासमय प्रायः बीतही चुका है। संप्रति गगनमंडलका पार्श्वप्रदेश अर्थात् क्षितिज तमालपुष्पगुच्छकोंके नांई अंधकार लताओंद्वारा व्याप्त हो गया है। ऐसा जान पडता है कि मानो यह धरा क्षितिजरूप जलाशयमें डूबीही जा रही है। वायुके योगसे चारों ओर धुंधलाई छा रही है। संध्याकाल व्यतीत हो रात्रिका

१ मांस शब्द प्रसिद्धही है। महामांस अर्थात् अतिनिषिद्ध मांस। वैदिक और अन्य धर्मावलंबी पुरुषोंने अन्य सब प्राणियोंकी अपेक्षा नरमांसको नितांत निंद्य एवं अभक्ष्य माना है। पर कापालिक संप्रदायके लोग उसे अत्यंत पवित्र मानते है। इसी लिये उन्होंने उसे महामांस अर्थात् सबमे श्रेष्ठ मांस कहा है। पीछे कही चुके है कि माधवने अपना जी देना निश्चित कर लिया था। प्राणपरित्यागमें उसकी इच्छा थी कि यदि हो सके तो दूसरेका कुछ उपकारभी हो जाय। उन दिनों अपनी उपास्य देवताको मांसका बलिप्रदान देनेवाले बहुत मांत्रिक लोग मरघटामें जा फिरा करते थे तो उन्हींमेंसे किसीको अपना शरीर अर्पित कर उसका कार्यभाग शेष कर अपना हेतु पूरा कर लेना चाहिये, ऐसा विचारकर माधवने अपना मांस बेचनेका अर्थात् मांत्रिकोंको देनेका निश्चय किया था और तदनुसार बारबार मेरा मांस लो कहकर चिल्लानेके कारण कपालकुंडलाको विदित हुआ कि यह महामांसविक्रेता है।

प्रारंभ मात्र हुआ है । पर इतनेहीमें रात्रिने आसपासके काननको अंधेरीकी चद्दर ओढा दी; तो अपने गुरुजी अब शीघ्रही आवेंगी । उनके यहां पहुँचनेके पूर्वही अर्चनकी सकल सामग्री एकत्रित हो जानी चाहिये । ऐसा विचार कर कपालकुंडला अपनी तयारी करने लगी ।

इधर माधव अपने इष्टदेवताकी प्रार्थना कर बोला, प्रेमरसार्द्र और विशेष परिचयके कारण दृढानुरागसंपन्न उस बालकुरंगनयना (मालती) की चेष्टा अर्थात् स्वभावसुलभ अतिमधुर चुंबनादि व्यापार मुझे वारंवार प्राप्त हों कि जिनका अनुभव लेनेसे बाह्येंद्रियोंकी हलचल बंद हो जाती है । हा ! मैं केवल उनकी मानसिक कल्पनाही किया करता हूं पर अनुभव न मालूम कब प्राप्त होगा । पर तौभी आनंदसे परिपूर्ण हो मेरी चित्तवृत्ति एकसी उसी ओर लगती है । वह मानसिकही क्यों न हो, मैं उसकी गोदमें सिर रखकर करवट लेनेका सुखानुभव लूंगा । जिस प्रियाने मोतियोंकी माला परित्यक्त कर मेरी गुही हुई बकुलपुष्पमाला प्रेमपूर्वक धारण की कि जिसके योगसे उसका स्तनमंडल सुगंधित हो गया, उस प्रियाको गलबांही देने तथा उसके अवर्णनीय समागमका सुख मुझे कभी प्राप्त होगा ? क्षणमात्र विचार कर पुनः बोला नहीं नहीं वह बातही असंभव है । उसकी गोदमें सिर रखनेका सुख मुझे क्यों प्राप्त होने लगा ? वह बात तो बहुत दूर है । तो अब मेरी इतनीही प्रार्थना है कि उसके उस सुंदर मुखारविन्दका पुनः एकवार दर्शनही हो जाय । जहां समस्त सुखराशि एकत्रित हो विस्तृत होती है जो दृष्टिपथमें आ प्रेमकी वृद्धि कर नेत्रोंको अति आनंद देता है । जो तारानाथकी कलाओंके सारसे निर्मित हुआसा भासित होता है, और मन्मथका तो जो मानो मंगलगृहही है, ऐसे उसके सर्वांगसुंदर मुखकमलका साक्षात्कार मुझे पुनः एकवार प्राप्त हो यही मेरी उद्दाम इच्छा है ।

जिसके दर्शनोंसे संप्रति मेरा मनोविकार स्वल्प होनेपरभी

अधिकाता है। पूर्वजन्मका कोई संस्कार जागृत हो उसके सिवा सब वस्तुको तिरस्कृत करनेवाला और बारबार उसकी स्मृति दिलानेवाला विकार मेरी मनोवृत्तियोंको सचमुच तन्मय कर डाल रहा है। इस समय मेरी दशा ऐसी हो गयी है कि वह मेरे अंतःकरणमें लीन हो गयी है, वा प्रतिबिंबित हो गयी है, वा उसका उसपर चित्र खींच गया है, वा उसका वह मनोहर रूप मेरे हृदयमें खोद दिया है, अथवा उसे अंतःकरणरूप भूमिमें बो दिया है, वा वज्रलेपसे उसे वहां खचित कर दिया है, वा उसे वहां गाड दिया है, वा मदनके पांचों बाणोंकी अनीपर उसे लगाकर मेरे अंतर्मंदिरमें स्थित कर दिया है, वा चिंताकी परंपरारूप गुणमें उसे ग्रथित करनेके कारण वह मेरे मनमें निष्कंप विराज रही है ऐसा जान पडता है।

माधव योंही मनमें मालतीका चिंतन करता तदाकार हो मनके लड्डू खाता चला जाता था कि पासहीमें उसे बडा भारी कोलाहल सुनाई पडा। स्मशानविहारी शवभक्षक भूतप्रेतादिक कोलाहल कर रहे हैं और निशाचर राक्षस चीखे मार रहे हैं ऐसा समझकर वह बोला, अनेक शव भक्षण करनेवाले राक्षसादि यहां संचार कर रहे हैं अतः यह मरघटा नितांत भीषण दृष्टिगत होता है। यहां संप्रति चारों ओर चितायें धां धां प्रज्वलित हो पार्श्वस्थ प्रदेशको प्रकाशित कर रही हैं और निबिड अंधकारभी उन्हें चारों ओरसे घेर रहा है। रीछ, लंडैया और चीते इत्यादि हिंसक प्राणी घोर गर्जना कर रहे हैं। इसी प्रकार वेताल डाकिनी आदि स्मशानवासी भूतगण गर्जना कर आनंदसे चारों ओर नाच रहे हैं। अस्तु, तो मुझे अपना हेतु इन सबको एकबार औरभी सूचित कर देना चाहिये ऐसा सोच ऊंचे स्वरसे उन भूतोंको आह्वान कर वह बोला; स्मशाननिवासी भूतगण! शस्त्रस्पर्शरहित अतः पवित्र एवं पुरुषके शरीरका महामांस मैं तुम लोगोंको देनेके लिये उद्यत हूं। तो अब शीघ्र आ इसका स्वीकार करो।

उसने इस प्रकार उन सबको पुकारकर कहा पर तौभी उनका कोलाहल होही रहा था उसे सुन माधव बोला, मैंने इन लोगोंको पुकारकर कह दिया तौभी ये गर्जनाही कर रहे हैं, यह है क्या? देखो २ इन वैतालोंकी घोर गर्जनासे मानो स्मशानभूमि कंपायमान हो रही है और सबको विस्मित कर रही है। इन पिशाचोंका रूप कैसा विस्मयजनक बोध होता है। कानलों फटे नेत्रोंको फाड मुँह पसार अग्निकैसी लाल लाल जीभ मुँहसे लप २ बाहर निकाल रहे हैं, हलकैसे भयावने दांतोंके मुखपर शव बांधे हुए हैं। विद्युल्लताकैसे चमचमाते चिकुर मूछें और भौंहें अपनी छटा अलगही दिखा रही हैं। चीखते चिल्लाते चारों ओर स्वच्छंद विहार करनेवाले और क्षणमात्र दिखलाई देकर पुनः गुप्त हो जानेवाले ये भयानक स्मशानवासी मुझे अति विस्मित करते हैं।

आसपास देख हँसकर बोला, इन पिशाचोंकी गति बडीही विलक्षण है। इनके ये खुले हुए मुँह गिरिकंदराकैसे दिखलाई देते हैं और शरीर तो मानो उत्तुंग गिरिशिखरही हों।

ओ हो ये कैसी करुणोत्पादक घटना कर रहे हैं। हाथ, पांव, अंगुली आदि अवयवोंके मासको चीथ २ कर खा रहे हैं। आंतें दांतोंमें अटक रही हैं। हड्डियोंके टुकडे दांतोंमें अडे हुए हैं पर तौभी ये मांस खाना नहीं छोडते। इतनेमें काली अपना दलबादल ले आ उपस्थित हुई उनकी लीला–

काली महाकालके समान व्है विशाल हेरि पकरि निशाचरन पट्टपट्ट पटकत। नैन विकराल लाल रसना दसन दोऊ भरि भरि खग्गमांस गट्टगट्ट गटकत॥ लोथिनपै लोथि रुंडमुंडते विहीन केते उछरि उछरि भूम चट्टचट्ट चटकत। जोगिनी खवीसके हवीस खूब पूरे होत खप्परमें खून भरि घट्टघट्ट घटकत॥

देख माधव अतीव आश्चर्यचकित हुआ।

पुनः उनके स्त्रियोंकी ओर देख हँसकर बोला, रात्रिका आगम

पाये पिशाचिनी मारे आनंदके फूली अंग नहीं समाती हैं। अंतावलियोंकी मंगल चूडियां हाथोंमें पहिर स्त्रियोंके शबके हाथको लाल कमल मान उन्हें कानोंमें और हृदयकमलोंकी मालाको गलेमें पहिरी हैं। और शोणितपंककी भालपर रोरी दिये हैं। इस प्रकार सुसज्जित हो अपने प्राणवल्लभोंके साथ शवोंकी वसारूप (चरबीरूप) मदिराको नरकपालरूप सुराप्राशनपात्रमें रख अतिसंतोषसे पान कर रही हैं। बात तो यह है कि यह समय इनके महदानंदोत्सवका है। तो इनसे मेरा मांस लेनेके लिये एकबार और प्रार्थना करनी चाहिये ऐसा सोच पूर्ववत् उसने अपना मांस लेनेके लिये उनकी प्रार्थना की।

माधवकी प्रार्थना सुन पिशाचगण तुरंतही वहांसे भाग गये। यह देख माधव बोला, मैं इनसे इनके भलेकी प्रार्थना करता हूं पर ये चीख मार मारकर दूर क्यों भाग गये? जान पडता है कि ये लोग मुझे डर गये। वाह भई धन्य है इनकी इस कादरताको! मुझे देख ये भागते क्यों हैं? मैंने सब मरघटा फिरके देख डाला, पर मुझपर ये कोई हाथ नहीं करते यह क्यों! अब मैं इस मरघटाके बिलकुल छोरपर आ गया हूं। ठीक २ बहुतही ठीक। इस घोर अंधेरीमें तीरपरके खोतेमें बैठे २ व्यर्थ चिल्लाकर उल्लू अपनी बुद्धिमानी जता रहा है। ये सियार चिल्ला रहे हैं। शोणितमिश्रित जलप्रवाहमें मिली हुई शवकी अस्थि तथा हाथ पांवके हड्डे परस्पर घर्षित हो उनकी घर्षणाकी ध्वनि इस मरघटाके नदीमें सुनाई देती है। तो इससे यह जान पडता है कि इसके आगे अब मरघटा नहीं है। ये भूतप्रेत मुझे खा जाते तो बहुतही भला होता, पर बिचारे ये तो मुझे देखकर भागते हैं। ऐसी दशामें वे क्या कर सकेंगे। किसी मंत्रसाधकसे भेट हो जाती तौभी अच्छा होता उसके लिये अपने शरीरका बलिप्रदान कर उसे सिद्धिलाभ करा देता। वा कोई भयावना हिंसक जीव मुझपर आक्रमण करता तौभी भला था। पर इस

विलक्षणताका रहस्य कुछभी समझमें नहीं आता । मुझपर कोई आक्रमण नहीं करता । पिशाचगण ! तुम सबके सब बिलकुल कादर कैसे हो गये ? अरे यह माधव तुम लोगोंको अपने मांसके भोजन दे संतुष्ट करनेकी लालसा कर रहा है । तुम उसे अनाहृत क्यों कर रहे हो ? भला भई इच्छा तुम्हारी ।

पाठक ! आपको विस्मृति न हुई होगी कि मालतीके माका संदेसा सुन कामंदकी उसे ले घर गयी । उस समय उसकी माने उसे बोला लिया इसमें उसका कुछ विशेष हेतु था । भूरिवसुने मालतीके देनेका अधिकार पूर्णरूपसे राजाको दिया है, यही समझ राजाने नंदनसे कह दिया है कि हम मालती तुझे देते हैं, इसी वचनानुसार उसके यहां सगाईकी तैयारी बडी धूमधामसे हो रही है । तो कदाचित् लडकीको वहांसेही ले जाकर नंदनके हवाले न कर दें ऐसी शंका कर मालतीकी माने सोचा कि उसका अपनी आंखके सामने रहना अच्छा है, इसी-लिये उसको अपने पास बोला लिया । वास्तवमें लडकी दूसरेकी कि जिसके अनुरोधवश निषेध न करनेके कारण अपने कृपापात्रको व्याह देनेका वचन देनेके लिये जिसे कुछभी शंका न हुई, वह अविवेकी राजा लडकीको बाहरसे ले जाकर व्याह देनेके लिये तनिकभी हिचकेगा यह कैसे माना जा सकता है ? तो मालती-की माने उसे जो अपने निकट बोला लिया सो बहुतही अच्छा किया । अस्तु ।

वह तिथि विवाहकी न थी । उस दिन केवल वाङ्निश्चयही हुआ । भूरिवसुको उचित था कि वह वाग्दान करता । वह उस समय उपस्थितभी था । पर अब मेरी ओर हैही क्या ? समस्त कार्यभार राजासाहबके अधिकारमें है । उन्होंने यह व्याह निश्चित किया है अतः वेही वाग्दानभी करेंगे ऐसा कह वह निश्चिंत हो सब दृश्य देखते बैठा रहा । नंदनके घर बडे समारोहके साथ तैयारियां हो रही थीं । मदयंतिका षोडश शृंगार और बारहों

आभूषणोंसे सजधज माईके विवाहसमारंभमें दौड दौडकर सकल कार्य संपादित करती थी। मालतीको उस मंडपमें लानेकी विशेष आवश्यकता न थी। और भूरिवसुने वह प्रसंग मार ले जानेके लिये अनुरोधपूर्वक कह दिया कि जो विधान होना हो सो सब मेरेही घरपर कर लिये जावेंगे। राजाकी प्रसन्नताके निमित्त भूरिवसुने अपने घरपरभी सब व्यवस्था उत्तम प्रकारकी की थी। अंतरंग निश्चय निरालाही था, तौभी बहिरंग कार्य्यवाही यथावत्‌ही संपादित होती जाती थी।

उस रात्रिको मालती अपने घरहीपर थी। अत्यंत दाह होनेके कारण लवंगिकाको साथ ले वह अटारीपर सो रही थी। पाठकोंको स्मरण होगा कि अघोरघंट नामके कापालिकने अपनी चेली कपालकुंडलाको भगवतीके पूजनकी सामग्री लगानेकी आज्ञा दे वह बलिप्रदान करनेके लिये नियत की हुई लडकीको लानेके लिये गया था। योगसामर्थ्यसे वह ठीक पद्मावती नगरीपर आ पहुँचा। और वहां इधर उधर फिरते फिराते भूरिवसुके घरपर आ मालती जिस अटारीपर शयन कर रही थी उसपर वह उतर पडा और मंत्रके बलसे उसे बद्धकैसी कर चुपके उठा आकाशमार्गसे चल दिया, और अपने पूर्व संकेतानुकूल उस स्मशाननिकटवाहिनी नदीके तीरस्थ कराला देवीके मंदिरमें जा उतरा।

कपालकुंडला पूजाकी समस्त सामग्री एकत्रित कर बैठे गुरुजीकी बाटही जोह रही थी। अघोरघंटकैसे दुष्ट घातक लोग सदा चारों ओर फिराही करते हैं। लडकीका बलिप्रदान करना उसने चिरकालसे स्थिर कर रखा था; और वह निरंतर उसकी खोजमें रहाही करता था, बलिप्रदानके लिये वह ऐसी लडकी चाहता था कि जिसके माता पिता विभवशाली हों और

---

१ दक्षिणी लोगोंमें कई संस्कार ऐसे हैं कि जो पाणिग्रहणसंस्कार और बाग्निश्चय होनेके पूर्व कन्याको ससुरारमें आकर करने पडते हैं।

जो रूपलावण्यादिमें लोकोत्तर हो। निज संकेतानुकूल उसे बापुरी मालतीही योग्य जान पडी, और तदनुसार वह उसे लेभी गया।

अघोरघंटने मालतीको कपालकुंडलाके आधीन किया। जो बली दिया जाता है उसे बलि देनेके पूर्व अत्यंत उत्तमताके साथ आभूषणोंसे अलंकृत करनेकी प्रथा है। उक्त प्रथानुसार कपालकुंडलाने उसे अभ्यक्त करा स्नान कराये और अनंतर उसे फूलोंकी माला पहिरा उसे सजाकर प्रस्तुत किया, और मिष्टान्न उसे खानेको दिया। मालती उसे खाती न थी; तब बलप्रयोग कर उसे वह खिलाया और तुरंतही उस दुखिया लडकीको हाथ जोडा देवीके सामने खडा किया।

उस अधम नरपिशाचने उसे सोते उठाया तब उसके मंत्रोंके योगसे वह बंधसी गयी थी एतावता वह कुछभी न कर सकी। देवीके मंदिरमें लानेके उपरांत उसपरका मंत्र आकर्षित कर लिया गया था, पर उसे तर्जनापूर्वक कह दिया गया था कि जो तू चीखे चिल्लावेगी तो तत्क्षण अपने प्राणोंसे हाथ धो बैठेगी अतः वह दीन गौ चुपके वे जो जो कहते सो सब कर लेती थी।

पहिले वह समझी थी कि ये कोई चोर हैं, और मेरे आभूषणोंको अपहृत करनेके लिये ये मुझे यहां ले आये हैं। पर अलंकारोंकी ओर उनकी उपेक्षा देख, ये लोग मेरा क्या करेंगे इस चिंतामें निमग्न हो वह अति व्याकुल हो रही थी, पर जब उन्होंने उसे देवीके समीप ला खडा कर दिया तब वह उनके अभिप्रायको जान गयी।

अघोरघंटने प्रथम उसकी पूजा की और तदुपरांत देवीकी स्तुति करने लगा। तब वह पूर्णरूपसे जान गयी कि यह मुझे बलि देगा। तब यह दुष्ट (अघोरघंट) तौ मुझे मारेंहीगा, तौ फिर अब इसका भयही क्यों मानना चाहिये, ऐसा सोच विचारकर मालती जोरसे चीख मारकर रोने लगी। बाबा! तुम जिसके योगसे राजाकी प्रसन्नता प्राप्त करनेवाले थे उस तुम्हारे साध-

न (मालती) को यह दुर्दांत अब नष्ट करनेके लिये उद्यत हुआ है। पुत्रीकी ममतासे न हो तो न हो, पर राजाकी प्रस- न्नता प्राप्त करनेका साधन नष्ट हुआ जाता है यही जानकर इस समय तुम मेरी रक्षा करो। इस प्रकार मालती अपने इष्टमित्र तथा संबंधियोंका नाम ले फूट फूटकर रोने लगी।

वह दुरात्मा अघोरघंट इस समय मौन गहे तो बैठा था, पर आंखें निकाल २ उसे दपटतेभी जाता था। और उसकी सहाय- कर्त्री वह दुष्टा कपालकुंडला दांत ओंठ खा उसका मुँह दबाती थी। तौभी बीचबीचमें मालती चीख मारतीही थी। अघोर- घंटका स्तवन पूर्ण होनेके लिये बहुत देर लगी तबतक वह अनाथ लडकी छाती पीट पीटकर रोतीही रही।

स्मशानमें भ्रमण करते करते माधव कराला देवीके मंदि- रके निकट योंही आ पहुँचा। वह मालतीकी हृदयविदीर्ण करनेवाली विलापध्वनिको सुन उसके विषयमें विचारांश करने लगा, पर वह यह न जान सका कि यह शब्द कहांसे आ रहा है और किसका है। हां इतना तो अलबत्ते जान पडता है कि यह क्रंदना शोकविह्वल युवतीकी करुणध्वनिकैसी बोध होती है और यहभी जान पडता है कि वह यहांसे बहुत दूर है। मुझे जान पडता है यह इस समय मेरे चित्तको अपनी ओर आकर्षि- त कर रही है। कर्णोंको यह शब्द पूर्वपरिचितसा ज्ञात होता है। इसे सुन न मालूम क्यों मेरा हृदय मथित एवं व्याकुल हो रहा है। मेरा सकल गात्र व्याकुल हो रहा है। शरीर कंपायमान हो रहा है और धरतीपर पांव सीधा नहीं पडता यह है तौभी क्या? कुछ जान नहीं पडता।

इतनेमें पुनरपि उक्त आक्रोश कर्णगत हुआ उसे सुन अनुमा- नसे उसने जाना कि वह करुणोत्पादक ध्वनि कराला देवीके स्थानसेही आ रही है। वह देवीका मंदिर क्या भयावनी घटनाओंका एक स्थलही है तो इस समय वहां कोई न कोई विलक्षण

बदला हो रही है ऐसा निश्चय कर माधव उसे देखनेके लिये सीधा वहीं जा पहुँचा।

उसने भीतर जाके देखा कि अघोरघंट बैठे देवीका ध्यान कर रहा है। कपालकुंडला देवीकी पूजा कर रही है और वह दीन बापुरी मालती बलिप्रदानके समस्त चिह्न धारण करा हाथ जोडाकर देवीके सामने खडी की गयी है। यह समस्त लीला देख वह आश्चर्य्यचकित हो गया।

इतनेमें मालतीने पुनः कहा बाबा! रे निठुर! अपने स्वामीको प्रसन्न करनेका तेरा साधन यहां नष्ट हुआ जाता है। मेरी ममतामयी मा! दैवने तुम्हारा सर्व नाश किया। मालती तुमको प्राणोंसे अधिक प्यारी है पर अब क्या? मेरा कल्याण करनेके लिये रातदिन यत्न करनेवाली कामंदकी मा! तुम्हें संसारदुःखसे प्रयोजनही क्या? पर मेरा तुम लाड चाव करती रहीं वह अब तुम्हें चिरकाललों दुःखार्णवमें डुबोवेगा। प्रियसखी लवंगिका! अब तुझे मेरा दर्शन यदि हो सके तो केवल स्वप्नही-में संभव है।

यह सब सुन, माधवको जो शंका थी कि यह लडकी कौन और कहांकी है सो सब दूर हो गयी। और ऐसे कठिन अवसरपर मैं यहां आ पहुँचा इसका बडा आनंद मान वह मनही मन कहने लगा अरे यह तो वही है। इसके, विषयमें अब मुझे अणुमात्रभी संदेह नहीं है। जीतेजी मालतीको गले लगा लेनेके अभिप्रायसे माधव तुरंतही आगेको बढा।

तबतक अघोरघंटका ध्यान पूरा हो गया अतः वह और कपालकुंडला बद्धांजलि हो देवीकी प्रार्थना करने लगे। अघोरघंट बोला, देवि चामुंडे! तेरे चरणकमलोंपर हमारा सीस सदा बना रहे। मा! तुम्हारी महिमा अगाध है। जनोपद्रवकारी निशुंभके वेगसे थरथर कांपनेवाली पृथ्वीपर उसके गिर जानेसे धराको अपनी पीठपर धारण करनेवाले कूर्म्मके पीठका हड्डा दब

गया, एतावता उसने अपना अंग हिलाया। उसीसे संपूर्ण ब्रह्मांडकी स्थिति चलित हुई अर्थात् महाभयानक भूकंप हो नम्रीभूत पृथिवीपर सातों समुद्र खलभला उठे। और उन्हें तुमने अपने पातालसदृश मुखमें धारण किया। भगवति! तुम समस्त विश्वकी अधिष्ठात्री हो। जिस तुम्हारी अलौकिक लीलाकी भूतनाथ महादेवकी सभामें प्रशंसा हुई है वह तुम्हारी क्रीडा हमारी रक्षा करे। गिरिशनंदिनी! तुम्हारा लास्य हमारा अभीष्ट संपादित करे। ऐसी प्रार्थना कर उन्होंने मालतीको देवीके चरणारविंदोंमें अर्पित करनेके लिये अभिमंत्रित खड्ग उठा उसके गलेपर रखा।

बलिप्रदान करनेके समय बहुत मंत्र जपने पडते हैं और उसके तंत्रभी बहुतही लंबे चौडे हैं अतः अघोरघंटको बहुत देर लगी। नहीं तो वह खल राक्षस मालतीको कभीका बली दे होता। उस समय मालतीको देख माधव मनहीमन कहने लगा, हा विधाता! तुम्हारी गति बडी विलक्षण है। यह भूरिवसुकी इकलौती पुत्री इस समय रक्तरागसे रंगी गयी है और उसे पुष्पमाला और वस्त्रभी लालही पहिराये गये हैं। एक ओर यह दुष्टा निशाचरी (कपालकुंडला) और दूसरी ओर वह अधम राक्षस। इन दोनों पाखंडियोंके बीचमें चीतोंके बीचमें फँसी हुई हरिणीकैसी यह मृत्युके मुखमें खडी है। हाय, हाय! विधना! यह तुम्हारीकैसी अचिंत्य कठोरता एवं निर्दयता!!!

इधर कपालकुंडलाने मालतीसे कहा बेटी! तेरा कल्याण हो। अब काल तुझे शीघ्रही कवलित किया चाहता है अतः तेरा जो प्यारा हो उसका स्मरण कर क्यों कि जन्मांतरमें तुझे उसका समागम अवश्यमेव प्राप्त होगा। इस प्राणविसर्जनका यही फल है कि भविष्यत् जन्ममें अपना प्रणयीही पतिरूपसे प्राप्त होता है।

यह सुन मालती माधवका स्मरण कर बोली प्राणनाथ माधव! मेरे लोकांतरवासिनी होनेपरभी तुम मुझे बिसराना मत।

इस लोकमें इष्टमित्रगण जिसका वारंवार स्मरण करते हैं वे इस लोकसे महायात्राभी कर चुके तौभी मृत नहीं समझा जाता ?

मालतीने माधवका स्मरण किया उसे सुन **कपालकुं-डला** बोली यह दुखिया माधवपर अनुरक्त हुई है ऐसा जान पड़ता है।

इतनेमें **अघोरघण्टने** तरवार उठा **कपालकुंडलासे** कहा जो हो मैं अब इसे भगवतीको अर्पित करता हूं। देवीको संबोधन दे बोला, चामुंडे ! मंत्रसाधन करतीवारमैंने तुम्हें बलि देना स्वीकृत किया था तदनुकूल यह पूजा लो और इसका अंगीकार कर मुझे अनुगृहीत करो।

अघोरघण्ट मालतीका सिर धडसे अलग कियाही चाहता था कि **माधवने** चट आगे बढ **मालतीका** हाथ थाम उसे अपनी ओर खींच लिया और **अघोरघण्टसे** कहा रे दुष्ट नीच अधम अत्याचारी ! पीछे हट। रे दुरात्मा कपालिया ! आगेको पांव उठावेगा तो अपनेको मृतही पावेगा।

मालती औचक **माधवको** देख मेरी रक्षा कीजिये २ ऐसा कहती हुई उसके गले जा लिपटी। उसे अपने वामहस्तसे संभालकर **माधव** बोला, प्रिये ! डरो मत। मरणकालको आसन्न जान निश्शंक एवं स्वच्छंदविहारी हो जीवनको तृणप्राय समझ स्नेह प्रकट करनेवाला यह तुम्हारा प्रणयी तुम्हारी रक्षाके लिये तुम्हारे निकटही उपस्थित है अब तुम भयसे कंपो मत। इस दुरात्माको इसके पापका अनिवार्य्य दंड (मृत्यु) अभी मिला जाता है। तुम धीरज धरो।

अघोरघंट दांत होंठ खा कुपित हो **माधवकी** ओर निहार कर बोला यह विघ्नकर्त्ता दुष्ट कहांसे आ उपस्थित हुआ ?

कपालकुंडला इस लडकीने अभी जिसका स्मरण किया था वही यह इसका प्रणयी **कामंदकीके** मित्रका पुत्र है। अपने शरीरके मांसका विक्रेता **माधव** यही है।

मालती इस दुष्टके हाथ कैसी चढ गयी इसके विषयमें माधवको अति विस्मय हुआ वह बोला, मालती ! तुम यहां कैसी आयी ?

इस समय मालतीके मुँहसे एक शब्दभी न कढ सकता था तौभी वह स्थितचित्त हो बोली, नाथ ! मैं कुछ नहीं जानती। अपने घर अटारीपर सोती थी पर जागृत होनेपर मैंने अपनेको यहां पाया बस इतनाही जानती हूं इससे अधिक कुछ नहीं जानती। पर आपका आना यहां कैसे हुआ ?

उक्त प्रश्नका उत्तर देनेको माधव बहुत लजाता था और यह-भी न कह सकता था कि तुम मुझे प्राप्त नहीं होती अतः मैं प्राण-त्याग करनेके लिये उद्यत हुआ हूं, पर फिरभी बडी चतुराईसे वह बोला, तुम्हारे पाणिग्रहण कर कृतकृत्य होऊंगा इस लालसा-के कारण मैं अत्यंत पीडित हुआ। तब तुम्हारे विना प्राणोंका शरीर पिंजरेमें रहना असंभव जान अपना मांस बेंचनेके लिये इस स्मशानमें फिर रहा था। इतनेमें तुम्हारी विलापध्वनि सुन यहां आया। यह सुन मालतीका चित्त अत्यन्त व्यथित हुआ और मदर्थ ये अपने प्राणोंको तृणवत् समझ उदासीन हो अत्र तत्र भ्रमण कर रहे हैं आदि बातोंकी चिंता कर उसका जी करुणार्णवमें डूब गया।

माधव मनोमन विचारने लगा कि यह यथार्थही तो कहती है जिस बातकी स्वप्नमेंभी कल्पना न थी वही एकाएक आ उप-स्थित हुई। संप्रति दैवात् राहुके डाढमें फँसी हुई चंद्रकलाकैसी यह (मालती) मुझे दृष्टिगत हुई और इस चोर (अघोरघंट) की तरवारके आघातसे साहसपूर्वक मैंने इसकी रक्षा की। इस आकस्मिक विलक्षण घटनाके कारण विकल, करुणासे आर्द्र, आश्च-र्य्यसे क्षुब्ध, कोपातिशयसे रक्त और इस प्रियाके समागमसे आनंदित हुआ मेरा मानस अब किस अवस्थामें स्थिर रहेगा सो मैं नहीं कह सकता। क्योंकि एकके पश्चात् एक अनेक विकार एकही साथ उत्पन्न हुए हैं।

योंही आत्मगत विकार करते और विलक्षण अवस्थाका अनुभव लेते हुए माधवको अघोरघंटने कहा रे ब्राह्मणकुमार! व्याघ्रके पंजेमें फँसी हुई हरिणीकी करुणावश रक्षा करनेवाले मृगकी नांई जीवभक्षक देवीके स्थानमें मुझ हिंसाप्रियको तू प्राप्त हुआ है तौ रे पापी! मैं इस भूतजननी (देवी) के चरणोंपर सिर काटनेके कारण भलभल रक्त बहते हुए तेरेही शरीरके उपहारकी प्रथम कल्पना करता हूं।

अघोरघंट माधवको विशेषतया जानता बूझता न था यदि यह कोई क्षत्रियकुलतिलक होता तौ तरवारके बलसे अपनी प्रणयिनीका पाणिग्रहण करता, पर यह तो भीरुकी नांई स्त्रीके अप्राप्त होनेपर प्राणत्याग करनेके लिये उद्यत हुआ है, अतः यह ब्राह्मणकुमार है ऐसा जान उसने उसको खूब डांट फटकार दिखलाई, पर माधव महान् वीर था। तिसमेंभी इस समय तो वह जी देनेको उद्यत था। उसने बड़ी निर्भयताके साथ अघोरघंटसे कहा रे दुष्ट दुरात्मा पाखंडी अधम! आज तूने यह क्या करना ठाना है? क्या आजही इस समस्त संसारको तू निःसार किये देता है? क्योंकि संसारका सार ललनाललामही है और उसीको तू नष्ट किये देता है। आज तू संसारके स्त्रीरत्नको अपहृत करनेके लिये कटिबद्ध हुआ है। विश्वको प्रकाशित करनेवाले इस स्त्रीस्वरूप चंद्रिकाको समूल नष्ट करनेके लिये तू बद्धपरिकर हुआ है अतः जान पडता कि तूने संपूर्ण संसारको अंधकारमें ढकेल देना विचारा है। इसकी सखी सहेलियोंका जीवन इसीपर निर्भर है उन सबको आज तू मृत्युका मार्ग दिखला रहा है। मीनकेतन मदनमहीपतिका अभिमान इसकैसे अस्त्रोंपरही दृढरूपसे स्थित रहता है सो उसे नष्ट कर तू भगवान् मदनको गलिताभिमान करनेके लिये उद्यत हुआ है। ऐसे प्रकृतिसुभग स्त्रीरत्नको नष्ट कर संसारके नेत्रोंका निष्फल करना और समस्त जगत्को धूलमिट्टीमें मिलाना क्योंकर तूने जीमें ठान लिया? रे अधम! हास्यविनोदमें

ममतामय सखीसहेलियोंके सुकोमल शिरीषकुसुमके आघातसे व्याकुल हो जाती है उस मालतीके प्राणहरण करनेके लिये उसके मृदुल शरीरपर सान चढी तरवारका प्रहार करनेवाले तेरे मस्तकपर यमराजके पाशकैसे घातक इस मेरे भुजदंडका कठोर आघात हुए विना कभी न चूकेगा।

यह सुन अघोरघंटके कोपाग्निकी ज्वाला अधिकतर धधक उठी। वह बोला, रे दुरात्मा! भला ले कर तो मेरे सिरपर प्रहार! देखूं कैसा करता है। अरे देख अभी एक निमिषमें मैं तुझे ढेर किये देता हूं। मानो तू धरतीपर पैदाही नहीं हुआ।

इधर माधवभी उससे द्वंद्वयुद्ध करनेके लिये कटिवद्ध हुआ तब मालती कातर हो बोली, नाथ! प्रसन्न हो मुझे यही वर दीजिये कि इस दुष्ट दुरात्मासे व्यर्थ संग्राम न कर इस दासीकी रक्षा कीजिये।

उधर कपालकुंडलानेभी अघोरघंटसे प्रार्थना की कि भगवन्! यह दुष्ट (माधव) अति चपल दिखलाई देता है इसलिये इसका वध बडी सावधानीसे करिये।

मालती और कपालकुंडला ये दोनों स्त्रियां उन दोनोंकी विशेष चिंता करती थीं। पर दोनों इसके प्रार्थनाकी उपेक्षा कर हाथावाहींपर आ गये।

माधव मालतीकी सांत्वना करनेके लिये बोला भिरु प्रिये! ऐसी मत डरो। इस दुष्ट (अघोरघंट) को मराही जानो। क्या किसीने कभी कहीं देखा वा सुना तौभी है कि मदोन्मत्त गजराजोंके गंडस्थलोंको विदीर्ण करनेवाला मृगराज यःकश्चित् कुरंगको चपेटनेके लिये हिचका हो वा असावध हुआ हो? माधवने जिस प्रकार मालतीका समाधान किया उसी प्रकार अघोरघंटनेभी कपालकुंडलाका समाधान किया।

पाठक! चलो चलें जरा भूरिवसुके घरके समाचार ले आवें। अटारीपर सोई हुई मालतीको कुछ क्षणके पश्चात् निकटही सोई हुई लवंगिकाने जागृत हो जब न देखा तब मालती

नहीं है कहकर वह एकाएक चिल्लाने लगी। क्षणके क्षणमें अंतः-पुरवासी दासदासीगणोंने बडा कोलाहल मचा दिया । सब लोग जागृत हो चारों ओर **मालती**का अनुसन्धान करने लगे। इस समय **कामंदकी** अपने स्थानहीपर थी । **भूरिवसु**ने **कामंदकी**को शीघ्र बोलवाकर उससे पूछा तब उसने उसका समाधान कर कहा **अघोरघंट**के सिवाय ऐसी भयावनी एवं अद्भुत घटना करनेके लिये दूसरा कोई समर्थ नहीं है। **कराला** देवीको बलिप्रदान करनेके लिये वह उसे ले गया होगा ऐसा कह **मालती**का अनुसन्धान करनेवाले सवारोंसे उसने कहा कि तुम लोग पहिले **कराला** देवीके मन्दिरको घेर लो और वहांही उसका अनुसन्धान करो ।

अघोरघंटको **कामंदकी** भली भांति जानती थी। वह स्वयं कापालिकपंथानुगामिनी न थी, पर उससे उस पंथानुयायी लोगोंके कर्मोंका रहस्य छिपा न था। प्रहरी और द्वारपालोंकी पूरी पूरी व्यवस्था होनेपरभी चौथे मंजलेकी अटारीपर **लवंगिका**के साथ सोती हुई **मालती**को उसे तनिकभी न मालूम होने देते अकस्मात् ले गया। यह साहस कार्य जादू जाननेवालोंके अतिरिक्त दूसरोंसे नहीं हो सकता। **अघोरघंट** और उसकी शिष्या **कपालकुंडला** वैसे काम किया करती हैं। वह जानती थी कि उन्हें गगनमार्गसे जाने आनेकी शक्ति प्राप्त है यही कारण है कि **मालती**के अदृष्ट होनेके समाचार सुनतेही वह जान गयी कि यह काम **अघोरघंट**के सिवाय दूसरेका नहीं है ।

कामंदकीके यह पता बतलानेके पूर्वेही **मालती**को खोजनेके लिये चारों ओर घुडसवार दौडा दिये गये थे, उन्हें **कराला**-देवीका स्थान बतलानेके लिये पीछेसे सेनानायक द्रुतपद दौडाया गया। उस घोर अंधेरी रातमें चारों ओर दौडनेवाले घुडसवार उसे दीखे नहीं। अतः उन्हें पुकारकर उसने कहा **मालती**का अनुसन्धान करनेवाले सैनिकगण! व्यर्थमें चारों ओर दौड धूप न करो।

भगवती कामंदकीने कहा है कि इस इधरके स्मशानमें कराला-देवीका स्थान है शायद अघोरघंट नामका जादूगर मालतीको वहां ले गया होगा। तौ अपनेको उचित है कि पहिले उस करालाके मंदिरको जा घेर लेवें कि जिससे अपना कार्य्य सिद्ध हो जाय।

उसके कथनानुसार सब लोगोंने एकत्रित हो करालादेवीके मंदिरको घेर लिया। सिपाहियोंद्वारा अपनेको परिवेष्टित कपाल-कुंडलाने घबराकर अघोरघंटसे कहा कि गुरुजी ! देखिये अप-नेको सैनिकोंने चारों ओरसे घेर लिया है। अब ईश्वर जाने क्या भवितव्य है। अघोरघंट बोला भयभीत मत हो। विशेष पराक्रम एवं पुरुषार्थ प्रदर्शित करनेका यही अवसर है। देख एक क्षणमें इन सबको पराजित करता हूं।

सेनाधिपतिने उच्च स्वरसे सब सैनिकोंको करालाके मंदिरको घेर लेनेकी आज्ञा दी, वह माधव और मालतीकोभी कर्णगत हुई और तदनुकूल तुरंतही मंदिरभी घेर लिया गया सोभी उन्होंने देखा। अपने घरसे कोई लोग अनुसंधान करनेके लिये आये होंगे ऐसा जान मालती मा बाप और कामंदकीका नाम फूट फूट कर रोने लगी। यह जो यहां रहेगी तौ अति व्याकुल होगी अतः इसे इसकी खोजमें आये हुए मनुष्योंके स्वाधीन कर देनेसे इसका चित्त स्वस्थ न होगा। अनन्तर इसके सामनेही इस दुष्टको मारना चाहिये ऐसा सोचकर मालतीको सेनानायकके आधीन कर माधवने अघोरघंटसे कहा रे दुष्ट वज्रशरीर! शत्रुओंके शरीरको टूक टूक करनेवाली यह मेरी प्रखर और प्रचंड तरवार तेरे शरीरके तिल २ कैसे टुकडे करनेके लिये उपस्थित हुई है। यह सुन उस-नेभी अपने खड्गकी प्रशंसासे उसके कान बहिरे किये, पश्चात् दोनों द्वंद्वयुद्ध करने लगे।

माधव नाटा था, पर तरवारके हाथ करनेमें बडा दक्ष था। उन दोनोंका संग्राम सब लोग चित्रार्पितसे हो निहार रहे थे। कभी

अघोरघंटकी विजय होती और कभी माधवकी । यों दोनोंकी समसमानता देख मालतीका चित्त अतिव्यथित होता था। वह सैनिकोंको उसे सहायता देनेके लिये प्रार्थना करती थी; पर माधवने सहायता लेना अस्वीकृत किया । एतावता वे निरुपाय हो गये ।

इधर कपालकुंडलाभी अपने गुरुको बारबार प्रोत्साहित करती जाती थी । इस द्वंद्वयुद्धके विस्मयजनक परिणामको देख प्रेक्षकगण आश्चर्यित होते थे ।अंतमें मानो अघोरघंटको उसके जघन्य कर्मोंका फल तत्क्षण प्राप्त हो ऐसीही धातुरिच्छा होनेके कारण माधवने उसकी मारको बचा उसपर ऐसे जोरसे आघात किया कि तुरंतही उसके रुंडसे मुंड जुदा हो करालादेवीके चरणोंपर जा गिरा । इस प्रकार उसने मालतीको बलि देनेवाले अघोरघंटहीको बलि दे देवीकी पूजाकी पूर्णता की ।

मालतीको खोजनेके लिये आये हुए लोग कपालकुंडलाकोभी मारनेवाले थे पर वह औचक वहांही अदृष्ट हो आकाशमार्गसे न मालूम कहां भाग गयी। माधवकी शूरता देख मालतीको परम आनंद हुआ और उसने स्नेहगर्भित तिरछी चितवनसे उसकी ओर निहार उसके सकल श्रम हरण किये । वहां एकत्रित हुए समस्त सैनिकगण मालती मिल जानेके कारण अत्यन्त हर्षित हो उसे अमात्य भूरिवसुके यहां लेवा लाये । मालती जीती जागती मिली यह समाचार सुन सभी आनंदित हुए। इधर माधवभी जो प्राणत्यागके लिये कृतनिश्चय हो भूत पिशाचोंको अपना मांस देनेवाला था वह कठिन अवसरपर मालतीके काम आ उसने उसके प्राणोंकी रक्षा की, इस उपकारका फल कुछ अच्छाही मिलेगा ऐसी आशा कर घर लौट आया ।

छठा परिच्छेद.

कामंदकी और भूरिवसुने अब आगे क्या करना चाहिये सो पहिलेहीसे विचार रखा था। मालती रात्रिहीमें अदृष्टसी हुई और सूर्योदय प्राक् वह सुखपूर्वक घरभी आ गयी। गत रात्रिको नंदनके घर और भूरिवसुके यहां परिणयके पूर्व संस्कारोंमेंसे कुछ प्रारंभही हो चुके थे। राजाकी प्रसन्नतामें अणुमात्रभी अंतर न पडने पावे अतः भूरिवसुने दूसरे दिन प्रातःकालहीको कुलदेवकी स्थापना कर आज रात्रिको विवाह होगा यह वार्ता प्रसिद्ध कर दी थी और इसीके अनुसार चारों ओर बडे समारोहके साथ तैयारियां हो रही थीं।

इन तैयारियोंको देख देख मालती नितांत दुःखी होती थी; तथापि मातापिताकी आज्ञासे जो जो करना था सो सब मौन गहे करती जाती थी। कामंदकीने मन्सूबा बांध रखा था कि पाणिग्रहण संस्कार होनेके पूर्व सायंकालके समय जब मालती नगरकी प्रधान अधिष्ठात्री देवीके दर्शनोंको जायगी तब वहीं उसे माधवको व्याह उन दोनोंको एक गुप्त स्थानमें रख देंगे और मकरंदको मालतीका वेष दे नंदनसे व्याह देंगे और उसी प्रसंगमें मदयंतिका उसे देंगे।

माधवभी मरघटासे अरुणोदयके पूर्वही घर लौट आया था। उसे एकाएक न देख मकरंद और कलहंस गहरी चिंतामें थे। वे उसे औचक देख परम आनंदित हुए। रे साहसी! हमें चिंतार्णवमें ढकेल अबलों तू कहां गया था? ऐसा कह मकरंदने प्रेमपूर्वक उसे गले लगा लिया। अनंतर दोनों मित्र एक साथ बैठ वार्तालाप करने लगे। मकरंदके पूछनेपर माधवने स्मशानकी घटना उसे व्यौरेवार कह सुनायी।

इधर मालतीको ढूंढकर लानेवाले मनुष्योंने माधवकी शूर-

ताका वर्णन कियाही था पर उन्हें दूसरा हाल कुछभी न मालूम था। **कामंदकीके** पूछनेपर **मालतीने** करालादेवीके मंदिरकी समस्त घटनाका निवेदन किया। उसे सुन **कामंदकी**, **भूरिवसु**, **मालतीकी** माता और **लवंगिकादि** उसकी सखियोंको बहुतही हर्ष हुआ। **माधवके** लिये उनका अनुराग पहिलेहीसे था पर इस घटनाको सुन वह औरभी विशेषरूपसे दृढ हो गया।

मालती माधवको व्याह देनी चाहिये ऐसा **भूरिवसु** और उसकी धर्मपत्नीने पूर्वही निश्चय कर लिया था। और उसके विषयमें आगेको क्या करना चाहिये सोभी निश्चित हो चुका था, पर **माधवने** अपने प्राणोंकी उपेक्षा कर **मालतीकी** रक्षा की एतदर्थ वे उसके अत्यंत बाधित हुए।

कामंदकी वहांसे **माधवके** डेरेपर आ उससे मिली और गतरात्रिको वह प्राणपरित्यागकी चेष्टामें तत्पर था यह सुन उसपर बहुत क्रुद्ध हुई और आज सायंकालको क्या करना चाहिये सो सब **माधव**, **मकरंद** और **कलहंसको** सिखा पुनः वह वहांसे **भूरिवसुके** घर लौट आई। **अवलोकिता**, **बुद्धिरक्षिता** और **लवंगिका** इन तीनोंको उसने अपना मन्सूबा पहिलेहीसे सूचित कर कब क्या करना चाहिये सो सब सिखा रखा था। सारांश आजपर्यंत जो मन्सूबे बांधे गये उन सबकी सार्थकता आज रात्रिको होनी चाहिये ऐसा स्थिर हो चुका था। **कामंदकीने** उक्त संकेतानुकूल इधर सब व्यवस्था कर रखी थी पर **माधवका** सर्व नाश करनेके लिये एक दुष्टा घात लगा रही थी उसे वह न जानती थी।

गतरात्रिको **माधवने अघोरघंटका** वध किया तब उसकी चेली **कपालकुंडला** वहांसे भाग गयी यह ऊपर उल्लिखित होही चुका है। वहांसे भागकर वह अपने आश्रमपर गयी और गुरुके लिये नितांत शोक प्रकाशित कर अंतमें गुरुका वध करनेवालेसे गुरुवधका बदला लेनेका निश्चय कर वह **पद्मावती** नग-

रीमें लौट आयी। मंत्रबलसे आकाशमार्गद्वारा यात्रा करने तथा किसीको न मालूम होने चाहिये वहां जानेकी विद्या उसे विदितही थी। गुरुघातीसे किस प्रकार बदला लेना चाहिये इसका विचार करनेके लिये गुप्त रीतिसे उसने पूरे नगरभरमें संचार किया।

वह बार बार माधवका नाम ले दांत होंठ खा रे दुरात्मा! रे दुष्ट! उस लौंडिया मालतीके लिये तूने उस पुण्यश्लोक (मेरे गुरु) का वध किया भला कुछ चिंता नहीं मैं तत्क्षण तेरे उस मालतीको वहीं यमराजपुरीको पहुँचा देती पर उसको अज्ञान लडकी जान मैं दया करने गयी सोही इधर तूने विजयलाभ कर लिया। और जब मैं तुझपर प्रहार करनेको उद्यत हुई तब अः स्त्रीवध कर पापभागी कौन हो। ऐसा कह तूने मेरा अपमान किया; पर रे अधम! तुझे इस कपालकुंडलाका प्रभाव विदितही नहीं है। पर अब मैं क्या करती हूं सो देख।

लंबी सांस ले बोली, नागिनके शत्रुको सुखपूर्वक निद्रा कैसे आ सकती है क्योंकि उसका क्रोध तनिकभी शांत नहीं हुआ। अहोरात्रि वह इसी चिंतामें मग्न रहती है कि कब अनुकूल अवसर हाथ लगे और कब शत्रुको दंश करूं। अपने विषारी दांतोंको पैने कर वह भीषण नागिनी उसका बदला लेनेके लागपर है। अघोरघंटरूप सर्पको मार तू निश्चिंत नहीं हो सकता। तुझसे बदला लेनेवाली सर्पिणी मैं तेरे घातपर हूं।

वह योंही मनोमन विचार करती हुई चली जाती थी कि नगरमें नंदनके विवाहकी धूम धाम उसको दीख पडी उसके लिये राजासाहिबने अपने कर्मचारियोंद्वारा अपने संबंधी, इष्टमित्र तथा अन्यान्य राजे महाराजोंको कि जो विवाहोत्सवके लिये निमंत्रित हो उपस्थित हुए थे, निम्नलिखित सूचना दी। उपस्थित लोगोंकी सेवामें विनीतभावपूर्वक यह निवेदन है कि वृद्ध २ लोग जो इस समारंभमें समय समयपर सूचना देनेके लिये नियत किये गये हैं, उनके कथनका सबको समादर करना समुचित है। ब्राह्मणोंको

मंगलमय मंत्रघोष करना चाहिये। अन्यान्य लोगोंनेभी जिसे जो योग्य हो मंगल और आनंदप्रदर्शक कार्य करने चाहिये। अब विवाहका मुहूर्त निपट निगचा आया है। मंडपमें विशेष भीड-भाड होनेके पूर्वही मालती नगरस्वामिनी देवीके दर्शनोंको जानेवाली है ऐसा दीवानसाहबके यहांके लोगोंसे जाना जाता है। तौ अत्रस्थ विवाहार्थ निमंत्रित सब लोगोंको उचित है कि मालतीके देवीके दर्शन कर लौट आनेके पश्चात् सब लोग यथा-योग्य वस्त्राभूषणोंसे सुसज्जित हो वरातमें चलनेके लिये प्रस्तुत हो रहे।

इस प्रकार राजाकी आज्ञा समारंभ नियंताओंने सब लोगोंपर प्रकाशित कर दी। वह सुन कपालकुंडलाने अपने जीमें विचारा कि इस समय मुझे कुछभी यत्न न करना चाहिये। उस दुष्ट (माधव) से अपने गुरुका पलटा दूसरे किसीही प्रकारसे न लेना चाहिये। जिसके लिये उस दुष्टने मेरे गुरुजीका वध किया उसेही नष्ट कर देना अलं होगा पर अभीलों वह उसकी सहध-र्म्मिणी कहां हो पायी है? इधर तो किसी दूसरेहीके साथ उसके परिणीत होनेकी तैयारियां हो रही हैं तौ मुझे उचित है कि अभी विवाह होनेतक मैं कुछभी न करूं फिर विवाह हो जानेपर जैसा उचित हो वैसा करूं। अभी केवल आगेकीही बात सोच रखूं।

पुनः माधवको संबोधन दे बोली रे दुरात्मन्! जबलों तेरा सर्वनाश न कर लूंगी तबलों मेरा जी स्वस्थ न होगा। ऐसा कह वह राक्षसी एक ओरको निकल गयी।

इधर उक्त संकेतानुसार माधव और मकरंद नगरदेवीके मंदिरके सभामंडपमें जा छिपे थे। स्त्रीलेलुप पुरुषोंको एक एक निमिष युगसा प्रतीत होता है। बहुत कुछ समय बीत चूका पर मालती अद्यावधि आती नहीं अतः घबराकर माधवने कलहं-सको मालती इधर आनेके लिये घरसे निकली वा नहीं सो देख आनेके लिये आज्ञा दी। उसने द्रुतपद जा मालतीके घरसे

निकलनेके समाचार ले वे अपने स्वामीको निवेदन कर उन्हें हर्षित करनेके अभिप्रायसे वह पुरदेवताकी मंदिरको तुर्त लौट आया।

यहां माधवका चित्त मालतीमय हो रहा था अर्थात् उसे मालतीके व्यतिरेक दूसरा कुछ न दीख पडता था। कामंदकीने मन्सूबा सब कुछ बांधा था पर वह सिद्ध हो पाता है वा नहीं इसका उसे भरोसा न था। उसने मकरंदसे कहा मित्र! मालतीको पहिले पहिले जबसे मैंने मदनोद्यानमें देखा तबसे उस मृगशावकनयनीकी आत्मानुकूल चेष्टाओंको देख क्षणक्षणपर वृद्धिलाभ करनेवाले मेरे मनोरथका और तज्जन्य कामव्यथाका सर्वतोभाव इस समय अंत आ चुका है। अब दोमेंसे एक अवश्यही होगा।

कामंदकीका मन्सूबा सफल हो मालतीके साथ मेरा विवाहही होगा वा अंतमें सब टांयटांय फिस्सही हो जायगा! जो होना होगा सो होगा। एक वेर इसका निबटेरा हो जाय तो मैं इस द्वंद्वसे छूटूं। अब कष्ट ये मुझे असह्यसे हो रहे हैं।

यह सुन मकरंद बोला भाई! तू तो मुझे बडा अधीर जान पडता है। तेरे मुँहसे यह सुन मुझे परम विस्मय होता है कि भगवती कामंदकीकैसे कार्य्यपटु व्यक्तिकी कार्य्यवाहीमेंभी तुझे विश्वास नहीं है। भगवती कामंदकीका मन्सूबा न गठा तो मानो संसारके चातुर्य्यकी सीमा शेष हो चुकी और भविष्यत्में फिर यही मानना पडेगा कि दूरदर्शी पुरुषोंकी पूर्व व्यवस्था केवल भ्रमजन्यही होती है।

इतनेमें कलहंसने दौडते आ माधवसे कहा मालिक! तुम्हारा मनोरथ पूर्ण हो चुका। श्रीमती मालती नहीं २ मेरी मालकिन इधर आनेको घरसे निकल चुकी और सब व्यवस्थाभी पूरी पूरी हो गयी है।

यह सुन माधवको विशेष आनंद हुआ। तौभी उसने उससे फिर पूछा कि क्या यह सब सच है? तब उसका निषेध कर मकरंदने कहा मित्र! आज कल तू बडा अविश्वासीसा हो गया

है। वह केवल इधरको आनेहीके लिये नहीं निकली है किंतु ऐसा समझ कि वह इस मंदिरके निकट आ पहुँची होगी। वायुके योगसे चारों ओर फैले हुए वारिवाहकोंकी गर्जनाकी नाई उसके साथके सहस्रावधि वादित्रोंकी ध्वनि एकाएक हम लोगोंके कर्णोंमें समा जानेके कारण दूसरेकी बातलों नहीं सुनाई देतीसी जान पडती है तो इससे निःसंशय यही जान पडता है कि वह बहुतही निकट आ गयी है। आओ चलो चले अपुन लोग इस जालीदार खिडकीसे उसकी मनोहर शोभा देखें। माधव यह चाहताही था। मकरंद और वह जालीमेंसे निहारने लगे, कलहंसभी वहीं निकट खडा था।

मकरंदके अनुमानानुसार मालती नगरदेवीके मंदिरकी ओर आही रही थी। कहनेकी कोई आवश्यकता नहीं है कि भूरिवसु प्रधान मंत्री होनेके कारण उसका अटूट विभव वर्णनीय था। भली भांति सजाई हुई एक हथिनीपर रत्नजटित अंबारीमें मालती बिठलायी गयी थी। उसकी प्रियसखी लवंगिका उससे लगी उसके बगलहीमें बैठी थी। मालतीका मन अस्वस्थ था और इस समारंभको जोह जोह उसे संताप होता था अतः वह उदास एवं कांतिहीन दीख पडती थी। बहुमूल्य वस्त्र तथा आभूषण धारण कर सिरपरसे एक बढिया चादर ओढे थी। लवंगिकाके शरीरसे टिककर बैठे बैठे सिसक २ बडे २ मोतीकैसे आंसू ढरकाती हुई—सखी, कह तो अब मेरा क्या होगा? यही दुःखके वचन बार बार उसके मुँहसे कढते थे। उसके आगे पीछे सहस्रावधि योद्धा और दासगण चले जाते थे। अंबारीमें उसके पीछे खडी हो दासी उसके सिरपर चमरी ढार रही थी। कामंदकी एक दूसरे वाहनपर आरूढ हो उसीके साथ २ चली जाती थी। साथमें सैकडों कुलवधू मंगलगान करते चली जा रही थीं। सबके सामने वादित्र बजते जाते थे और बडे २ शूर वीर योद्धा चारों ओरसे रक्षा करते चले जाते थे।

इधर माधवको उक्त समारोह लखा मकरंद उसका वर्णन करने लगा। वह बोला, मित्र उधर देखिये, गगनविहारी राजहंसों-कैसी शुभ्र चमरीके मंद मंद वायुसे अंबारीके अधः प्रदेशमें बंधे हुए कदलीके कोमल कोमल पत्र संचलित हो पताकाकैसे दीख पडते हैं और अंबारीमें बैठकर आयी हुई स्त्रियोंके मुखकमल नभमंडलस्थ सरोवरमें एकसे प्रफुल्लित कमलोंकी नाईं अपनी छटा अलगही दिखा रहे हैं। मुखमें तांबूल होनेके कारण इन पिकबैनियोंके मंगलगीतोंका कलरव नितांत कर्णप्रिय बोध हो रहा है। इन कुलबालाओंके गात्रोंको अलंकृत करनेवाले नानाविध रत्नखचित आभूषणोंका हरा पीला लाल प्रकाश एकत्रित हो इंद्रके धनुष्यको अनुकृत कर रहा है। पायजेब और नूपुरोंकी ध्वनि चित्तको अपनी ओर मानो खेंच रही है। सारांश यह रमणीय दृश्य देखनेही योग्य है।

उक्त दृश्यको देख माधव बोला, यथार्थमें दीवानसाहबका ऐश्वर्य अत्यंत वर्णनीय है। चारों ओर हिलनेवाले अनेक सुवर्णमणि तथा रत्नोंकी करप्रभा भगवान् अंशुमालीकी किरणोंसे मयूरपिच्छकैसी प्रकाशित हो रही है और उनके प्रकाशसे इंद्रधनुष्य व चित्रविचित्र पाटांबरकी पताकाका भ्रम हो रहा है।

इतनेमें मालतीके साथ आयी हुई सब ललनाएं एक ओर जा खडी हो रहीं। उन्हें देख कलहंस बोला, मालिक ! अब यह आपत्ति क्यों ? इन अनेक प्रहरीगणोंने रत्नखचित सुवर्णदंडोंद्वारा इसके साथ आयी हुई स्त्रियोंको हटाकर दूर कर दिया और यह मालती अरुणपरागारक्त कपोलवाली नक्षत्रमालाविभू-

---

१ नक्षत्रमाला नामका एक आभूषण होता है। नक्षत्र २७ हैं अतः इस मालामें २७ मोती, रत्न वा सुवर्णमणि रहते हैं। सामान्य धनी लोगोंकी स्त्रियां इस आभूषणको स्वयं धारण करती हैं। पर भूरिवसु जैसे अपरिमित विभवशालीके घर उसे हथिनीके गलेमें स्थान मिला यह कोई आश्चर्य घटना नहीं है। बात तो यह है कि विभव जैसा २ न्यूनाधिक होता है तदनुसार वस्त्राभूषणोंकी योग्यताभी न्यूनाधिक मानी जाती है। मध्यम वृत्तिके श्रीमान् लोग जिन वस्त्रालंकारोंको त्योहार वारको पहिनते हैं उन्हें अटूट विभवशाली श्रीमान् लोगोंके दासदासीगण नित्यमेव पहिनते हैं।

वित मंदगामिनी अतः रमणीय करिणीपर आरूढ सबके आगे बढ आयी। कौतुकवश सर्व साधारण सिर ऊपर उठा उठा जिसके मनोहर रूपका अवलोकन कर रहे हैं, शोकसे जिसके सुंदर वदनपर श्यामरसी छा गयी है और जो सूखी कमलिनीकैसी नितांत कृश दीख पडती है; पर तौभी प्रेक्षकगणोंकी दृष्टिको रमणीय सितप्रतिपदिकचंद्रकलाकैसी आनंद देती हुई वह उधर मंदिरहीकी ओर आ रही है। साथकी सब स्त्रियां सब पीछेही रह गयीं।

मकरंद-प्रियवर माधव! देख। एक बार इधर देख! इस समय यह मालती सिखसे नखलों बहुमूल्य आभूषणोंसे कैसी सजायी गयी है। पुष्पोंके भारसे माधवीलता जैसी नव जाती है वैसी यहभी विवाहमहोत्सवकी शोभाको धारण कर उसके भारसे लची जाती है पर तिसपरभी इसका कृश शरीर और कांतिहीन वदन अंतरस्थ दुःखको स्पष्टरूपसे व्यक्त कर रहे हैं।

योंही वे लोग आपुसमें वार्तालाप कर रहे थे कि हथिनीको मंदिरके द्वारपर ला नीचे बिठलाया और लवंगिकाके हाथका आश्रय ले मालती अंबारीसे नीचे उतरी। पूर्वसंकेतानुसार केवल लवंगिका और कामंदकी ये मात्र उसके साथ रहीं और शेष सब मंडली देवालयके बहिःप्रदेशमें ठहरी रही। करिणी नीचे बैठाली गयी और उसपरसे उतरकर मालती कामंदकी और लवंगिकाके बीचमें भीतरको आ रही है यह देख माधवको परम आनंद हुआ। वह चिंता और दुःखके भारसे विकल होनेके कारण भूषणोंका भार न सह सकती थी। अतः उन दोनोंने धीरे२ उसे देवीके सभामंडपमें ला उपस्थित किया।

उसे अंदर आयी हुई देख माधव और मकरंद वहीं दबक रहे। कामंदकी धीमे स्वरसे बोली कि हमारी मनःकामनाको अर्थात् यहांके यहीं मालतीका पाणिग्रहणसंस्कार होनेको ईश पूर्णरूपसे सहायक हो और वैसेही कार्यसंपादनके उपरांत उसका परिणाम अनुकूल होनेके लिये परमेश्वर अनुग्रह करे।

दोनों प्रियमित्रोंके अपत्योंका विवाह हो जाय तो मैं कृतकृत्य होऊं। करुणामय ईश्वरसे मेरी अंतिम प्रार्थना यही है कि वह मेरे यत्नोंको सफल कर इनका कल्याण करे।

विवाहकी बहिरंगनिश्चित वेला ज्यों ज्यों निकट आती जाती थी त्यों त्यों मालतीका दुःख अधिकाधिक होता जाता था। वह सोचती थी कि अब मेरे आशातंतुके टूटनेके लिये कुछ घडी पल शेष नहीं रहे। तो अब इस समय दोमेंसे एक कुछ ना कुछ प्राप्तही होगा अर्थात् मृत्यु वा निरंतरका सुख, पर दोनोंमेंसे किसी एकके प्राप्त करनेका अवसर मेरे हाथ कैसे लगे? भाग्यहीनको मृत्युभी अभीष्ट होती है शायद इसीलिये वहभी उसे दुष्प्राप्य है।

उसकी उक्त अवस्थाको देख लवंगिका मनोमन सोचने लगी, अपने हृदयेश माधवके वियोग और नंदनको प्रतारित करनेकी जो युक्ति हम लोगोंने सोची है वह इसे न विदित होनेके कारण यह बहुत व्याकुल हो रही है। पर इसके मनोरथकी पूर्तिका समयभी अति निकट आ गया है। इसकी यह विकट अवस्था मुझसे देखी नहीं जाती तौभी क्षणभरके लिये मुझे उसकी उपेक्षही करनी चाहिये।

इतनेमें अलंकारोंका टिपारा ले एक दासी त्वरित गतिसे देवीके मंदिरके सभामंडपमें आ उपस्थित हुई। दुलहिनको पहिरानेके वस्त्राभूषण राजाने भूरिवसुके निकट भेजे थे उन्हेंही लेकर वह आयी थी। इस समय मंदिरमें दूसरेको आनेकेलिये निषेध था पर उक्त दासीको विना टोके भीतर आने देना पूर्वही निश्चित हो जानेके कारण उसे किसीने रोका नहीं। मकरंदको बनडीका वेष दे जिस हथिनीपर मालती बैठकर आयी थी, उसीपर बैठा लौटाने तथा नंदनके साथ उसे व्याहनेका संकेत हो चुका था।

उस दासीने आभूषणोंके टिपारेको सामने रख कामंदकीसे कहा कि भगवति! स्वामीने (भूरिवसु) ने कहा है कि ये वस्त्र

भूषण दुलहिनको पहनानेके लिये राजासाहबने भेजे हैं । इन्हें देवीके सामने मालती धारण करे ऐसी आपकी आज्ञा है ।

कामंदकी इस सब रहस्यको जानतीही थी । उसने दासीसे कहा अरी! दीवानसाहबकी आज्ञा योग्यही है। यह मंगल स्थान है एतावता दुलहिनको यहीं सजाना चाहिये । भला यह टिपारा तो खोल और देखा तो इसमें क्या क्या है । दासीने टिपारा खोलकर एकएक वस्तु निराली कर कहा यह श्वेत साडी है जिसपर केशरके छींटे दिये गये हैं। यह केशरी रंगकी अंगिया है। यह लाल रेशमी ओढनी है । और ये अंगप्रत्यंगके भिन्न २ आभूषण हैं। यह मोतियोंका हार है और यह चंद्रहार है । इन सबको यथा उचित पहराइये ऐसा कह दासी आगे आ खडी हो रही।

कामंदकीने भूषणादिकोंको भली भांति देख भालकर मकरंदकी ओर निहार धीमे स्वरसे कहा कि यह सब साजबाज तो यथायोग्यही है । वत्स मकरंद ! जो तू इन्हें धारण करेगा तो मदयंतिकाके आंखोंमें खूब भरेगा ।

दासीसे कहा अरी ! तू जा और दीवानसाहबसे कह दे कि आपके निदेशानुसार कार्यवाही की जाती है ।दासीने कामंदकीकी आज्ञा पातेही चट वहांसे चल दिया ।

कामंदकीने लवंगिकासे कहा कि तू मालतीको सभामंडपमें लेवा ले जा । मैं एकांतमें बैठकर इन आभूषणोंके शास्त्रीय रीतिसे योग्यायोग्यका विचार करती हूं। ऐसा कह कामंदकी उस मंदिरके एक गुप्त स्थानमें जा बैठी ।

वास्तवमें कामंदकीको इस समय एकांत स्थानमें जानेका कोई दूसरा प्रयोजन न था । काम इतनाही था कि उन आभूषणोंमें मकरंद किन किनको धारण कर सकेगा और किन्हें धारण न कर सकेगा उन्हें अलग २ करना था और मालतीके सभामंडपमें जानेपर उसका वहीं माधवके साथ व्याह होनेवाला था। तौ उस समय परस्परमें संभाषण होगा पर मेरी उपस्थितिके कारण कदाचित् इन्हें

संकोच हो इन्ही सब बातोंको जानबूझकर वह वहांसे दूर हो गयी ।

इधर लवंगिका मालतीका हाथ थाम सखी ! देवीजीके मंदिरमें चलो चाहे और वहां पूजा अर्चा जो करनी हो सो चलके कर लें ऐसा कह उसे मंदिरमें देवीके पास लिवा ले गयी । उसे आती हुई देख माधव और मकरंद औरभी छिप रहे ।

मालती जब अंदर आ गयी तब अंगरागादि सामग्रीको सामने रख लवंगिकाने कहा सखी ! ये फूलोंकी माला है ये अंगराग है इन्हें ले ।

इसपर मालती बोली हां है । देख लिये, पर इन्हें लेकर क्या करूं ?

लवंगिका–सखी ! इस समय भला यह क्या कहती है तुझे प्रत्येक बातसे त्रासही होता है । यह पाणिग्रहणका समय है तो आत्मकल्याणार्थ इन ग्रामदेवीकी पूजा कर । ये फूलोंकी माला चंदन अक्षता आदि सामग्री पूजाहीके निमित्त लायी गयी है ।

विवाहका नाम सुनतेही मालतीकी भौंहें चढ जातीं और ललाटमें सिकुरन आ जातीं । माधवके साथ पाणिग्रहण होगा ऐसा यदि वह जान पाती तो तो वह आनंदके मारे फूली अंग ना समाती, पर वह तो दुखिया यही जानती थी कि उसका परिणय नंदनके साथ होगा । निदान वह तो यही सच समझती थी और इसीलिये उसे उद्वाहके नाममात्रसे घृणा हो गयी थी । वह बोली कि सबही बातें मेरी इच्छाके प्रतिकूल करनेको उद्यत हुए निठुर निर्दयीने मुझे बारबार दुःख दे मेरे मनको चूर चूर कर डाला है, तिसपरभी तू मुझे ये बातें सुना २ के मानो जलेपर नोन लगाती है । मुझ दैवहीन दुर्भागाको तुम लोगोंने कितना दुःख देना विचारा है उसकी मुझे थाहही नहीं लगती । यह कर, वह कर, पर वह क्यों ? मुझे ये एक नहीं करना है ।

लवंगिका उसके दोनों हाथोंको अपनी छातीपर थाम बोली, बाई री ! तू तो जराहीमें रूस जाती है, तनिक २ बातोंपर क्यों

रोस करती है ? तुझे पूजा न करनी हो तो मत कर, मेरा कुछ अनुरोध नहीं है। पर तू क्या कहती है सो तो बता दे।

मालती—और क्या कहना है, जो मनुष्य दुष्प्राप्य वस्तुकी लालसा करता है पर दैवकी प्रतिकूलताके कारण, उसे वह प्राप्त नहीं हो सकती, उस मनुष्यके जो कुछ कहनेकी संभावना है वही मेराभी कथन है। उसके व्यतिरेक और क्या कहूंगी।

इधर माधव और मकरंद उन दोनोंका वार्त्तालाप श्रवण कर रहे थे।

मकरंद—मित्र ! अब आगे क्या होगा उसकी कुछ चिंताही न करनी चाहिये। क्योंकि अभी इस (मालती) ने जो कहा सो तूने सुन लिया न। तू इसे प्राप्त नहीं होता अतः यह जीतक देनेको प्रस्तुत है।

उत्तरमें-हां हां ! सुन लिया। उसे सुननेहीपर तो हृदय परम संतुष्ट हुआ है। ऐसा कह माधव उनका संभाषण पुनः ध्यानपूर्वक सुनने लगा।

मालती लवंगिकाके गले लिपट कर बोली, बहिन ! मेरी प्यारी सहेली ! इस असह्य दुःखके मर्मस्पृक्‌ कष्टको अब मैं नहीं सह सकती। तो अब तू बीसो विश्वा येही जान ले कि तेरी प्रियसखी यह अनाथ मालती प्राणत्यागके लिये बिलकुल एक पांवपर खडी है। बाल्यावस्थासे अपुन लोग एकहीसाथ रहे हैं, तेरे अनेक उपकारोंके कारण तुझपर मेरा जो दृढ विश्वास हो गया है अतः तदनुकूल यह अंतिम प्रेम सम्मिलन कर तुझसे प्रार्थना करती हूं कि यदि तुझे मेरे मनकी बात करनी हो तो इतनाही कर कि मुझे अपने चित्तमें स्थित कर अखिलसौभाग्यलक्ष्मीके निवास तथा मंगलनिधान उस माधवके मुखारविन्दको आनन्दपूरित नेत्रोंसे मदर्थ अवलोकन कर। ऐसा कह मालती बिलबिलाने लगी।

पर मालतीका उक्त वाक्य सुन माधवको परम आनन्द

हुआ । वह बोला मित्र मकरंद ! मुरझाने हुए जीवरूप पुष्पपर रमणीयताकी आभा पुनः चमकने लगी, सकल इंद्रियोंको मुग्ध कर तृप्त करनेवाले हृदयको उसकी व्यथा दूर कर आनन्दित करनेवाले उसके उक्त वाक्य दैवकी अनुकूलतासे मुझे कर्णगत हुए ।

इधर मालती अपने रोनेको संभालकर बोली, सखी ! उनसे भेंट लेनेके मेरे अनुरोधका आभिप्राय तू समझी न ? मेरे जीवनप्रदाता उन महाभागाको मेरे मृत्युसमाचार सुन नितांत दुःख होगा और उस दुःखाग्निकी प्रचण्ड ज्वालामें कदाचित् वे अपने अलभ्य शरीरको न खो बैठे तो उस घटनाको रोकनेके लिये तू ऐसा कुछ कर कि जिससे मैं लोकांतरितभी हो जाऊं तौभी कथाप्रसंगसे यदा कदा उन्हें मेरा स्मरण होता रहे और तद्द्वारा वे अपने घर गृहस्थीसे विरक्त न होने पावें । यदि तू इतना कर दे तो मैं तेरे प्रसादसे परलोकमें आनन्दलाभ कर कृतार्थ होऊंगी ।

यह सुन लवंगिका बोली, ईश्वरकृपासे सब विघ्न टलें ! तुझे हुआ क्या है ? न मालूम तू यह बैठे २ अंट संट क्या बक रही है ! बस बहुत हो चुका । अब कुछभी न बोल, अब तू कभी बोली तो मैं तेरी एकभी न सुनूंगी ।

इसपर वह बोली, ले तेरेही मनकी होने दे । तुम सब मालतीके प्राणोंहीकी पियासीही हुई हो; तुम्हें मालती कब चाहिये है । मैं ऐसेही दुःखमें सडती रहूं ऐसाही कुछ कर अपना बदला लो ऐसा कह मालती बिलबिलाकर रोने लगी ।

उसका समाधान कर लवंगिका बोली, ऐसे उलटे सुलटे बोल क्यों बोलती है ? प्राण चाहिये और मालती नहीं । तेरी ये गूढ और उलझनकी बातें मेरी समझमें नहीं आती ।

इसपर मालतीने अपनी शोचनीय अवस्था प्रदर्शित कर कहा हां हां ! मैं जो कहती हूं सोई तुम लोगोंके मनमें है । नहीं तो बारबार आशा उत्पन्न होनेकैसी मीठी २ बातें कर अब बिवाहके ये घृणित संस्कार मुझसे क्यों करातीं, इससे तुम्हारा

अपर हेतु मैं कौनसा मांगू। तौ संप्रति मुझे किसी बातकी लालसा नहीं है। इस शरीरपर दूसरेका अधिकार होनेके कारण मेरे उद्यत होनेपरभी मैं उन (माधव) की सेवा टहल नहीं कर सकती। इस घोर अपराधके परिहारार्थ अपने प्राणोंका त्याग करना यही मेरा मनोदय है। तौ प्रिय सहेली लवंगिका! तू इस कार्यमें मेरी वैरिण मत हो।

यह सुन माधव बोला, क्या प्रीतिकी सीमा इससेभी बढके हो सकती है? इससे अधिक प्रीतिका रूप न किसीने देखा है न कोई देखेगा।

इस समय मालती फूट फूटकर रो रही थी और उसके नेत्र अश्रुधारासे व्याकुल हो रहे थे। वह लवंगिकाके कंधेपर अपनी ठोढी धर मानो नेत्रोंसे बडे २ मौक्तिक बरसाने लगी। लवंगिका जानतीही थी कि माधव और मकरंद वहां बैठे हैं। अब यही समय है ऐसा सोच उसने माधवको निकट आनेके लिये इंगित किया तदनुकूल वह आगे तो बढा पर चित्त व्यग्र होनेके कारण किंकर्तव्यविमूढ हो चुपचाप खडा हो रहा। इतनेमें मकरंदने उससे कहा कि तू लवंगिकाके स्थानमें जा खडा हो, पर तिसपरभी वहां जानेके लिये उसे साहस न होता था।

माधव सोचने लगा, रे! इस समय मैं कैसा किंकरणीयविमुग्ध हो पराधीन हो रहा हूं। मेरा शरीर और बुद्धि जडीभूत हो रही है।

यह सुन मकरंद बोला यह कोई आश्चर्यघटना नहीं है ऐसा तो होनाही चाहिये था। उत्कर्षकाल जब नगिचाता आता है तब ऐसीही दशा होती है। हां तो ले चल शीघ्रता कर, आगे बढ। योंही मकरंदकी अनुरोधकी बातें मान वह दबे पांव लवंगिकाके स्थानमें जा खडा हो रहा और वह बगलमें हो गई।

मालतीके नेत्र डबडबा आनेके कारण वह इस अदलबदलको न देख सकी। मेरे बगलमें जो खडी है वह लवंगिकाही है

ऐसा समझ उसने पुनः कहा सखी! अब विलंब मत कर। शीघ्रही मुझपर अनुकंपा कर।

माधवने बिना अपना परिचय दिये री अबोध! यह साहस छोड। मनःक्षोभ कम कर। तेरे विरहदुःखको सहन करनेके लिये मेरा चित्त असमर्थ है ऐसा उत्तर दिया।

उसके इस उत्तरका संबंध दोनों ओर एकसा घटित होता है। अर्थात् इसे लवंगिकाका उत्तर समझनेमें कुछ शंका न होती थी अतः मालती उक्त उत्तरको लवंगिकाकाही समझ मालतीकी प्रार्थना आजपर्यंत तूने कदापि अमान्य की नहीं पर अब मात्र करती है। अस्तु। अब मेरी यह अंतिम भेंट है; उसे ले ऐसा बोली।

यह सुन लवंगिका बन बोलनेवाले माधवने सहर्ष कहा कि अपने वियोगसे असह्य कष्ट देनेवाली तुझे मैं क्या कहूं? अब तुझे जो करना हो सो कर, पर एक बेर मुझे गाढ आलिंगन मात्र दे।

जो करना हो सो कर। यह आज्ञा दे मुझपर बडाही अनुग्रह किया ऐसा समझ मालती बोली धन्य है सखी तू धन्य है! तूने मुझपर बडीही कृपा की। यह देख मैं तुझे परिरंभण करती हूं।

ऐसा कह मालती लताकैसी उसे लिपटकर बोली, री सखी! पर नेत्र डबडबा आनेके कारण मुझे तेरा दर्शनलाभ नहीं होता अतः निरुपाय हो रही हूं।

पुनः प्रेमालिंगन दे माधवके शरीरको किंचित् कडा पा बोली सखी! दृढ कमलकैसे तेरे शरीरका स्पर्श आज मुझे कुछ निरालेही प्रकारका आनंद दे रहा। अब मेरी तनिकसी प्रार्थना और रह गई है उतनी मात्र तू सुन ले तो मेरा निबटेरा हो जाय। जिस (माधव)से मिलनेके लिये मैंने तुझसे कहा है उसे दंड प्रणाम कर बद्धांजलि हो मेरी ओरसे तू उसकी प्रार्थना कर कि, प्रफुल्लित कमलकी शोभाको लज्जित करनेवाले तेरे मुखचन्द्रको चिरकाललों देख मैं निगोडी दुर्भागाने अपने नेत्रोंको आनंद न दिया। व्यर्थ कल्पनाकलापोंको धारण कर चित्तकी व्यग्रता एवं उद्वेग-

ताको एकसी बढाती रही। मेरी विकट अवस्थाको बारबार देख नितांत दुःखानुभव करनेवाली सखियोंको अस्वस्थ करनेवाले शोक-संतापमें मैंने इतने दिन काटे। चंद्रिका मलयाचलकी सुगंधित वायु आदिके एकसे एक बढके घोर दुःखोंको मैंने अपना जी पोढाकर आजपर्यंत किसी न किसी प्रकार सह लिया; पर अब मैं निपट निराश हो गयी हूं। प्रियसखी लवंगिका! तूभी बारबार मेरा स्मरण करते रहियो। तुझे वारंवार मेरा स्मरण होनेके लिये उन प्राणनाथकी गुही हुई यह बकुलपुष्पमाला मैं तेरेको पहराती हूं। इसे तू मेरी स्थानापन्न मानकर निरंतर अपने हृदयमें धारण कर। ऐसा कह उसने मदनोद्यानमें माधवके निकटसे लवंगिकाद्वारा मंगायी हुई मालाको कि जिसे प्राणोंसे अधिक प्रिय मान उसने अद्यावधि अपने कंठमें धारण किया था, अपने गलेसे निकाल जिसे वह लवंगिकाही समझती थी, उस माधवके गलेमें पहिरा दिया।

माधवके गलेमें माला पहराते समय उसने नेत्र खोल ऊपर ज्योंही देखा त्योंही लवंगिकाको न देख स्वयं उसी माधवको कि जिसके लिये वह अद्यावधि विचारकलापमें मग्न हो प्राणविसर्जनके उद्योगमें थी देखा। एकाएकी उसे अपने निकट देख भौंचक हो वह पीछेको हटी और पसीने पसीने हो गयी। उसके सारे शरीरके रोमटे खडे हो गये और वह थरथर कांपने लगी। रसशास्त्र-प्रणेतृगणोंने उक्त दशाको सात्विक भावका उदय कह उसका सविशेष वर्णन किया है। प्रेमातिशयका लक्षण यही है। दृष्टिकी ओटसे हृदयवल्लभको निहारना और उसके परोक्षमें अनेक मनोरथ करना, पर उसका साक्षात्कार होतेही उक्त दशास्थित हो जाना, यह सब शुद्ध प्रेमातिशयका लक्षण है। अस्तु।

विवाहका प्रधान अंग माला पहराना सो तो अनजानेमें क्यों न हो पर हो गया। अतः प्रमुदित हो माधव बोला " धन्योऽस्मि धन्योऽस्मि! " इस पीनपयोधर नवबालाने आत्मालिंगनके

व्याजसे घनसार, चंदन, कमल, चंद्रकांतादि शीतल द्रव्योंको एकत्रित कर मुझपर वृष्टि कीसी जान पडती है !

माधवको पहिचान कर मालतीने धीमे स्वरसे कहा, लवंगिकाने मेरी भारी यह हँसी की।

यह सुन माधव बोला प्रिये! तुम अपनेही दुःखको तो दुःख जानती हो पर दूसरेके दुःखको जानतीही नहीं। देखो अब मैं तुमसे ठठोली करता हूं। क्या मैंने तुम्हारेलिये कामाग्निकी ज्वाला कुछ कम सही है? क्या केवल तुम्हारे स्नेहपर अवलंबित हो मनको किसी प्रकार समझा बुझा दुःखमें इतने दिन मैंने नहीं काटे? फिर मुझे हँसी करनेमें क्या आपत्ति है?

लवंगिका–सखी! योंही मुझपर कुपित मत हो। मैंने कुछ तुझसे ठठोली नहीं की है। जिनको करना थी उन्हींने की है। मुझपर विना कारण क्यों क्रुद्ध होती है?

मकरंद–भाग्यशालिनी मालती! जो हुआ सो योग्यही हुआ। तुम अत्यन्त कोमलचेतस् हो यही समझकर ढाढस बांध आशावलंबित हो इस मनुष्य (माधव) ने बडी कठिनतासे अपने दिन निकाले हैं। अब जिसमें कंकण बंधा हुआ है उस तुम्हारे हाथसे प्रेमप्रसाद प्राप्त हो चिरकालीन मनोरथ परिपूर्ण हो।

यह सुन लवंगिकाने मकरंदसे कहा विभवशालिन्! स्वेच्छानुसार विवाह करनेका साहस जिसे कभी स्वप्नमेंभी नहीं होता तो हाथमें कंकण बंधा हुआ है और तद्द्वारा पाणिग्रहण करना चाहिये यह विचार भला उसके जीमें क्यों आने लगा?

लवंगिकाने अपने भाषणमें यह व्यंजित किया कि यह पाणिग्रहणसंस्कार न कर सकेगी एतावता उसे माधवनेही करना चाहिये। उसके इस अभिप्रायको जान मालती नितांत घबराकर विह्वल हो गयी। क्यों कि उस सीधी सरल बालिकाकी दृष्टिमें माता पिताकी आज्ञा विना गुप्तभावसे विवाह करना घोर पाप था अतः इससे वह डरती थी। हा भगवन्! कुलकन्याके चरि-

त्रको दूषित करनेवाले कार्यका अनुष्ठान यह (लवंगिका) मुझे सूचित करती है अब क्या करूं ? किसकी शरण लूं ?

इतनेमें कामंदकी वहां आयी। वह इसी अवसरकी बाट जोह रही थी। क्यों कि वह यह जानतीही थी कि मालती अपने आप विवाह कदापि न करेगी और लवंगिकाके कहनेका वैसा कुछ प्रभाव उसके चित्तपर न होगा। इन सब बातोंको सोच विचार कर उसने वहां आ मालतीसे कही बेटी! डर मत। कामंदकीको देखतेही मालती दौडकर उसके गले लिपट गयी और बिलबिलाकर रोने लगी। उसके मनमें यही खुटका था कि ये सब लोग मिलजुलके बलात् मुझसे अनुचित कार्य्य करवाते हैं।

कामंदकी उसके चिबुकको थाम उसका चूमा ले बोली बेटी मेरी रानी! चुप हो रो मत। इतनी कातरता और घबराहट क्यों? साक्षात्कारद्वारा नेत्रोंको आनंद और वियोग होनेसे मन तदाकार हो शरीर शिथिल एवं ग्लानियुक्त होता है ऐसी अवस्था केवल तेरे लिये किसकी होती है और जिसके लिये तेरीभी वैसीही दशा होती है वह तेरा प्यारा युवा प्रणयी (माधव) तेरा पाणिग्रहण करनेके लिये उद्यत है, तो अब भय छोड और उसे अनुकूल हो. विधाताकी रसिकता तुम दोनोंकी जोडी जुटकर सफल होवे। उसी प्रकार मीनकेतनका मनोरथभी परिपूर्ण होवे।

लवंगिका–भगवती कामंदकी यह (मालती) भीरु नहीं है। पर कृष्णचतुर्दशीकी घनघोर अंधेरी रात्रिमें भयावह स्मशानमें संचार कर अपना मांस बेचनेके भयानक उद्योगमें तत्पर रहनेवाला तथा उस मुए पाखंडी (अघोरघंट) को अपने बाहुबलसे नष्ट करनेवाला यह माधव यथार्थमें महान् साहसी है, ऐसा जानकर यह कांपी इसके कंपित होनेका अपर कोई कारण नहीं है।

लवंगिकाका यह कहना बडा सारगर्भित एवं समयोचित था। इस समय मालती योंही बहाने कर रही है ऐसा जान उसने तेरे लिये यह अपने अमूल्य प्राणतक देनेको तैयार हुआ

था और तेरेही लिये प्राणोंकी उपेक्षा कर उस निगोडे अघोर-घंटके फंदेसे तुझे छोडाया थे सब बातें उसे चेता दीं। उसका अभिप्रेतार्थ यही था कि अपने प्राणरक्षक माधवके उपकार मान उसपर प्रत्युपकार करनेके लिये इस समय यह पीछे न हटे। मालतीको उस भयंकर अवसरका स्मरण दिलातेही वह बप्पारे मारी ! कह चीख मारने लगी।

कामंदकीने माधवसे कहा वत्स माधव! समस्त मांडलिक राजागण जिसके पद्धूलिको अपने माथेपर धारण करते हैं उस प्रधान अमात्य भूरिवसुकी इस इकलौती पुत्री मालतीको अनुरूप जोडी जोडनेकी इच्छासे विधाता मदन तथा मैंभी तुझे देती हूं। ऐसा कह कामंदकीने मालतीका दक्षिण हाथ माधवके हाथमें धर दिया। इस समय उसका कंठ रुंध आया और नेत्रभी डबडबा आये।

उसके कथनको सुन मकरंद बोला यह सब भगवतीके चरण-रजका प्रसाद है।

कामंदकीके नेत्रोंमें पानी देख माधवने हैं ऐसा क्यों? ऐसा पूछा। तब अपने भगुए वस्त्रके अंचलसे नेत्र पोंछकर उसने कहा, वत्स ! तुझसे कुछ कहना है।

माधव—आज्ञा।

कामंदकी—वत्स ! तेरेकैसे भले मनुष्यकी प्रीतिका फल उत्तमही होता है। यह मैं भली भांति जानती हूं और तेरे स्वभावकोभी मैं भली प्रकार जानती हूं। तौ तुझसे मेरी अंतिम प्रार्थना यही है कि इस मेरी दुलारी बालिकापर मेरे परोक्षमेंभी तेरा स्नेहभाव एकसा अटूट बना रहे ऐसा कह वह माधवके पावोंपर गिरने लगी।

उसे अपने चरणोंपर गिरते देख माधवने उसे ऊपरके ऊपरही थाम लिया और बोला कि वात्सल्यातिशयसे यह महान् व्यतिक्रम होता था। मारे पांव पड़ा अपनेको अपराधी और दोषी कर लेना मुझे सर्वथा अनुचित है।

विवाहमें वरके साथ उसका छोटा भाई जिसे उस समय सह-बाला कहते हैं, प्रायः रहा करता है । गुरुजनोंकी लज्जा वा मान-मर्य्यादावश जब दुलहा किसी विशेष बातका उत्तर नहीं दे सकता तब बहुधा सहबाला बोला करता है । इस समय मकरंद माधवके साथ सहबाला था । मालतीकी ओरसे कामंदकीने जो कहा उसका उत्तर माधव न दे सका एतावता मकरंद बोला मा! इन (मालती) ने उत्तम कुलमें जन्म ग्रहण किया है इनके प्रकृतिसुलभ रूपलावण्यको देख स्वजनोंको योंही अत्यंत आनंद होता है । इनका प्रेमतत्वभी अति विलक्षण है । सारांश कुलबालाके संपूर्ण गुणोंसे यह अलंकृत है । इनका एक एक गुण स्वतः प्रचंड वशीकरण मंत्रही है और उन सबने इन्होंकी शरण ली है । अतः आपकी आज्ञा विनायास चरितार्थ होगी । इससे अधिक मैं क्या कह सकता हूं ? भगवती सब जानतीही हैं ।

मालती—अपने आप पति वरनेका जनप्रवाद मुझपर आवेगा इसलिये डरी थी । कामंदकी उसकी माके तुल्यही थी । स्वयं उसीने कन्यादान किया । तब मालतीको नेक स्वस्थता हुई । कि अब जन मुझे दूषित न करेंगे । अनंतर कामंदकीने उन दोनोंसे कहा कि इस असार संसारमें अत्यंत प्रिय मित्र बंधु वा अपने प्राणतक स्त्रियोंको पति और पुरुषोंको धर्म्मपत्नीही हैं । इस अटूट सिद्धांतको तुम दोनों अपने २ चित्तमें अभेदरूपसे स्थित कर लो । और यों तो संसारका घटनाचक्र मनुष्यके भाग्य-चक्रके साथही साथ घूमा करता है ।

कामंदकीके उक्त उपदेशको सुन माधव और मालतीके मुँहसे एक शब्दतक न कढा, अतः मकरंद औरलवंगिकाने कहा कि भगवतीकी आज्ञा मानना हम लोगोंका परम कर्त्तव्य कार्य्य है ।

कामंदकीको दोनोंका विवाह गुप्तभावसे करना था सो तो निपट सुलझ गया । पर नंदनको धोका दे किये हुए विवाहको पक्का करना और मदयंतिकाको मकरंदके साथ ब्याहना अभी शेष

था । इधर दुलहिनके साथ आये हुए लोग विवाहवेलाको निपट निगचाते देख गडबड करने लगे । तब कामंदकीने मकरंदसे कहा कि वत्स ! अब तू विलंब मत कर । आभूषणोंके इस पेटोरे-को ले और ऐन मैन मालतीका भेष धारण कर मेरे साथ चल और पूर्वसंकेतानुकूल अपने आप अपना विवाह कर ले ऐसा कह उक्त आभूषणोंका पेटारा उसने उसे सौंप दिया ।

आपकी आज्ञानुकूल करता हूं ऐसा कह मकरंदने अटारीपर जा साक्षात् मालतीका भेष धारण किया । मकरंद यदि किसी बेदुआ ब्राह्मण वा महाजनोंके वही खाता लिखनेवाले सामान्य कर्म-चारीका लडका होता तौ उसे इस समय बडी कठिनता बोध होती । पर मकरंद सकलकलासंपन्न था । एक तो वह पहि-लेही सुरूप था और उसके समस्त अंग प्रत्यंग सुंदर और सुडौल थे, तिसपरभी उसका वयःक्रम सोलहके भीतरही होनेके कारण मसतक न भीजी थी, इन सब अनुकूल सामग्रियोंके कारण उसका स्त्रीवेष इतना सुंदर और सुथरा बना कि जब वह औचक नीचे उतरा तब उसे देख माधवभी नेक भ्रमितसा हो रहा ।

माधव गहरी चिंतामें मग्न था और मनोमन यही सोच विचार करता था कि इस कपट स्त्रीवेषका रहस्य किसीपर अंतलों प्रकटित न हो जो बांधनून बांधे गये हैं वे किस प्रकार सिद्ध होंगे । हम दोनों इस नगरमें निपट विदेशी तथा अनाथ हैं । होनहार वश कदाचित् इस गूढ रहस्यका भेद खुल उससे हमारा मन्सूबा विफल और व्यर्थ हुआ तो क्या किया जायगा ? नंदनका पक्ष बडा बलवान् है; तौ हम तो योंही धोखेमें पडा चाहते हैं । अतः उसने कामंदकीसे कहा कि मा ! तुम्हारी आज्ञापर मैं आक्षेप नहीं करता पर तुमने जो ये कार्य्यकलाप रचे हैं उनसे मेरे मित्र (मकरंद) का अनेक आपत्तिग्रसित होना दीखता है ।

कामंदकीने उसे दपटकर कहा कि इसकी चिंता तुझे क्यों ? कामंदकीकी दपट सुन माधवका क्या सामर्थ्य था कि वह

फिर कुछ बोलता । दपट सुन उसे तो यही कह आया, तुम्हारी लीला तुम्हीं जानो। बस इतना कह वह चुपका हो बैठा । इतनेमें मकरंदने आगे आ हँसते २ माधवसे कहा, मित्र! मेरी ओर तो निहार । देख इस समय मैं दूसरी मालतीही बना हूं। मालतीभी मकरंदको देख मुसकुरायी ।

माधवने मकरंदको गले लगा ठठोली कर कामंदकीसे कहा मातः! तुम्हारे उस नंदनने ऐसे स्त्रीरत्नको पानेके लिये पूर्वजन्ममें कठिन तप किया होगा ऐसा जान पडता है । नहीं तो ऐसी मनोहर स्त्री उसे क्यों मिलने लगी थी । देखो इसके रूप माधुर्य्य और कमनीयता आदि अपूर्व हैं ।

अनंतर कामंदकीने उन दोनोंसे कहा कि तुम लोग विवाहका आनंद अनुभव करनेके लिये इस पिछैतके उपद्वारसे बाहर निकल इस झाड़ीसे होते हुए मेरे मठके पिछवाडेवाले बगीचेमें चले जाव। अवलोकिताने विवाहोचित सब चीजवस्तु वहां लगा रखी हैं । उस उद्यानके पूगीफल वृक्षोंको अत्यंत उत्कंठित केरलीकपोल-सदृश पीले पीले पातवाली तांबूललता लिपट रही है। एक ओर सघन निकुंजकी स्निग्ध छायामें पक्व बदरीफलोंके भोजनसे तृप्त हो नानाविध पक्षिगण कर्णमधुर कलरव कर रहे हैं । वहांके प्रकृति देवीके मनोहर और आश्चर्य्य दृश्योंको देख तुम लोगोंको अति प्रसन्नता होगी अतः तुम लोग मकरंदके मदयंतिकाको ले आतेतक वहीं ठहरे रहो ।

माधव सहर्ष बोला एक विवाहकी संपत्ति तो प्राप्त हो चुकी बडे आनंदकी बात है कि वह संपत्ति मकरंदके विवाहस्वरूप व्याजके योगसे शीघ्रही बढनेवाली है ।

कलहंस—वाह वाह! तो अब एक दूसरा विवाह औरभी होगा।

मकरंद हां हां! क्यों ? क्या तुझे इसमें कुछ संशय है ? विवाह तो निश्चयपूर्वक होगा।

लवंगिकाने मालतीसे कहा क्यों भगवती कामंदकीकी आज्ञा सुन लीन ? देख उनकी आज्ञाका समादर कर । व्यर्थके ठनगनोंमें समय नष्ट मत कर । अपने उस हठको छोड़ दे। भला यह तो बता कि अब मुझसे अप्रसन्न तो नहीं है ? यह सुन मालती लज्जित हो नीचेको निहार मुसकुराने लगी ।

इतनेमें कामंदकीने मकरंद और लवंगिकासे कहा चलो अब हम लोगोंको शीघ्र चलना चाहिये ।

मालती जानती थी कि लवंगिका हम लोगोंके साथ चलेगी पर जब कामंदकीने उसे चलनेको कहा तब मालती बोली सखी ! तूभी जायगी ? री ! मुझे अकेली छोडकर मत जा ।

उत्तरमें लवंगिकाने हँसकर कहा, हां हां अब तो हमहीको यहांसे तुरंत जाना चाहिये । भला अब अकेली कैसी ? ऐसा कह लवंगिका, कामंदकी और मकरंद मंदिरसे निकल गये ।

इधर कामंदकी और लवंगिकाके वियोगसे किंचित् दुःखित हुई मालतीका आश्वासन कर माधव अपने जीमें विचारने लगा कि अब मैं इसके सुंदर कोमल बाहुरूप मृणालपर शोभा पानेवाले स्वेदार्द्र अंगुलीस्वरूप कोमल पंखुरीसंपन्न सुंदर आरक्त करकमलका अपनी सूंडद्वारा जैसे मत्त गजराज पुष्करिणीसे कंज ग्रहण करता है, ग्रहण करूंगा । ऐसा सोच विचार कर उसने मालतीका हाथ थाम धीरे २ बडी युक्ति प्रयुक्त कर लोगोंकी दृष्टि बचा कामंदकीने जहां जानेको कहा था वहां उसे ले गया। और वहां अवलोकिताने जो सामग्री एकत्रित कर रखी थी तद्द्वारा पाणिग्रहणका अवशिष्ट संस्कार शेष करनेके उद्योगमें प्रवृत्त हुआ ।

सातवां परिच्छेद।

जिस हथिनीपर बैठकर मालती आयी थी उसीपर छद्मवेषिणी मालतीको ले जा बैठा ला। लवंगिका साथहीमें थी अंबारीमें औरभी दास दासीगण थे पर मकरंदके कपट वेषमें रंचमात्रभी न्यूनाधिकता न थी कि जिसके योगसे किसीको शंका होती। एक तो भेष ठीक ऐनमैन मालतीकैसा दूसरे रात्रिका समय और दुलहिनका वेष होनेके कारण मकरंदने घूंघट काढ लिया था। और जब जब कोई काम होता उसके साधनार्थ लवंगिका उपस्थितही थी। इन्हीं सब अनुकूल बातोंके कारण किसीके जीमें मकरंदके विषयमें कुछ संशय नहीं हुआ। जिस समारोहके साथ दुलहिन ग्रामदेवीकी पूजा करनेको आयी थी उससे अधिक धूमधामके साथ वह घर लौटी। पाणिग्रहणके शुभ मुहूर्तको अनुमान घंटे आध घंटेका विलम्ब होगा कि तभी यह कपटवेषधारिणी दुलहिन भूरिवसुके मंडपमें पहुँच गयी।

इधर भूरिवसुके यहां भीतर महलमें सैकडों सुहागनें सुंदर शृंगार किये गा बजा रही हैं। मंडपमें आने जानेवाले मांडलिक राजे महाराजे तथा महाजन लोगोंका आदरसत्कार करनेमें सहस्रों आनंदमग्न कर्म्मचारी तत्पर हैं। उत्साहभरित हृदयसे नौकर चाकर लोग दौड दौडके कामकाज कर रहे हैं। ब्राह्मण लोग वेदध्वनिका आनंद अलगही बरसा रहे हैं। ऐसे अवसरपर कामंदकी और लवंगिका मकरंदको धीरेसे हथिनीपरसे उतार गौरीगणेशकी पूजाके निमित्त मंडपमें ले गयी। भूरिवसु और उसकी स्त्रीको यह सारा रहस्य विदितही था अतः उन्होंने कुछभी चीं चपड़ न किया। पास पड़ोसकी बहुत कुछ स्त्रियां आयी थीं उनपर कदाचित् यह रहस्य खुल जाता पर जो सामने आती उसे लवंगिका यह कह टरका देती कि मालतीका चित्त नेक अस्व-

स्थ है। इतनेपरभी जो बूढी आदी निकट आही जाती और कहने लगती बेटी बाई मालती! अब तेरा विवाह होगा तौ लवंगिकाही उन्हें उत्तर दे देती थी। कपटवेषधृक् मकरंद मुँहपर पल्ला खींच बडे आरामसे मदयंतिकाके ध्यानमें मग्न हो रहा था।

इधर बरातभी बडी सजावट और धूमधामके साथ अपने घरसे निकली। स्वयं राजासाहब इस कार्य्यके सिरधरू होनेके कारण वे दुलहके साथ २ चले जाते थे। नंदनको एक बडे अलंकृत हाथीपर अंबारीमें बैठाया था। राजासाहबभी उसीके बगलमें बैठे थे। बरातके आगे आगे नाना प्रकारके वादित्र बजते जाते थे और उनके पीछे २ वारस्त्री नृत्य करती चली जाती थी। ब्राह्मणगण मंगलमय मंत्र पढते चले जाते थे और दुलहाके हाथीके पीछे सुहागनें मंगल गीत गाते जाती थीं। उनके पीछे मांडलिक राजे महाराजे और अपर सरदार लोग एवं नगरके बडे २ सेठ महाजन लोग सजेधजे चले जाते थे। मदयंतिका सोलहों शृंगार एवं वारहों आभूषणोंको धारण कर सखी सहेलियोंको साथ ले एक दूसरी सजाई हुई हथिनीपर बैठ भाईपरसे राई नोन उतारती जाती थी। इस समारंभके साथ देखते २ वरात भूरिवसुके द्वारपर पहुँची। बरातके द्वारपर पहुँचतेही कुलवधुओंमें मानों आनंदका समुद्रसा उमड आया। कुलपरंपराविधानपूर्व्वक द्वाराचार हुआ। यथाविधान सत्कृत एवं समादृत हो बराती लोग यथोचित स्थानमें आके बैठे। तदुपरांत देश तथा कुलपरंपरागत प्रथानुसार शुभ लग्नमें कपटवेष मालतीका नंदनके साथ विवाह हुआ और आनंद बधावा बजने लगा कि जिसके महा तुमुल कोलाहलसे आकाश पाताल नादमय हो गया।

भूरिवसु इन सब कृत्रिम रचनाओंको जानता था पर तौभी उसने समस्त विधान यथा उचित रीतिसे किये। अनंतर बराती लोग भोजनादिकोंसे समादृत हो अपने २ स्थानको गये। मेरी

आज्ञाका भूरिवसुने दत्तचित्तसे पालन किया यह देख राजाको बडा संतोष और आनंद हुआ । आपने एतदर्थ भूरिवसुको अनेकानेक साधुवाद दिये और अपने राजभवनको पधारे ।

पुराकालमें पुत्री उपवर होनेके कारण विवाह और गर्भाधानसंस्कार एकही दिन हुआ करते थे । निमंत्रित मण्डली जब धीरे २ अपने २ स्थानको जाने लगी तब घरके लोग आगेकी तैयारीके उद्योगमें लगे । इधर वधूवरके लिये एक कमरा उत्तमतया सजाके उसमें सब सामग्री लगा रखी थी । मालतीका अधरामृत पान करनेके लिये उत्कंठित हुए हतभाग्य दमादको सूचना दी गयी तब वेहां नहीं हां नहीं करते और मनमोदक खाते रंगमहलमें जा पहुँचे । उनके मित्रलोग उन्हें केलिमंदिरमें पहुँचा, अपने २ आवासस्थानको चले गये । अनंतर कामंदकीने वहां आ नंदनको आनंद बधाई दे, नवपरिणीत स्त्रीका भली भांति निर्वाह करनेका उपदेश दे वहभी वहांसे चली गयी । उस दिन रात्रि अधिक हो गयी थी पर तौभी कामंदकी भूरिवसुको जता अपने मठको चली गयी ।

कुछ क्षणके उपरांत सब स्त्रियोंने देश तथा कुलाचारानुमोदित प्रथाके अनुसार कपटवेषधृक् मालतीको विलासभवनके द्वारपर ला छोड दिया । लवंगिका उसे भीतर ले गयी । इस समय मदयंतिकाभी साथहीमें थी । वह इस समय मालतीकी बहुत कुछ ठठोली किया चाहती थी; पर लवंगिकाने उससे कहा कि आज वह बहुत दुःखी है अभी तू उसकी जो कुछ छेड छाड करेगी तो वह बहुत खीझेगी; अतः आज उससे कुछभी मत बोल । लवंगिकाकी बात मान वह उससे कुछभी न बोली । यदि कोई विशेष बात हो तो मुझे शीघ्र सूचना दीजो ऐसा कह अपनी सखी बुद्धिरक्षिताको वहीं छोड वह भाईकी अनुमति ले वधूप्रवेशकी तैयारी करनेके लिये अपने घरको चली गयी ।

इधर लवंगिकाने लज्जावश 'नहीं नहीं' कहनेवाली मालतीको बलात् नंदनके पर्य्यंकपर बिठला नंदनसे कहा 'हमारी यह प्रियसखी नेक गुस्सैल है। बालाओंको प्रसन्न कर आधीन करनेकी कलामें आप स्वयं दक्ष हैं' मैं आपसे अधिक क्या कह सकती हूं। केवल प्रवचनपटुतासेही आप महाराजाकैसोंको एक क्षणमें मोहित कर लेते हैं। मेरी प्रार्थनाका अभिप्राय यही है कि आप यही कार्य कीजिये कि जिससे इसे सुखलाभ हो और आपका आनंद वृद्धिलाभ करे ऐसा कह उसने केलिगृहसे बाहिर जा द्वारके पल्ले लगा लिये और आगेकी आश्चर्यघटना देखनेके लिये वहीं एक गुप्तस्थानमें जा दबकी।

उक्त संपूर्ण कार्य्य साधन होतेतक रात्रि डेढ प्रहर ढल चुकी मालती अपने पतिसे बिना बोले चालेही चुपकी उस पर्य्यंकपर सो रही। बावला नंदन उसको नववधू मालती समझ उसे प्रेमपूरित कथनोपकथन द्वारा प्रसन्न करनेके हेतु प्रयत्न करने लगा। उसके ऐसे ठठोलोंका क्या सामर्थ्य कि वे राजनीतिविशारदोंके गूढ रहस्यको समझ सकें। मैं इसे अभी प्रसन्न किये लेता हूं। इस अभिमानसे उसने अपने सब कौशल कर छोडे पर मालतीके मुंहसे एक शब्दतक न कढा। मनानेसे यह अनुकूल नहीं होती तौ अब इसे बलपूर्व्वक अनुकूल कर अपना अभीष्ट साधन करना चाहिये ऐसा विचार नंदन मालती (मकरंद) पर बलप्रयोग करनेके उद्योगमें लगा।

प्रथम एक दो बेर झिझकार दिया तौभी वह मानताही नहीं ऐसा देख मालती (मकरंद) ने सबल उसे एक ऐसी लात दी कि वह धमसे पलँगके नीचे जा गिरा। कोई युवापति होता तो इस कोमल लत्ताप्रहारका बदला लिये बिना कभी प्रशांत न होता, पर यह तो विचारे पचासी डांके हुए थे। पहिली लातके आघातको अभीलों भूले न थे। तौ अब और अधिक [illegible]

करनेसे यदि दूसरी लात औरभी बैठेगी तो क्या किया जायगा ? ऐसा विचार आपने उससे मुँह मोड लिया ।

जिस मनुष्यसे कुछ पुरुषार्थ नहीं हो सकता वह मुँहसे बहुत बकता है । नवपरिणीत स्त्रीको प्रसन्न करनेकी ज्ञानसंयुक्त युक्तिका प्रयोग करना छोड नंदनने कुवाक्यशल्योंका प्रयोग करना प्रारंभ किया। आपने कहा मैं तो यह पूर्णतया जानता था कि तू (मालती) बाल्यावस्थासेही दुष्टा है ! व्यभिचारदोष तेरे अंगअंगमें भरा है और यह अमेट सिद्धांत है कि कुलटा पतिको नहीं चाहती । मैं इस कंटकमय मार्गमें कदापि पदारोपण न करता पर राजासाहबके अनुरोधसे मुझे जान बूझकर इस उपद्रव और महाउपद्रवमें कूदना पडा। अस्तु, कुछ चिंताकी बात नहीं है । इस क्षणसे मैं तुझे अपनी स्त्री कहूंगा वा तेरे शरीरको स्पर्श करूंगा तो मुझे सौगंद है । दुष्टा ! जा मेरी दृष्टिकी ओर हो ऐसा कह दमाद साहब हाथ पांव पटकते महलसे बाहर निकले ।

मालती (मकरंद) को पहिलेहीसे हँसी आती थी पर जब वह बकबक करने लगा तब तो वह पेटमें न समा सकती थी । तौभी “ जस काछिय तस नाचिय नाचा ” इस कार्यपटु लोगोंके वाक्यका स्मरण कर वह मुँहपरसे शालकी फर्द ओढ चुपकी पडी रही । जब नंदन हाथ पांव पटक खिसियाके बाहर चला गया तब वह खूब खिलखिलाकर हँसी ।

नंदन ज्योंही महलसे बाहर निकला त्योंही लवंगिका आदिकोंने उसे आ घेरा और पूछने लगीं, जीजासाहब कहिये कहिये क्या हुआ ? पर किसीको कुछभी उत्तर न दे चुपके वह द्रुतपद अपने घर चला गया । बिचारेको घरभी मुँह दिखानेकी उजागरी न थी क्यों कि केलिमंदिरकी घटनाका रहस्य प्रकटित करनेसे कदाचित् लोग मुझपर तृतीय प्रकृतिका दोषारोपण करेंगे फलतवता किसीको कुछ न कहा वह दुःखभावसे अपने शयनागारमें जा पड रहा ।

इधर नंदनके बाहर जातेही लवंगिका और बुद्धिरक्षिताने महलमें आ भीतरसे किंवाड लगा लिये और हतभाग्य दमादकी अवस्थापर पेटभर हँस आगेके कार्यसाधनकी युक्तिका सोच विचार करने लगी। पाठकोंको स्मरण होगा कि जाती बेर मदयंतिका अपनी सखी बुद्धिरक्षितासे कह गयी थी कि कोई विशेष बात हो तो निःसंदेह मुझे सूचित करना। इस बातका स्मरण आतेही वे दोनों उसे वहां लानेके लिये सहमत हुई और बुद्धिरक्षिता मदयंतिकाको वहां लानेके लिये तुर्त नंदनके घरपर गयी।

इधर छद्मवेषिणी मालती बिछौनेपर पडी थी और लवंगिका उसके बगलमें बैठी थी। मकरंदको कामंदकीकी बांधनूनकी सफलताके विषयमें गहरी चिंता थी। उसने लवंगिकासे कहा भगवती कामंदकीने इस कार्य्यके अंतिमफलका सूत्र बुद्धिरक्षिताके आधीन किया है। क्या तू कह सकती है कि तुझे इस कार्यसाधनमें यशलाभ होगा?

लवंगिका–हां! हां! इसमें तो शंका करनाही व्यर्थ है। महाभाग क्या बुद्धिरक्षिताको आप कोई सामान्य स्त्री समझते हैं? नहीं २ ऐसा न समझिये। उसकी बुद्धि और मेधा असामान्य हैं। भगवती कामंदकीकी पट्ट (प्रधान) शिष्याओंमेंसेही वह एक है। इतनेमें पांयजेबका शब्द सुन वह सहर्ष बोली देख लीजिये क्या इससे बढके औरभी अधिक प्रमाण चाहिये है। इस पायलकी ध्वनि सुन अनुमान होता है कि जैसा हम लोगोंने सोचा था उसी प्रकार बुद्धिरक्षिता मदयंतिकाको लिवा ला रही है। ठीक ठीक यह उसीके पायलोंकी ध्वनि है। हां अच्छा चेत हो आया। तो अब आप ऐसे न बैठिये। इस चादरको मुँहपरसे ले निद्राके व्याजसे पड रहिये।

मकरंद चादर ओढ निःशब्द हो घुर्राटे भरने लगा। इतनेमें बुद्धिरक्षिता मदयंतिकाको ले वहां आ पहुँची। बुद्धिरक्षिता

तेरे भाईने मालतीको क्रुद्ध किया है उसका समाधान कर उन दोनोंको चलके समझा बुझा दे ऐसा कह मदयंतिकाको यहां बोला लायी थी। वह इसी आशासे लपकी चली आती थी कि मुझे मालतीकी ठठोली करनेके लिये यह अवसर अच्छा हाथ लगा है। बुद्धिरक्षितासे उसने पुनः पूछा क्या सचमुच मेरे भय्या मालतीसे अप्रसन्न हुए हैं ?

बुद्धिरक्षिता–क्या मैं तुझसे कुछ झूंठ कहती हूं ?

मदयंतिका–जो ऐसा हुआ हो तो बहुतही बुरा हुआ है। मालती बडी हठीली है। चलो यहांसे चलके अब उसकी खूब खबर लें।

योंही बातचीत करते कराते वे दोनों महलके द्वारपर आ पहुँचीं।

बुद्धिरक्षिता–देख यह उसका केलिमंदिर है। वह जो पर्यंकपर पडी है वही मालती है। अब तुझे जो कहना हो सो कहकर उसकी सांत्वना कर एक बेरका निबटेरा कर।

मदयंतिका ज्योंही पर्यंकके निकट गयी और उसने देखा तो मालतीको घोर निद्रामें घुरकते पाया। तब उसने मुडके लवंगिकासे कहा तेरी सखी गहरी नीन्दमें सो रहीसी जान पडती है। लवंगिकाको मकरंदके स्वांगकी पोषकता करनीही थी अतः उसने उससे कहा नेक इधर आ। अभी उसको मत जगा। उसे नितांत दुःख होनेके कारण अभीलों वह एकसी तलफते पडी थी। अभी जाके कहीं उसका चित्त किंचित् स्वस्थ हुआ है और नेक उसके नेत्र झपके हैं। तौ अभी उसके पर्यंकपर धीरेसे बैठ मात्र जा।

मदयंतिका कुछ गडबड न कर पलंगपर बैठ गयी और बोली री लवंगिका! यह (मालती) बडे टेढे स्वभावकी है। न जाने यह ऐसा रोष क्यों किया करती है।

लवंगिका–(भ्रुकुटी चढाके) बाई! वह बिचारी क्रोध न करे

तो क्या नवपाणिगृहीताको विश्वास दिला उसे प्रसन्न करनेके उपाय जाननेवाले स्त्रीका मन हरण करनेवाले बड़े रसिक तथा मधुर भाषण करनेवाले, विशेष स्नेहभाव रखनेवाले सीधे सरल एवं चतुर तुम्हारे भाईसे समागम कर मेरी सखी दुःखित न होगी तो और क्या होगी ?

लवंगिकाने उक्त भाषणद्वारा मदयंतिकाकी खूबही हँसी की उसने नंदनको अच्छे २ विशेषण दे उसकी सराहना की, पर वह सब व्याजनिंदा थी। उसके कहनेका यही अभिप्राय था कि तेरा भाई प्रचण्ड मूर्ख है उसके हृद्गत आशयको समझ मदयंतिकाने अपनी सखी बुद्धिरक्षितासे कहा सखी! देख तो इसे क्या हो गया और यह क्या बकती है। हमभी ठठोली कर बदला लेंगी यह ऐसा न समझे कि हम निपट बोलनाही नहीं जानती।

बुद्धिरक्षिता–तू उसकी हँसी क्या करेगी। हँसी न करनेहीमें ठीक है।

मदयंतिका–वह क्यों ?

बुद्धिरक्षिता–लवंगिकाका कहना कुछ झूंठ नहीं है। पति स्त्रीके पांव पडे और वह लज्जावश यदि उसका बहुमान न करे तो उसके लिये वह दूषित नहीं हो सकती। सखी! विचारनेकी बात है कि नववधूको विना राजी किये उसकी इच्छाके विरुद्ध पतिका साहस कार्य्य करना और उससे वह भयभीत हो कुछ प्रमाद करे तो क्रुद्ध हो उसे गालिप्रदान करना तेरे भाईको उचित न था। कामसूत्रकारकाभी यही वचन है कि वैसे प्रसंगपर यदि स्त्रीसे कोई अपराध होही जाय तोभी पति उसे तदर्थ दोष न दे।

बुद्धिरक्षिताने तो बडे द्राविडी प्राणायामके साथ बात कही पर लवंगिकाने नेत्र डबडबा क्रुद्धसी हो कहा, बाई री! घर घर पुरुष हैं और वे भले मानुसकी लडकीके साथ विवाहभी करते हैं पर ऐसी आश्चर्यघटना मैंने कहीं नहीं देखी। लज्जाशील, निरपराधिनी कोमल मनके लडकीको अपने आधीन जान उसपर यद्वा-

तद्वा असंबद्ध कुवाक्योंका कोई प्रहार नहीं करता। पतिके मुँहसे ऐसे शब्दोंका कढना कोई सामान्य बात नहीं है। ये वाक्य बडेही हानिकारक हैं क्यों कि ये उसके स्त्रीके मनको शल्यकैसे गडा करते हैं और उनका आघात आमरण उसके हृदयमें बना रहता है एतावता पतिगृहमें रहनेके लिये वह उदास एवं विरक्त होती जाती है। ऐसेही प्रसंगोंको सोच कातर हो मातापिता ईश्वरकी प्रार्थना किया करते हैं कि वह उन्हें कन्या कदापि न देवे। चिर-काललों अनुभव ले बुद्धिमानोंने बहुतही ठीक कहा है " दुहिता भली न एक "।

यह सुन मदयंतिकाने लवंगिकासे तो कुछभी न कहा पर बुद्धिरक्षितासे कहा सखी लवंगिकाके कहनेसे अनुमान होता है कि उसका जी बहुतही दुख गया है और यहभी जान पडता है कि मेरे भाईने कोई ऐसाही मर्मवाक्य कहा है।

इसके उत्तरमें क्या कहना चाहिये सो बुद्धिरक्षिता भली भांति जानतीही थी। उसने कहा शायद् तेराही कहना सही हो। मैंने प्रत्यक्षमें तो कुछ नहीं सुना। तेरे भैयाने उस (मालती) को बालव्यभिचारिणी कहा और तुझसे अब मुझे कोई प्रयोजन नहीं है सुनते हैं ऐसाभी कहा।

इस सब कहा सुनीको उस सीधे सरल बालिका मदयंतिकाने सचसच जाना उसके कानोंमें उंगलियां दे कहा बाई री! बस कर। ऐसे बोल मुझसे सुनेतक नहीं जाते। इससे अधिक अमर्यादा और मूर्खता और क्या हो सकती है। लवंगिका तू सचसच जान इन बातोंको सुन मुझे लोगोंमें मुँह देखानेकी लाज लगती है पर मैंही हूं कि जो अपने मनको पोढा करके बातचीत करती हूं।

उत्तरमें लवंगिकाने जब कहा, बाई री! हम लोग तो तेरेही हैं। तेरे जीमें आवे सो बोल। तब मदयंतिकाने कहा बहिन! अब उन बातोंको बिसारही दे। मेरे भाईके दुष्ट स्वभावकी चर्चाही करना व्यर्थ और विफल है क्योंकि वह कैसाही दुष्ट क्यों न हो

पर अब उसका तिरस्कार और अपमान करनेसे कोई लाभ नहीं है। अब तो उसीके इच्छानुकूल व्यवहार करनेके लिये इस (मालती) को मंत्रणा देनी चाहिये। वह कैसाभी हो पर इसका कल्याण उसीकी सेवामें है। इसके सिवाय उस (नंदन) ने इसे जो कुवाक्य कहे उसका कारण तुम लोग जानती नहीं हो।

लवंगिका–भला तेरे बताये विना हम लोग उसे कैसे जान सकती हैं? यदि वैसाही कोई योग्य कारण हो तो उसपर हम लोगोंका कोई आक्षेपही नहीं है।

मदयंतिका–कारण तुम लोगोंसे कुछ छिपा नहीं है। नगरके नरनारी सभी आपसमें बोलते बतलाते हैं कि उस महाभाग माधवपर इस (मालती) का चित्त डुला था। यह सब उसीका फल है। इसके सिवाय दूसरा तीसरा अपर कोई कारण नहीं है। जो हो पर पतिकी श्रद्धा भक्तिका इसके हृदयमें संचार होनेके लिये तुम लोगोंको यत्नवती होना चाहिये। यदि पतिका तिरस्कार इसके मनसे न हटेगा तो तुम यह पक्का समझो कि इसे बडा कलंक लगेगा योंही मंद मधुर मुसकुराहटके साथ परपुरुषोंकी ओर निहारनेका अभ्यास हो जानेके कारण अपत्रप लडकियां उक्त दुर्गुणके कारण घरके लोगोंको सदाके लिये दुःखदायिनी होती हैं। पर बहिन! यह बात तू अपनेही मनमें रख। मैं ऐसा २ कहती थी ऐसा कहीं इस (मालती) से न कह देना नहीं तो वह हकनाहक मेरे लत्ते लेगी।

यह सुन उत्तरमें लवंगिकाने दपटके साथ कहा, री अनाडिन! तेरा यह कहना सब मिथ्या जनप्रवाद मात्र है, अब तू यहांसे चलीही जा। मेरा जी अब तुझसे बोलनेतकको नहीं चाहता।

मदयंतिका–(उसके हाथोंको थाम) सखी! ऐसा कोप मत कर। मेरा कहना तुझे बुरा लगा हो तो क्षमा कर। पर फिरभी मैं दृढ-ताके साथ यही कहूंगी कि मालतीको सारा जगत् माधवमय ल-खाता है। नहीं तो कृशतनु माधवकी गुही हुई बकुलपुष्पमालाको

धारण कर केवल उसीको देख देखकर जो जी रही है। उस मालती और माधवके गात्रको सूर्यमंडलांतर्गत कांतिहीन सुधाकरकी नांई देख ऐसा कौन है कि जिसे उक्त शंका न होगी ? इसके सिवाय स्वयं तूभी तो देख चुकी है कि उस दिन कुसुमाकर उद्यानके निकटवर्त्ती मार्गपर उन दोनोंकी भेंट हुई तब उस (मालती) ने आयत कमलनेत्रोंसे विलासपूर्वक सविस्मय उसका अवलोकन किया । क्या उस क्षणके मदननाट्याचार्यतासारभरित इन दोनोंके कटाक्ष तूने नहीं देखे ? साथही जब इसने सुना कि यह मेरे भाईको व्याही जायगी तब इसकी और माधवकी अवस्था कैसी हो गयी थी, दोनोंके मुखकमल एकाएक मुरझा गये और मुखपर उदासी छा गयी। मनमें कातरताका संचार हो गया। क्या तू कह सकती है कि तूने यह सब घटनायें नहीं देखीं ? तो फिर मुझपर व्यर्थ आंखें क्यों लाल करती है ? हां भला हुआ। ले मुझे एक बातका स्मरण औरभी हो आया ।

लवंगिकाने व्यंग स्वरसे कहा अब व्यर्थ विलंब क्यों करती है । जो दूसरी बात तुझे स्मरण हो आयी है उसे तो एक बेर पूरी पूरी सुना दे ।

सविस्मय हो मदयंतिकाने कहा मुझेही स्मरण हो आयी ऐसा क्यों कहती है ? उसे तो तूनेभी सुनाही होगा । जिस महानुभाव उदारचेतसने मुझे जीवन प्रदान किया वह गतसंज्ञ हो गया था। कुछ क्षणके उपरांत उसकी मूर्च्छा टूट उसके चैतन्य होनेका शुभ समाचार मुझे मालतीद्वारा विदित हुआ। तब कामंदकी माने उस बातको पकड बडी चतुरतासे सूचना की। क्या तू नहीं जानती कि उस सूचनाको सुन माधवने उस (मालती) को आनंद समाचार सुनानेके लिये पारितोषिकरूपमें अपने आप अपना हृदयप्रदेश और प्राण समर्पित किये । और क्यों ? क्या स्वयं तूने उस समय प्रियसखीको यह लाभ इष्टही था ऐसा न कहा था ?

कथनोपकथनके प्रवाहमें उसने मकरंदकी बात छेडी इससे लवंगिकाको बहुत संतोष हुआ। लवंगिका भली भांति जानती थी कि संप्रति दोनोंका पूर्वपक्ष उत्तरपक्ष व्यर्थ विवाद-मात्र था, पर जान बूझकर उसने उसे हताश न किया था क्योंकि उसने सोच रखा था कि मेरी ओरसे मकरंदकी बात निकलनेकी अपेक्षा स्वयं उसीकी ओरसे उसका छिडना हितकर होगा, यही सोचकर उसने उक्त शुष्क संभाषणमें उदासीनता प्रदर्शित न की थी। मकरंदने व्याघ्रके आक्रमणसे अपने प्राणपणद्वारा उसकी रक्षा की इसी बातको लक्षित कर वह बोलती थी। लवंगिका मकरंदको भूल न गयी थी पर वह जान बूझकर मानो उसे जा-नतीही नहीं ऐसा दरशाकर बोली तूने अभी महानुभाव कहा सो वह कौन है? मुझे तो उसका नेकभी चेत नहीं है।

उत्तरमें साश्चर्य मदयंतिकाने कहा सखी! जरा मन स्थिर कर-के चेत कर। उस दिन जब मैं उस घोर भयानक मृत्युरूप व्या-घ्रके पंजेमें फँस गयी थी और मुझे अनाथिनीका कोई शरण न था तब वैसे कठिन प्रसंगपर औचक वहां आ जिस दीर्घबाहुने निष्कारण मुझपर स्नेह प्रदर्शित कर अपने दुष्प्राप्य एवं मनोहर शरीरकी उपेक्षा कर प्राणपणसे वीरताके साथ मेरी रक्षा की उसकी ललितोदात्त महिमाको तू नहीं जानती कहती है यह तो बडी आश्चर्यवार्त्ता है। क्या जिसने व्याघ्रके पंजोंसे क्षतमय हो बृहत् साहससे उसे ढेर कर दिया उस उद्दंड अतुल बलशालीका तुझे स्मरण नहीं होता? न जाने तू क्या कहती है?

स्मरण हो आयासा बोधित होनेवाले स्वरसे प्रत्युत्तरमें लवंगि-काने कहा, हां हां! क्या वह मकरंद? मकरंदका नाम सुन आनंदभावसे मदयंतिकाने पूछा प्रिय सखी! फिरसे तो कह अभी तूने क्या कहा? सविनोद लवंगिका बोली और क्या कहा? " क्या वह मकरंद " ऐसा कहा।

मकरंदका नाम पुनः उसके कर्णगह्वरमें प्रविष्ट हुआ उससे

उसको परम संतोष हुआ । वह मकरंदपर अनुरक्त होनेके कारण उसका शरीर रोमांचित हो गया और साथही वह व्याकुल हो गयी । उसकी इस अवस्थाको देख लवंगिकाके आनंदका समुद्र उमड आया! क्योंकि वह जिस सुअवसरके लागपर थी वही उसके हाथ लगा । माधवपर मालतीका अनुराग है इसलिये उसे वह दोष देती थी और बडी गुरुता और पंडिताई बघारकर लवंगिका परामर्ष देती थी कि नंदनने अनुचित एवं कदर्य वाक्यभी जो कुछ कहा हो तो उसका बुरा न मान दोनोंका सम्मेल करनेके लिये यत्न करना तेरा परम कर्त्तव्य है, उसका बदला लेनेके लिये लवंगिकाको यह मौका अच्छा हाथ लगा । वह उसे गले लगाकर बोली, सखी ! अभीतक तूने जो जो कहा वह सब सच है। मैं मुक्त कंठसे स्वीकार करती हूं कि मालती अपने हृदयासनपर माधवको बिठला चुकी है; पर इस समय मैं किंवक्तव्यविमूढ हो रही हूं । योंही बातें करते करते उस कुलकन्यका (मदयंतिका) का गात्र रोमांचित हो जानेके कारण देखनेमें तो यह कदंबगोलकेसी दीख पडती थी पर उसका चित्त बहुत घबरा रहा था । तो इन सब चिह्नोंको देख यह कैसे मान लिया जा सकता है कि यह निष्कलंक है । यही सोचकर उसने ऊपर कहा है कि मैं किंवक्तव्यविमूढ हो रही हूं ।

यह सुन मदयंतिका बहुत लज्जित हुई । अभीतक जो दोष वह मालतीपर आरोपित करती थी, वही अर्थात् मकरंदपर आसक्त होना उसपर प्रमाणित हो गया । अतः मनमें बहुत सकुचकर उसने कहा सखी लवंगिका ! तुम्हें करनाही है तो भला इस प्रकार मेरी ठठोली क्यों करती हो ? मैं तुमसे अपने जीका सच्चा २ हाल कहती हूं कि ज्योंही मुझे साहसपूर्वक मृत्युके डाढसे छोडानेवाले उस परोपकारी (मकरंद) के अकूत साहसका स्मरण हो आता है और ज्योंही मुझे उसका नाम कर्णगत हो जाता है त्योंही मेरा अंतरात्मा तल्लीन हो जाता है । अब तुझे उसका

विशेष परिचय देनेकी कोई विशेष आवश्यकता नहीं है क्योंकि उसकी तत्कालीन भयावह एवं लोमहर्षण अवस्थाको तू स्वयं देख चुकी है कि जब वह प्रचंड आघातोंकी असह्य वेदनासे मूर्च्छित हो गया था और उसके सारे शरीरसे स्वेद बह रहा था। गतसंज्ञ होनेके कारण उसके नेत्र झपक गये थे। धरतीके सहारे खडी हुई तरवारका अवलंबन कर खडा हुआ था। सखी! भला तूही निःपक्षताप बुद्धिसे बतला कि क्या यही आर्यकुलबालाओंका धर्म है कि जिसने उनकी प्राणपणसे रक्षा की उसे वे विस्मृत कर देवें?

उक्त वाक्य मदयंतिकाके मुँहसे पूरे कढभी न पाये थे कि उसका शरीर पसीने पसीने हो गया और वह थरथर कांपने लगी साथही महाधन्वी कामका हृदयमें संचार हो जानेके कारण उसके सहचर जितने विकार हैं सब प्रादुर्भूत हो गये। उसका उक्त अवस्थापन्न होनाही लवंगिकाको अभीष्ट था। अपना कार्यभाग साधन करनेके लिये यही उत्तम अवसर है ऐसा जान बुद्धिरक्षिताने कहा सखी! इस समय तेरी अवस्थाको देख यही बोध होता है कि मानो तूने उस अतुलपराक्रमी (मकरंद) के ऋणसे मुक्त होनेके लिये पूर्णरूपसे निश्चय कर लिया है।

यह सुन मदयंतिकाने लज्जासे सिर नीचा कर कहा चल चल यहांसे निकल! व्यर्थ अप्रासंगिक बातें मत कर। तुझे अपनी चिरसखी जान तुझपर विश्वास कर विना दुरावके मैंने तेरे निकट अपने जीकी बात कह दी इसलिये तू मुझे उलटी सुलटी बातें मत सुना।

इसके उत्तरमें लवंगिकाने कहा, सखी मदयंतिका! हम लोगभी तेरे आंतरिक अभिप्रायको जैसा समझना चाहिये वैसेही समझी हैं। तूभी व्यर्थ कुपित मत हो और तेरा स्नेह मकरंदपर योंही है ऐसी बात बनानेके लिये व्यर्थ परिश्रम मत कर। हमसे दुराव और

पर्दा क्यों ? आओ हम लोग बिलकुल जी खोलके बातेंचीतें करें। दुराव करना जैसाही हानिदायक है वैसाही व्यर्थ और विफल है।

लवंगिकाके उक्त भाषणकी बुद्धिरक्षितानेभी पोषकता की कि जिसे सुन मदयंतिकाको यही कह आया कि सखी! तुम लोगोंने मुझे बिलकुल बांध लिया है। इसपर लवंगिकाने कहा यह बात सच है न ? तो फिर अब तुझे अपनी अवस्था और कालयापनका हाल कहनेमें कोई बाधा न होगी।

उत्तरमें मदयंतिकाने कहा सखी! तुम लोगोंके सामने मैं करही क्या सकती हूं ? मैं अपना पूरा पूरा वृत्तान्त सुनाती हूं, एकाग्रचित्त हो उसे सुनो। इस बुद्धिरक्षिताद्वारा उस महावीर (मकरंद) के आश्चर्यकार्यकलाप तथा असाधारण रूपलावण्यकी सराहना बार बार सुन मैं उसके गुणोंपर मोहित हो उसे अपने हृदयराजासनपर सुशोभित कर चुकी थी और साथही उसके साक्षात्कारके लिये मेरा मन नितांत उत्कंठित हो गया था। कुछ कालके उपरांत दैवकी अनुकूलतासे उस जीवनाधारका मुझे दर्शनलाभभी हुआ कि जिसके साथही अनिवार्य्य मदनव्यथासे मेरा चित्त अत्यन्त व्याकुल हो गया और जीवन शेष होतासा प्रतीत होने लगा। मदनज्वरके विषम संचारने मेरी सखी सहेलियोंकोभी निधनदुःखकी आशंकासे कातर कर हताश कर दिया पर संसारमें आशाभी एक आश्चर्य वस्तु है। आजन्मके दुखियाका सुखी होना, रंकका राव होना आदि सब कार्य आशाचक्रपरही निर्भर है। इस बुद्धिरक्षिताद्वारा ऐसी कुछ बातें कर्णगत हुई कि जिसके योगसे मेरे हृदयमें आशा अंकुरित हुई और उसीने अबलों मुझे किसी प्रकार जीवित रखा है।

जबसे मेरा मन उस (मकरंद) के प्रकृतिमधुर मनोहर रूपपर मोहित हुआ है तबसे मुझे जो जो मानसिक यंत्रणाएँ सहन करना पडती हैं वे मेरी कथनशक्तिसे बहिः हैं। उसके समागमका ध्यान करते २ मुझे स्वप्नमें आभास होने लगता है

कि मानो मैं उसकी ओर एक टकी लगाकर निहार रही हूं और उसी प्रकार वहभी मेरी ओर निहार रहा है। मुझे ऐसा जान पडता है कि वह आके मेरे कानमें कुछ कह जाता है। मुझे संबोधन कर पुकारता है। मेरे आंचरको स्पर्श कर वह मुझे बहुत त्रसित करतासा जान पडता है। कभी कभी ऐसा जान पडता है कि वह मेरी हँसी कर रहा है। मनमानी बात करनेके लिये मेरी प्रार्थना कर रहा है। योंही निद्रादेवीके गोदमें अनेकानेक सुखोंका अनुभव ले ज्योंही मैं विनिद्रित होती हूं यह सारा संसार मुझे ऊजड अरण्यसा जान पडता है।

विनोद्व्यंजक स्वरसे उत्तरमें लवंगिकाने कहा सखी! तेरी बातोंमें ऐसी उलझन रहती है कि वे शीघ्र समझमें नहीं आतीं। अतः तुझे जो कहना है स्पष्ट २ कह। भला ये सब बातें रहने दे मैं एक बात पूछती हूं उसका मात्र साफ २ उत्तर दे। जब तू अपनी शोचनीय अवस्थाका वर्णन कर रही थी। तब स्नेहयुक्त हो इस बुद्धिरक्षिताने मुसकुराके तुझे नेत्रसे कुछ इंगित किया था वा नहीं? उसे तूने अपनी दासीतकको न विदित कर पलंगकी ओटमें छिपा रखा वा नहीं? ले अब साफ २ कह दे। हम लोगोंके समीप अब तेरा दुराव करना व्यर्थ एवं विफल है।

मदयंतिकाने कोपसूचक स्वरसे कहा लवंगिका! यह तेरी बार बारकी ठठोली मुझे नहीं भाती।

आक्षेपव्यंजक ध्वनिसे बुद्धिरक्षिताने कहा सखी मदयंतिका! तू जानतीही है कि सावनके अंधेरेको सब हराही हरा दीख पडता है। कहांतक जायगी कितनाभी हुआ तौभी यह उस मालतीहीकी सखी न है? मालती कैसी क्या है उसका वर्णन तू अभी करही चुकी है। सारांश, सिवाय ठठोली मसखरीके यह और जानतीही क्या है?

मदयंतिकाने मुक्त कंठसे मालतीको निर्लज्ज न कहा था पर उसके कहनेकी ध्वनि वैसीही कुछ थी इसलिये बुद्धिरक्षिताने

उसे यह ताना दिया। पर इस समय मदयंतिकाने बडी चतुरतासे कहा सखी! मालतीकी उक्त प्रकार ठठोली करना न्यायसंगत नहीं है।

मकरंदकी बात छेडनेके लिये यह अवसर बहुतही ठीक है ऐसा जान बुद्धिरक्षिताने कहा सखी मदयंतिका! मेरा मन तुझे कुछ कहनेको होता है, पर तू विश्वासघात न करेगी तौ कहूंगी।

उत्तरमें प्रेमपूरित स्वरसे मदयंतिकाने कहा सखी! क्या तू यह कह सकती है कि इसके पूर्व मैंने तेरा कहना नहीं माना? तौ फिर ऐसा क्यों? सखी! इस समय मैं अधिक और कुछ नहीं कह सकती। तुम दोनोंको मैं अपना जीवनधन मानती हूं।

बुद्धिरक्षिता—यदि ऐसाही है तौ मेरे प्रश्नका उत्तर ठीक २ दे। यदि इस समय वह तेरा प्राणवल्लभ नहीं २ जीवनदाता मकरंद तुझे दृष्टिगत हो तौ तू क्या करेगी?

उत्तरमें मदयंतिकाने आनंदपूर्वक कहा बहिन! उसके अंगप्रत्यंगकी अपार शोभाको दृष्टि गडाके यथेच्छ निहार लूंगी। इससे अधिक मैं करही क्या सकती हूं?

बुद्धिरक्षिताको उसे गुप्तभावसे विवाह करनेके लिये उद्यत करना था अतः उसने कहा सखी! इतना तो तू करेहीगी। जी भरके तो तू उसे निहारही लेगी, पर कामोद्दीपन करनेवाली तुझे देख कामार्त्त हो जैसे कृष्णने बलप्रयोगपूर्वक रुक्मिणीको परिणीत कर लिया वैसेही वहभी तुझे विवाह लेगा तौ तू क्या करेगी?

उक्त सुअवसर हाथ लगनेके लिये मदयंतिका आंचर पसार ईश्वरसे सदा प्रार्थनाही किया करती थी। पर वह उक्त अवसरके प्राप्त होनेको आकाशपुष्पही मानती थी अतः लंबी सांस ले उसने कहा बहिन! योंही मनके लड्डू खा मेरा मन क्यों समझाती है?

इसने मेरे प्रश्नका उत्तर ठीक नहीं दिया ऐसा समझकर बुद्धिरक्षिताने पुनः कहा सखी! सच सच तो बता तू क्या करेगी?

मदयंतिकाके अंतरस्थ भावको जान लवंगिकाने कहा बुद्धि-रक्षिता! तू बडी अजान है, अरी! अंतस्थ दुःखसूचक दीर्घ नि-श्वसन परित्यक्त कर उसने अपना हेतु तो पहिलेही विदित कर दिया कि यदि वैसा बनाव बन आवे तो मेरे आनंदकी सीमा न रहेगी। फिर बार बार तू और क्या पूछती है?

उत्तरमें मदयंतिकाने पुनः कहा सखी! तुम लोग योंही व्यर्थ ताने क्यों मारती हो? जबसे उस महावीरने शरीरपणसे मुझे व्याघ्रके मुँहसे छोडाया तबसे तो यह शरीर उसीका हो चुका है। तो अब पुनः इस शरीरको उसे अर्पित करनेवाली मैं होतीही कौन हूं?

यह सुन लवंगिकाने कहा धन्य! उदारचेतोचित बात तो यही है।

बुद्धिरक्षिता–सखी! इस समय तूने जो कहा है देख उसे कहीं भूल मत जाना ऐसा कह निद्राके व्याजसे निकटही पडे हुए मकरंदको उसने हाथसे हिलाया।

मकरंद यहांही है और वह इन दोनोंके कथनानुकूल यहां आ उपस्थित होगा ऐसा समझतेही वह भौचकसी हो रही। मकरंद वहीं था यह उसे ज्ञात न होनेके कारण वह जी खोलके बातें करती थी। युवतियां जिसको वरना चाहती हैं उसके विषयमें अदृष्टमें बहुत बातें किया करती हैं पर उसके प्रत्यक्षमें उनका सारा साहस लुप्तसा हो जाता है। मदयंतिका वहांसे भाग जा-नेके घातहीमें थी कि दूसरे प्रहरका नगाराभी बजने लगा। उसे सुन उसने कहा सखी! देख यह दूसरे प्रहरका नगारा बज रहा है। तो मैं अब जाती हूं और भैया (नंदन) को समझा बुझाकर मालतीके पांव पड उसे राजी करनेके लिये उसको उद्यत करती हूं।

ऐसा कह मदयंतिका जातीही थी कि धीरेसे मुँहपरका घूंघट सरकाके मकरंदने उसका हाथ पकड अपनी ओर उसे खींच

लिया। पाठक! आप जानतेही हैं कि मकरंद मालतीके भेष-में था। मदयंतिकाने जाना कि मालतीने जागृत हो मेरा हाथ पकडा है अतः उसने कहा मालती! क्या नीन्द हो गयी?

उसने इतना तो कहा पर भली भांति निहारनेपर उसे जान पडा कि यह मालती नहीं है। तब भौचक हो वह बोली बाई री! यहां कुछ छलावा है यह मालती नहीं है ऐसा कह वह घबरा गयी।

इतनेमें मकरंदने खडे हो उसके दोनों हाथ थामकर कहा, रंभोरु! प्रिये प्राणवल्लभे! डरो मत। तुम्हारा शरीर कंपायमान होनेके कारण जडीभूत हो रहा है, तुम्हारी क्षीणकटि शरीरभार वहनके लिये मानो जी चोरा रही है। जिसके प्रेम और प्रसादका अद्यावधि तुमने वर्णन किया वह तुम्हारा दास तुम्हारी सेवामें प्रस्तुत है।

विवाहका मुख्य बीज प्रीतिही है। सो तो परस्परमें अंकुरित हो पहिलेही पूर्णताको पहुँच चुकी थी। अब केवल परिणयसं-स्कार मात्र होनेको था। पर इस कार्यको मदयंतिका स्वयं न कर सकेगी ऐसा जान बुद्धिरक्षिताने उसके चिबुकको हाथ लगा उसका मुँह ऊपरको उठाकर कहा सखी! तेरा अत्यन्त भावता कि जिसे तू अनेक मनोरथ कर वर चुकी है, वही तेरा हृदयवल्लभ मकरंद यह उपस्थित है। ऐसा कह उसने मदयंतिकाका हाथ मकरंदके हाथमें थमाकर कहा, लो बस तुम्हारा पाणिग्रहणसं-स्कार हो चुका। यह अमात्य भूरिवसुका भवन है। इस समय यहांके सब लोग घोर निद्रामें पडे घुर्राटें भर रहे हैं। चारों ओर अंधेरा फैल रहा है। तो अब यहां ठहरना उचित नहीं है। चलो आओ अपन लोग पदभूषणोंको निकालकर दबे पांओं य-हांसे निकल चलें।

मालतीके गुप्त भावसे विवाह करनेका समाचार मदयंति-काको विदित न था। इसलिये जब बुद्धिरक्षिताने कहा जहां

मालती गयी है वहींको चलना चाहिये, तब उसने पूछा क्या मालतीने वह साहसकार्य (विवाह) कर लिया ।

बुद्धिरक्षिता–हां ।

कुछ क्षणके उपरांत बुद्धिरक्षिता बोली सखी ! तू कहती है कि अपना शरीर अर्पित करनेवाली मैं कौन होती हूं ? इससे यही सिद्ध होता है कि तू अपना शरीर पहिलेही अर्पित कर चुकी है । तो अब तेरे मुँहसे उन शब्दोंके पुनः श्रवणकी कोई आवश्यकता नहीं है। फिर उसने मकरंदको संबोधन कर कहा महाभाग! मेरी प्रियसखी मदयंतिका आपको अपना शरीर समर्पित कर चुकी ऐसा आप समझें ।

प्रमुदित हो मकरंदने कहा, आज मैं सब कुछ पा चुका, मेरी युवावस्था सफल हो गयी। आज मेरे आनंदका पारावार नहीं है। भगवान् मदनने मुझपर प्रसन्न हो बंधुसुलभ सहायता कर यह बहुमूल्य रत्न मुझे प्रदान किया है । इस अनुपम रत्नकी प्राप्तिसे मेरी लोकातीत आशा परिपूर्ण हुई है । पर अब यहां समय नष्ट करना अयोग्य है । तो अब शीघ्रही यहांसे नीचे उतर खिड़कीवाले मार्गसे बाहर जा आगेका कार्यभाग संपादित करना चाहिये । ऐसा कह वे तीनों वहांसे दबे पांओं बाहर निकल आये ।

रात्रि दो प्रहर ढल चुकी थी अतः चारों ओर सन्नाटा छा रहा था । उस शांत रमणीय दृश्यको देख मकरंदने अति उत्कंठासे कहा वाह! इस समयकी इस राजमार्गकी मनोहरता नेत्रोंको परम आनंद दे रही है । यह समीरण उच्चतर राजभवनोंपर संचार कर सुगंधित द्रव्योंके स्पर्शसे सुवासित हो युवक युवतियोंको परस्परके समागमके लिये लोलुप कर रहा है ।

आठवां परिच्छेद ।

पाठक ! मकरंदने मालतीका भेष धारण कर नंदनको प्रतारित किया और मदयंतिकाको व्याह अपनी चिरलालसा परिपूर्ण की और अब कामंदकीके मठके पासवाले बगीचेमें जहां मालती और माधव थे जानेके लिये प्रस्थित हुआ । पाठकोंको स्मरणही होगा कि मालतीके सहित माधव शंकरके मंदिरसे बिदा हो कामंदकीके मठके निकटवर्त्ती बगीचेमें गया था । कामंदकी वहांसे होती हुई मालती (कपट भेषवाली) से रिसा गये हुए नंदनको मनानेके लिये उसके घर गयी थी । उसकी आज्ञाका पालन कहांतक हुआ सो सूचित करनेके लिये अवलोकिता उसकी ओर जा रही थी । वह नंदनके घरसे लौटकर आ रही थी । मार्गहीमें अवलोकितासे उसकी भेंट हो गयी और उसे जो कुछ कहना सुनना था सो सब उसने कह सुन लिया । तदुपरांत कामंदकीने उसे कहा, कि माधव और मालती पुष्पवाटिकामें गये हैं तूभी उन्हींके निकट ठहर । कामंदकीकी आज्ञानुसार अवलोकिता लौटकर मठपर आयी और वहां उसे जो व्यवस्था करनी थी सो करके माधव मालतीसे मिलनेके लिये वह उद्यानकी ओर गयी ।

ग्रीष्मऋतु होनेके कारण पथके पार्थिवपरिश्रमसे उन दोनोंका सकलांग पसीने २ हो गया था अतः उन्होंने थकावटके परिहारार्थ आरामस्थ सरोवरमें यथासुख जलक्रीडा की थी कि उतनेमें अवलोकिताभी वहां जा पहुँची ।

माधवने कृष्णांबरा मध्यरात्रिकी सोहावनी छटा देख सहर्ष कहा, महाधन्वी मदनके प्रियमित्रस्वरूप मध्यरात्रिका यह समय युवावस्थास्थित होनेके कारण अति मनोहर दीख पडता है । शुष्क ताडपत्रकैसा समुज्ज्वल नवोदित चंद्रका प्रकाश अंधकारपटलको

नष्ट कर समीरणद्वारा केतकीपरागकी नांई चारों ओर फैल रहा है।

माधव योंही बहुत काललों भिन्न २ प्रकारसे उस समयका वर्णन करते रहा। उसकी लालसा यही थी कि प्रसन्न होकर मालती कुछ तौभी बोले पर उसने उसकी ओर भूलकरभी दृष्टिपात न किया। वह दुःखित एवं कुपितकैसी हो नीचे सिर किये एक ओर-को खडी थी। निकट आनेके लिये माधवने बहुत अनुरोध किया पर वह आती न थी। तब उसे प्रसन्न करनेकी गहरी चिंतामें माधव मग्न हुआ। वास्तवमें उसके दुःखित होनेका कोई दूसराही कारण था, पर वह मुझहीसे रिसानी है ऐसा समझ माधवने बडे प्रेमसे कहा।

प्रिये प्राणवल्लभे! तुम स्नान कर किंचित् शीतल हुई हो; अतः मुझे पुनः संताप न होने पावे वही तुम्हें करणीय है। प्रिये! विना कारण तुम दुखियाकैसी क्यों दीख पडती हो? प्रिये! यावत्कालपर्यंत तुम्हारे आर्द्र कुंतलदामसे जलबिन्दु टपकते हैं, यावत्कालपर्यंत स्तनकलशोंकी आर्द्रता गयी नहीं और यावत्का-लपर्यंत सकलांग रोमांचित बना हुआ है, तबतक प्रसन्नचित्त हो एक बेर मेरे गले लग मुझे आलिंगन दो।

प्रिये! किंचित् भयचकित होनेके कारण जिसपर घर्मबिंदु लक्षित होते हैं उस अपने चंद्रकरसंलग्न चंद्रमणिमालाकैसे शीतल मृणालबाहुको मेरे कंधेपर अर्पित कर।

पुनः बोला, अस्तु, भला वह रहा तो, संप्रति केवल मधुर २ शब्दोंकोही कर्णकुहरमें प्रविष्ट होने दे। प्रिये! क्या इस प्रसादके लियेभी मैं तुमको अयोग्य जान पडता हूं? प्रिये! इन चंद्रकी किरणोंने मेरे सकलांगको दग्ध कर डाला है, पर प्रिये! तुम अपने शीतल गात्रका आलिंगन प्रदान कर उसे शांत क्यों नहीं करती?

भला वहभी रहा। पर अपनी कलकंठविनिंदित मधुर कोमल वाणीकोही मेरे कर्णकुहरमें प्रविष्ट होने दीजिये।

योंही माधवने उसे अनेक प्रकारसे मनाया पर वह उससे एक शब्दतक न बोली । उसे उदासीन एवं अश्रुव्याकुलनेत्रा हो एक ओर खडी हुई देख अवलोकिताने बडे गंभीर स्वरसे कहा, री अबोध ! तुझे जिस माधवका छनिक बिछोह अधिक गढाता था और उसके बिछोहसे कातर एवं विह्वल हो घबराकर बार बार कहती थी कि आज आर्यपुत्रने बहुत विलंब किया, अब यथेच्छ उनके दर्शन कब होंगे सो कौन जान सकता; जो हो अब भेंट होनेपर उनसे यही प्रार्थना करूंगी कि मुझे गले लगा गाढालिंगन दे संतुष्ट कीजिये, ऐसा मुझसे कहती थी । उन्हींकी ओर आज तू तनिकभी नहीं निहारती यह देख मुझे बडा आश्चर्य जान पडता है । उसकी मनौतिको तिरस्कृत कर उनकी ओर तुझे नेकभी न निहारते देख मुझे परम आश्चर्य एवं विस्मय हो रहा है!

अवलोकिताकी उक्त बात सुन मालतीने असूयापूर्वक उसकी ओर निहारा । इस घटनाको देख माधव अपने जीमें सोचने लगा कि, भगवती कामंदकीकी यह चेली बडी चतुर तथा कार्यपटु जान पडती है । मनपर चोट करनेवाली वाणीका प्रयोग कर इसने इस हठीली (मालती) को किंचित् साव-धान किया है । पुनः मालतीको संबोधन कर उसने कहा अव-लोकिताका कहना बहुतही समीचीन है ।

इसपरभी मालतीने उत्तरमें कुछभी नहीं कहा केवल सिर हिलाकरही रह गयी । तब माधवने उसके निकट जा कहा तुम्हें मेरे लवंगिका तथा अवलोकिताके प्राणोंकी शपथ है। तुमारे जीमें जो हो सो स्पष्ट २ कह दो । हम लोग तुम्हारे इस इंगितको नहीं समझ सकते ।

इस प्रकार माधवने सौगंदें खायीं तब उसने सिर नीचे कर धीमे स्वरसे कहा 'मैं ये कुछ नहीं जानती' इतना कह आगे और कुछ कहतीही थी कि लज्जाके मारे मुँहकी बात मुँहमें रह गयी । उक्त अधूरी बातको सुन माधवने सहर्ष कहा, इन वाक्योंसे अर्थ

अभीलों पूरा पूरा व्यक्त हुआही नहीं तौभी प्रियका भाषण कैसा मधुर एवं मनोहर है; ऐसी उसकी सराहना कर उसके नेत्रोंसे अश्रुपात होते देख उसने अवलोकितासे पूछा हैं! यह क्या है ?

इस कमललोचनाका प्रकृतिस्वच्छ कपोल अश्रुधारासे धोया जा रहा है मानो इसके मुखकांतिरूप पीयूषको कमलनालद्वारा आकर्षित कर कलानिधि अपनी पिपासा तृप्त कर रहा है।

मालतीको रोते देख अवलोकिताने उसे दपटके कहा, इस समय तू ऐसी क्यों बिलबिलाती है सो बता।

योंही उन दोनोंने जब उसे बहुत कुछ दपटा तब उसने अपना बिलखना संभालकर करुणस्वरसे कहा सखी! न मालूम प्रियसखी लवंगिकाके वियोगदुःखमें मुझे अभी और कितने दिन काटने हैं? वह कहां है क्या क्या करती है सोभी मैं नहीं जानती।

मालतीने अपने दुःखका कारण अवलोकितासे कहा पर वह ऐसे टूटे फूटे स्वरसे कहा कि उसे माधव न समझ सका अतः उसने अवलोकितासे उसके दुःखका कारण फिर पूछा।

उत्तरमें अवलोकिताने कहा, इसके खिन्नमना होनेके कारण आपही हैं कि जो इसकी चिरवियुक्त प्रियसखी लवंगिकाका इसे स्मरण दिलाया और उसके गलेकी सौगन्द दिलायी। उसका स्मरण होतेही इसकी यह शोचनीय दशा हो गयी।

माधवने बड़ी आतुरतासे कहा, मैंभी तौ इस विषयमें निश्चित नहीं हूं। नंदनके महलसे समाचार लानेके लिये कलहंसको मैंने अभी उधर भेजा है।

योंही वार्त्तालाप करते करते उसे मकरंदके विवाहका स्मरण हो आया। कुछ क्षणलों सोच विचार कर उसने अवलोकितासे प्रश्न किया कि क्या तुम कह सकती हो कि बुद्धिरक्षिताका प्रचंड उद्योगकांड सफल हो मेरे परम प्रियमित्र मकरंदको मदयंतिकाकी प्राप्ति होगी ?

अवलोकिता-महाभाग! क्या इसके विषयमें आपको संदेह है? भाग्यशालिन्! उसी दिन जब व्याघ्रके नखक्षतसे वह मूर्छित हो पड़ा था और कुछ क्षणके उपरांत चैतन्य हुआ, तब वह शुभ संवाद सूचित करनेवाली इस मालतीको भगवतीकी आज्ञासे पारितोषिकस्वरूपमें आपने जैसे अपने प्राण और हृदय समर्पित किया उसी प्रकार इस समय यदि आपको आपके प्रियमित्र मकरंदको मदयंतिकाके प्राप्त होनेका प्रिय समाचार सुना कोई प्रसन्न करेगा तौ आप उसे पुरस्कारस्वरूपमें क्या देंगे सो बतलाइये?

यह सुन उसका अभिप्राय समझ माधवने कहा ठीक बहुत उत्तम जिज्ञासा की। पुनः अपने हृदयकी ओर निहारकर बोला, इस मालतीका जब पहिले पहिल दर्शन हुआ और मेरा मन इसपर आसक्त हुआ, उस समयकी साक्षीस्वरूप यह मौलसिरीकी माला मेरे कंठप्रदेशमें विराज रही है। इसे स्वयं मैंने गुहा है यह जान इसकी प्रियसखी लवंगिका इसे बडे प्रेमके साथ मुझसे मांगकर ले गयी थी और इस (मालती) ने जिसे अपने समांसल स्तनकलशोंपर धारण कर सत्कृत किया और पाणिग्रहणके समय मुझे अपनी सखी लवंगिकाही जान इसने जिसे थातीकी नांई पुनः मेरे गलेमें पहिरा दिया।

यह सुन अवलोकिताने बडी चतुराईसे कहा सखी! यह मौलसिरीकी माला तेरी बडी मनभावती है और तू अभी सुन चुकी है कि प्रियसंवादनिवेदकको यह पुरस्कारस्वरूपमें दी जायगी, तौ तुझे बहुत सावधान रहना चाहिये और ऐसी कुछ युक्ति प्रयुक्त करनी चाहिये कि यह दूसरेके हाथ न लगने पावे। यह सुन उत्तरमें मालतीने सस्मित कहा 'बहुत ठीक, मैं जो चाहती थी सोई तूने कहा'।

इतनेमें माधवका भेजा हुआ कलहंस उधरके समाचार ले माधवकी ओर पग उठाये चला आता था, उसके पाँवोंकी आ-

इट सुन यह कौन आ रहा है इस चिंतामें माधव थाही कि वह उसका दृष्टिपथगामी हुआ। उसके मुँहपर प्रसन्नताके चिह्न देख मालतीने माधवसे कहा, जान पडता है कि मकरंदको मदयंतिका प्राप्त हो चुकी।

यह सुन माधवने अत्यन्त हर्षपूर्वक उसे अंक लगाकर कहा प्रिये! तुमने यह परमप्रिय संवाद मुझे सुनाया अतः निज प्रतिज्ञानुसार मैं तुम्हें पारितोषिक प्रदान करता हूं ऐसा कह उसने अपने गलेसे बकुलपुष्पमाला निकाल मालतीको पहिरा दी।

अवलोकिताने सानंद कहा, जान पडता है कि बुद्धिरक्षिताने भगवती कामंदकीका मन्सूबा पूरा कर लिया। योंही ये लोग आपुसमें वार्त्तालाप कर रहे थे कि आपत्तिग्रसित लवंगिका, बुद्धिरक्षिता और कलहंस दौडते हांपते वहां आ पहुँचे। लवंगिकाको देख मालतीको बहुत प्रसन्नता हुई।

पाठक! आप लोगोंको कदाचित् विस्मृति न हुई होगी कि मकरंद बुद्धिरक्षिता, लवंगिका और अपनी प्रिया मदयंतिकाके सहित माधवके ढिग आनेके लिये प्रस्थित हुआ था, पर उसे मार्गहीमें उपद्रवने आ घेरा। दो प्रहर रात्रिके उपरांत स्त्रियोंको साथ ले वह नगरके बाहर जा रहा था और अभीलों उसने मालतीके छद्मवेषका परित्याग नहीं किया था। अतः नगरके रौंदवाले सिपाहियोंने उन चारोंको स्त्रीही जाना। ये चारों इस घोर अंधेरीमें नगरके बाहर जा रही हैं, इनकी इस यात्रामें कुछ ना कुछ रहस्य है ऐसा जान वे लोग इन्हें बाधक हुए। मकरंदने अपना परिचय दिये विना मुक्तिलाभके लिये अनेकानेक प्रयत्न किये पर वे सब विफल एवं व्यर्थ हुए। उन लोगोंने जब इन्हें बहुतही धमकाया चमकाया तब मकरंदने सोचा कि अब इन्हें इनकी कृतिका फल चखाना चाहिये। पर साथही उसे साथवाली तीनों स्त्रियोंकी रक्षाकी गहरी चिंतामें मग्न होना पड़ा।

वह मनोमन योंही कुछ सोच विचार कर रहा था कि उसका

समाचार लेनेके लिये माधवका भेजा हुआ कलहंस उसके निकट जा पहुँचा। उसे देखतेही मदयंतिकादि तीनों स्त्रियोंको माधवके समीप पहुँचानेकी आज्ञा दे, इन रौंदवालोंको पराजित कर मैंभी तेरे पीछेही आता हूं ऐसा कह, वह उन लोगोंसे युद्ध करने लगा। इस समय वह रंगमहलसे आया था और स्त्रीके भेषमें था पर उसके शस्त्र उसीके पास थे।

उसने चट मालतीका भेष छोड दिया। वह एक बढिया साडी पहिने था पर भीतर उसकी धोती थीही एतावता उसे रूपांतरित होनेमें न विलंबही लगा और न कोई कठिनताही जान पडी।

कलहंस, लवंगिका और मदयंतिकाकी घबराहटका कारण यही था कि वह एकाकी था और वे लोग बहुत थे। वे लोग बार बार यही सोच भयभीत होते थे कि न जाने अब ईश्वर क्या करेगा। लवंगिकाने आगे बढकर माधवसे कहा महाभाग! अपने मित्रकी रक्षा करो। आधे मार्गपर नगररक्षक सिपाहियोंके साथ वह युद्ध कर रहा है। शीघ्र उसकी सहायता करो।

कलहंस—नगररक्षकगण यदि थोडे होते तो चिंता करनेकी कोई बात न थी, पर हमारे कुछ आगे बढतेही उन लोगोंका बडा कोलाहल सुन पडा इससे अनुमान होता है कि उन लोगोंकी सहायताके लिये औरभी लोग आ गये हैं।

यह निर्विवादित सिद्धांत है कि मनुष्य सोचता कुछ है और होता कुछ है। विधनाका यह क्याही विचित्र विधान है कि वह प्राणिमात्रको सदैव एकावस्थामें नहीं रहने देता और कालचक्रके साथ साथ सुख दुःखकी दशाभी परस्पर परिवर्तित हुआ करती है। निदान माधव, मालती और अवलोकिता इधर आनन्दानुभव कर निज निज संबंधानुसार आनेवाले लोगोंके विषयमें मनोरथ कर रहे थे और इसी आशामें थे कि अब उनकी सारी अभिलाषाएं परिपूर्ण हुआही चाहती हैं। पर बीचहीमें मकरं-

दका युद्ध यही एक उपद्रव उपस्थित हो गया। मालती और अवलोकिता कातरस्वरसे कहने लगीं, हाय! हाय! हर्ष और उद्वेग युगपद् उपस्थित हुए। मदयंतिकाकी प्राप्ति सुन हृदयकमल आनंदसे फूलही उठा था कि युद्धसमाचार सुन उद्विग्नतारूप तुषारसे वह जलसा गया।

मकरंदके लिये अपर जनोंकी अपेक्षा मदयंतिकाका अधिकतर दुःखित और चिंतित होना प्रकृतिधर्मानुमोदितही था। विवाह हो अभी पूरे चार घंटेभी न हो पाये थे कि उसके जीवनसर्वस्व पतिपर ऐसा अचिंत्य संकट आ पडा। इस आपत्तिके कारण वह विशेष कातर न होने पावे इस अभिप्रायसे माधवने उसे आश्वासन देकर कहा, मदयंतिका! आज तुमने हम लोगोंको अत्यन्त बाधित किया है। उन (मकरंद) के लिये तुम इतनी क्यों घबराती हो? जिनने बाघपर हाथ किया था वही वे हैं। वह एकाकी है और विपक्षिगणोंकी संख्या अधिक है इस लिये चिंता करनेकी कोई बात नहीं है। मदमत्त हाथियोंके गंडस्थल विदीर्ण करनेवाले अतुल पराक्रमी सिंहको उसके नखोंकीही सहायता अलं होती है पर तौभी अपने परम प्रियमित्रकी सहायताके लिये मेरे जानेमें नेक विलंब मत जानो। तुम धीरज धारण करो। इस प्रकार प्रबोधवाक्योंसे उसकी सांत्वना कर कलहंसको साथ ले वह उसकी ओर जानेको निकला।

उस समय अवलोकिता, लवंगिका और बुद्धिरक्षिताने भक्तिपूरित स्वरसे आंचर पसार देवीकी प्रार्थना कर कहा, मा जगदंबिका! इन दोनों (माधव मकरंद) को कुशलतापूर्वक लौटाइये।

मालतीने गद्गद् कंठसे अवलोकिता और बुद्धिरक्षितासे कहा, बहिन! द्रुत वेगसे जा यह समाचार कामंदकी माको विदित करो।

माधवको मालती कितनी प्रिय थी सो कहना अनावश्यक

है। पर इस समय उसने उसकी ओर देखातक नहीं, क्योंकि वह जानता था कि उसकी भेंट ले फिर जाना बडा कठिन क्या असंभवही हो जायगा, अतः वह उससे मिले विनाही चला गया। इस लिये मालतीने लवंगिकाको यदि इस अनाथ अबलाको कृपापात्र करना हो तो बहुत सावधानीपूर्वक युद्ध कीजिये ऐसा संदेसा कहनेके लिये माधवके समीप भेजा।

इस प्रकार लवंगिका, बुद्धिरक्षिता और अवलोकिता निज २ कार्यके लिये चली गयीं और यहां मालती और मदयंतिकाही रह गयी थीं। दोनों निज २ पतिकी गंभीर चिंतामें मग्न हो व्याकुल हो रही थीं। मालतीने शोकाकुल हो कंपित स्वरसे कहा, बहिन! अब यह समय क्योंकर काटना चाहिये सो कुछ नहीं सूझ पडता। चित्त ऐसा अस्वस्थ हो रहा है कि किसी ओर लगताही नहीं। लवंगिका संवादवाक्य ले वहांको गयी है उसीकी बाट जोहते बैठी हूं।

इतनेमें उसकी दहिनी आंख फरकने लगी। इस दुश्चिह्नका आशय वह नहीं समझ सकी। एक तो पहिलेही वह घोर चिंतामें थी फिर तिसपरभी जब उसकी दहिनी आंख फरकने लगी तब तो बहुतही घबडायी और आर्यपुत्रके नामसे माधवको उसने ऊंचे स्वरसे पुकारा। पर पुनः लज्जित हो चुप्पी साध बैठ रही। पाठकोंको स्मरण होगा कि माधवने अघोरघंटका वध किया था तबसे उसकी चेली कपालकुंडला अपने गुरुका बदला लेनेके लिये मालतीका वध करनेके लागपर थी। वह मंत्रबलसे उसी बगीचेमें दबकी हुई थी। उसने मन्सूबा बांध लिया था कि उसे अकेली पा उठा ले जाऊंगी। सो उसे यह अवसर अच्छा हाथ लगा।

मालतीके निकट मदयंतिका थी पर उसकाभी चित्त ठिकानेपर न था। मैं लवंगिकाकी बाट जोह रही हूं ऐसा जब उसने उससे कहा तब मदयंतिका उसे वहीं छोड कुछ आगेको बढ गयी। उसके आगे बढतेही कपालकुंडलाको मौका हाथ लगा।

मालतीने जब माधवको पुकारा था तभीसे वह दांत होंठ खा आत्मगत कह रही थी, री लौंडिया ! ठहर। अब तेरा काल तेरे सीसपर आ पहुँचा। फिर प्रसन्न हो बोली, क्या मुएके नामसे पुकार रही है ? खूब पुकार। तापसोंका वध करनेवाला कन्याका जार पति तेरा भावता वह चांडाल (माधव) कहां गया सो उसे आंखें फाड २ कर खूब निहार ले। अब देखूं वह मुआ तेरी रक्षा कैसे करता है ? बाजके भयसे चकित हुई बगलीकैसी इधर उधर क्या निहार रही है ? अब मैंने तुझे भोजन कर लिय ऐसाही समझ। तुझे श्रीपर्वतपर ले जा अभी तेरे टुकडे करती हूं ऐसा कह कपालकुंडला चीलकैसी नीचे आ मालतीको आकाशमें उठा ले गयी।

इधर मदयंतिका बुद्धिरक्षिताकी मार्गप्रतीक्षा करती बैठ थी, कि अकस्मात् लवंगिका दबे पांवों आ उसके पीछे खडी हो गयी और मुसकुराकर बोली री सखी ! तू किसका ध्यान क रही है ? घबडा मत। यहां ऐसी अकेलीही क्यों बैठी है ?

मदयंतिका बौरानीसी बैठी थी। लवंगिकाके अचानक इंगितसे सकपकाकर कंपित स्वरसे उसने पूछा क्या तू माधवसे संदेसा कह आयी ?

उत्तरमें लवंगिकाने कहा, नहीं, मैं उसके पीछे २ पांव उठाये चली गयी पर ज्योंही वह बगीचेके बाहर पहुँचा और उसने शत्रुदलका कोलाहल सुना सहसा अरिदलपर जा टूटा मैं उससे मिल न सकी। नागरजन माधव, मकरंद ऐसा कह कहकर दुःखित हो विलख रहे हैं और स्वयं राजासाहब अधिक सैन्य ले उनपर आक्रमण कर रहे हैं। तुझे और मालतीको प्रतारित कर उन दोनोंने अपहृत किया इससे राजासाहब नितांत क्रुद्ध हुए हैं। लोग कहते हैं कि वे अपने सैनिकोंको उत्तेजना-वाक्योंसे प्रोत्साहित कर राजभवनके ऊपरवाले छज्जेपर बैठ युद्ध-कौतूहल देख रहे हैं।

यह सुन मदयंतिकाने शोकाकुल हो कहा, हाय ! न जाने अब क्या भवितव्य है । लवंगिकाको मालतीकी विशेष चिंता थी । उसे वहां न पा उसने मदयंतिकासे पूछा वह कहां है ?

मदयंतिका–उधर वह तेरी बाट जोहते बैठी है । उसे छोड अभी मैं इधर आयी हूं । यहां आनेके उपरांत फिर वह मुझे नहीं दीख पडी । शायद फुलवाडीमें कहीं बैठी होगी ।

लवंगिका–तो ले चल उसे चल तुरंत मिलना चाहिये । वह बडी भीरु है। इस भयावह भीषण उपद्रवको देख उसके प्राणधारणकी मुझे शंका है । सखी ! मैं तुझसे सच सच कहती हूं कि वह मालती यथार्थमें मालती (बेला) ही है । ऐसा कह दोनों उसकी खोज करने लगीं ।

यह तो पाठक जानही चुके हैं कि मकरंद नगररक्षकोंके साथ युद्ध कर रहा था । धीरे धीरे उन लोगोंकी संख्या बहुत बढ गयी । मकरंद युद्धही कर रहा था कि रात्रिका घोर-अंधकार नष्ट करनेके लिये आनेवाले भगवान् अंशुमालीके आगमनकी ताम्रचूडने सूचना दी । पौके फटतेही मकरंदके कपटवेशके शेष चिह्न लोगोंको दीख पडे । नगरके कोतवालने यह सब वृत्तांत राजाकी सेवामें निवेदन किया । और लोगोंनेभी उसे पहिचान लिया कि यह कुंडिनपुरके राजाके मंत्रीके पुत्रका मित्र मकरंद है । पर उसके शरीरपर स्त्रियोंके आभरण देख लोग नानाविध तर्क वितर्क करने लगे । दुलहिनके लिये कल राजासाहबने जो वस्त्रालंकार भेजे थे उन्हींसे ये दीख पडते हैं । न मालूम इसमें क्या रहस्य भरा है। योंही तर्क वितर्क करते कराते माधव मकरंदका कपट लोगोंपर प्रकट हो गया । जनपरंपराद्वारा यह समस्त वृत्तांत राजाको कर्णगत हुआ और ज्योंही उसने जाना कि इन दोनोंने हम लोगोंको वंचित एवं प्रतारित कर मालती और मदयंतिकाको वर लिया है, त्योंही उसके हृदयमें क्रोधाग्नि दहक उठी ।

वास्तवमें रौंदवालोंके अटकानेके कारण यह बात युद्ध होनेतक न बढने पाती पर उनका कपटरहस्य प्रकट हो राजाको विदित होतेही उसने अत्यन्त क्रुद्ध हो सहायतार्थ औरभी सैन्य भेजकर आज्ञा दी कि इन प्रतारकोंको इनकी प्रतारणाके पलटेमें पूरा पूरा दंड दिया जाय । यही कारण है कि उस क्षुद्र कलहने ऐसा भयावना रूप धारण किया ।

माधवके सहायतार्थ आनेके कारण मकरंदके युद्धोत्साहको विशेषरूपसे वृद्धिलाभ हुआ। वे दोनों मृगसमूहमें सिंहकैसे प्रचंड पराक्रमद्वारा शत्रुका पराभव कर रहे थे । उन्होंने उस रणक्षेत्रमें अनेक बडे बडे वीरोंको पराजित किया और सैकडों सिपाहियोंके मुंड रुंडसे अलग किये । योंही तीसरे प्रहरतक यह घोर घमासान एकसा होता रहा । अंतमें राजाने सोचा कि अनेक वीरोंको दो बालकोंपर आक्रमण करनेकी मैंने आज्ञा दी है यह बडा अन्याय है और एतदर्थ लोग मुझे दोष देते हैं और बिचारे विदेशी लडकोंके विना कारण मारे जानेके भयसे सर्व साधारण अतिदुःखित हो रहे हैं ।

राजाने जब देखा कि यद्यपि बहुत देरसे एकसा युद्ध हो रहा है पर ये दोनों वीर बालक पीछे नहीं हटते और विना कारण सेना कटी जाती है तो अब युद्ध बंद कर देनाही समीचीन होगा। ऐसा सोच विचार, जनप्रवादसेभी तथा उन दोनोंकी सराहनीय वीरतापर प्रसन्न हो राजाने अपनी सेनाको युद्ध बंद करनेकी आज्ञा प्रज्ञान की । कुछ किये वे दोनों पीछे तो हटतेही नहीं हैं और अंतमें पराजित हो अपयशका धब्बा लगनेका भय जान पडता है तो इसकी अपेक्षा उनपर अनुकंपा प्रदर्शित कर युद्ध बंद करनेकी आज्ञा देनेका विचार राजाने बहुतही उत्तम किया ।

राजाने युद्ध बंद करा उन दोनों प्रबल वीरोंको अपने समीप बुलवाया और उन्हें संबोधन कर कहा, कि तुम्हारी असाधारण वीरता देख मैं अत्यन्त संतुष्ट हुआ हूं । मेरे प्रधान मंत्री भूरिव-

सुकी पुत्री मालती और हास्यचतुर ठठोलकी कन्या मदयंतिकाको तुम दोनोंने वरा है अतः तुम दोनों मेरे दमाद हुए। अब तुम लोगोंसे युद्ध कर मुझे करनाही क्या है ? अब तुम लोग सुखेन जा सकते हो। ऐसा कह राजा रनवासको चले गये।

युद्ध बंद करनेके पूर्व इन दोनोंको जाननेके लिये राजाने विशेषरूपसे अनुसंधान किया था। माधव और मकरंदको पद्मावती नगरीमें वास करते आज बहुत समय हो चुका था पर वे छात्रावस्थामें होनेके कारण राजाके समीप जानेकी उन्हें कोई आवश्यकता न पडी और उनके विषयमें उसे विशेष परिचयभी न था। उनके उत्तम स्वरूप और शौर्यको देख, ये किसके कौन हैं इत्यादि जाननेकी जब राजाको इच्छा हुई, तब निकटवर्त्ती एक परिचारक कलहंसको राजाके ढिग बुला ले गया। तब उसने राजाको उनका समस्त व्यौरा कह सुनाया। जब राजाने जाना कि ये दोनों सत्कुलोत्पन्न तथा बहुत योग्य हैं तब वह अत्यन्त प्रसन्न हुआ।

माधव और मकरंदका युद्ध करना सुन कामंदकी गंभीर चिंतासे आकुल हो रही थी, पर अब राजाने युद्ध बंद करा उन दोनोंपर कृपा की, यह कलहंस जानही चुका था। इसलिये ये समाचार सुना उसकी चिंता दूर करनेके हेतु वह उसकी ओर उठ दौडा।

राजाके अनुग्रहसे प्रसन्न हो माधव और मकरंद बगीचेकी ओर जानेको निकले। मार्गमें आपसमें वार्त्तालाप करते जाते थे। मकरंदने माधवसे कहा, मित्र! इसमें कोई शंका नहीं कि तुम्हारा बाहुबल अपर मनुष्योंकी अपेक्षा कहीं चढ बढके है, पर मुझमेंभी प्रिया (मदयंतिका) की प्राप्तिके कारण आज आश्चर्य सामर्थ्य आ गया था। बडे बडे वीरोंपर आक्रमण कर प्रथम तो मैंने एक दोके शस्त्र बलात् ले लिये और उन्हींकी तरवारसे उनके मुंड रुंडसे जुदे किये। मैंने आज इतने वीरोंको मारा कि उनके

शवकारण समुद्रमें ढेर लगा दिया जिसके योगसे वह युद्धार्णव दो भागोंमें विभक्तसा दिखाई पडने लगा ।

माधवने सदर्प कहा, मित्र ! वास्तवमें आजका प्रसंग महत् अभिमान करने योग्य है । एकही रात्रिमें परस्परके विरुद्ध दो समागमोंका तुमने अनुभव किया । गत रात्रिमें चंद्रकिरणमय प्रियाको अंक लगा उसका अधरामृत पान किया । तुम्हारे जिस शरीरने अत्यन्त सुकुमार एवं मनोहर प्रियाके अंगस्पर्शका अनुभव किया उसी शरीरने कुछ क्षणके उपरांत सहस्रावधि वीरोंका शिरच्छेद कर शोणितकी नदियां बहायीं । प्रियवर! यह घटना कोई सामान्य घटना नहीं है ।

मित्र ! कुछभी हो पर इस राजाकी सुजनताभी ध्यानमें रखने योग्य है । क्योंकि हम लोगोंने उसका इतना बडा भारी अपराध किया, पर तिसपरभी उसने हमारे साथ ऐसा वर्त्ताव किया कि मानो हम लोगोंने उसका कोई अपराधही नहीं किया और उलटे उसने ऐसा कर दिखलाया मानो हम लोगोंने उसे किसी पार्थिव कार्यसाधनमें सहायता दी हो । वाह धन्य है ! वास्तवमें राजा बडेही उदारचित्त जान पडते हैं । अस्तु । अब जो हुआ सो उत्तमही हुआ ऐसाही मान लेना चाहिये । लो चलो अब अपनेको बगीचेमें शीघ्र पहुँचना चाहिये । मित्र ! तुमने मदयंतिकाको किस प्रकार प्राप्त किया सो मुझे सविस्तर श्रवण करना है । पर अभी रहने दो मैं वह बात मालतीके सामने सुनूंगा । क्योंकि उसके सामने जब तुम वह वृत्तांत कहने लगोगे तब मदयंतिका और मालती परस्परकी लज्जासे सिर नीचा कर लेंगी और मदयंतिका तुम्हारी ओर कटाक्ष प्रेरणा करेगी, इन सब बातोंको देख परम आनंद होगा । योंही वार्त्तालाप करते २ वे दोनों बगीचेके द्वारके भीतर आ गये ।

माधव मालती और मदयंतिकाको उस सरोवरके तीरपर छोडकर गया था, अतः वे दोनों सीधे वहीं चले गये । पर वह

कोईभी न दिखायी दिया अतः माधव किंचित् उदास हुआ। यह देख मकरंद बोला, मित्र! हम लोग युद्ध कर रहे थे तब अपने चित्तकी अस्वस्थता दूर करनेके हेतु वे लोग (मालती और मदयंतिका) बगीचेमेंही इधर उधर फिर अपना समय निकाल रही होंगी। तो चलो हम लोग शीघ्रही उन्हें खोज लें।

ऐसा कह वे दोनों आगेको बढेही थे कि लवंगिका और मदयंतिका जो वहांही थीं, उन्हें दृष्टिगत हुई। उन्होंने यह मालतीही आ रही है ऐसा समझ सखी मालती! कहां थी? ऐसा कहा पर साथही माधव और मकरंद उन्हें दिखायी दिये। दोनोंको कुशलपूर्वक लौटकर आते देख उन दोनोंको परम आनंद हुआ। माधव और मकरंदने उनके निकट आ मालती कहां है? ऐसा पूछा। उत्तरमें उन्होंने सखेद कहा, मालती कहांकी? पांवोंकी आहट सुन हम लोगोंको बडा धोखा हुआ। हम लोगोंने समझा था कि शायद वही होगी।

यह सुन माधव औरही कुछ समझा। वह समझा कि मालतीको कहीं छिपाकर ये दोनों मुझसे हँसी कर रही हैं। उसने उत्कंठापूरित स्वरसे कहा जो हो सो सच सच कहो। मेरा हृदय कंपित हो रहा है। उसे विना देखे मेरी सुधबुध सब नहींसी हो रही है। उस कमलपत्राक्षीको देखे विना मेरा मन स्थिर नहीं होता। मेरी चैतन्यता लुप्तप्राय हो रही है। हा! यह क्यों? अभीके अभी मेरा वामनेत्र फडकने लगा। तुम्हारी बातचीतसे मुझे मेरा घात हुआसा जान पडता है।

उत्तरमें मदयंतिकाने माधवसे कहा, भाग्यशालिन्! आपके यहांसे जानेके उपरांत अवलोकिता और बुद्धिरक्षिताको उसने आपके युद्धार्थ जानेका समाचार भगवती कामंदकीको सूचित करनेके हेतु उनके निकट भेजा और लवंगिकाको आर्यपुत्र बहुत सावधानीपूर्वक युद्ध करें ऐसा आपसे प्रार्थना करनेके लिये आपके निकट भेजा और वह मन अधिकतर अस्वस्थ हो-

नेके कारण लवंगिकाकी बाट जोहते यहांही बैठी थी। तबसे अभीलों वह कहीं दिखायी न दी अतः हम लोग उसे यहां चारों ओर खोज रही थीं कि आप लोग दिखायी दिये।

यह वियोगसमाचार सुन माधव नितांत उद्विग्न हुआ। वह सोचने लगा कि बगीचेमें रहकर एकाएक उसका नहींसा हो जाना नेक असंभवसा जान पडता है। विह्वल हो उसने पुनः कहा, इस समय आश्चर्यकल्पनाकलाप मेरे मनमें उत्पन्न हो रहे हैं। ए कठोरमना मालती! विनोदार्थ यदि कहीं छिपकर बैठी हो तो क्षणभरके लिये उसे एक ओर रखो और शीघ्र मुझे दर्शन दो। प्रिये! क्या तुम्हारा चित्त ऐसा कठोर और पाषाणमय है कि मैं कातर एवं विह्वल हो रहा हूं तौभी वह ठठोलीही कर रहा है।

योंही जब माधव विशेषरूपसे विलपने और विलखने लगा तब मदयंतिका और लवंगिकाभी बहुत घबरायीं। पर मकरंदने माधवको ढाढस दे कहा, मित्र! तुम ऐसे क्यों घबराते हो? वह यहीं कहीं बैठी होगी। आओ अपुन लोग उन्हें जरा अच्छी तरह ढूंढें। तबतक तुम ऐसे व्याकुल मत हो।

उत्तरमें माधवने सखेद कहा, मित्र! बडे आश्चर्यकी बात है कि तुमभी ऐसाही कहते हो। मेरे विना वह कैसी दुःखित होगी और उस दुखावस्थामें क्या न कर बैठेगी सो क्या कोई जान सकता है?

प्रत्युत्तरमें मकरंदने कहा, हां! तुम कहते हो सो तो सचही है। पर मुझे जान पडता है कि बहुधा वह कामंदकी माके ढिग गयी होगी। तो चलो पहिले अपुन लोग वहां चलके उसे खोजें, फिर आगेकी कर्त्तव्यताका विचार करें।

मकरंदकी यह तर्कना लवंगिका और मदयंतिकाकोभी सम्मत हुई और सब मण्डली कामंदकीके स्थानकी ओर जानेको निकली। पर माधवका चित्त ठिकानेपर न था। वह मनोमन विचार रहा था कि मेरी प्रिया मालती इन लोगोंके कथनानुसार

शायद कामंदकीके ढिग गयी हो । पर उसके सुखी होनेकी मुझे बडी भारी शंका है । क्योंकि सुखका काल प्रायः विद्युल्लतासा क्षणिक होता है, पर उस विषयमें मनुष्य उपायहीन है । अस्तु । आशा है कि दैवकी अनुकूलतासे अभीष्ट हेतु सिद्ध होगा ।

नवां परिच्छेद ।

पूर्वकथानुसार कपालकुंडला मंत्रसामर्थ्यसे मालतीको बांधकर ले गयी, यह बात माधव, मकरंद, मदयंतिका, लवंगिकादि उसके आत्मीय जनोंमेंसे किसीकोभी विदित न थी। तथापि उन लोगोंने चारों ओर उसे ढूंढा, अंतमें जब वह कहीं न मिली, तब उसका सर्वनाश हो गया ऐसा समझ वे लोग चिंतातरंगव्याकुल समुद्रमें गोते खाने लगे । अपर जनोंकी अपेक्षा माधवको उसका अधिकतर दुःख एवं शोक होना प्रकृतिसुलभही था। वह मालतीकी खोजमें जिधर रास्ता पाता उधरही चला जाता। उसने नगरकी ओर मुँहतक न मोडा । माधवकी वैसी शोचनीय अवस्था होनेके कारण उसके प्रिय मित्र मकरंदकोभी उसके साथही साथ फिरना पडा। इस असह्य दुःखके कारण माधव कुछ तोभी साहसकार्य बैठेगा, ऐसा समझ मकरंदने नेकभी उसका पीछा नहीं छोडा ।

जिस प्रकार कपालकुंडलाने मालतीको श्रीपर्वतपर ले जाकर वहां उसका सर्वनाश करना विचारा था, तदनुसार वह उसे वहां ले तो गयी, पर उसका अभीष्ट हेतु पूर्ण न हो पाया ।

सौदामिनी नामकी एक वृद्ध साध्वी थी। वह कामंदकी, देवरात और भूरिवसुकी सहाध्यायिनी थी और अध्ययन समाप्त कर गुरुकी आज्ञा ले घर जाते समय देवरात और भूरिवसुने परस्परके समधी होनेकी जो प्रतिज्ञा की थी उसकी वह एक साक्षिणी थी, इसी लिये वहभी चाहती थी, कि मालती माधवकोही विवाही

जानी चाहिये। वह अपने सतीर्थ्य देवरात और भूरिवसुसे बडा अनुराग रखती थी और पाठशाला छोडनेके उपरांत दर्शन-शास्त्रमें परिश्रम करनेके लिये उसने कामंदकीकी शिष्यता स्वीकृत की थी आदि बातोंका पीछे उल्लेख होही चुका है। इन सब कारणोंसे सौदामिनीको मालतीका पक्ष करनाही समुचित था।

सौदामिनीको मंत्रशास्त्रकी विशेष अभिरुचि थी और वह जारणमारणादि प्रयोगोंमें बडी प्रवीण हो गयी थी, अतः कपालकुंडला उसे अपनी सखी मानती थी। पर कामंदकी और मालतीके साथ उसका जो संबंध था उसे वह तनिकभी न जानती थी। यदि वह जानती होती कि सौदामिनी मुझे बाधक होगी तो उसने उक्त नृशंसकार्य संपादनके लिये श्रीपर्वतपर जानाही न विचारा होता। पर न जाने मालतीकी आयुष्यमर्यादा क्षीण न हुई थी इसलिये वा अपने सन्मुख देवरात और भूरिवसुने जो प्रतिज्ञा की थी वह उनकेद्वारा पूर्ण करानेके लिये कामंदकीकी नांई सौदामिनीकोभी कुछ यत्न करना चाहिये था इसलिये कपालकुंडलाको वैसाही सूझा और बिचारी मालती और उसके आत्मीय जनोंकी प्राणरक्षा हुई, नहीं तो एक साथ सभीका सर्वनाश हुआ होता।

कपालकुंडला अपने गुरु अघोरघंटके श्रीपर्वतस्थ स्थानपर मालतीको ले गयी और वह उसका वध करनेके विचारमेंही थी कि सौदामिनी योंही फिरते फिरते वहां आ गयी और अपने स्वकीय जनोंके नाम ले लेकर विलाप करनेवाली मालतीको पहिचानकर उसनेकपालकुंडलाको उस जघन्य कार्यके लिये बहुत दोष दिया और मालतीको अपने आश्रमपर लिवा ले गयी।

मालती और माधवके नामसे कपालकुंडला ऐसी क्यों जलती भुंजती थी सो गुरुभक्त लोग वा इस ग्रंथके सहृदय पाठकही जान सकते हैं। वह अपने वशमें मालतीको कदापि जी-

वित न छोडती, पर सौदामिनीके सामने वह कुछभी न कर सकी । सौदामिनी उसकी सखी थी और मंत्रविद्यामें कपालकुंडलाकी अपेक्षा उसकी योग्यता कहीं बढके थी । कपालकुंडला यदि सीधेपनसे मालतीको न छोडती तो सौदामिनीमें इतना सामर्थ्य था कि वह कपालकुंडलाकोभी ढेर कर देती । उसके इस प्रचंड प्रभावके कारणही यह तुम्हारे आत्मीय जनोंमेंसे है यह मैं नहीं जानती थी । यदि जानती होती तो मुझसे ऐसा अपराध न होता ऐसा कह उसके लिये उसने सौदामिनीसे क्षमा मांगी ।

सौदामिनीने बडे प्रेमसे मालतीका समाधान कर उसका सब व्यौरा पूछ लिया । माधवके साथ उसका पाणिग्रहणसंस्कार हो गया यह सुन उसे परम संतोष हुआ । कपालकुंडला अकस्मात् इसे इधर ले आयी तो इसे वहां न देख माधव और अपर स्वकीय जन नितांत दुःखी हो रहे होंगे । उन्हें मालतीके जीवित रहनेका शुभ संवाद सुना उनकी शांत्वना करनी चाहिये, नहीं तो कुछ अनर्थ हो जायगा । इसलिये सौदामिनीने पद्मावती नगरीको यात्रा करनेका विचार कर वहांके लोगोंको विशेष विश्वास दिलानेके योग्य उससे कोई वस्तु मांगी । उसने माधवकी पहिरायी हुई मौलसरीकी माला अपने गलेसे उतारकर उसे सौंपी ।

वास्तवमें सौदामिनी मंत्रबलद्वारा क्षणकालमें स्वयं मालतीकोही उधर ले जानेके लिये समर्थ थी और उसने वैसाही कियाभी होता, पर मालतीसे वह यह सुन चुकी थी कि उसका विवाह माधवके साथ गुप्तभावसे हुआ है । और राजा उसके प्रतिकूल था और माधव, मकरंदके साथ युद्ध कर रहा था । युद्धका फल अनुकूल हुआ और जो हो चुका उसमें राजाने आत्मानुमति प्रकाशित की, यह सब बातें मालती न जानती थी, अतः उसने यहींतक हाल कहा था कि युद्ध हो रहा है । इस युद्धका परिणाम कैसा होगा कौन जान सकता है ? तो मालतीको वहां

ले जा आपत्तिग्रसित करनेकी अपेक्षा उसे यहांही रखना समीचीन जान, उसने अपनी चेलीसे उसकी भली भांति सेवा टहल करनेको कह, वह बकुलपुष्पमाला ले आकाशमार्गसे निकली सो सीधी पद्मावती नगरीमें आ पहुँची।

उसने सबसे पहिले माधवको यह शुभसंवाद वाक्य सुनाना चाहा था पर इस समय माधव पद्मावतीमें न था। इसलिये उसका अनुसंधान करनेके लिये वह आकाशमार्गसे निकली और उसने शीघ्रही आकाशमें देखा कि माधव और मकरंद आगे २ चले जाते हैं और उसके आत्मीय जन उनके पीछे २ चले जा रहे हैं। वह मंत्रसामर्थ्यद्वारा स्वच्छंदविहारिणी होनेके कारण उसकी गति बडी विलक्षण थी। उसने अपनी गतिकी प्रशंसामें कहा।

वाह! धन्य है मुझे कि जो मैं इतनी शीघ्रताके साथ चली हूं। मेरी द्रुतगतिके कारण ये नदी, गिरिश्रेणी तथा ग्रामावलि दृष्टिके समीप ठहरतेतक नहीं। पीछेको मुड पद्मावती नगरीकी प्राकृतिक शोभा अवलोकन कर साश्चर्य्य बोली, वाह! यह नगरी प्रचुरशोभासंपन्न है। यहांपर सिंधु और पारा नदियोंका संगम हुआ है और इनके परिवेष्टनसे बडे ऊंचे २ मंदिरोंके शिखर और बंगले मानो आकाशचुंबन कर रहे हैं। वैसेही इस लवणानदीके तटकी रमणीयता अपनी विलक्षण छटा अलगही दिखा रही है। वर्षाकालमें इसके उभय तटपर जमी हुई हरी घासको चरती हुई गौओं तथा बछडोंको देख परम आनंद होता है।

यहां यह सिंधु नदीका झरना बडी गर्जना कर रहा है। अभ्रभेदी तुंग गिरिशिखरोंसे प्रबल वेगद्वारा यह नदी अधःको प्रवाहित होती है अतः ऐसा जान पडता है मानो इसका उदकप्रवाह धरतीको भेदकर रसातलको जा रहा है। इस निर्झरकी ध्वनि मेघगर्जनासी प्रचंड होनेके कारण पार्श्ववर्ती गिरिकुहरोंमें व्याप्त हो अपनी प्रतिध्वनिद्वारा दिग्गजोंकी गर्जनाको लज्जित कर रही है।

ये चंदन, केसर, पाटल आदिके वृक्ष और उनके पक्क फल

तथा पुष्पोंकी सुवाससे सुगंधित हुए पर्वतनिकटवर्ती अरण्यप्रदेश कि जो कदंब, जंबूफलादिके पादपोंसे समाकीर्ण हैं और गोदावरीके प्रवाहका शब्द, दक्षिणस्थ पंचवटीके पासवाले दंडकारण्य प्रदेशका स्मरण दिलाते हैं ।

कुछ आगे बढकर साश्चर्य्य बोली, यहांपर यह मधुमती और सिंधुसारिताका संगम हुआ है और यहांसे थोडीही दूरीपर सुवर्णबिंदु नामके शंकरका लिंग है । उस लिंगको विनीतभावपूर्वक प्रणाम कर बोली, भगवन्, शंकर, अखिलनिगमाधिपते, संसारके रक्षक, चंद्रशेखर, मदनारि, आदिगुरु ! तुम्हारी जय हो । ए प्रभु ! मुझपर तुम्हारा सदा अनुग्रह बना रहे ।

इस प्रकार उस शंकरके लिंगकी प्रार्थना कर एक पर्वतश्रेणीकी ओर निहारकर बोली, नवांबुधरकैसा शोभासंपन्न गगनभेदी यह उच्चतर गिरिशिखर मेरी दृष्टिको अत्यंत आनंद देता है । यहांकी अथाह गिरिगुहाओंमें बैठकर दिनहीमें घनी अंधियारी मान व्यर्थ चिल्ला चिल्लाके उल्लू अपना गला फाडे डाल रहा है और उसकी प्रतिध्वनि चारों ओर फैल रही है । छोटे छोटे झरना ऊंचे २ पर्वतोंपरसे नीचेको वह रहे हैं उनकी गंभीर ध्वनिसे यह अचलराशि विशेष गंभीर भासित होता है ।

योंही भिन्न देशोंकी रमणीयता देख उनका वर्णन करती हुई परम आनंदमें मग्न हो वह चली जाती थी कि इतनेमें भगवान् प्रभाकरकी प्रखर किरणोंसे संतप्त हो ऊपर देख बोली, जान पडता है दुपहरी लौट चुकी । तौ अब व्यर्थ समय नष्ट न करना चाहिये । दिवाकरकी प्रचंड उष्णतासे व्याकुल हो पत्रहीन वृक्षोंको छोड पक्षिगण स्निग्धच्छायासंपन्न पादपोंकी शरण ले रहे हैं और ये मक्षिकाएं जलाशयका आश्रय तक रही हैं, इन सब बातोंसे निश्चय होता है कि दो प्रहर बीतही चुके । तौ अब मुझे द्रुत वेगसे जाकर माधवका आश्वासन करना चाहिये । ऐसा विचार कर सौदामिनी माधवकी ओर द्रुतपदसे दौडी ।

पाठक ! माधवको छोडे बहुत काल हुआ तो अब आओ इस सौदामिनीको मार्गारूढ कराकर हम लोग बिचारे माधवके समाचार लें। पीछे आप जानही चुके हैं कि वह अपने परम प्रियमित्र मकरंदके सहित अरण्यमें मालतीका खोज करता भटकता फिर रहा था।

उसकी वह विलक्षण दुःखद अवस्थाको देख लंबी सांस ले करुणस्वरसे मकरंदने कहा, इस समय हम लोग ऐसे किंकर्त्तव्यविमूढ हो रहे हैं कि हमें कुछ नहीं सूझता कि अब हम क्या करें कैसा करें और कहां जांय। इस समय दैवकी अवकृपा और प्रतिकूलताके कारण हम लोग अनेकानेक विपत्तियोंके लक्ष्य बन रहे हैं। हम लोगोंने उस राजाकी असंख्य सेनाको जीत विजय लाभ किया पर यहां हमसे कुछभी करते धरते नहीं बनता। मालती पुनः प्राप्त होगी वा नहीं इसके विषयमें मनको दृढ विश्वासभी नहीं होता और उसके लिये चित्त बिलकुल निराशभी नहीं होता और क्षणक्षणमें मोहरूप घोर अंधकारमें मग्न होते जाता है। हाय ! यह कैसे आश्चर्यकी बात है कि इस घोर विपत्से मुक्त होनेके लिये हम लोग अनेक यत्न करते हैं। पर हमारे सब प्रयत्न और उपाय व्यर्थ और विफल होते जाते हैं। अब तो किसी निश्चित उपायकीही शरण लेनेमें भलाई है। अभीलों हम लोगोंने इतनाही जाना है कि वह यहांसे अदृष्ट हो गयी, पर वह कहां गयी उसे कौन ले गया, वा उसका क्या हुआ आदिके विषयमें कुछभी नहीं ज्ञात हुआ। तो अब हम लोगोंको किस उपायकी शरण लेनी चाहिये और इस मुग्ध दशासे हम लोगोंका उद्धार कैसे होगा आदि कुछ नहीं सूझता।

माधवके चित्तमें इतना भ्रम हो गया था कि वह मकरंदकी उक्त बातोंमेंसे एकभी न सुन सका। मालती कहीं निकटही है पर मुझे दीख नहीं पडती ऐसा समझकर वह बोला, प्रिये मालती ! तुम कहां हो सो क्यों नहीं बतलातीं ? अपने अदृष्ट

होनेका कारण वा साधन विना जताये तुम कैसी अदृष्ट हो गयीं? प्रिये! तुमने इतनी निर्दयता क्यों धारण की है? प्रसन्न होकर एक बेर मेरे गले आ लगो। मुझे तुम अपना प्राणधन और जीवन-सर्वस्व समझती हो, पर एकाएक तुम मुझसे इतनी रुष्ट क्यों हो गयीं? शंकरके मंदिरमें सुंदर कंकणालंकृत अपना कोमल कर जिसे तुमने सौंपा था और तुम्हारी प्राप्तिसे जिसने मूर्त्तिमान् महोत्सवसुख माना था वह माधव मैंही हूं। इन सब बातोंको जान बूझकरभी प्रिये! तुमने इतनी कठोरता क्यों धारण की?

विह्वल हो पुनः मकरंदसे कहने लगा, मित्र! इस संसारमें उसके समान प्रेम करनेवाली दूसरी कोईभी न मिलेगी। शंकरके मंदिरमें जो घटना हुई उसे तुम जानतेही हो। मानसिक दुःखोंके कारण उसका सकलांग कोमल कमलके नांई मुरझा गया था पर तौभी केवल मत्प्राप्तिकी आशापर प्राण धारण कर कठिन कामज्वरकी असह्य यातना उसने सहन की। अंतमें जब उसने जाना कि अब मेरा हेतु परिपूर्ण नहीं हो जाता, तब अपने प्राणोंको तृणप्राय मान उन्हें विसर्जन करनेके विचारमें वह नेकभी न हिचकी। इस इतने घोर दुःखका मूल कारण अपना हाथ मुझे सौंपनेके सिवाय दूसरा न था। विवाह होनेके पूर्व उसे उसकी निराशा थी तब उसने हृदयको विदीर्ण करनेवाला जो लवंगिकाके ढिग विलाप किया था उसे शायद तुम भूले न होगे। उसकी उस करुणध्वनिको सुन मैंभी कैसा कातर एवं आकुल हो गया था सोभी तुमपर प्रकटही है।

इस समय विरहजन्य दुःखका आवेग इतना प्रबल हो गया है कि मैं अपनी अवस्थाको तुमपर वाक्योंसे प्रकाशित नहीं कर सकता। मेरा हृदय फूट रहा है, पर उसके दो टुकडे मात्र नहीं होते। व्याकुल शरीर संज्ञाशून्य हो जाता है, पर उसकी चैतन्यता नष्ट नहीं होती। हृदयमें शोकाग्नि धां धां बल रही है, पर वह शरीरको भस्म नहीं करती। मर्मपर प्रहार करनेवाला

वामविधि बार बार दुःखद आघात कर रहा है, पर प्राणोंको हृत नहीं कर लेता; इससे जान पडता है कि अभी मुझे अनेकानेक घोर आपत्तियां भोगनेको हैं।

इस समय गगनविहारी भगवान् दिनकर आकाशके ठीक मध्यमें आ पहुँचे थे। और उनकी प्रखर किरणोंसे झुलसे हुए पशुपक्षिगण जलच्छायाकी शरण ले रहे थे। माधव एक तो दुःखसे योंही व्याकुल था तिसपर फिर इधर उधर भटकनेके कठिन परिश्रम उठाने पडे थे। इसलिये जब मकरंदने देखा कि अब भगवान् सूर्यदेवका ताप सहन नहीं किया जाता तब उसने बडी विह्वलताके साथ कहा, मित्र! जिस प्रकार वामविधि हम लोगोंको संताप देता है, उसी प्रकार अंशुमाली दिनकरमणिभी हमें झुलसाये डालते हैं तो आओ हम लोग अब मार्गकी थकावट मेटनेके हेतु इस पुष्करणीतीरस्थ वृक्षोंकी सघन च्छायामें कुछ क्षण विश्राम करें। यहांपर प्रफुल्लित कमलोंकी सुगंधसे सुवासित और जलसीकरोंसे शीतल हुआ वायु तुम्हें किंचित् विश्रांतिप्रदान करेगा अतः आओ हम लोग उस ओर चलें।

माधव इस समय नितांत उदासीन हो गया था, धूप और च्छायाका भेद वह तनिकभी न जान सकता था। उसने उत्तरमें बडी कातरतासे कहा कि, भगवान् सूर्यदेव संप्रतिकी अपेक्षाभी अधिकतर प्रखर होकर इस मेरे शरीरको जलाकर भस्मीभूत कर दे तो उनका मुझपर बडा अनुग्रह हो। मुझे तो स्निग्धच्छाया वा त्रिविध समीरकी कोई आवश्यकताही नहीं है। तौभी तुम्हारे अनुरोधका समादर करनाही चाहिये। तो लो चलो चलें उस जलाशयके तटपर चलें ऐसा कह दोनों जने उस तडागके तटपर सघन वृक्षोंकी च्छायामें जा बैठे।

मकरंद सोच रहा था कि माधवको इधर उधरकी बातोंमें लगाकर उसे कुछ विश्रांति मिले ऐसी तजवीज करनी चाहिये, योंही सोच विचार कर उसने कहा, मित्र माधव! क्या तुम इस

सरोवरकी शोभा देख चुके ? देखो तरंगमालाव्याकुल सरोवरमें संचार करनेवाले हंस अपने २ पखना फडफडाकर जलको क्षुब्ध कर रहे हैं। जल क्षुब्ध होनेके कारण कुमुदिनी उलटी सुलटी हो रही हैं। इनके योगसे इस तडागको कुछ औरही रमणीयता प्राप्त हो रही है।

उसका चित्त दूसरी ओर आकर्षित करनेके लिये मकरंदने उस सरोवरका बहुत कुछ वर्णन किया, पर माधवका ध्यान उसकी ओर नेकभी न आकर्षित हुआ। उलटा उसके चित्तमें दुःखका आवेग इतना बढ गया कि उसने वहांसे उठकर दूसरी ओर चल दिया। तब फिर मकरंदने उसके ढिग जा लँबी सांस ले कंपित स्वरसे कहा, मित्र! अब ऐसी उदासीनतासे काम न चलेगा। इसको छोड नदीतटस्थ इन सुकोमल बेतनिकुंजोंको देख चित्तको प्रसन्न करो। जाई, चमेली, बेला आदिके सुगंधित पुष्प विकसित हो जलको सुवासित कर रहे हैं। अधखुली कलिका-संपन्न वृक्षोंसे समाकीर्ण पर्वतोंकी चोटियां कि जिनपर सजल मेघ लंबायमान हो रहे हैं और जिन्हें देख २ मयूरगण मंजुल केकारव कर रहे हैं—पथिकोंका मन हरण किये लेती हैं। मित्र! प्रकृतिदेवीकी इस अलौकिक रमणीयताका अवलोकन करो। इन गिरिशिखरस्थ गगनचुंबित वृक्ष और छोटे २ स्रोत तथा उनके तीरस्थ छत्रतरु आदिके कारण वह प्रदेश नितांत मनोहर दिखाई देता है।

मकरंदका उक्त सरस वर्णन सुन दुःखभरे स्वरसे माधवने कहा, मित्र! प्रकृतिदेवीके जिन सर्वांगसुन्दर प्रदेशोंका तुम वर्णन करते हो उन्हें मैंभी देखता हूं, पर न जाने क्यों इस समय उनकी रमणीयता मुझसे देखी नहीं जाती। नेत्र डबडबाकर रुंधे कंठसे फिर बोला, कारण और क्या हो सकता है ? कुसुमित अर्जुन एवं भूर्जवृक्षकी सुगंधसे सुवासित पूर्वीय गंधवाहद्वारा प्रवाहित घनघोर घटा पर्वतोंका आश्रय तक रही हैं। मेहके जलसे भीजी हुई

धरतीका वास ले संचार करनेवाले समीरणद्वारा स्वेदका परिहार कर आनंदपूर्वक समय व्यतीत करनेके ये दिन हैं । इस वर्षाकी बहारमें जो लोग अपनी भावती प्रियाको अंक लगा सकते हैं वेही धरतीपर धन्य हैं और उन्हेंही इन मेघोंका दर्शन आनंदप्रद है । और मुझसे अभागेको तो इनके दर्शनोंसे अधिकतर दुःख होता है ।

इतनेमें मालतीका स्मरण कर बोला, प्रिये ! तुम आकर मुझे क्यों नहीं बता जातीं कि इस तमालवृक्षकैसी श्यामघटा और शीतल वायुको मैं क्योंकर देखूं और सहन करूं ? इस विचित्ररंग-चित्रित इंद्रधनुष्यको देख आनंदमग्न हो नाचनेवाले मयूरोंकी विरहिजनहृदयविदारी केकाओंको कि जो दशों दिशाओंमें प्रतिध्व-नित हो रही हैं, मैं क्योंकर श्रवण कर सकता हूं? ऐसा मकरंदसे कह माधव नितांत शोकाकुल हो गया ।

उसकी उक्त शोकापन्न अवस्थाको देख मकरंदको अपने प्रय-त्नोंपर पश्चात्ताप होने लगा । तब दुःखभरे स्वरसे उसने कहा, सखा ! जान पडता है कि संप्रति कोई भयावह दुर्दशा तुम्हारे सीसपर आनेवाली है, इतना वह बडी कठिनतासे कह पाया था कि उसके आंखोंसे टपटप अश्रुपात होने लगा, कंठ भर आया, तौभी उसने भग्न स्वरसे कहा, मित्र ! धन्य है इस मेरे वज्रकैसे हृदयको कि वह तुम्हारी इस करुणापूरित दशाको देख रहा है और तुमसे विनोद कर रहा है । ठंडी सांस ले बोला, क्या मेरे फूटे भागमें तुम्हारे लिये हताश होनाही बदा है ?

यह सुन माधव मूर्च्छित हो गया । उसे मूर्च्छित देख वह घबडा गया और आकाशकी ओर निहारकर आर्त्तस्वरसे बोला, बहिन मालती ! तुमने इतनी निर्दयता और कठोरता क्यों धा-रण की है ? बहिन ! अपने आत्मीय जनों तथा बांधवोंको छोड-कर तुमने बडे साहसके साथ इस माधवको वरा और अब इस निरपराधी दोषरहितपर इतनी निर्दयता क्यों ?

माधवको बहुत देरलों संज्ञाशून्य देख घबराकर बोला, हाय! यह वज्राघातकैसा जान पड़ता है। निठुर दैव मुझे धोखा दे चुका। इसकी मूर्च्छा तो टूटतीही नहीं। बप्पारे बप्पा! इसकी यह अवस्था देख मेरा कलेजा फटा जाता है। सकल गात्र शिथिल हुए जाते हैं। मित्रकी इस अवस्थाको देख सारा संसार ऊजड़सा बोध होता है। शोकाग्निकी ज्वालासे हिया दग्ध हुआ जाता है। इस अचिंत्य दुःखकी मर्मस्पृक् यातनाओंसे पीडित हो मेरा अं-तरात्मा अज्ञानरूप घोर अंधियारीमें लीन हुआ जाता है। जिधर देखता हूं उधर सब मोहही मोह दीख पडता है कि जो मुझे नि-तांत मंद करे डाल रहा है। मुझ अभागके लिये दशों दिशायें शून्य हो रही हैं। कहां जाऊं क्या करूं कुछ नहीं सूझ पडता।

शोकाकुल हो पुनः बोला, हाय हाय! कष्ट! परम कष्ट! यह माधव कि जो बंधुस्नेहरूप चंद्रिकाका प्रकाश है, जो मालतीके मुखचकोरका चंद्रमा है, जो इस जीवलोकमें परम श्रेष्ठ है और जो इस अभागे मकरंदका एकमात्र प्राणप्रिय सखा है वह एका-एक नहींसा हुआ जाता है। हाय हाय! सखा माधव! तुम अपने इस मित्रसे ऐसी निठुरता मत करो। तुम्हारी भेंट मुझे चंदन घनसार और सुधाकरसी शीतल भासित होती है और उस-से मेरे हृदयमें मूर्तिमान् आनंदका संचार होता है। सो तुम्हें इस भयानक आपत्तिमें ग्रसित देख मेरे तनपंजरमें प्राणपखेरू कैसे वास करेंगे?

माधवके देहपर हाथ फिराकर कातर हो बोला, निठुर माधव! मुसकुराकर एक बार तो मेरी ओर निहार। न जाने भई तेरा मन कैसा कठोर है जो मुझसे तू एक बारभी नहीं बोलता। अरे भई! कुछ तो बोल। अपने बालसखा मकरंदका स्नेहपाश एकाएक तोड़ देना क्या तुझे अनुचित नहीं जान पड़ता?

इतनेमें माधवको तनिक चैतन्य देख सहर्ष बोला, मानो ऐसा जान पडता है कि यह गिरिशिखरोपम कृष्ण मेघ जलधाराद्वारा

मेरे मित्रको चैतन्य कर रहा है । (माधवकी ओर निहारकर) धन्योऽस्मि धन्योऽस्मि ! वाह ! मेरा मित्र चैतन्य हो गया । जलद ! मैं एतदर्थ तेरा अत्यन्त कृतज्ञ हूं ।

माधव चौंकक उठ बैठा और करुणाभरे स्वरसे बोला, हा कष्ट ! मेरी प्रिया मालती इस सजल मेघमालामें खलकी प्रीतिवत् चंचलतापूर्वक चमकनेवाली चपलाको देख अति उत्कंठित होगी और इस समय उसे मेरा समाचारतक न ज्ञात होनेके कारण विरहदुःखके बोझसे न मालूम वह क्या न साहसकार्य कर बैठे । तो अब उसे मेरा शुभ संवाद अवश्यमेव सूचित करना चाहिये नहीं तो वह अपने प्राणोंको न रखेगी । पर इस संवादवाक्यको देकर उसके निकट किसे भेजना चाहिये ?

आकाशस्थ जीमूतकी ओर निहारकर प्रसन्न हो बोला, अब कोई चिंता न करनी चाहिये । मुझे योग्य दूत मिल गया । फलोंकी फसल परिपक्व होनेके कारण ये कुंज श्यामवर्णके दीख पडते हैं । और स्वल्पतरंगमालाकुल सरित्‌की उत्तर दिशाको व्याप्त करनेके लिये तमालवृक्षके फूलोंकैसा काला यह नवमेघ पर्वतकी चोटीका आश्रय लेनेकी चिंतामें है, तो इसीके द्वारा अपनी प्रियाको संदेसा भेजना ठीक होगा ।

कामकिंकरोंको जो भिन्न २ दश अवस्था प्राप्त होती हैं, उनमेंसे इस समय माधव उन्माद[1] नामकी अवस्थामें होनेके कारण जड मेघको आज्ञा देनेसे उसका पालन वह कहांतक कर सकेगा, वह दूतका कार्यभाग कहांतक पटुताके साथ कर सकेगा आदि बातोंका यत्किंचित्‌भी विचार वह न कर सका । पर उसके समीप बद्धांजलि हो उसे संबोधन कर बोला, कहो भैय्या मेघ ! तुम कुशलपूर्वक तो हो न ? तुम्हारी प्रियसखी विद्युल्लता प्रेमपूर्वक तुम्हें परिरंभण तो देती है न ? तुम्हारे द्वारके जलकणके भिखारी चात-

---

१ वियोगमें अत्यन्त संयोगोत्सुक हो बुद्धिविपर्ययपूर्वक वृथा व्यापार करनेको उन्माद कहते हैं ।

कवृन्द तुम्हारा आश्रय बराबर करते आते तो हैं न ? सखा ! तुम्हारी शोभाको चारों ओर विस्तृत करनेवाले मघवाचापरूप तुम्हारे चिह्न तुम्हारी प्रतिभाको विशेषरूपसे सुशोभित कर रहे हैं। पाठक ! बलिहारी है इस सुमनधन्वा कामकी। कविकुलगुरु कालिदासने कामपीडित जनोंके विषयमें बहुतही यथार्थ कहा है। "कामार्त्ता हि प्रकृतिकृपणाश्चेतनाचेतनेषु"।

माधवने मेघसे उक्त पृच्छा की पर वह अचेतन मेघ उसे क्या उत्तर देता ? भावीवश उसी समय मेघकी घोर गर्जना हुई और वह निकटवर्त्ती गिरिकंदराओंमें प्रतिध्वनित होती हुई चारों ओर छा गयी। उस मेघगर्जनाको सुन चारों ओर मयूरगण कुहू २ कर उठे और आनंदप्लावित हो नाचने लगे। यह सुन माधवने जाना कि वारिवाहने मेरे प्रश्नका उत्तर दिया एतावता वह उसकी प्रार्थना करने लगा।

ऐ जीमूत ! इस संसारमें तुम्हारा संचार सर्वत्र है, अतः तुम्हारी सेवामें सानुनय विनय है कि भ्रमण करते २ यदि मेरी प्रिया तुम्हें दृग्गोचर हो जाय तो तुम वहां क्षणभर ठहरकर पहिले प्रबोधिवाक्योंसे उसकी सांत्वना कर तदुपरांत मेरी अवस्थाका संवाद उसे सुनाना। पर ध्यान रहे कि इस कार्यसाधनमें उसका आशारूप तंतु न टूटने पावे। क्योंकि पहिले तो योंही इस विरहदुःखसे उसके प्राण न बचे होते पर केवल आशातंतुके आधारसेंही वह प्राणोंको धारण किये है।

मेघको वायुके योगसे धीरे २ संचलित देख माधवने जाना कि यह मेरी प्रार्थना स्वीकृत कर संवादवाक्य देनेके लिये निकला है, अतः वहभी उसके पीछे हो लिया। यह देख शोकाकुल हो मकरंद मनोमन सोचने लगा कि, बडे खेदकी वार्ता है कि इस माधवरूप निशानाथको उन्मादस्वरूप राहुने इस समय ग्रसित कर लियासा जान पडता है। ऐसा सोच वह किंकर्त्तव्यविमूढ हो मा री मा ! बप्पारे बप्पा ! भगवति कामंदकी ! शीघ्र दौडि-

यो २ इत्यादि कह २ कर उन्हें पुकारने लगा और कहने लगा देखो माधव कैसी विषम अवस्थाको प्राप्त हुआ है।

इतनेमें माधव चैतन्यसा होकर अपने जीमें सोचने लगा है मैं ऐसा पागल क्यों हो गया कि इस मेघको अपना दूत बना इसके द्वारा संदेसा भेज रहा हूं। क्या मेरी प्रिया अबलों जीवित होगी? वह जीवित हो तो ये सब बातें कामकी, नहीं तो यह सब योंही है। पर उसके तो टुकडे २ हो गये होंगे। इन कोमल कोमल लोध्रपादपोंने उसकी गोराई अपहृत कर ली है। इन मृगशावकोंने उसके तडित्की चंचलताको लज्जित करनेवाले नेत्रोंकी चपलता हरण कर ली है। उसकी मंथर गतिको मत्तगजराजने हरण कर लिया और इन लताओंने तो उसकी मधुर कोमलताका सर्वस्वही हरण कर लिया है। इन दुष्टोंके कुचक्रमें वह अकेली फँस जानेके कारण इन अधमोंने उसे आपुसमें लूट लिया। इन सब बातोंको जान बूझकरभी अब मैं संवादवाक्य सिरींकी नांई किसके निकट भेज रहा हूं? प्रिया! क्यों नहीं बता देतीं कि इस समय तुम कहां हो?

उसे योंही विलपते विलखते देख मकरंदने अपने हृदयको संबोधन करके कहा, रे हृदय! जो अशेष गुणोंका आगार है, जो मेरा जीवनसर्वस्व है, उस मेरे बालसखा माधवको अपनी प्रियाके विरहजन्य कठोर दुःखकी यन्त्रणाओंसे अत्यन्त कातर एवं विह्वल देख रे अभागे! तेरे अभीलों दो टुकडे नहीं हो गये यह परम आश्चर्यघटना है।

माधवने पुनः कहा, इस संसारमें परस्परकी समता रखनेवाली अनेक वस्तु विधिने निर्मित की हैं, एतावता लोग यह कैसे जान सकते हैं कि अमुक २ ललनाकुलकलशही मेरे हृदयमंदिरकी स्वामिनी है? अतः उसके अभिज्ञानार्थ उसका कुछ वर्णन करना समुचित है।

ऐसा विचार कर करसंपुटित हो अरण्यवासी सकल प्राणियों-

का उसने पुकारकर कहा कि, तुम लोगोंकी सेवामें नमस्कार कर मैं कुछ प्रार्थना किया चाहता हूं। तो क्षणकाल मनोयोगपूर्वक मेरी प्रार्थना श्रवण कर मुझे अनुगृहीत करो। जिसके सकलावयव अत्यन्त रमणीय हैं और जिसके रूपमाधुर्यमें अणुमात्रभी न्यूनता नहीं है, उस कुलवधू मेरी प्राणेश्वरी मालतीको तुम लोगोंने कहीं देखा है क्या? वा तुम लोग इतना तौभी बतला सकते हो कि उसका क्या हुआ, वह कहां गयी? उसके असामान्य सौंदर्यका वर्णन तो मेरी कथनशक्तिसे बाहिः है, पर उसका वयःक्रम मात्र बतला सकता हूं। उसकी अवस्था वही है कि जिसमें भगवान् मदन परम मित्रता संपादित कर हृदयप्रदेशमें यथेच्छ संचार करते हैं और शरीरके समस्त अंगप्रत्यंग अपनी २ विलक्षण शोभासे कांतियुक्त होते हैं।

आसपास निहारकर पुनः कहने लगा, यह प्रसंग बडाही कठिन है। मयूरगण अपने पिच्छमें अपनी प्रियाके वदनको छिपा रहे हैं, चकोरगण आनंदातिशयसे उन्मत्त हो अपनी प्रियाको अनुकूल कर रहे हैं और काले मुखवाले शाखामृग अपनी प्रियाओंके मुखपर पुष्पपरागका लेप कर रहे हैं। सारांश अपने २ दैवकी अनुकूलताका फल सभी प्राप्त कर रहे हैं। तो ऐसे समयपर मैं याचक बनकर जाऊं तौभी किसके द्वारपर?

यह कपि अपने रदनकी लालिमाद्वारा अपने प्रियाकी दंतपंक्तिको आरक्त कर उसके वदनको नेक ऊपर उठाकर उसके अधरोंका अमृतपान कर रहा है। उसी प्रकार यह मस्त हाथी अत्यन्त सुखपूर्वक अपने शुंडादंडको अपनी प्रियाके कांधेपर समाश्रित कर आनंदानुभव कर रहा है। इस समय तू मेरी प्रियाके ढिग मेरा संवादवाक्य लेकर जा ऐसा कहनेके लिये अवकाशभी कहां है? वह अपनी प्रियाके कंडूयमान कपोलको अपने लंबे २ दांतोंके अग्रभागसे बडे प्रेमके साथ खजवा रहा है और वह नेत्रोंको संपुटित कर सुखका अनुभव ले रही है। अपने बडे कर्णोद्वारा उसपर

वायु कर रहा है। अर्धचर्वित कोमल कोमल पल्लव सूण्डके अग्रभागद्वारा प्रियाके मुखमें अर्पित कर रहा है। मैंने नरदेह तो पायी पर उसका सार कुछ न जाना। प्यारीके सनेहसुखका अनुभव लेनेवाला यह वनैला हाथीही मेरी अपेक्षा धन्य है।

दूसरी ओर करिणीके विरहसे कातर हुए एक हाथीकी ओर निहारकर बोला, यह तो मेरेकैसाही दुखिया जान पडता है। मेघोंकी गर्जना सुनकरभी यह गर्जना नहीं करता, सरोवरके तीरपर होनेपरभी कमलोंको तोडकर नहीं खाता, इसका मद नहींसा हो जानेके कारण गंडस्थलपर गुंजायमान होनेवाले भ्रमर दूसरी ओरको चले गये अतः यह बिचारा दीनकैसा देखाई पडता है। इसकी दशा स्वरूपसे कहे देती है कि यह अपनी प्यारीके वियोगदुःखसे कातर एवं व्याकुल हो रहा है।

थोडासा आगे बढकर पुनः बोला, जो हो अब अधिक परिश्रम करना व्यर्थ है। आनंदमग्न हो अपनी प्रियाको साथ ले मधुर एवं गंभीर गर्जना करता हुआ यह मदोन्मत्त करियूथप ईषत् विकसित कमलोंकी सुगंधको हरण करनेवाले शीतल एवं मंथर वायुका सेवन कर रहा है और वह करिणीके साथ सरोवरमें जलक्रीडा कर अपनी सूंडसे उसपर जल फेंक रहा है। इस समय यह मतंगज बडा रमणीय देखाई पडता है इससे परिचय करनेमें शायद मुझे कुछ लाभ हो।

ऐसा विचार कर उसने उस हाथीसे बडे गंभीर स्वरसे कहा, करिनाथ! नागपति! तुम्हारा तारुण्य नितांत सराहनीय है। अपनी प्रियाको प्रसन्न करनेकी कलामें तुम बडे चतुर जान पडते हो, पर भाई! तुमने थोडी भूल की। लीलोत्पाटित कमलनालको खाते २ तुमने अपनी सूंडसे पंकरुहकी सुगंधसे सुवासित हुए जलका कुल्ला अपनी प्रियापर किया सो तो ठीकही किया, पर इस तडागमें स्नान कर लौटतीवार तुमको उचित था कि तुम सप्रेम पुरइनका छत्र अपनी प्रियाके सीसपर धारण करते पर वह तुमने नहीं किया सो क्यों?

भला वह पशु इसे क्या उत्तर देता? बिना उत्तर दिये उसे
ो बढते देख माधवने फिर कहा, अरे! यह तो मुझे तिरस्कृत
आगेको चला जा रहा है। हाय! मैं ऐसा मूर्ख क्यों हो
ा कि इसे वनचर जान बूझकरभी मकरंदकैसे रसिक मित्रके
थ करनेवाली बातोंको मैं इसके साथ कर रहा हूं।

इस समय जब आपको मकरंदका स्मरण हुआ, तब हाथीकी ओरसे चित्त उचटकर मकरंदकी ओर लगा। मकरंद तो निकट-ही था पर उसकी ओर देखता कौन था? इस समय वह मेरे ढिग नहीं है ऐसा जानकर उसने कहा, प्रिय सखा मकरंद! तुम्हारे बिना मैं अकेलाही जीवित हूं। मेरे इस जीवित रहनेको धिक्कार है! मित्र! तुमको छोडकर मैं इन रमणीय दृश्योंको देख रहा हूं, इन-कोभी धिक्कार है! जिस दिन मुझे तुम्हारे सत्समागमका लाभ नहीं हुआ उस दिनको विधि मेरी आयुष्यगणनाके लेखेमें न ले और तुम्हारे बिना जो मुझे आनंदकी मृगतृष्णा हो आती है उसेभी बार बार धिक्कार है!

मकरंद उसकी उक्त बातोंको सुनकर नितांत भयचकित हो रहा। कामी पुरुषोंको प्यारीकी वियोगदशामें जो अवस्थायें प्राप्त होती हैं, उसमेंसे उन्माद उपांत्यावस्था[1] है। यदि कामी इस दशाके पार न जा सका तो अंतिमदशा मृत्यु उसे ग्रसित किये बिना नहीं छोडती। अतः मकरंद उस समय उसकी उन्माद् अवस्थासे रक्षा करनेकी गहरी चिंतामें मग्न हो रहा था। माधवने मेरा स्मरण किया यह देख उसने कहा, हाय हाय! इस समय यह उन्मत्त होनेके कारण मोहवश मेरे निकट होनेपरभी यह मुझे नहीं देख सकता। जो हो पर मुझपर इसका जो स्नेह है उसका संस्कार तो प्रबुद्ध हो चुका है। यह अभीलों यही समझता है कि मैं इसके निकट नहीं हूं। तो अब मैंही इसे स्मरण दिलाऊं

---

१ रसकुसुमाकरकारने इसे सातवीं अवस्था माना है।

तभी ठीक पडे ऐसा सोचकर वह **माधवके** सन्मुख जा खडा हो बोला, मित्र ! यह अभागा **मकरंद** तुम्हारे निकटही खडा है।

यह सुन **माधवने** नेत्र खोल ऊपर देख सकरुणस्वरसे कहा, प्रिय सखा! आओ ऐसे सामने आकर मेरे कंठसे लगो, प्यारी **मालती** तो कहीं दीखही नहीं पडती। उसका अनुसंधान करते २ अब उसके विषयमें मैं हताश हो अतीव श्रांत हो गया हूं। ऐसा कह वह मूर्च्छित हो गया।

माधवको भेंट देनेकी इच्छा प्रकाशित करते देख **मकरंदको** परम आनंद हुआ। अब मैं अपने परम प्रिय सखाको गले लगाता हूं ऐसा कह उसने उसे कंठ लगायाही था कि उसे मूर्च्छित देख सदयांतःकरणसे वह कहने लगा, हाय हाय! यह घोर विपद! मित्र मेरी भेंटके लिये उत्कंठित हुआ और साथही संज्ञाशून्य हो गया। अब इसकी आशा करना निरर्थक है। अब मुझे निश्चयही जान लेना चाहिये कि यह मेरा मित्र न * * * * * !

नेत्रोंमें जल भर **माधवको** पुकारकर बोला, सखा **माधव** ! तुम्हारे प्रेमातिशयके कारण कोई भ्रम न होनेपरभी योंही कंपायमान हो मैं अभीलों जिस भयसे भयभीत हो रहा था वह सब संप्रति तुम्हारी अचिंत्य करुणामय अवस्था देख क्षणमात्रमें लुप्तसा हो गया। तुम्हारे विषयमें अब कोई भय नहीं है कि कब क्या होगा। मित्र ! ऐसा जान पडता है कि इसके पूर्व जो क्षण बीते वेही भले थे। क्योंकि उस समय तुम्हारी मानसिक दशा अच्छी न थी, तौभी तुम सचेत थे, अतः मुझे किंचित् भला जान पडता था। पर संप्रति तुम्हें अचैतन्य देख यह मेरा शरीर मुझे केवल बोझसा जान पडता है। मेरे प्राण वज्रकंटककी नांई मुझे वेधते हैं। सब दिशा शून्यमय जान पडती हैं और समस्त इंद्रियें निष्फल बोध होती हैं। यह समय बडी कठिनतासे कट रहा है। तुम्हारे वियोगके कारण यह सारा संसार मुझे बिलकुल ऊजडसा जान पडता है!

कुछ क्षणलों मनहीमन कुछ सोच विचार कर बोला कि, परम प्रिय मित्र **माधवको** महायात्रा करते देख मेरे निगोडे प्राण इस अधम शरीरका परित्याग नहीं करते हैं, न मालूम अभी ये पामर और किस लालसामें फँसे हैं। जो हो मैं तो यही समझता हूं कि अब इनका रहना निष्फल और व्यर्थ है। तौ इस पर्वतकी चोटी-पर चढ उसके निम्नप्रदेशमें बहनेवाली **पाटलावती** नदीमें कूद पडना चाहिये ऐसा सोचकर नदीकी ओर देख बोला, ओः यह नदी बडी प्रबलताके साथ प्रवाहित हो रही है, इस मार्गसे जाकर मैं शीघ्रही **माधवको** परलोकमें मिल सकूंगा।

ऐसा कह **मकरंद** थोडासा आगेको बढा और फिर पीछे मुडके सकरुण अंतःकरणसे मूर्च्छित **माधवकी** ओर निहारकर बोला, हाय हाय! इस नीलसरोरुहगातको वार वार कंठ लगाता हूं पर तौभी मेरा अंतरात्मा तृप्त नहीं होता। धिक्कार है मुझ अभागेको कि जिस प्रकृतिसुलभ मनोहरता एवं कमनीयतायुक्त सर्वांगसुन्दर शरीरको सविस्मय **मालतीकी** दृष्टि नूतन २ विलासके साथ अवलोकन करती थी, उसी शरीरको इस विपन्न अवस्थामें देखनेके लिये मैं जीवित बना हूं। मेरे इस अधम जीवनको वार वार धिक्कार है!

माधवकी विद्या और उसके गुणनिचयोंका स्मरण कर पुनः रुंधे हुए कंठसे बोला, यह महदाश्चर्य है। इसके इस छोटेसे शरीरमें इतने गुणकलापोंका इतनी अल्प अवस्थामें क्योंकर समावेश हुआ, वास्तवमें यह घटना बडी विस्मयजनक बोध होती है। सखा **माधव**! षोडशकलापरिपूर्ण निर्मल हिमांशुको आज राहुने ग्रसित कर लिया। घनघोर घटा प्रबल वायुके वेगसे छिन्न भिन्न हो गयी। फलोंके बोझसे नम्र होकर धरतीका दर्शन करनेवाले उत्तम पादपको दावाग्निने भस्म कर दिया। आज संसारसे एक नररत्नके उठ जानेके कारण संसार मरघटासा भयावह जान पडता है। मित्र! तुम अचैतन्य हो गये हो, पर तौभी मैं तुम्हें

गले लगा रहा हूं। न मालूम क्यों संप्रति मुझे यही बात भाती है।

ऐसा कह माधवको गलेसे लगा करुणातिशयसे कातर हो-कर बोला, हाय हाय! प्रिय सखा, विमल विद्याके निधान, गुणगुरो, मालतीके जीवनसर्वस्व, कामंदकी और मकरंदके चखचकोरके चंद्र, मित्र माधव! इस जन्मकी तुमसे मेरी यह अंतिम भेंट है। मित्र! अब मकरंदके क्षणमात्रभी जीवित रहनेकी आशा मत करो। आजन्म एक साथ रहने तथा माताका स्तनपानतक एक साथ करनेके कारण इस समय मित्र! तुम्हारा अकेले उत्तरक्रियाका तिलोदक पान करना मुझे अत्यन्त अयुक्त जान पडता है। अतः मैंभी तुम्हारे साथही आता हूं। लो देखो यह मैं आया।

ऐसा कह मूर्च्छित माधवको वहीं छोड मकरंद गिरिशिखर-पर चढ गया और उसके निकट वाहिनी पाटला नदीको संबो-धन कर बोला, भगवति! प्रिय सखा माधव जहां गया हो वहीं मुझे पहुँचा दे मेरी इच्छा यही है कि जन्मजन्मांतरमेंभी उसे अपने स्वार्थरहित सत्यप्रिय प्रिय मित्रसे विलग न होने पाऊं।

इस प्रकार प्रार्थना कर वह नीचे कूदनेहीको था कि औचक पीछेसे किसीने आकर उसे अपनी ओर खींच लिया। इस उप-न्यासके ग्रन्थपठनप्रिय पाठक लोग तो शायद जानही गये होंगे कि इस समय मकरंदकी रक्षा करनेवाला कामंदकीकी प्रिय सखी सौदामिनीके अतिरिक्त दूसरा कोई न था। क्योंकि आप लोग पीछे तो पढही चुके हैं कि सौदामिनी मालतीको कपालकुंडलाके कुचक्रसे छोडा, पहिचानके लिये उससे मौल-सिरीकी माला ले माधवका खोज पता लगाते आकाशमार्गसे चली जा रही थी। सो जब उसने मकरंदको प्राणविसर्जनार्थ तुं-गगिरिशिखरसे कूदनेके विचारमें देखा, तब वह उसके उस साह-सकार्यको रोकनेके लिये तत्क्षण उसके पास आ गयी। उसके एकाएक हाथ पकडकर पीछे खींचनेसे चकित हो मकरंद उसके मुँहकी ओर निहारने लगा, पर वह उसे पहिचान न सका। अतः

उसने विनीतभावपूर्वक जिज्ञासा की बाहिन ! तुम कौन हो ? और विना कारण तुमने मुझे पीछे क्यों हटा लिया ?

उत्तरमें **सौदामिनी**ने गंभीरस्वरसे कहा, वह फिर बताऊंगी। क्या **मकरंद** तुम्हाराही नाम है ?

मकरंद–छोडिये २ वही मैं दुर्भागा **मकरंद** !

सौदामिनी–तो फिर ऐसा साहस मत करो । मैं तपस्विनी हूं। तुमारी उदासीनताका कारण मैंने जान लिया। **मालती** जीवित है और उसके जीवित रहनेका चिह्नभी मेरे पास है । लो देखो यह वही मौलसिरीकी माला है । ऐसा कहकर उसने **मकरंद**को **मालती**की दी हुई माला दिखलाई। उसे देख लंबी सांस ले मा! क्या सचमुच **मालती** अभीलों जीवित है ऐसा उसने पूछा।

उत्तरमें **सौदामिनी**ने घबराकर कहा, हां वह तो जीवित है। पर तुझे प्राणविसर्जनके लिये उद्यत देख मेरे जीमें **माधव**के विषयमें नानाविध शंकाएं उपस्थित होती हैं और उनके योगसे मेरा हिया कँपा जाता है । भला पहिले मुझे यह तो बता दे कि इस समय **माधव** कहां है ।

मकरंद–मा उसे नितांत मूर्च्छित देख निराश हो मैं उसको छोड आया। पर आओ अब शीघ्र उसके ढिग चलें ऐसा कह **मकरंद सौदामिनी**को साथ ले **माधव**की ओर उठ दौडा ।

कुछ क्षणके उपरांत जब **माधव**की मूर्च्छा टूटी तब सचेत हो बोला, हैं इस समय मुझे किसने चैतन्य किया ? ठीक २ समझ गया । जान पडता है कि मेरी इच्छा न होनेपरभी नूतन मेघजलके बिंदु धारण करनेवाले इस शीतल समीरणने यह उद्योग किया है । मैं तो मूर्च्छितही भला था ।

दूरहीसे **माधव**को चैतन्य देख **मकरंद**को अति आनंद हुआ। **माधव** और **मकरंद**को निहारकर **सौदामिनी** अपने जीमें सोचने लगी कि **मालती**ने इन दोनोंके रूपका जैसा वर्णन किया था वैसेही ये हैं ।

त्रिविध वायुने मुझे चैतन्य किया सो अच्छा नहीं किया ऐसा जानकर माधवने उसे संबोधन कर कहा, भगवन् प्राच्यसमीरण! सजल वारिवाहोंको गगनमंडलमें चारों ओर तुम भलेही फिराया करो। मेघोंके दर्शन करा चातकोंको भलेही आनंद दिया करो। मयूरोंको नचाया करो। केतकीको सुदृढ होनेकी सहायता दिया करो। यह सब तुम्हारे कर्त्तव्यकार्यही हैं। पर प्रियाके असह्य विरहदुःखसे मूर्च्छित हो दुःख भूले हुए मनुष्यको निर्दयताके साथ सचेत कर पुनः उस बापुरेको दुःख देनेमें तुम्हें कौनसा लाभ होता है?

यह सुन मकरंद बोला, कि सकल प्राणिमात्रोंको जीवित रखनेवाले वायुने इसे जीवित किया यह बहुतही उत्तम हुआ।

माधवने कृतांजलि हो वायुसे पुनः कहा, कि भगवन्! तुमने मुझे जीवित किया सो भला न किया। अस्तु जो हुआ सो हुआ। अब मेरी एक याचनाका स्वीकार कर मुझे कृतार्थ कीजिये। विकसित कदंबसुमनके रजःकणके साथ जहां मेरी प्रिया मालती हो वहां मेरे प्राणोंको पहुँचानेका अनुग्रह कीजिये। यह न हो सके तो उसके अंगकी सुगन्ध थोडीसी तौभी मुझे ला दीजिये। कैसाही करके कीजिये पर मुझपर इतना उपकार अवश्यही कीजिये। क्योंकि तुम्हारे विना मुझे दूसरी गतिही नहीं है। योंही प्रार्थना करता हुआ हाथ पसारकर निश्चल खडा हो रहा।

इस समय सौदामिनी उसके बिलकुल निकटही अंतरिक्षमें थी। मालतीके विषयमें वह निपट निराश हो गया था। मालतीके सुखसमाचारको एकाएक सुनकर उसे शायद हर्षवायु हो जायगा अतः उक्त शुभसंवाद उसको क्रमशः सुनाना समुचित जान उसने पहिले उसके जीवित रहनेके प्रमाणस्वरूप मालतीके दिये हुए बकुलपुष्पहारको उसकी अंजलीमें छोड दिया।

मालाके औचक हाथमें पडतेही विस्मित हो उसने सहर्ष कहा अरे यह तो मेरीही गुहीसी जान पडती है। प्रियाके तुंगस्तनकल-

ओंपर बहुत काललों वास कर कामसदन मौलसिरीके सुमनोंकी बनायी हुई यह माला यहां अकस्मात् क्योंकर आयी ? इसमें तो कोई भ्रम और संशय हैही नहीं कि यह मेरीही ग्रथित की हुई माला है ।

उसे भली भांति निहारकर बोला, यह देखो जब उसके पूर्णेंदु सरिस रमणीय मुखको देखनेमें मेरा चित्त उसीकी ओर लगा था और लवंगिका उसे शीघ्र पूरी कर देनेका अनुरोध कर रही थी अतः इसका अंतिमभाग यथा उचित रीतिसे गुंफित न हो सका। तौभी केवल प्रेमातिशयके कारण जिसे यह अत्यन्त प्यारी हो गयी थी उसीकी यह है इसमें कुछ संदेह नहीं है ।

मालाके दृष्टिगत होनेके कारण माधवको महत् आनंद हुआ। वह प्रथमसे उन्मत्तावस्थामें थाही एतावता सहसा खडा होकर बोला, प्रिये ! दबकी क्यों बैठी हो ? यह देखो तुम्हें मैं पकडता हूं ? ऐसा कह वह कुछ डग आगेको बढा पर मालती तो वह थीही नहीं ।

तब रुष्टसा होकर फिर बोला, मेरी दुःखकारक अवस्थाको न जाननेवाली मालती ! तुमसे अब क्या कहूं और कहांतक कहूं। तुम्हारे वियोगमें ऊबऊबकर मेरे प्राण इस शरीरका त्याग करनेकी चिंतामें हैंसे जान पडते हैं । हृदय फूटासा जान पडता है । शरीर झुलस गयासा बोध होता है, जिधर देखता हूं उधर घोर अंधियारीही छाईसी जान पडती है । मैं अपनी अवस्थाका वर्णन तुमपर इस अभिप्रायसे नहीं प्रकाशित करता हूं कि तुम उसे श्रवण कर शीघ्र चली आओ और न तुमसे हँसीही करता हूं पर मेरा अभीष्ट हेतु इतनाही है कि मेरी यथार्थ अवस्थाका ज्ञान तुमको हो जाय तौ प्रिया अब कठोरता छोडकर शीघ्र मेरे नेत्रोंको आनंद प्रदान करो ।

मालती दीख पडेगी इस आशासे माधवने चारों ओर बडे मनोयोगके साथ उसे निहारा, पर वह तो इस समय श्रीपर्वत-

पर थी, उसे वहां क्यों दिखायी देने चली। जब वह कहीं न दीख पडी तब खिन्न होकर बोला, हाय मैं कैसा पागल हूं! यहां कहांकी मालती? बकुलमालाको संबोधन कर बोला, री माला! मेरी प्रियाकी तू बडी भावती है और मुझपर तूने बहुत उपकार किये हैं इसलिये मैं तेरा स्वागत करता हूं। प्रियसखी! बकुलमाला! जब मेरी प्रियाको कामकी विषम पीडाने सताया था और उसका सुकोमल गात कामाग्निसे दग्ध हुआ जाता था, उस समय उस कमलपत्राक्षीको तेरे स्पर्शमात्रसे मदालिंगनसदृश आनंदानुभव हुआ और उसीके आधारसे वह प्राण धारण किये रही।

पुनरपि सकरुण दृष्टिसे उस मालाकी ओर निहारकर बोला, बकुलमाले! तेरे बारबारके भिन्न २ प्रसंगपर आने जानेके परिश्रमको मैं नहीं भूला हूं। अर्थात् आनंदसंमिश्रित कामज्वरको प्रदीप्त करनेवाले और दृढानुरागको हृदयमंजूषामें बंद करनेवाले तेरे गमनागमन अर्थात् मेरे कंठसे उसके गलेमें जाने और उसके गलेसे मेरे कंठमें आनेका वारंवार स्मरण होता रहता है। हाय हाय! ऐसा कह उस मालाको वक्षस्थलपर धरकर वह एकाएक मूर्च्छित हो गया।

इतनेमें मकरंदने उसके ढिग आ वायुकरके कहा, सखा चैतन्य हो चैतन्य हो। अब व्यर्थके क्यों दुःखी होते हो?

माधव सावधान हो सखेद बोला, मित्र! क्या यह देखते नहीं हो कि मालतीकी प्राणाधार यह बकुलमाला न जाने एकाएक मुझे कहांसे मिली। आसपास देखता हूं तो कहीं कोई नहीं दीख पडता तब यह माला आयी तो कैसी आयी कुछ नहीं जान पडता। भला तुम्हारे ध्यानमें क्या जंचता है, यह कहांसे आयी होगी?

उत्तरमें मकरंदने कहा, सखा! देखो यह एक बडी योगेश्वरी आयी हैं। इन्हींके द्वारा तुमको वह माला प्राप्त हुई है।

सौदामिनी निकटही थी। मकरंदने उसकी ओर इंगित कर

कहा तब माधवने हाथ जोड विनीतभावपूर्वक कहा, देवी साध्वी ! प्रसन्न होकर प्रथम मेरी प्रियाके शुभसमाचार कहो ।

उत्तरमें सप्रेम सौदामिनीने कहा, वत्स ! घबराओ मत । तुम्हारी प्रिया जीवित है । कुछ चिंता मत करो ।

सौदामिनीद्वारा मालतीके जीवित रहनेके शुभसमाचारको सुन माधवका चित्त स्वस्थ हुआ और जी ठिकानेपर आया और वह आनंदित हुआ । वदनपर प्रसन्नताके चिह्न झलकने लगे । अनंतर मालती हृत कैसी हुई और अब वह कहां है आदि बातें उन दोनोंने सौदामिनीसे पूछीं तब उसने कहा, जब करालादेवीके मंदिरमें नराधम अघोरघंट मालतीको बलि देता था तब माधवने उसका वध किया था ।

सौदामिनी और ब्योरा कहतीही थी कि माधवने उसकी बातको बीचहीमें रोककर कहा, देवी ! बस, रहने दीजिये, अब परिश्रम न करिये । आगेका वृत्तांत मैं सब जानता हूं ।

मकरंदने जिज्ञासा की कि, मित्र ! तुम क्या जान गये और कैसे जान गये ?

माधव अरे भाई ! दूसरी बातही क्यों होगी । उस नरपिशाच अघोरघंटकी चेली दुष्टा कपालकुंडला जीती है मुझसे बदला लेनेके लिये उसने मालतीको अपहृत कर उसका सर्वनाश करनेका प्रण किया था । वही उसने पूर्ण किया होगा । इसके सिवा और क्या होगा ?

मकरंदको विश्वास न हुआ कि यह घटना ऐसीही होगी एतावता उसने सौदामिनीसे पुनर्वार पूछा, देवी ! क्या माधवका कथन सच है ? उत्तरमें उसने कहा हां माधवका कथन सत्य है । सौदामिनीद्वारा मालतीके जीवित रहनेके मंगल समाचार सुन अब यद्वातद्वा कुतर्कना करनेकी कोई आवश्यकता न थी । पर तौभी माधवने सोचा कि गुरुका वध करनेवालेसे वैरका बदला लेनेके लिये उद्यत हुई कपालकुंडलासी राक्षसीके हाथसे माल-

तीका बच जाना सर्वथा असंभव जान पडता है। सौदामिनी कदाचित् मेरी सांत्वना करनेके हेतु कहती हो कि वह जीवित है। मालती तो पञ्चत्वको प्राप्त होही गयी, उसके गलेकी माला इसने मुझे योंही दिखायी है, ऐसा समझकर उसने मकरंदसे कहा कि, शरच्चंद्रिकासुन्दरताके गुणपर मोहित हो कुमुदबांधवसे संयुक्त हुई हो तो इससे बढकर उत्तम और क्या हो सकता है, पर उसमें यह घोर विपत्! क्षणिक मेघावलीने उन्हें वियुक्त किया यह क्यों?

माधवने मालतीका स्मरण कर कहा, प्रिये! हाय हाय! तुमको मदर्थ घोर दुःख सहन करने पडे। कमलवदनी! जिस प्रकार उत्पातकारक धूमकेतु चंद्रकलाको ग्रसित कर लेता है उस प्रकार तुम इस दुष्ट कपालकुंडलाद्वारा ग्रसित की गयीं।

कपालकुंडलाको संबोधन कर बोला, कपालकुंडला! मत्प्रियासदृश ललनाकुलललामको संसारमें समुत्पन्न देख संसारका महद्भाग्य समझ तुमको उसका प्यार करना उचित है। तुमको उसके साथ पूतनाकी नांई बर्त्ताव करना अनुचित है। तुमको उचित है कि तुम उसके कल्याणकी चिंता करो। सुगंधित पुष्पोंकी प्रकृतिसुलभ योग्यता है कि वे सीसपर धारण किये जाते हैं। उन्हें पददलित करना सर्वथा अयोग्य एवं अनुचित है।

विनाकरण दोनोंको भ्रमाकुलसे हो दुःखित होते देख सौदामिनी बोली, वत्स माधव! निष्प्रयोजन दुःखी मत हो। वह दुः कपालकुंडला अत्यन्त पाषाणहृदय है। उसकी वैरिन मैं वह न होती तो वह यह जघन्यकृत्य करनेको समर्थ होती।

यह सुन माधव और मकरंदने कृतज्ञतापूर्वक उसे प्रणाम क कहा, देवी! तुमने हमपर बडा अनुग्रह किया है। पर हमपर या सराहनीय अनुकंपा करनेवाली उदारचेता तुम कौन हो? सो कहो

उत्तरमें सौदामिनीने कहा उसकी अभी कोई ऐसी आवश्यकता नहीं है। जब समय आ जायगा तब वहभी कह दिया जायगा। ऐसा कह उसने उठ खडा हो कहा देखो, इस समय

गुरुसेवा तपोवल और मंत्र तंत्र तथा योगसिद्धिके बलसे आकर्षिणी सिद्धिको छोडती हूं। ऐसा कह माधवको साथ ले वह एकाएक आकाशमंडलमें उड गयी ।

सौदामिनीको एक क्षणमें अंतर्धान होते देख आश्चर्यचकित हो मकरंदने कहा, यह क्या हुआ? क्षणज्योति चमककर एकाएक घोर घनघटामें जैसे विलीन हो जाती है वैसेही यह सौदामिनी अंतर्द्धान हो गयी और उसके साथ प्रियसखा माधवभी गुप्त हो गया यह क्या रहस्य है ? कुछ क्षण मनोमन सोच विचार कर बोला, उस दिव्यगुणसंपन्न तपस्विनीके विलक्षण प्रभावके व्यतिरेक और कुछ नहीं है । वह अपने तपोवलसे सब कुछ कर सकती है ।

कुछ क्षणलों फिर गंभीर चिंतामें मग्न हो विचार कर बोला, यह बात हमारे भलेकी है वा अन्यथा है कुछ समझमें नहीं आता । प्रियसखा माधवको यदि सौदामिनीही ले गयी होगी तो चिंता करनेकी कोई बात नहीं है, पर कपालकुंडला और उसकी सम्मतिसे यदि यह कार्य हुआ होगा तो यह बडा अनर्थ हुआ समझना चाहिये । जो हो अब इस समय मेरी सुधबुध सभी जाती रही । इसके सिवा उस तपस्विनीके आश्चर्य सामर्थ्यको देख मेरे उन्हींके विचारमें मुग्ध हो जानेके कारण इस समय मुझे पिछली बातें सब विस्मृत हो गयीं और माधवको अदृष्ट देख एक नूतन भयकी चिंतासे मन जर्जर हो रहा है । इसके पूर्व क्षणमें मालतीके शुभसमाचार सुन मेरे मनमें जो आनंदका आवेग हुआ था सो अब नष्ट हो गया और साथही माधवके अदृष्ट हो जानेके चिंताने मुझे दबा दिया । परस्परमें विपरीत दो घटनाएं युगपद् होनेके कारण मेरे चित्तमें विकारसंकर हो गया है । अस्तु ।

इस समय यहां विचार करते बैठना केवल व्यर्थ कालातिपात करनाही है । भगवती कामंदकी तंत्रमंत्रादि विद्यामें निपुण

हैं । इस योगेश्वरीकी कृतिको कदाचित् वे समझ सकेंगी और शायद इन्हें वे जानतीभी हों । इस बृहत् काननमें वे हमारे साथही आयी थीं । मदयंतिका और लवंगिकाभी उनके साथही होंगी । मैं माधवके साथ हो गया अतः उनके साथ भुलावा पड गया। तो अब उनकी टोह लगा उनसे मिल उन्हें यह सब समाचार सुनानेसे इसका रहस्य जान पडेगा । ऐसा विचार कर वह उनके अनुसंधानके अर्थ प्रास्थित हुआ ।

दसवां परिच्छेद ।

पाठक ! कामंदकी मदयंतिका और लवंगिकाको मालतीका अनुसंधान करनेमें प्रवृत्त करा आप लोग इधरको चले आये उन अवलाओंकी उस बृहत् अरण्यमें क्या दशा हुई होगी सो जाननेके लिये अब आप लोगोंका चित्त उत्कंठित हो रहा होगा अतः आओ अब चलके उनके समाचार लें ।

उक्त अवलात्रय मालतीका खोज पता लगाते २ जब थक गयीं तब कामंदकीने नेत्रोंमें आंसू भर शोकविह्वल हो कहा, वत्स मालती ! इस समय तू कहां है ? मुझे उत्तर क्यों नहीं देती ? बचपनसे मेरी गोदमें खेल कूदकर तूने इतने दिन व्यतीत किये। उन्हीं तेरी सब बाललीला और मधुर सोहावनी बालपनकी तोतली बातोंका प्रतिक्षणमें स्मरण होकर मेरा हृदय फटा जाता है और शरीर कंपायमान हो रहा है । मेरी रानी ! बाल्यावस्थामें जब कभी तू निष्प्रयोजन मचलकर रोती और हँसती तबकी तेरे अनियारे दंतोंकी छटा और मुखकमलकी मनोहरता कुछभी किये मेरे नेत्रोंके आगेसे हटती नहीं है ।

लवंगिका और मदयंतिकाने करुणार्त हो कहा, हाय ! हाय ! प्रिय सखी मालती ! कहां जा बैठ रही है सो आकर का

क्यों नहीं देती ? बलिहारी है उस कुलिशकठोरहृदयवाले विधिकी कि जिसने तेरे सिरिसकुसुमसरिस कोमल शरीरपर तुझे अकेली असहाय पा ऐसा कठिन वज्राघात किया !

माधवका चिंतवन कर उन तीनोंने कहा महाभाग **माधव** ! यह जीवलोक तुझे आनंदके साथही शून्यमय जान पडने लगा होगा !

कामंदकीने विशेषतर दुःखित हो **मालती** और **माधवका** स्मरण कर कहा, वत्स **मालती** ! वत्स **माधव** ! जिस तुम्हारी भेंटके कारण क्षणक्षणपर नूतन २ रस प्रादुर्भूत होता उस योगको तुम्हारे दुर्भाग्यने ऐसा नष्ट कर डाला कि जैसे कोमल लता और वृक्षके समागमको झंझावात नष्ट कर देती है ।

लवंगिकाने दुःखके आवेगसे उन्मत्तसी हो अपने हृदयसे कहा, रे हृदय ! तू नितांत निठुर है । जान पडता है तू पोलादके संमेलसे बनाया गया है । दुःखके इतने आघात हुए और होतेही जाते हैं पर उन सबको सहते जाता है, अभीतक फूटा नहीं है । एक बार फूट जा तो निबटेरा हो ऐसा कह छाती कूटकर वह धमसे नीचे गिर पडी ।

उसकी उस दीन अवस्थाको देख बडे गंभीर स्वरसे **मदयंतिकाने** कहा, **लवंगिका** ! देख इतनी मत घबरा क्षणभर तो चित्तको ढाढस दे ।

उत्तरमें **लवंगिकाने** टूटे स्वरसे कहा, सखी! क्या करूं? वज्रमंजूषामें बंद किये हुए ये अधम प्राण कुछ किये मेरा पीछाही नहीं छोडते ।

कामंदकीने कहा, बेटी **मालती** ! यह **लवंगिका** तेरी आजन्मसे भावती सखी है इस समय यह तेरे वियोगदुःखसे कंठगतप्राण हो रही है । तौभी तू इस बापुरीपर दया नहीं करती सो क्यों? मेरे विरहके कारण संप्रति यह दिवाप्रदीपकी सदृश तेजहीन हो रही है ।

अपनीओर निहारकर बोली, बेटी मालती! इस कामंदकी-कोभी तू कैसे परित्याग करती है? री निर्दय! इस मेरे अचलापर खेल कूदकर तू छोटीकी बडी हुई, क्या तुझे उसका कुछभी स्मरण नहीं है। स्वयं अपनी माताकी अपेक्षा तू मुझसे विशेष स्नेह रखती है और वह क्यों न हो? माताका दूध पीना जबसे तूने छोडा तबसे मैं तेरे खेलनेकी हाथीदांतकी गुडियासी बन गयी थी। थोडी बढनेपर लिखना पढना सोभी तो तुझे मैंहीने सिखाया। छोटेका बडा तुझे मैंहीने किया। सर्वश्रेष्ठ तथा गुणवान् वरको तेरा कर मैंहीने समर्पित किया। सारांश ये सब बातें ऐसी हैं कि इनके योगसे तेरा स्नेह होनाही चाहिये। इन सब उपकरणोंके होनेपरभी इस समय तूने इतनी निर्दयता क्यों ग्रहण की है?

नितांत म्लान हो बोली, चंद्रमुखी! अब तेरे अर्थ मैं अत्यन्त हताश हो गयी हूं। मेरे समस्त हेतु जहांके वहांही विलीनसे हो गये। अब मेरी यही उत्कट इच्छा थी कि तेरी गोदमें निसर्गतः सर्वांगसुन्दर बालकको खेलते देखूं, पर यह सुख मेरे भागमें नहीं बदासा जान पडता है।

लवंगिकाने रोकर कामंदकीसे कहा, मा! मैं ऐसा कहती हूं अतः कुपित मत हो। मैं तुम्हारे पांवोंकी सौगंद खाकर कहती हूं कि अब मैं इन निगोडे प्राणोंको क्षणमात्रभी धारण नहीं कर सकती। मैं इस गिरिशिखरपरसे कूदकर इस असह्य दुःखयातनासे मुक्त हुआ चाहती हूं तो अब तुमसे अंतमें यही आशीर्वाद प्रार्थना करती हूं कि जन्मजन्मांतरमें मेरा उस प्रियसखीसे वियोग न हो ऐसा आशीर्वाद दो।

उत्तरमें कामंदकीने दीर्घ निश्वसन परित्यक्त कर कहा, बेटी लवंगिका! अब इतःपर मेराभी जीवित रहना कठिन क्या दुःसाध्यही है। उस लाडलीके वियोगके कारण मेरे प्राण मुझे गरू हो गये हैं। उसकी भेंटके लिये अपने दोनोंको एकसीही उत्कंठा है और अपने कर्मकी गति कैसी है कौन जानता है। तो

परलोकमेंभी उसकी भेंट होही जायगी यह निश्चयपूर्वक कौन कह सकता ? मालतीसे भेंट न हुई तो न हो, पर इसमें तो कोई शंका करनेकी बातही नहीं है कि प्राणपरित्यागद्वारा संताप तो नहींसा हो जायगा। यह फल तो निश्चय मिलेहीगा। तौ तेरे विचारानुसार मैंभी इस दुःखमय जीवनको शेष करती हूं।

उत्तरमें लवंगिकाने टूटे स्वरसे कहा माकी आज्ञानुकूल मैं प्रस्तुत हूं ऐसा कहकर वह उठ खडी हुई। कामंदकीने सदय मदयंतिकाकी ओर निहारकर कहा, बेटी मदयंतिका! अब तू क्या करती है ?

मदयंतिकाने उठ खडी हो हाथ जोड उत्तरमें निवेदन किया कि, मा! क्या परलोक जानेके लिये आगे होनेको तुम मुझे आज्ञा करती हो ? देखो मैं तो सब प्रकार उद्यत हूं। तो ले चलो चलं।

मदयंतिकाको सब प्रकार उद्यत देख लवंगिकाने आग्रहपूर्वक कहा, सखी! तू रूसे मत। मेरी इतनी बात मान। तू प्राणविसर्जनके लिये साहस मत कर। अपने प्रिय पतिके साथ आनंदपूर्वक सुखोपभोग कर पर सखी! हम लोगोंको जिन भूलना।

यह सुन मदयंतिकाने कुपित हो कहा, री! चल कुछ सरक, उधर हो। मैं तेरी बंधुआ नहीं हूं। जो तू कहती है यह कर वह कर। अपने जीकी मैं मालकिन हूं। मुझे जो भावेगा सो मैं करूंगी।

मदयंतिकाने लवंगिकाको झझकारके आगे चल दिया तब कामंदकीने सोचा शिव! शिव! इस दुखियानेभी दृढ निश्चय कर लियासा जान पडता है। पर अब क्या करना उचित है ?

मदयंतिकाने ढांगपरसे कूद प्राणविसर्जनका दृढ निश्चय कर मनमें कहा, नाथ मकरंद! तुम्हारे चरणकमलोंमें दासीका प्रणाम है और अंतिम निवेदन यही है कि जन्मजन्मांतरमेंभी इस दासीकी विस्मृति न होने पावे।

इस प्रकार वे तीनों गिरिशृंगपर चढीं। ऊपर चढ लवंगिकाने

कामंदकीसे कहा, मा ! यह जो मधुमतीके प्रवाहसे लपेटीसी दिखाई पडती है वह इस पहाडीकी कंदलाही है। अब जो आज्ञा देनी हो सो दीजिये।

कामंदकीने उत्तर दे कहा, अब क्या पूछना विचारना है ? अपुन लोगोंने जो निश्चय कर लिया है उसके करनेमें अँब व्यर्थ समय नष्ट न करना चाहिये। योंही आपुसमें कथनोपकथन कर अपने २ वस्त्रोंको सम्हालकर वे तीनों नीचे कूदनेके लिये प्रस्तुत हुईं।

इतनेमें मकरंदभी वहां आ पहुँचा। वे तीनों मधुमती नदीके प्रवाहकी ओर अभिमुख हो अपने २ मनमें निज २ प्रिय जनका ध्यान करती खडी थीं। मकरंद फिरते फिराते उनके पीछेसे आ रहा था। सौदामिनीने उसे जो आश्चर्यघटना देखाई थी उसमें वह निमग्न होनेके कारण वारंवार उसे उसीका स्मरण हो आता था। वह उसीकी तरंगमें क्या यह चपलाका प्रभाव है ? वा और कुछ ? एक क्षणमें मेरे नेत्रोंको चकाचौंधी लगा फिर वह नहींसा हो गया। हैं यह है तोभी क्या ? ऐसे जल्पता चला आता था।

मकरंदके स्वरको पहिचानकर कामंदकीने जान लिया कि यह वही है और पीछे मुडके देखतेही वह उसे दिखायी पडा। उसे देखतेही उसको महान् आश्चर्य और हर्ष हुआ। साथही उसने लवंगिका और मदयंतिकाका हाथ पकडकर उन्हें पीछे खींच लिया और कहा देखो, मकरंद आ रहा है यह कुछ न कुछ उधरके समाचार लायाही होगा। तो क्षणकाल ठहरकर सुन लें यह क्या कहता है।

पाठक ! बहुत समय बीत गया कि जबसे हमने अकेली मालतीके कारण संतानवान् कहानेवाले भूरिवसुके समाचार आपको नहीं सुनाये। इकलौती पुत्रीको माता पिताने जिस लाडचावके साथ पाला पोसा था उसका स्मरण कर इस समय उनका जी क्या कहता होगा सो तो वेही लोग जान सकते हैं जो संत-

तिके सुख दुःखका अनुभव ले चुके हैं । मालतीके अदृष्ट हो जानेके हृदयविदारक अमंगल समाचारको भूरिवसु सुनही चुका था । इसलिये भूरिवसु अपना सब परिवार ले सुवर्णबिंदु नामके शंकरके प्राकृतिकस्थानकी ओर जिसका कि पीछे वर्णन हो चुका है प्राणत्याग करने हेतु निकल गया था । उस मंडली-को मकरंदने दूरसे देखा पर उनकी शांत्वना करने योग्य कोई बातही न थी एतावता वह आगेकोही लपकता चला गया ।

भूरिवसुको सपरिवार प्राणविसर्जनार्थ जाते देख लवंगिका और मदयंतिकाने कामंदकीसे कहा, कि क्षणमात्रमें मालती और माधवके दर्शनोंकी आशा बंधती है और क्षणमात्रमें पुनः नष्ट हो जाती है। न जाने यह क्या रहस्य है ! ये लोग हाय हाय करते चले जाते हैं इससे यही अनुमान होता है कि ये लोग उस-की भेंटके लिये हताश हो गये होंगे ।

इतनेमें मकरंद उन तीनोंके बहुतही निकट पहुँच गया । पर उसका चित्त भूरिवसुकी ओरही लगा था, अतः परस्परके समा-चार बूझने बतानेको अवसरही नहीं मिला । ये तीनों दृष्टि गडाके उनकी ओर देखते खडी थीं । भूरिवसु और तदात्मीय जनोंको प्राणपरित्याग करते देख वे नितांत कातर एवं विह्वल हो रही थीं।

पाठक ! चिरकालके बिछडे हुए माधव मालतीके संमेलको देखें किस प्रकार होता है । यह तो आप जानही चुके हैं कि सौ-दामिनी माधवको उडा ले गयी थी। आकाशमार्गद्वारा एक क्षणमें श्रीपर्वतपर गयी और दुःखजर्जरहृदया मालतीको मा-धवके कांधेपर बैठा योगसामर्थ्यसे जहां कामंदकी थी वहां उ-सने उन दोनोंको शीघ्रही पहुँचा दिया । सुवर्णबिंदु नामका नैस-र्गिक शंभुका स्थान वहांसे थोडीही दूरीपर था ।

मालती माधवके स्कंधपर आरूढ होकर चली जाती थी अतः वह निम्नप्रदेशको भली भांति देखती जाती थी । अपने लिये पिता भूरिवसु तथा अपर आत्मीय जनोंको प्राणपरित्या-

गार्थ उद्यत देख वह वहींसे बाबा ! बाबा ! मत मत ऐसा मत करो कह कहकर चिल्लाने लगी। मैं तुम्हारे दर्शनोंके लिये उत्कंठित हूं। प्रसन्न होकर मुझे सपदि भेंट दीजिये। हाय हाय! अतुलविभवके आगर एवं विश्वविदित समुज्ज्वल कीर्त्तिके उपकरणस्वरूप इस दुर्लभ शरीरका मदर्थ त्याग करना तुमने क्यों विचारा ? हर, हर, हर ! मैं बडी निदर्य हूं कठोर हूं पाषाणहृदया हूं। मैंने जाना था कि तुम लोग मेरी कुछभी चिंता न करते होगे, पर तुम्हारे इस असामान्य अपत्यस्नेहके प्रत्यक्ष उदाहरणको देख मेरा मन मुझे खाये डालता है कि मेरे कलुषित मनमें उक्त विचार क्यों उत्पन्न हुए। ऐसा कह वह विलपने लगी।

मालतीके मनमें था कि जहां भूरिवसु तथा अन्यान्य स्वकीयजन प्राणविसर्जनके हेतु एकत्रित हुए हैं वहीं एकाएक जाकर उनसे मिलूं और माधवभी यही चाहता था। पर सौदामिनीने अपने तपोबलसे योजना की थी कि वे दोनों उसी पहाडीपर उतरे जहां कामंदकी थी एतावता उन दोनोंका कुछ उपाय नहीं चल सका।

मालतीने अपने पिताको पुकारकर जो आक्रोश किया उसे नितांत निकट होनेके कारण कामंदकी आदिने सुना पर भूरिवसु उसको नहीं सुन सके। मैं उनके ढिग नहीं जा सकती और मेरे जीते रहते आत्मीय मंडलीके लोग व्यर्थ प्राणत्याग कर रहे हैं यह देख मालती दुःखातिशयसे मूर्च्छित हो गयी।

मालतीकी क्रंदनाको सुन कामंदकी साश्चर्य बोली बेटी! इस समय तू मृत्युके अनंतर मानो दूसरा जन्म लेकर मुझसे मिली, पर राहुके मुँहसे बची हुई चन्द्रकलाको ग्रसित करनेके हेतु जैसे केतु लागपर रहता है, उसी प्रकार यह स्वजनोंका प्राणविसर्जनरूप दूसरा उपद्रव उपस्थित हुआ है।

लवंगिका और मदयंतिका मालतीको देख उसे गले

लगानेके लिये बहुत उत्कंठित हो रही थी कि इतनेमें मूर्च्छित मालतीको कांधेपर लिये माधव धरतीपर उतरा।

पृथ्वीतलपर पदारोपण करतेही उसने सकरुणस्वरसे कहा, महान् दुःख! यह (मालती) इतने दूरके काठिन प्रवासके दुःखको सहती हुई यहांतक आयी और अब यहां आनंदपूर्वक पहुँचकर फिर इसकी वही अवस्था हो गयी जिसे देख इसके जीवित रहनेमें शंका होती है। संसारके अनुभवी मनुष्योंने बहुतही समीचीन कहा है कि "छिद्रेष्वनर्था बहुलीभवन्ति" *। किसे शक्ति है कि विधिकी आज्ञाका बाधक हो।

इतनेमें मकरंदने आगे बढके माधवसे कहा कि मित्र! तुम तो आ गये बहुत उत्तम हुआ पर वह साध्वी कहां है?

उत्तरमें माधवने कहा सखा! श्रीपर्वतपरसे मैं जो उडा सो यहीं आया। साथमें वहभी थीं पर न जाने बीचमें वह कहां रह गयीं। तबसे अभीलों मैंने उन्हें नहीं देखा।

यह सुन कामंदकी और मकरंद बहुतही चकित हुए। मकरंद और माधवद्वारा उसका वृत्तांत सुन कामंदकीने सोचा कि वह कोई योगिनी होगी। पर वह कौन है सो उसने अभीलों नहीं जाना और विचारने लगी कि विना प्रयोजन इतना भारी अनुग्रह करनेवाली यह कौन होगी? इस गहरी चिंतामें वह मग्न हो गयी और हम लोगोंपर उपकार करनेवाली साध्वी पुनरपि हमको आत्मदर्शन दे अनुगृहीत करे इस आशासे मकरंद और कामंदकी आदि आकाशकी ओर मुँह कर बद्धांजलि हो बोले, देवि! निष्प्रयोजन इतना भारी उपकार करनेवाली तुम जो हो सो पुनः साक्षात्कार दे इस घोर विपत्से हमारी रक्षा करो। हे करुणामूर्ति! अब विलंब मत करो। इत्यादि कह गगनकी ओर टकटकी लगाकर वे लोग उस साध्वीकी प्रार्थना करने लगे।

कई उपचार किये गये पर मालतीकी मूर्च्छा टूटीही नहीं तब

---

* Misfortunes seldom come alone. Shakespear.

लवंगिका और मदयंतिकाने कहा, सखी! तुम हम लोगोंकी प्रियसखी न हो? फिर ऐसा क्यों करती हो, अद्यावधि हम लोग तुम्हारे लिये कातर हो रहे थे। अब हमारी भागभलाई वश तुम्हारे दर्शन हुए तो सखी मूकभाव क्यों धारण किये हो? सखी! बोलती क्यों नहीं?

योंही वे लोग उससे कह सुन रही थीं कि इतनेमें मालतीने एक लंबी सांस ली और फिर कुछ क्षणलों स्तब्ध एवं निश्चल पडी रही। उसकी उक्त अवस्था देख मदयंतिका और लवंगिकाने कामंदकीसे कहा, मा! इधर आकर तो देखो यह मालती कैसी कर रही है। चिरकालसे इसका श्वास रुक गया है। हाय! अमात्य भूरिवसु! हाय! प्राणसखी मालती तुम दोनों परस्परके मृत्युका कारण हो।

मालतीकी दशा देख कामंदकीने रुंधे हुए कंठसे कहा, मालती! मेरी दुलारी बेटी! और माधवने प्रिये प्राणेश्वरी आदि कहकर वे लोग व्याकुल हो सबके सब एकसाथ मूर्च्छित हो गये।

इतनेमें मंद मंद मेह बरसने लगा। उसकी शीतलतासे प्रथम कामंदकी चैतन्य हुई। उसने आकाशकी ओर निहारकर कहा मानो हम लोगोंको उपकारबद्ध करनेके अभिप्रायसेही इस समय मेघोंको भेदकर यह जलवृष्टि हुई है। वास्तवमें यह बहुतही सुअवसरपर हुई।

कुछ क्षणके उपरांत मालतीकीभी मूर्च्छा टूटी और वहभी किंचित् चैतन्य हुई। मालतीके शरीरमें प्राणवायुका संचार देख माधवके जीमें जी आया। लंबी सांस ले उसने कहा अब यह सचेत हुईसी जान पडती है। हां हां ठीक तो है लंबी लंबी सांस लेनेके कारण इसके स्तनकलश कंपित हो रहे हैं और वक्षःप्रदेशमें अब उष्णता भासित होती है। नेत्रभी पहिलेकैसे स्वच्छ हो गये हैं। उसी प्रकार मूर्च्छा टूट जानेके कारण दरविकसित कमलकी नांई अब इसके मुखपर प्रसन्नता झलकने लगी है।

सौदामिनीका माधव मालतीको छोड बीचहीमें गुप्त हो जाना पीछे उल्लिखित होही चुका है उसके अंतर्हित हो जानेका कारण यही था कि जब उसने अंतरिक्षसे देखा कि भूरिवसु मालतीके वियोगके कारण प्राणपरित्यागके लिये उद्यत हुआ है तो प्रथम इसे बचाना चाहिये अतः वह सुवर्णबिंदुकी ओरको चली गई। भूरिवसु सर्वथा प्राणविसर्जनके निमित्त प्रस्तुत हो चुके थे। मालतीका खोज पता अब नहीं लगता एतावता भूरिवसु अग्निमें कूद्नेके लिये उद्यत हुए थे। अपने प्रधान मंत्रीके उक्त साहसकार्यको सुन राजा और संज्ञाशेष दमाद् नंदन आदि मंडलीभी वहां आयी थीं। वे सब लोग भूरिवसुको निषेध करते जाते थे; पर उन्होंने किसी एकका कहना नहीं माना अंततः राजाने उनके पावोंपर गिर गिडगिडाके कहा, पर तौभी उन्होंने अग्निकी प्रदक्षिणा कर कहा, भगवन् अग्निनारायण! तुम प्राणिमात्रके हेतुके पूर्णकर्ता हो, मैं तुमसे और कुछ नहीं मांगता, (नेत्र डबडबाके) मेरी प्रार्थना केवल इतनीही है कि एक वार मेरी दुलारी पुत्रीसे मेरी भेंट करा दो। ऐसा कह वह सर्वसाक्षी अग्निमें कूद पडे।

सौदामिनी गुप्तभावसे यह सब देखही रही थी। उसने चट आगे बढकर भूरिवसुको ऊपरके ऊपरही थामकर राजाके समीप ले जा रख दिया और मालती जीवित है ऐसा कहकर उनकी शांत्वना की। तदुपरांत कपालकुंडलाके उपद्रवका हाल उसने उन सबको सुनाया। उस वृत्तांतको सुन सब लोग आश्चर्यचकित हो रहे। राजाकी इच्छा थी कि मालती नंदनको व्याही जाय वह सफल नहीं हुआ और नंदनकी बहिन मदयंतिकाको मकरंदने विवाह लिया। इन दोनों घटनाओंके कारण राजा विशेष कर उनसे अप्रसन्न था। पर तौभी माधव और मकरंदकी प्रशंसनीय शूरता, अकूत साहस और मालती, मदयंतिकाका दृढानुराग तथा अटल प्रेम देख वह अत्यंत प्रसन्न

हुआ । पर राजाकी प्रसन्नता माधव और मकरंदपर विदित नहीं हुई थी अतः उसने तत्क्षण भूरिवसु और नंदनके समीपही इस अभिप्रायका पत्र लिखा कि मालती और मदयंतिकाका परिणय जिन भद्रपुरुषोंके साथ हुआ है उनसे मैं बहुत प्रसन्न हूं और यह पत्र उनके ढिग शीघ्र पहुँचानेके हेतु सौदामिनीको दिया । उस पत्रके हस्तगत होतेही सौदामिनी आकाशमार्गसे उनकी ओर उठ दौडी ।

वहांसे चलकर सौदामिनी सीधी उसी पहाडीपर आयी जहां कामंदकी आदि मंडली थी। वह आत्मगत कहते चली आ रही थी कि राजा और नंदनके अनुरोधकी उपेक्षा कर निज प्राणपरित्याग करनेवाले भूरिवसुको आज मैंहीने बचाया । यह सुन आकाशकी ओर निहारकर प्रसन्न हो मकरंदने कामंदकीसे कहा भगवति ! इधर देखिये इधर देखिये । जिस परोपकारिणी परम साध्वीने मालतीकी रक्षा की वही अपनी द्रुतगतिद्वारा मेघोंको काटती हुई आकाशमार्गसे शीघ्रतापूर्वक इधर आ रही हैं । और यह उनकी वाणीरूप अमृतकी वृष्टि हो रही है ।

उक्त शुभ संवादको सुन कामंदकीका मनमयूर आनंदसे नाच उठा। मालतीने सौदामिनीके मुँहसे ज्योंही सुना कि मैंने भूरिवसुके प्राण बचाये त्योंही वह चैतन्य हो गयी । उसे चैतन्य देख आनंदाश्रुकी वृष्टि कर कामंदकीने बडे प्रेमसे उसे कंठ लगाया । मालतीभी कामंदकीसे मिल अत्यन्त प्रमुदित हुई । वह उसके चरणकमलोंपर अपना सीस धरती थी, पर उसने उसे ऊपर उठा उसके सीसका आघ्राण लिया और उसे आशीर्वाद दे बोली, बेटी! ईश्वरके प्रसादसे तुम चिरजीविनी हो और अपने प्राणेश्वरकी प्रीतिपात्रा बनी रहो । तुम्हारे इस सुखसमाचारको सुन तुम्हारे आत्मीय जन प्रसन्न हों । अब तुम अपने शशिकरनिकरकैसे शीतल कोमलगात्रके स्पर्शसे इन अपनी प्यारी सखी लवंगिका और मदयंतिकाको सचेत करो ।

मालतीको लब्धसंज्ञा देख आनंदचित्तसे माधवने मकरंदसे कहा, सखा ! यह संसार अब मेरे जीवित रहने योग्य हुआ। अब मुझे इच्छा होती है कि मैं चिरकाललों जीवित रहूं ।

उत्तरमें सानंद मकरंदने कहा, मित्र ! तुम्हारी अभिलाषा बहुतही यथार्थ है ।

लवंगिका और मदयंतिकाने मालतीसे कहा अब तुम्हारी भेंट होगी ऐसी हम लोगोंको आशातक न थी । पर इतनेपरभी अनुकूल दैवने तुमसे फिर मिलाया यह बहुतही अच्छा हुआ। सखी ! अब एक वार हमारे गले लपटकर अभीलों दुःखसे झुरसे हुए हमारे गात्रोंको शीतल करो ।

मालती उक्त प्रेमभरी बातोंको सुन दौडके दोनोंके गलेमें लपट गयी । तीनों परस्परके गोदमें परस्परका सिर रख सखीसमागमका सुख लेने लगीं ।

कामंदकीको यह गूढ रहस्य अभीलों यत्किंचित्‌भी ज्ञात न था कि मालती गुप्त कैसी हुई और फिर आ कहांसे गयी । एतावता उसने इस विषयमें माधव और मकरंदसे जिज्ञासा की । तब उन दोनों आकाशवर्त्मसे आनेवाली सौदामिनीकी ओर तर्जनी देखाकर कहा, मातः ! कपालकुंडलाके क्रोधके कारण हम लोग इस घोर विपत्‌में फँसे थे। उस प्रचण्ड आपत्तिसे इस अतुल प्रभावशालिनी योगेश्वरीने प्राणपनसे हमारी रक्षा की।

यह सुन कामंदकीने कहा, हां हां ! अब यह बात मेरे ध्यानमें आयी उस अघोरघंटके वधका यह सब प्रायश्चित्त भोगना पडा । उस चंडिका कपालकुंडलाने अपने गुरुका बदला लेना चाहा था ।

लवंगिका और मदयंतिकाभी इस हालको न जानती थी। उन्होंने साविस्मय कहा, बहिन ! यह बडी आश्चर्यघटना हुई । इसीसे वामविधिने अंतमें हम लोगोंकी मनःकामना परिपूर्ण की यह बहुत समीचीन हुआ ।

योंही वे लोग आपुसमें वार्त्तालाप कर रही थीं कि सौदामि-नी आकाशसे अवतीर्ण हुई और कामंदकीके ढिग जाकर बोली, भगवति कामंदकी ! चिरकालकी तुम्हारी यह सखी और चेली तुम्हारे चरणकमलोंमें विनीतभावपूर्वक प्रणाम करती है ।

यह सुन कामंदकीको सुदीर्घकालके उपरांत उसके दर्शन होनेके कारण और उसने इतने पुराने संबन्धका स्मरण रख कठि-न प्रसंगपर सहायता की एतदर्थ महद्विस्मय हुआ । उसे उसने पहिचानकर उसकी भेंटपर अपनी विशेष प्रसन्नता प्रकाशित की।

माधव और मकरंदभी सौदामिनीके इस उपकारके कार-णको जाननेके लिये गहरी चिंतामें मग्न थे। यद्यपि भले मानुष ममता वा परोपकारकी कामनासे प्रसंगविशेषपर सहायता किया करते हैं, पर उन्हें इतनी आवश्यकता नहीं रहा करती । कपाल-कुंडला निरपराधिनी मालतीकी हत्या करती थी, उस दुष्टाके कुचक्रसे सौदामिनीने उसकी रक्षा की । इस कृतिको उसकी भलमंसीका कार्य मान सकते हैं, पर इतःपर उसने जो पार्थिव प्रयत्न किये, उनके लिये कुछ न कुछ योग्य कारण रहनाही चाहिये, ऐसा उन्हें संशय होना साहजिक बात है ।

ऊपर कही हुई गुप्त वार्त्ता अब जाकर प्रकाशित हुई । सौदा-मिनीने कामंदकीको प्रणाम करते समय सखी और चेलीका संबन्ध प्रगट किया था । उसे सुन माधव और मकरंदने साश्च-र्य्य कहा हां अब संदर्प ठीक २ मिला । भगवती कामंदकीकी यह योगेश्वरी पहिलेकी चेली है, यही कारण है कि वह इनका इतना पक्ष करती है । अब हम जान गये कि इनने जो जो कार्य किये वे सब योग्यही किये । अभीलों यह गुप्त रहस्य जान नहीं पडा था, पर अब यह गुप्त रहस्य ज्ञात हो गया और इनका पक्ष करनेका कारणभी ज्ञात हो गया ।

सौदामिनीकी पूरी २ पहिचान हो जानेपर कामंदकीने उसे उसके उक्त परोपकारार्थ अनेकानेक साधुवाद दे अपनी हा-

र्दिक प्रसन्नता प्रकाशित कर कहा, सखी! चिरकालके अनंतर तुम-ने दर्शन दिये! अब इधर आओ। अनेक लोगोंको प्राणप्रदान कर तुमने जो पुण्यभार इस समय धारण किया है, उसके योगसे मुझे अपरिमित आनंद हुआ है। पर तौभी मेरे गले लग मेरे आनं-दकी विशेषरूपसे वृद्धि करो।

सौदामिनीको दंडप्रणाम करते देख उसने सानुरोध कहा, बस बस अब इन शिष्टाचारोंकी कोई आवश्यकता नहीं है और अब तुम्हारा मुझे प्रणाम करनाभी समुचित नहीं है। तुमने सं-प्रति जो अलौकिक कार्य किये हैं, उनके योगके केवल हम लोगों-कोही नहीं किंतु सारे जगतकी तुम परम पूजनीय देवता हुई हो। पुरा कालमें तुम्हारे साथ परिचय कर जो प्रेमका बीजारोपण किया गया था, उसीका यह सब इतना भारी प्रस्तार बढा। ऐसा कह कामंदकी प्रेमविह्वल हो उसके गलेमें लपट गयी।

मदयंतिका और लवंगिकाभी सौदामिनीको नहीं जानती थी, पर इसके पूर्व कामंदकीकी बातचीतमें असकृत् उसका नाम आता था। उससे यही वह होगी ऐसा जानकर उन्होंने कामंद-कीसे पूछा कि यदा कदा आप कहा करती थी कि सौदामिनी नामकी हमारी एक चेली है। सो क्या यह वही सौदामिनी है?

उत्तरमें मालतीने कहा, री सखी! इन्होंने कामंदकी माका पक्ष कर कपालकुंडलाकी यथेच्छ दुर्दशा की और मुझे अपने स्थानपर लेवा ले गयी और कामंदकी माके नांईही इन्होंने प्रबोध-वाक्योंसे मेरी शांत्वना की और मुझसे मौलसिरीकी माला मांग ली और उसीके सहारेसे तुम सब लोगोंके प्राणोंकी रक्षा की।

यह सुन मदयंतिका और लवंगिकाने कहा, री बहिन! हमें तो यह कामंदकी माकैसीही जान पडती है। हमारी इस लहुरी माने हमपर विशेष प्रसन्नता प्रदर्शित की है इसमें कोई शंका नहीं है।

माधव और मकरंदने सानंद कहा कि, चिंतामणि अभीष्ट

हेतुको पूर्ण करता है, पर कब जब किसी वस्तुकी चिंता की जाती है तब। मनमें यदि किसी वस्तुविशेषकी चिंता न की जाय तो वह उसे नहीं देता। पर यह सौदामिनी मा चिंतामणिकी अपेक्षाभी विशेष है, ऐसाही मानना चाहिये। क्योंकि जिन बातोंकी हमें स्वप्नमेंभी आशा न थी उन्हें इन्होंने सब घटित कर दिखाया।

कामंदकी और माधवादिकोंने सौदामिनीका जो नितांत कृतज्ञता, प्रेम तथा भक्तिपूर्वक सत्कार किया उससे वह अत्यन्त बाधित हुई। उनकी उक्त सुजनताके भारसे उसका मन लजासा गया। योग्यही है कि सज्जन जन कैसाही उपकार क्यों न करें पर वे उसे अपना कर्तव्यकार्यही समझते हैं। उसे वे लोगोपकार कदापि नहीं समझते और अनुगृहीत लोग यदि तदर्थ उन्हें धन्यवाद देते हैं तो वे लोग उसमें अपनी अप्रसन्नता प्रदर्शित करते हैं।

सौदामिनीने पुलकित हो कामंदकीसे सहर्ष कहा, भगवति! पद्मावती नगरीके अधिपति राजा चित्रसेनने यह पत्र माधवके समीप प्रेरित किया है। जो कुछ बात हो चुकी है उसपर नंदनने अपना आनंद प्रदर्शित किया तब उसकी सहानुभूति तथा पूर्ण अनुमोदनसे भूरिवसुके साम्हने राजाने यह पत्र लिखकर दिया है। इसमें जो हो सो पढ लीजिये।

सौदामिनीसे राजाकी चिट्ठी ले उसे खोल कामंदकीने निम्नलिखित पत्र पढाः—

" स्वस्ति श्रीअखिलगुणगणालंकृत बाहुबलविजित रणधुरंधर मंत्रिपुत्र माधवको अनेकानेक आशीर्वाद।

केवल तुम्हारे अतुलबल पराक्रमके कारण हमने तुम्हें दोषमुक्त किया है। तुम्हारे उच्च कुलानुमोदित गुण एवं कीर्ति और निरुपम शूरताको देख हम नितांत प्रसन्नता प्रदर्शित करते हैं। जिस मालतीको हमने अपनी पुत्री माना है उसे तुमने वरा, इसमें हमने अपनी पूर्णानुमति प्रकाशित कर तुम्हें अपना दमाद मान लिया है।

तुमपर हमारी जो सहज प्रीति है उसीको अनुकृत कर हमने तुम्हारे प्रियमित्र मकरंदकोही उसकी पूर्वानुरक्त मदयंतिका अत्यन्त हर्षके साथ समर्पित की है और हम तुम दोनोंका लड़कियोंके साथ अभिनंदन करते हैं। अंतमें यही इच्छा प्रदर्शित करते हैं कि अपनी भेंट दे हम लोगोंके नेत्रानंदको बढाओ। इत्याशीःसहस्रमविरतम्।

सुवर्णबिन्दु वैशाखकृष्णा १०	चित्रसेन, पद्मावतीश्वर।

उक्त पत्रको पढ कामंदकीने माधवसे कहा, वत्स! राजाने जो लिखा है उसे ध्यानपूर्वक सुना न।

उत्तरमें माधवने विनीतभावपूर्वक कहा, हां सुन लिया। अब हम लोग कृतकृत्य हुए। हमारे समस्त हेतु परिपूर्ण हुए।

स्वेच्छानुकूल विवाह हुआ उसके पथमें जो अनेक उपद्रव उपस्थित हुए उनकाभी परिहार हो गया पर मालतीका चित्त ठिकानेपर न था। उसके जीमें यही भय समा रहा था कि गुप्तभावके साथ किये हुए विवाहको सुन राजा क्रुद्ध होगा और उसके कारण न जाने मतिपताको कौन कौन आपत्तियां भोगनी पडें पर वे सब शंकायें अब दूर हो गयीं। कामंदकीने राजाकी चिठ्ठी पढी। उसके आशयको समझ मालती बोली कि अबलों मेरे हृदयमें जो शंकाका कांटा चुभता था वह अब निकल गया, यह बहुत अच्छा हुआ।

लवंगिकाने मुसकुराके कहा, मालती और माधवके मनोरथ अब पूर्णतया सफल हो गये, यह अति उत्तम हुआ और इसीके साथ मेरे जीका सब खटका जाता रहा।

अवलोकिता, बुद्धिरक्षिता और कलहंस सुवर्णबिंदुको जानेवाली मंडलीके साथ गये थे। वहां जब उन्होंने सुना कि राजाने माधव और मकरंदपर अनुग्रह किया तब आनंदमग्न

हो वे तीनों इधर आये । उन्हें देख सब लोग आह्लादित हुए । उन तीनोंने प्रथम कामंदकीको दंडप्रणाम किया और अनंतर माधवका जयजयकार किया । आनंदमत्त हो नाचनेवाले उन तीनोंको देख वहांकी मंडली आश्चर्य्यचकित हो रही । पर लवंगिकाने कहा इस समय इनका आनंदयुत हो नाचना प्रकृतिसुलभ घटनाही है । इस समय सबको अत्यंत हर्ष और आश्चर्य्य होनाही चाहिये ।

इसपर कामंदकीने सहर्ष कहा, हां हां तेरा कथन बहुतही युक्तिसंगत है । ऐसी आश्चर्यघटना पुरा कालमें कदापि किसीनेभी न देखी होगी । इसमें सब रसोंका समावेश है ।

योंही कथनोपकथन होते होते सौदामिनीने कहा, प्रधान अमात्य भूरिवसु और देवरात परस्परके समधी हों ऐसी उनकी चिरकालसे अभिलाषा थी, सो वह ईश्वरके प्रसादसे परिपूर्ण हो गयी यह बहुत उत्तम हुआ ।

मालतीको उक्त कथन किंचित् विपरीतसा जान पडा क्योंकि वह यही जानती थी कि मत्पिता अंतःकरणसे इसी संबंधको चाहते हैं पर परवश हो उन्हें विपरीत आचरण प्रदर्शित करना पडता है यह बात वह न जानती थी यही कारण है कि सौदामिनीकी उक्त बात सुन उसे शंका हुई ।

मकरंद और माधवने सौदामिनीके कहनेको कौतुक मानकर कहा कि यथार्थ वार्त्ता तो इससे कुछ निरालीही है । अपर भगवती सौदामिनीने अभी उसका वर्णन एक भिन्न रीतिसे किया ।

यह सुन लवंगिकाने धीमे स्वरसे कामंदकीके कानमें कहा, अब कहो क्या उत्तर दोगी ? माधव और मकरंदके इस प्रश्नमें गूढ रहस्य भरा हुआ है ।

कामंदकीने सदर्प कहा, क्यों क्या हुआ अब तो हमें उसकी किसी प्रकार चिंताही न करनी चाहिये । मालतीके विषयमें तो

पहिलेसेही कुछ भय न था। भय था केवल नंदनका कि न जाने वह मदयंतिकाके विषयमें क्या करता है सोभी सब दूर हो गया।

कामंदकीने माधव और मकरंदसे कहा, वत्स! तुमने जो कहा कि यथार्थ घटना इससे निरालीही है सो तुम्हारा कथन बहुतही अयोग्य है। पुरा कालमें जब हम लोग कुंडनपुरस्थ पाठशालामें अध्ययन करती थीं तब हमारे और इन सौदामिनीके साम्हने देवरात और भूरिवसुने परस्परके समधी होनेकी प्रतिज्ञा की थी, पर केवल राजाकी प्रसन्नताके लिये भूरिवसुको वैसा व्यवहार करना पडता था यह सब तुम जानतेही हो। सारांश सौदामिनीके कथनमें अणुमात्रभी असत्यता नहीं है।

यह सुन मालतीका संशय निवृत्त हुआ और उनके बहिर मन्सूबे तथा उद्योगके विषयमें उसे आश्चर्यित होना पडा। उक्त वार्त्ताको सुन माधव और मकरंदकाभी संशय नष्ट हुआ और उन्होंने साश्चर्य्य कहा बडोंके कार्य्य संपादनकी थाह सहजमें कैसे किसीको लग सकती है। उनके अंतरंग हेतु कुछ औरही होते हैं और वे प्रगटमें करते कुछ औरही हैं। उनकी कृति विस्मय और आश्चर्यसे ओतप्रोत भरी हुई होती है।

माधव और मकरंदके विवाहके लिये कामंदकीने जो बडे बडे मन्सूबे बांधे थे और बडे बडे यत्न किये थे उन सबकी सहायतासे उसका अभीष्ट हेतु सफल हुआ। अपने परिश्रमोंको सफल देख उसने संतुष्ट हो माधवसे कहा कि, वत्स! तुम्हारा विवाह करनेके लिये जो मैंने निश्चय किया था वह दैवकी अनुकूलता, मेरे प्रयत्न और मेरी चेलियोंकी सहायतासे परिपूर्ण हुआ। तुम्हारे मित्र मकरंदकोभी मदयंतिका प्राप्त हुई और राजा और नंदन दोनोंभी प्रसन्न रहे। अब कहो तुम्हारी और कौनसी लालसा शेष रह गयी है।

माधवने सानुनय दंडप्रणाम कर उत्तरमें कहा, मातः ! तुम्हारे अनुग्रहसे मेरी सब कामना पूर्ण हो गयी, अब कोई शेष नहीं रही पर आप आज्ञा करती हैं तो मांगता हूं । भगवतीके चरणकमलके प्रसादसे मुझे इतना औरभी प्राप्त हो कि सत्पुरुषोंको निरंतर उत्तम कार्योंका चाव बना रहे । पाप उनकी छांहतक न छूने पावे । राजागण धर्मपरायण होकर पृथ्वीका पालन करें । मेघ यथाकाल जल बरसाया करें । मेघोंको देख जैसे केकिगण प्रसन्न होते हैं उसी प्रकार अपने २ प्रिय मित्रोंको देख सब लोग आनंदानुभव करें । बस यही मेरी अंतिम याचना है।

कामंदकीने प्रेमाकुल हो उसे गले लगा " तथास्तु " कहकर उसका अभिनंदन किया ।

उपसंहार।

कामंदकीने अनेकानेक मंत्रणा तथा युक्तियोंकी सहायतासे हाथमें लिये हुए कार्य्यको उक्त प्रकारसे परिसमाप्त किया। इस कार्यमें हाथ डालनेके पूर्व अवलोकिताके पूछनेपर उसने जो कहा कि अपना अंग न दिखाकर माधव और मालतीके परिणयकी व्यवस्था करूंगी वैसेही उसने अंतलों दृढताके साथ अपने वचनके निर्वाहपूर्वक माधव और मकरंदका विवाह कर अपना मनोरथ पूर्ण किया।

राजा चित्रसेन, भूरिवसु और उनकी मंडलीके अन्य लोग सुवर्णबिंदु क्षेत्रमें थे। वे सब मालती और माधवकी भेंटके लिये अत्यंत आतुर एवं उत्कंठित हो रहे थे। अतः राजाने तत्क्षण एक परिचारकद्वारा कामंदकीके निकट संवादवाक्य प्रेरित किया कि आप मालती, माधव, मदयंतिकादिको लेकर यहां शीघ्र आइये।

राजाकी आज्ञानुसार उक्त वार्त्ताहरने कामदंकीके स्थानपर जा राजाज्ञा निवेदन कर कामंदकीके साथ सब लोगोंको सुवर्णबिंदु क्षेत्रमें लेवा लाया। परमेश्वरकी कृपासे हम लोग घोर विपद्से उत्तीर्ण हुए; यह कह कहकर सभी आनंदमग्न हो रहे थे। उक्त क्षेत्रमें पहुँचतेही कामंदकीने प्रथम मालती, माधव, मदयंतिका और मकरंद द्वारा भगवान् शंकरकी पूजा करवायी और उनकी प्रार्थना की। तदुपरांत भूरिवसु, राजा चित्रसेन आदि सब मंडलीसे भेंट करायी।

प्रथमसे भूरिवसुका मनोदय अपनी पुत्री माधवको देनेका था सो जनहितकारी परमेश्वरकी कृपासे परिपूर्ण हुआ इससे उसे परम आनंद हुआ। इस समस्त कृतिके अर्थ उसने भगवती कामंदकीको अनेकानेक हार्दिक धन्यवाद दिये। राजा चित्रसेनने माधव और मकरंदको पुत्रवत् गले लगा उनको बधाई दी। इस समय नंदन नितांत खिन्न हो रहा था। लवंगिका

और बुद्धिरक्षितादिकोंने मुझे प्रतारित कर अपमानित किया इस बातको सोच सोच उसका मन उसे खाये डालता था, पर राजाकी दृष्टिको फिरी देख वह कुछभी न कर सका।

राजकृपावलंबित पुरुषगण अपने मनतकको स्वाधीनता नहीं दे सकते। उन्हें अपने हर्षविषादादि मनोविकारोंको जहांके वहीं छिपा रखना पडता है; अंतरात्मा कोपाग्निसे भस्मीभूतभी होता हो तौ भी प्रगटमें हँसनाही पडता है। बिचारे नंदनकी उस लडकी (कपटवेष मालती) ने जो दुर्दशा की थी, उसे उसका जीही जानता था; पर अब राजाको माधवपर प्रसन्न देखतेही उसे उसका अनुकरण करना पडा। उसने मदयंतिका और मकरंदको समादृत कर उनके परिणयपर अपना आनंद प्रदर्शित किया।

अनंतर राजा चित्रसेनके साथ समस्त मंडलीने बडे समारोहके साथ नगरमें प्रवेश किया। नगरमें पहुँचतेही राजाने आज्ञा प्रचारित की कि आज समस्त नागरिक जन नाना प्रकारकी क्रीडा कौतुक द्वारा अपना आह्लाद प्रदर्शित करें। नगरके स्त्रीपुरुष मालतीको प्राणसंकटसे मुक्त हो आनंदपूर्वक घर आते देख नितांत प्रमुदित हुए। राजा चित्रसेन माधव मालतीको भूरिवसुके और मकरंद मदयंतिकाको नंदनके स्थानपर पहुँचाकर पश्चात् राजमंदिरको पधारे। माधव राजाका बडा प्रेमपात्र हो गया, इस प्रेमका कारण मालतीका विवाहही न था किंतु उसके अतुल शौर्य साहसादि गुण थे। राजाने माधव और मकरंदको कुछ काल अपने यहां ठहराकर उनका भली भांति समादर किया।

स्वेच्छानुकूल दमादकी प्राप्तिसे प्रहर्षित हो भूरिवसुने माधवको आग्रहपूर्वक अपने यहांपर ठहराके विवाहके समस्त आनंद मंगल और शिष्टाचार मनाये। जामाताका वियोग भूरिवसुको असह्य बोध होता था, पर माधवके पिता देवरातका आग्रह देख उन्होंने कामंदकीकी अनुमतिसे पुत्रीका विदा कर देना

स्थिर किया । जिस दिन कन्याकी विदा थी उस दिन अमात्य भूरिवसुने बडे समारोहके साथ भोज करवाया । राजा चित्रसेन, उनके अपर उच्च पदाभिषिक्त कर्म्मचारी, दर्बारी लोग और नगरके अन्यान्य धनी मानी तथा प्रतिष्ठित लोग निमंत्रित थे।

आनंदपूर्वक भोजसमारंभ परिसमाप्त होनेपर राजा चित्रसेनने सर्व साधारणके समीप माधव और मकरंदको अपने सन्निकट आसीन होनेकी आज्ञा दी । मालतीके विवाहमें इतने बखेडे क्यों हुए और उनके प्रतिहारार्थ कौन २ उद्योग किये गये आदि गूढ रहस्य जाननेकी सब लोगोंको उत्कट इच्छा थी और कामंदकीभी चाहती थी कि वे सब बातें सर्व साधारणपर प्रकाशित हों । अतः राजाने मालतीके विवाहका सब व्यौरा प्रकाशित करनेके लिये कामंदकीकी प्रार्थना की ।

तब कामंदकीने उपस्थित हो सब लोगोंको संबोधन कर कहा, सज्जनगण ! आप लोग देखते हैं कि संसारसे विरक्त एवं निरीह हो मैंने जोग धारण किया है । संसाररत लोगोंका संसर्गतक मुझे भाता नहीं, तो फिर उनके बखेडे मुझे क्यों भाने लगे ? ऐसा होनेपरभी स्नेहपाशबद्ध हो मुझे तापसोचित वेषके विपरीत कार्य्यसाधनमें प्रवृत्त होना पडा । इन अमात्य भूरिवसु और माधवके पिता देवरातके स्नेहपाशमें बद्ध हो मुझे यह कार्य करना पडा । मालतीका माधवके साथ परिणीत होना योग्यही था । मेरे सामने देवरात और भूरिवसुने जो निश्चय किया था वह पूर्ण हो ऐसी मेरीभी लालसा थी। पर जब मैंने जाना कि उक्त कार्यके संपादित होनेमें कई कठिनाइयां उपस्थित हो उक्त प्रतिज्ञाकी बाधक होंगी, तब मैंने इस कार्यमें हाथ डालना अपना कर्त्तव्य कार्य समझा और वैसाही किया ।

उक्त प्रकारसे कामंदकीने संपूर्ण घटनाका विवरण कर कहा कि बस अब मैं कृतकार्य हो गयी । जिस कार्यकी सिद्धिके निमित्त मैंने अपने तप और नियममें बाधा डाल यह कार्य अंगीकृत

किया था वह सर्वशक्तिमान् ईश्वरकी कृपासे सिद्ध हो गया और मेरे सकल मनोरथ परिपूर्ण हो गये। अब मैं आप सब सज्जनोंसे बिदाई आज्ञा चाहती हूं। ऐसा कह कामंदकीने राजा चित्रसेन और प्रधान मन्त्री भूरिवसु आदिकी आज्ञा ले स्वस्थान ग्रहण किया।

फिर भूरिवसुको संबोधन कर बोली कि, बंधुस्नेहोचित कार्य जो मुझसे हो सका सो मैं कर चुकी अब मैं अपना तपश्चिंतन करनेके लिये जाती हूं।

उसी प्रकार माधव मकरंद आदिको गोदमें ले उसने उन्हें प्रेमाश्रुसे स्नान कराया और माधवके चिबुकको हाथ लगाकर कहा कि, वत्स! तुमने उच्चतम कुलमें जन्म ग्रहण किया है, विद्या और समस्त कलाओंको भली भांति अधीत किया है, सारांश, विशालकुलोत्पन्न भले मनुष्योंको जिन गुणोंकी आवश्यकता होती है वे सब तुममें पूर्णरूपसे हैं। सर्व कार्य साधन करने योग्य युवाअवस्थाभी तुम्हें प्राप्त है। जिस श्लाघनीय सम्बन्धकी सब लोग इच्छा किया करते हैं वहभी तुम्हें प्राप्त हो चुका है अब तुम अपनी धर्मपत्नी मालतीके साथ पिताकी सेवामें उपस्थित हो उनके पुत्रविरहसन्तापको दूर कर उनकी मनस्तुष्टि करो। धर्मानुमोदित एवं न्यायसंगत महान् २ कार्य संपादित कर निज माता पिताके आनन्दकी वृद्धि कर निर्मल एवं विमल यशको प्राप्त होओ।

उसी प्रकार मालतीको हृदयसे लगाकर बोली, बेटी! दीननाथ करुणानिधान परमेश्वरने तुमपर असीम अनुकंपा की। इतना कहतेही उसका कंठ प्रेमातिशयके कारण रुंध गया और वह क्षणकाललों कुछभी न बोल सकी। पर फिर अपनेको सम्हालकर बोली, बेटी! जिसको तुमने स्वेच्छानुकूल वरा है उस अपने जीवनसर्वस्वकी मनोगामिनी होकर सुखपूर्वक संसारयात्रा पूरी करो, कि जिसे सुन वा देखकर ससुराल तथा मायकेके लोगोंको तथा हमकैसोंको आह्लाद हो।

मकरंदपरभी उसका प्रेम कुछ घटकर न था वैसेही प्रेमभावसे उसने मकरंद और मदयंतिकाको पेटसे लगाकर उनकी सांत्वना कर बडी कठिनाईसे विदा होनेके लिये प्रस्तुत हुई । कामंदकी इतनी विरक्त थी पर प्रेमरज्जुके पाशने उसे बहुतही बद्ध कर डाला था। सबसे तो वह विदाईकी भेंटकर चुकी, पर मालती उसे छोडतीही न थी और कामंदकीभी उसके प्रेमतंतुको तोडनेके लिये सर्वथा अक्षम थी । वह अपनी माताकी जन्मप्रदानमात्रकी ऋणिया थी और सब प्रकारका उसका लालन पालन कामंदकीहीने किया था। यही कारण है कि मालती कामंदकीको निज माकी अपेक्षाभी अधिक चाहती थी। मालती उसके कमरमें लपटकर एकसी रो रही थी और कुछभी किये वह उसे छोडती न थी, तब उसके समाधानार्थ कामंदकीने अपने जानेका समय थोडासा औरभी बढा दिया।

उक्त कथनानुसार समस्त शिष्टाचार हो जानेपर भूरिवसुने मालतीके विदाकी तैयारी की। उन्होंने अपने सर्वगुणोपेत जामाताको दहेजमें हाथी, घोडे, दास, दासी, रत्न, आभूषण और उत्तमोत्तम वस्त्रादि दे भली भांति उनका सन्मान किया। गणकलोगोंने सायंकालका मुहूर्त स्थिर किया था अतः बडे समारोहके साथ भूरिवसुने सायंकाल गोधूलीके समय अपनी पुत्रीकी विदा की । माधवके साथ मालतीको एक सुबृहत् रत्नखचित अंबारीवाले हाथीपर आसीन कराया था और मालतीने अपनी भावती सखी लवंगिकाको अतीव अनुरोधके साथ साथमें लिया था और उसनेभी उसके छलछिद्ररहित प्रेमके वश हो उसके साथ जाना स्वीकृत किया । मालतीने उसेभी अंबारीमें अपने बगलमें बैठाल लिया।

माधवके पीछेही एक अच्छे सजाये हुए हाथीपर मकरंद और मदयंतिका आरूढ थे। कामंदकीकी चेली बुद्धिरक्षिता मदयंतिकाकी बडी प्यारी सहेली थी अतः उसने हठ ठाना कि मैं विना

बुद्धिरक्षिताको साथ लिये कदापि न जाऊंगी। बुद्धिरक्षिताका वयःक्रम वैसा कुछ अधिक न था पर तौभी उसने संसारसे विरक्त हो योग धारण किया था। वह कामंदकीकी चेली होनेके कारण उसकी आज्ञामें थी। उसका मदयंतिकाके साथ जाना अयोग्य था, पर मदयंतिकाके अनुरोधके कारण कामंदकीने उसे उसके साथ जानेकी आज्ञा दी और तदनुसार वह उसके साथ गयी।

मार्गमें उनकी रक्षाके लिये राजाने घुडसवार और सिपाही उनके साथमें दिये। अनंतर मालतीके माता पिताने उसे ससुरालकी शिक्षा तथा उपदेश दे बडी कठिनतासे उसकी विदा की। राजा चित्रसेन, भूरिवसु और अन्यान्य भले मानुस लोग माधवको बहुत दूरलों पहुँचानेको गये। अंतमें जब आत्मीय लोगोंने अनुरोध किया कि पहुँचानेको आये हुए लोगोंको यदि मार्गमें कोई नदी मिले तो उसे उत्तीर्ण न होना चाहिये ऐसा सदासे संप्रदाय चला आता है, तब राजा चित्रसेन और प्रधान मंत्री भूरिवसुको विवश हो लौटना पडा। इसी गडबडमें कामंदकीभी अपनी चेली अवलोकिताको ले वहांसे निकल सीधी श्रीपर्वतपर पहुँच गयी।

माधव मालती और मकरंदादिको ले बडे समारोहके साथ पिताके दर्शनार्थ प्रस्थित हो आनंदपूर्वक कुंडिनपुरके निकट आ पहुँचा। पुत्रको विजयसंपन्न अथ च स्त्रीको साथ ले आते सुन देवरातको परम हर्ष एवं आल्हाद हुआ। कुंडिनपुराधिपतिभी इस समाचारको सुन अत्यंत प्रसन्न हुए। राजाकी आज्ञानुसार दर्बारी लोगोंको साथ ले देवरात पुत्रकी भेंटका स्वीकार करनेके लिये पुरके बाहर आये। पिता पुत्र प्रेमपूर्वक मिले। देवरातने निज पुत्रवत्‌ही मकरंदकी भेंट स्वीकृत की। साथकी मंडलीने उनके विजयपर आनंद प्रदर्शित कर उन्हें बधाई दी। पश्चात् सब लोग नगरमें आ गये।

उस दिन राजाकी आज्ञानुसार नगरमें बडा भारी आनंदोत्स

व बनाया गया। माधवके माता पिताको पुत्रवधूका मुँह देख जो आनन्द हुआ सो लेखनशक्तिसे परे है । विद्यार्थीकी अवस्थामें देवरातने जो प्रतिज्ञा की थी उसे आज पूर्ण कर उनका मन आनन्दाप्लावित हुआ । सर्वगुणोपेत पुत्र तथा सर्वलक्षणसंपन्न बहूकी प्राप्तिके कारण उन्हें संसार स्वर्गसुखकी अपेक्षाभी अधिक बोध होने लगा ।

माधवको विद्या और समस्तगुणोंसे भूषित देख राजा क्रमशः उन्हें राज्यका कार्यभार सौंपने लगे और राजाकी अनुकूलता देख देवरातभी उन्हें अपने कामकाज समझाने लगे। कुछ कालके उपरांत शीघ्रही वह प्रधान मंत्रीके पदके योग्य हो गये ऐसा समझ देवरातने राजाकी प्रार्थना कर उन्हें प्रधान मंत्रीकी पगडी दिलाई और आपभी प्रसंगविशेषपर उन्हें मन्त्रणा और परामर्ष देते रहे । इस प्रकार कुंडिनपुरके प्रधान मंत्रीके पदको प्राप्त हो माधवने राज्यव्यवस्था इतनी पटुता और दक्षताके साथ की कि शीघ्रही सब लोग देवरातकी अपेक्षा उन्हें अधिकतर चाहने लगे और उनकी सराहना करने लगे । इस प्रकार माधवने अपने सम्मा-हत पिता माताकी सेवामें तत्पर रह, प्रिय धर्मपत्नी मालती और सखा मकरंदके साथ अत्यंत आनंद और सुखपूर्वक संसारका उपभोग कर अपनी विमल एवं समुज्ज्वल कीर्तिकी अटल पताका चारों ओर स्थापित की ।

समाप्त ।

पुस्तक मिलनेका ठिकाना—
गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
“ लक्ष्मीवेंकटेश्वर ” छापाखाना,
कल्याण-मुंबई.

पञ्चतन्त्र भाषाटीका.

पण्डितवर विष्णुशर्म्मा विरचित पञ्चतंत्र संस्कृतमें नीतिका एक ऐसा ग्रन्थ है जिसकी सारे संसारने पूजा की । अरबीमें कलेला दमना, फारसीमें अनुवारसुहेली, उर्दूमें बुस्ताने हिकमत आदि पुस्तकें उसी पञ्चतन्त्रका अनुवाद हैं । कहा जाता है कि नौशेरवां बादशाहने बडे परिश्रम तथा यत्नसे अपने मन्त्रीको भारतवर्षमें भेजकर पञ्चतन्त्रके अनुवाद कराके उसने अपनेको धन्य समझा । इसीका सार निकालकर संस्कृतमें हितोपदेश बनाया गया जिसका वङ्गभाषा आदि कितनीही भाषाओंमें अनुवाद मिलता है । हिंदीमेंभी कविवर लल्लूलालजीका किया हुआ अनुवाद है । मुरादाबादनिवासी पण्डित व्रजरत्नजी भट्टाचार्य्यनेभी हितोपदेशका भाषा अनुवाद किया परन्तु पञ्चतंत्रका हिंदी अनुवाद अबतक नहीं हुआ था । पं० व्रजरत्न भट्टाचार्य्यने मूल संस्कृतके साथसाथ सरल हिंदी अनुवाद रखकर पञ्चतंत्र तय्यार कर डाला । अब हिन्दी जाननेवालोंको भी इसके पढनेका अवसर मिला । यह पुस्तक घरघर रहने योग्य है । दाम २ रु० ।

संगीतसुधासागर.

हरिभक्त तथा रसिक सुजनोंके लिये आनन्द और अवलम्बदायक नवीन ग्रन्थ । जिसमें विनय तथा काव्योंके संग अनेकानेक प्राचीन और नवीन ग्रंथोंसे उत्तमोत्तम गानेवाली पदें, गीत, छंद और अनेकानेक प्रकारकी पहेली और कवित्त आदि संग्रह किया है—कीमत. १॥ रु०

पुस्तक मिलनेका ठिकाना—

गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास,

"लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" छापाखाना,

कल्याण-मुंबई.